राजस्थान विधान सभा की कार्यवाही का वृत्तान्त

अंक : 9] बारहवीं विधान सभा के नवें सत्र का दसवां दिवस [संख्या : 7

बुधवार;

27 फरवरी, 2008

राजस्थान विधान सभा की बैठक 11.00 बजे
विधान सभा भवन, जयपुर में प्रारम्भ हुई।

(श्री रामनारायण विश्नोई, उपाध्यक्ष, पदासीन)

अनुरोध

शांति से सदन की कार्यवाही चलाने का अनुरोध

श्री उपाध्यक्षः माननीय सदस्यों से निवेदन करना है। माननीय सदस्यगण, हम सब लोग यहां पर शांतिपूर्ण ढंग से और सहयोग से सदन चलाना चाहते हैं। मुझे बड़े अफसोस के साथ कहना पड़ रहा है कि कल की जो घटना हुई, कल की घटना के अंदर एक महिला बोल रही थीं, इनके बीच में आपने टोकाटाकी करके सदन की कार्यवाही में बड़ा गलत काम किया है। मेरा आपसे यही कहना है कि हम सब लोग पूरे राजस्थान की बहबूदी के लिए अपनी समस्याओं को रखने के लिए आये हैं, आपको हर बात के ऊपर बोलने का मौका दिया जाएगा, हर व्यक्ति को अपनी बात कहने में किसी प्रकार की कोई रुकावट आने नहीं देंगे। मेरा आपसे यही निवेदन करना है कि कम से कम हमारा खुद का संयम इस प्रकार से रहना चाहिए कि हम बीच में कोई बोले तो उसमें जान-बूझकर टोकाटाकी नहीं करें।

मैं आपसे फिर निवेदन करना चाहता हूं, हर मुद्दे पर बोलने के लिए आपको किसी भी प्रकार से आसन की तरफ से कोई रुकावट नहीं होगी। बिलकुल शांतिपूर्ण जो अपने मुद्दे हैं, जनता से, किसानों से, व्यापारियों से, मजदूरों से, राज्य के कर्मचारियों से जितने भी मुद्दे जुड़े हुए हैं आप बड़े ढंग से रख रहे हैं और सरकार बराबर जवाब दे रही है। मेरा आपसे यही निवेदन करना है कि हर चीज में शांतिपूर्ण सदन चलना चाहिए, हर बात के ऊपर यहां पर राज्य सरकार की तरफ से भी जवाब दिया जाएगा और हम सब मिल-जुलकर हाउस चलाएं, धन्यवाद।

श्री राजेन्द्र राठौड़ (सार्वजनिक निर्माण मंत्री): गुढ़ा से आने वाले माननीय सदस्य ने जो कहा ..(व्यवधान)

श्री संयम लोढ़ा (सिरोही): उपाध्यक्ष महोदय, आपसे विनम्र प्रार्थना है कि आपने कल का जो प्रश्न काल स्थगित किया था ..(व्यवधान)

डा. ओ. पी. महेन्द्रा (उप मुख्य सचेतक): आसन पैरों पर है।

श्री जोगाराम पटेल (संसदीय सचिव): आसन पैरों पर है, आप पहले नहीं बोल सकते। आसन पैरों पर है, नियमों की पालना होगी।

श्री संयम लोढ़ा (सिरोही): सरकार के मंत्री जिसमें आरोपी हैं .. (व्यवधान) राजस्थान की जनता के साथ ..(व्यवधान)

श्री राजेन्द्र राठौड़ (सार्वजनिक निर्माण मंत्री): इसका इन पर कोई असर नहीं है। अभी आपने कहा है, सहयोग मांगा है और अभी खड़े हो गये प्रश्न काल के अंदर ये।

श्री उपाध्यक्ष: श्री हरिमोहन शर्मा। (व्यवधान) श्री हरिमोहन शर्मा। (व्यवधान)

डा. ओ. पी. महेन्द्रा (उप मुख्य सचेतक): आसन पैरों पर है, आपको बैठना पड़ेगा। (व्यवधान)

श्री राजेन्द्र राठौड़ (सार्वजनिक निर्माण मंत्री): ये फिर बोल गये। .. (व्यवधान)

श्री संयम लोढ़ा (सिरोही): अगर इस पर चर्चा नहीं करने देते तो ठीक बात नहीं है। (व्यवधान)

श्री राजेन्द्र राठौड़ (सार्वजनिक निर्माण मंत्री): रोज-रोज यह नहीं चलेगा।

श्री घनश्याम तिवाड़ी (खाद्य एवं नागरिक आपूर्ति मंत्री): यह बकवास नहीं चलेगी। रोज-रोज यह बकवास नहीं चलेगी। (व्यवधान)

एक माननीय सदस्य: बिलकुल गैर जिम्मेदाराना व्यवहार किया है इस सदन में। (व्यवधान)

श्री घनश्याम तिवाड़ी (खाद्य एवं नागरिक आपूर्ति मंत्री): उपाध्यक्ष महोदय, यह अंकित नहीं होगा। (व्यवधान)

श्री उपाध्यक्ष: अंकित नहीं हो।

श्री संयम लोढ़ा (सिरोही): ×××

श्री उपाध्यक्ष: उसके बारे में व्यवस्था कल दी जा चुकी। (व्यवधान) व्यवस्था कल दी जा चुकी उस बारे में। (व्यवधान)

श्री राजेन्द्र राठौड़ (सार्वजनिक निर्माण मंत्री): ×××

श्री घनश्याम तिवाड़ी (खाद्य एवं नागरिक आपूर्ति मंत्री): ×××

श्री उपाध्यक्ष: स्थान ग्रहण कीजिए, माननीय सदस्य। (व्यवधान) माननीय सदस्य (व्यवधान)

श्री घनश्याम तिवाड़ी (खाद्य एवं नागरिक आपूर्ति मंत्री): ×××

श्री महावीर प्रसाद जैन (मुख्य सचेतक): ×××

श्री उपाध्यक्ष: माननीय सदस्य ..(व्यवधान)

श्री जोगाराम पटेल (संसदीय सचिव): ×××

श्री संयम लोढ़ा (सिरोही): ×××

श्री उपाध्यक्ष: माननीय सदस्य। (व्यवधान) अंकित नहीं हो। माननीय सदस्य बैठिए अब। माननीय सदस्य ..(व्यवधान)

श्री संयम लोढ़ा (सिरोही): ×××

श्री महावीर प्रसाद जैन (मुख्य सचेतक): ×××

श्री बंशीलाल खटीक (राजसमन्द): ×××

श्री बद्रीलाल जाट (कपासन): ×××

श्री गोविन्द राम मेघवाल (संसदीय सचिव): ×××

श्री घनश्याम तिवाड़ी (खाद्य एवं नागरिक आपूर्ति मंत्री): ×××

श्री राजेन्द्र राठौड़ (सार्वजनिक निर्माण मंत्री): ×××

श्री उपाध्यक्ष: माननीय सदस्य, बैठिए, बैठिए। (व्यवधान) माननीय सदस्य।

श्रीमती अनिता भदेल (अजमेर पूर्व): ×××

श्री महावीर प्रसाद जैन (मुख्य सचेतक): ×××

श्री गोविन्द राम मेघवाल (संसदीय सचिव): ×××

श्री घनश्याम तिवाड़ी (खाद्य एवं नागरिक आपूर्ति मंत्री): ×××

श्री शंकर सिंह राजपुरोहित (आहोर): ×××

श्री संयम लोढ़ा (सिरोही): ×××

श्री सांवर लाल (सिंचाई मंत्री): ×××

श्री बंशीलाल खटीक (राजसमन्द): ×××

श्री राजेन्द्र राठौड़ (सार्वजनिक निर्माण मंत्री): ×××

श्री उपाध्यक्ष: बैठिए आप। माननीय सदस्य, बैठिए आप। ..(व्यवधान)

श्री घनश्याम तिवाड़ी (खाद्य एवं नागरिक आपूर्ति मंत्री): ×××

डा. एन. एस. गुर्जर (सहकारिता मत्री): ×××

श्री जुबेर खान (रामगढ़): ×××

श्री राजेन्द्र राठौड़ (सार्वजनिक निर्माण मंत्री): ×××

श्री लक्ष्मीनारायण दवे (खनिज मंत्री): ×××

श्री कनकमल कटारा (महिला एवं बाल विकास मंत्री): ×××

डा. ओ. पी. महेन्द्रा (उप मुख्य सचेतक): ×××

श्री बंशीलाल खटीक (राजसमन्द): ×××

श्री उपाध्यक्ष: माननीय सदस्य। माननीय सदस्य, स्थान ग्रहण कीजिए आप।

श्री बंशीलाल खटीक (राजसमन्द): ×××

श्री उपाध्यक्ष: माननीय सदस्य। माननीय नेता प्रतिपक्ष।

श्री घनश्याम तिवाड़ी (खाद्य एवं नागरिक आपूर्ति मंत्री): ×××

श्री हेमाराम चौधरी (नेता प्रतिपक्ष): सुनना पड़ेगा आपको। सुनना पड़ेगा आपको।

डा. बुलाकीदास कल्ला (बीकानेर): ×××

श्री घनश्याम तिवाड़ी (खाद्य एवं नागरिक आपूर्ति मंत्री): ×××

श्री लक्ष्मीनारायण दवे (खनिज मंत्री): ×××

डा. ओ. पी. महेन्द्रा (उप मुख्य सचेतक): ×××

श्री बंशीलाल खटीक (राजसमन्द): ×××

श्री जुबेर खान (रामगढ़): ×××

डा. बुलाकीदास कल्ला (बीकानेर): ×××

श्री राजेन्द्र राठौड़ (सार्वजनिक निर्माण मंत्री): ×××

श्री कालूलाल गुर्जर (ग्रामीण विकास एवं पंचायती राज मंत्री): ×××

श्री अमराराम (धोद): ×××

श्री राजेन्द्र राठौड़ (सार्वजनिक निर्माण मंत्री): ×××

श्री हीरालाल (निवाई): ×××

डा. ओ. पी. महेन्द्रा (सरकारी उप मुख्य सचेतक): ×××

श्री अमराराम (धोद): ×××

श्रीमती अनिता भदेल (अजमेर पूर्व): ×××

श्री उपाध्यक्ष: माननीय सदस्य, कहने दीजिए।

डा. ओ. पी. महेन्द्रा (सरकारी उप मुख्य सचेतक): ×××

श्रीमती अनिता भदेल (अजमेर पूर्व): ×××

डा. ओ. पी. महेन्द्रा (सरकारी उप मुख्य सचेतक): ×××

श्री घनश्याम तिवाड़ी (खाद्य एवं नागरिक आपूर्ति मंत्री): ×××

डा. ओ. पी. महेन्द्रा (सरकारी उप मुख्य सचेतक): ×××

श्री सांवर लाल (जल ससांधन मंत्री):000

डा. बुलाकीदास कल्ला (बीकानेर): ×××

श्री सांवर लाल (जल ससांधन मंत्री): ×××

श्री उपाध्यक्ष: सदन की कार्यवाही एक घंटे के लिए स्थगित की जाती है।

(तदनन्तर सदन की बैठक 11.12 बजे एक घंटे के लिए स्थगित हुई)

(समय : 12.12 बजे)

(पुनः समवेत् होने पर)

(श्री रामनारायण विश्नोई, उपाध्यक्ष, पदासीन)

अनुरोध

शांति से सदन की कार्यवाही चलाने का अनुरोध

श्री उपाध्यक्ष: माननीय सदस्यगण, मैंने सदन की बैठक शुरू होने के समय भी कहा था और अभी मुझे बड़े अफसोस के साथ कहना पड़ रहा है कि सब कुछ व्यवस्थित ढंग से चलने के बावजूद भी जो बात कल पहले ही समाप्त हो चुकी थी उसी को ही वापस माननीय सदस्य ने उठाकर फिर वातावरण को गर्म कर दिया। कल दूसरी जो घटना हुई, एक सदस्य ने यहां गेहूं लाकर सदन उन्दर उछालने की भी कार्यवाही की। आपका और हम सब का फर्ज यही है कि हम शांतिपूर्ण तरीके से सदन को चलाएं। जैसे मैंने कहा

(श्री उपाध्यक्ष)

कि हर व्यक्ति को अपनी बात कहने का मौका मिले, मेरा आपसे फिर निवेदन है कि मिलकर नियमों के अनुसार सदन चलना चाहिए। हर चीज के ऊपर, जो भी आपके मुद्दे हैं, सरकार से भी उन पर जवाब दिलवाएंगे, इसलिए अभी व्यवस्था यह है कि मैं पहले तो अनुपस्थिति के लिए अनुमति... (व्यवधान)

श्री जुबेर खान (रामगढ़): माननीय उपाध्यक्ष महोदय, प्रतिपक्ष के नेता को भी नहीं बोलने दें। यह तो व्यवस्था कर दीजिये कि प्रतिपक्ष के माननीय नेता जब बोलें तो लोग सुनें।

श्री उपाध्यक्ष: बीच में नहीं। सुनेंगे, प्रतिपक्ष के नेता को बराबर समय दिया जाएगा। (व्यवधान)

डा. सुरेश चौधरी (भादरा): वो धमका कर सुनवा देंगे क्या? (व्यवधान)

श्री गोविन्द राम मेघवाल (संसदीय सचिव): एक महिला को बोलने नहीं दिया। (व्यवधान)

श्री उपाध्यक्ष: आप बीच में नहीं।

डा. सुरेश चौधरी (भादरा): अनुसूचित जाति की महिला बोल रही थी और आप डिस्टर्ब कर रहे थे, उस टाइम यह बात समझ में नहीं आई क्या? (व्यवधान)

श्री उपाध्यक्ष: माननीय सदस्यगण, मुझे...

श्री गोविन्द राम मेघवाल (संसदीय सचिव): ...आप बीच में डिस्टर्ब कर रहे थे जब महिला बोल रही थी। (व्यवधान)

डा. सुरेश चौधरी (भादरा): नहीं, आप धमका कर कुछ भी सुना दें क्या? (व्यवधान)

श्री गोविन्द राम मेघवाल (संसदीय सचिव): जब एक अनुसूचित जाति की महिला बोल रही थी तब यह बात समझ में नहीं आ रही थी। (व्यवधान)

डा. सुरेश चौधरी (भादरा): आप आंखें निकालकर कुछ भी सुना दें क्या और हम यहां से सुनकर चले जाएं? आप आंखें निकाल कर कुछ भी कहते रहें? (व्यवधान)

श्री उपाध्यक्ष: माननीय सदस्य।

श्री गोविन्द राम मेघवाल (संसदीय सचिव): सदन चलाने की ड्यूटी आपकी भी तो है, प्रतिपक्ष की भी तो है। (व्यवधान)

एक माननीय सदस्य: माननीय उपाध्यक्ष महोदय, सदन नियमों और प्रक्रियाओं से चलता है।

एक माननीय सदस्य: किसी महिला को बोलने नहीं दोगे तो हम प्रतिपक्ष के नेता को नहीं बोलने देंगे। (व्यवधान)

श्री उपाध्यक्ष: बैठिये-बैठिये। बैठिये, माननीय सदस्य। (व्यवधान)

एक माननीय सदस्य : कांग्रेस की दादागीरी से सदन नहीं चलेगा। (व्यवधान)

श्री गोविन्द राम मेघवाल (संसदीय सचिव): आपका पूरा भाषण सुना था हमने और हमारे जो बोल रहे थे तो... (व्यवधान)

डा. सी. पी. जोशी (नाथद्वारा): नहीं चलाओगे ऐसे... (व्यवधान)

श्री उपाध्यक्ष: अंकित नहीं हो रहा है। अंकित नहीं। (व्यवधान)

डा. सी. पी. जोशी (नाथद्वारा): ×××

श्री गोविन्द राम मेघवाल (संसदीय सचिव): ×××

श्री उपाध्यक्ष: कुछ भी अंकित नहीं हो रहा है।

श्रीमती लक्ष्मी बारूपाल (देसूरी): ×××

श्री उपाध्यक्ष: आप आसन ग्रहण कीजिये। (व्यवधान)

श्री जुबेर खान (रामगढ़): ×××

डा. सी. पी. जोशी (नाथद्वारा): ×××

श्री गोविन्द राम मेघवाल (संसदीय सचिव): ×××

डा. बुलाकीदास कल्ला (बीकानेर): ×××

श्री महीपाल यादव (बानसूर): ×××

श्री घनश्याम तिवाड़ी (खाद्य एवं नागरिक आपूर्ति मंत्री): ×××

श्री उपाध्यक्ष: माननीय सदस्य।

डा. बुलाकीदास कल्ला (बीकानेर): ×××

श्री घनश्याम तिवाड़ी (खाद्य एवं नागरिक आपूर्ति मंत्री): ×××

श्री महीपाल यादव (बानसूर): ×××

श्री गोविन्द राम मेघवाल (संसदीय सचिव): ×××

श्री ओम बिरला (संसदीय सचिव): ×××

श्री उपाध्यक्ष: माननीय सदस्य।

श्री प्रद्युम्न सिंह (राजाखेड़ा): माननीय उपाध्यक्ष महोदय, आपने अपने कक्ष में मीटिंग बुलाई नेता, प्रतिपक्ष को बुलाया, उधर से संसदीय कार्य मंत्री, खाद्य मंत्री जी, गृह मंत्री जी, ये सारे उपस्थित थे। तय हुआ कि शांतिपूर्ण वातावरण के अन्दर सदन चलेगा। तो या तो इनको आकर सबको रोकना चाहिए था। नेता महोदय खड़े हुए तो संसदीय सचिव नये-नये बने हैं, ज्यादा जोश के अन्दर आकर, नाथद्वारा से आने वाले माननीय सदस्य सी. पी. जोशी साहब खड़े हुए तो उनसे अटक गये। अब इस तरह से तो हाउस चलेगा नहीं। मैं कुछ बोलने खड़ा हुआ, पता नहीं क्या उनको नया जोश चढ़ा है, संसदीय सचिव बन गये हैं, आप देख रहे हैं, तब भी नहीं मान रहे हैं। अपनी लॉयल्टी दर्शाने के लिए मर्जी आए जो कहते रहते हैं। (व्यवधान)

श्री गोविन्द राम मेघवाल (संसदीय सचिव): ×××

मोहम्मद माहिर आजाद (नगर): ×××

श्री गोविन्द राम मेघवाल (संसदीय सचिव): ×××

श्री प्रद्युम्न सिंह (राजाखेड़ा): ऐसे यह हाउस नहीं चलेगा। चलाइये अब हाउस को आप। (व्यवधान) उपाध्यक्ष महोदया, आप हाउस को चलाइये।

श्री राकेश मेघवाल (परबतसर): ×××

श्रीमती लक्ष्मी बारूपाल (देसूरी): ×××

श्री उपाध्यक्ष: माननीय सदस्य, माननीय सदस्य। (व्यवधान) माननीय सदस्य, माननीय सदस्य।

श्री राजेन्द्र राठौड़ (सार्वजनिक निर्माण मंत्री): ×××

श्री गोविन्द राम मेघवाल (संसदीय सचिव) ×××

श्री राकेश मेघवाल (परबतसर): ×××

श्री रणवीर सिंह गुढा (गुढा): ×××

श्री उपाध्यक्ष: माननीय सदस्य, बैठिये। (व्यवधान)

श्री सुरेन्द्र सिंह राठौर (श्रीगंगानगर): ×××

मोहम्मद माहिर आजाद (नगर): ×××

श्रीमती लक्ष्मी बारूपाल (देसूरी): ×××

श्री सुरेन्द्र सिंह राठौर (श्रीगंगानगर): ×××

श्री रामप्रताप कासनिया (पीलीबंगा): ×××

श्री उपाध्यक्षः माननीय सदस्य, बैठिये। बैठिये। (व्यवधान) आप सदन का समय खराब कर रहे हैं। कुछ भी अंकित नहीं होगा। आप स्थान ग्रहण कीजिये, माननीय सदस्य। कुछ भी अंकित नहीं होगा। आप अपना स्थान ग्रहण कीजिये।

श्री सुरेन्द्र सिंह राठौर (श्रीगंगानगर): ×××

श्री उपाध्यक्षः स्थान ग्रहण कीजिये। आपका कोई अंकित नहीं हो रहा है। माननीय सदस्य, माननीय सदस्य, बैठिये। कुछ भी अंकित नहीं होगा।

श्री सुरेन्द्र सिंह राठौर (श्रीगंगानगर): ×××

श्री रामनारायण मीणा (नैनवां): ×××

श्री राकेश मेघवाल (परबतसर): ×××

श्री उपाध्यक्षः माननीय सदस्य (व्यवधान) माननीय सदस्य, बात आ गई है। प्रद्युम्न सिंह जी कुछ कह रहे थे।

श्री रामनारायण मीणा (नैनवां): ×××

श्री राजेन्द्र राठौड़ (सार्वजनिक निर्माण मंत्री): ×××

श्री राकेश मेघवाल (परबतसर): ×××

श्री महीपाल यादव (बानसूर): ×××

अनेक माननीय सदस्य: ×××

श्री उपाध्यक्षः अब स्थान ग्रहण कीजिये आप, माननीय सदस्य।

अनेक माननीय सदस्य: ×××

श्री राकेश मेघवाल (परबतसर): ×××

श्री रामप्रताप कासनिया (पीलीबंगा): ×××

श्री उपाध्यक्षः माननीय सदस्य, माननीय सदस्य, बैठिये। अंकित नहीं होगा।

श्री रामप्रताप कासनिया (पीलीबंगा): ×××

श्री उपाध्यक्षः माननीय सदस्य, कुछ भी अंकित नहीं होगा। माननीय सदस्य, कुछ भी अंकित नहीं हो रहा है। माननीय सदस्य। (व्यवधान)

श्री रामप्रताप कासनिया (पीलीबंगा): ×××

श्री उपाध्यक्षः माननीय सदस्य, माननीय सदस्य।

डा. ओ. पी. महेन्द्रा (सरकारी उप मुख्य सचेतक): ×××

श्री गोविन्द राम मेघवाल (संसदीय सचिव) : ×××

श्री राकेश मेघवाल (परबतसर): ×××

श्री रामनारायण मीणा (नैनवां): ×××

श्री जयराम जाटव (खैरथल): ×××

श्री रामप्रताप कासनिया (पीलीबंगा): ×××

श्री बद्रीलाल जाट (कपासन): ×××

श्री उपाध्यक्ष: कुछ भी अंकित नहीं हो रहा है, माननीय सदस्य।

डा. श्रीगोपाल बाहेती (पुष्कर): ×××

श्री उपाध्यक्ष: बीच में नहीं। आप बैठिये, आप बैठिये, माननीय सदस्य।

श्री जयराम जाटव (खैरथल): ×××

श्री रामनारायण मीणा (नैनवां): ×××

डा. श्रीगोपाल बाहेती (पुष्कर): ×××

श्री उपाध्यक्ष: माननीय सदस्य, आपका कुछ भी अंकित नहीं हो रहा है। बैठ जाइये, माननीय सदस्य। बैठ जाइये, माननीय सदस्य।

श्री रामनारायण मीणा (नैनवां): ×××

श्री उपाध्यक्ष: बैठिये आप। मुझे सदन को सूचित करना है कि श्रीमती ममता शर्मा, सदस्य विधान सभा...

श्री हेमाराम चौधरी (नेता, प्रतिपक्ष): उपाध्यक्ष महोदय, आपने राजाखेड़ा से आने वाले माननीय सदस्य को बोलने की अनुमति दी, उनको तो बोलने नहीं दिया। पहले मुझे बोलने नहीं दिया, तो फिर यह हाउस नहीं चलेगा।

श्री उपाध्यक्ष: नहीं, नहीं, मैं इनको मौका दूंगा।

श्री हेमाराम चौधरी (नेता, प्रतिपक्ष): मेरे को बोलने नहीं दें, इनको भी बोलने नहीं दें, किसी को बोलने नहीं दें, सब खड़े हो जाएं, फिर हाउस को चलाने का तरीका तो हो।

एक माननीय सदस्य: ×××

अनुपस्थिति-अनुमति

श्रीमती ममता शर्मा, सदस्य को दिनांक 26 फरवरी, 2008 से एक सप्ताह के लिए

श्री उपाध्यक्षः मुझे सदन को सूचित करना है कि श्रीमती ममता शर्मा, सदस्य, विधान सभा ने शारीरिक अस्वस्थता के कारण दिनांक 26 फरवरी, 2008 से एक सप्ताह तक सदन की बैठकों से अनुपस्थित रहने की अनुमति चाही है।

क्या सदन की अनुमति है कि उन्हें सदन की बैठकों से अनुपस्थित रहने की अनुमति प्रदान की जाये?

(स्वीकृत)

अनुमति प्रदान की गई।

अनुरोध

शांति से सदन की कार्यवाही चलाने का अनुरोध

मैं माननीय सदस्यों से निवेदन करूंगा कि शान्तिपूर्वक राजाखेड़ा से आने वाले माननीय सदस्य अपनी बात कह रहे थे, मैं इनको एक बार और मौका दे रहा हूं, बीच में आप दखलंदाजी मत करें।

श्री गोविन्द राम मेघवाल (संसदीय सचिव): ×××

श्री उपाध्यक्षः कोई नहीं लगाएंगे व्यक्तिगत आरोप। कोई आरोप नहीं लगाये हैं।

श्री प्रद्युम्न सिंह (राजाखेड़ा): माननीय उपाध्यक्ष महोदय, मैंने किसी पर व्यक्तिगत आरोप नहीं लगाये हैं। मैं तो सिर्फ इतना निवेदन कर रहा था कि आपने ही कक्ष में हम लोगों को बुलाया था जब आपने हाउस एडजोर्न किया था। आपने प्रतिपक्ष के नेता को, मुख्य सचेतक जी को, मुझको और हिण्डौली से आने वाले श्री हरिमोहन जी शर्मा को बुलाया था। वहां सत्ता पक्ष के सभी वरिष्ठ मंत्री उपस्थित थे और उनके बीच में कोई चीज उसमें तय हुई थी। या तो इनके यहां कम्युनिकेशन गैप है या संसदीय कार्य मंत्रीजी साहब ने या चीफ व्हिप साहब ने अपने सदस्यों को सूचित नहीं किया। उसका नतीजा यह निकला कि श्रीमान् संसदीय सचिव महोदय ने खड़े होकर बोलना शुरू कर दिया। जब आप आवेश में बोलेंगे तो बीच में दूसरे लोग भी आवेश में बोलेंगे

(श्री प्रद्युम्न सिंह)

और काम तो चलेगा नहीं। माननीय सदस्य नागौर जिले से जो आते हैं, परबतसर से जो आते हैं, उन्होंने भी कुछ कहना शुरू कर दिया। तो सदन को, इस सत्र को खास तौर से चलाने की, बजट सत्र को चलाने की सरकार की जिम्मेदारी है, हम उसमें पूरा सहयोग देना चाहते हैं लेकिन अगर आप इस तरह से इंटरप्ट करेंगे, नेता प्रतिपक्ष को बोलने नहीं दें, मर्जी आए जो कहें अनर्गल, जोश-आवेश आना दोनों तरफ से स्वाभाविक है, इधर से भी कोई लोग शान्ति से तो बैठने वाले नहीं हैं। वहां तय हुआ था, आपने कुछ निर्णय देने के लिए कहा था...स्टेटमेंट दिलाने की बात कही थी आपने कि स्टेटमेंट दिलाऊंगा मैं। उन सब के बावजूद वह कुछ कहना चाहते थे, मैं कुछ कहना चाहता था, इस तरह से लोग करेंगे तो, सत्ता पक्ष के लोग, यह सदन चलना नहीं है। अब आपको जो निर्णय देना है आप निर्णय दें। हम भी चाहते हैं कि सदन सुचारू रूप से चले, लेकिन आप यह सोचें, आसन और सत्ता पक्ष यह सोचे कि खाली प्रतिपक्ष की जिम्मेदारी है सदन को चलाने की, तो हम लोग मूकदर्शक बने यहां बैठे नहीं रहेंगे, यह मैं आपसे साफ कह देना चाहता हूं।

श्री राजेन्द्र राठौड़ (सार्वजनिक निर्माण मंत्री): उपाध्यक्ष महोदय, यह सही है कि आपके वेश्म में जब बैठक हुई थी सत्ता पक्ष और प्रतिपक्ष के बीच में सौहार्दपूर्ण वातावरण से सदन चले, इस पर सहमति बनी थी। उपाध्यक्ष महोदय, यह पहली बार नहीं, कई बार ऐसे मौके आते हैं। निश्चित तौर पर सत्ता पक्ष चाहता है कि सदन चले, हम एक-एक चीज का उत्तर देना चाहते हैं, पर मेरा निवेदन है, उपाध्यक्ष महोदय, कि यह जो किताब आपने हम सबके हाथों में दी है, सभी विद्वान माननीय सदस्य हैं, इसको पढ़कर आएं और इसके अनुसार अगर ...(व्यवधान) मेरे को मेरी बात कहने दीजिये प्लीज। उपाध्यक्ष महोदय, इन नियमों की लक्ष्मण रेखा के बीच में कोई बात उठे, सरकार जवाब देने को तैयार है। अब प्रश्न काल जैसे महत्वपूर्ण समय में अगर कोई चीज उठ कर कोई इस तरह से आरोपित करने की कोशिश करे, इसलिए मैं प्रतिपक्ष के नेता, आपका बड़ा सम्मान करते हुए निवेदन करूंगा कि इन संसदीय परम्पराओं का जिनका निर्माण इस राजस्थान की विधान सभा में हुआ और जिसके कारण पूरे देश में यह जानी जाती है, आप भी अपने माननीय सदस्यों को यह निवेदन करें कि कम से कम प्रश्न काल में और हर कोई बात उठाएं, अगर आपको किसी बात पर हमें आरोपित करना है तो इसमें 273 में नोटिस देकर करें आप, हम जवाब देने के लिए तैयार हैं। इसलिए मैं निवेदन करूंगा,

(श्री राजेन्द्र राठौड़)

उपाध्यक्ष महोदय, आगे से हम भी कोशिश करेंगे, वह भी कोशिश करें और आज जिस स्टेटमेंट के लिए पूरे राजस्थान के किसान बेसब्री से इंतजार कर रहे हैं कि मंत्री महोदय स्टेटमेंट दें, पाले पर स्टेटमेंट कराएं आप। जिस तरह आपने वहां व्यवस्था दी थी और राजाखेड़ा से आने वाले माननीय सदस्य ने कहा था, पहले स्टेटमेंट करा दें, इसके बाद जीरो आवर की कार्यवाही प्रारम्भ करें।

श्री उपाध्यक्ष: माननीय मंत्री महोदय स्टेटमेंट देंगे। (व्यवधान)

श्री हेमाराम चौधरी (नेता, प्रतिपक्ष): जो बीच में खड़े हुए, विपक्ष के नेता को बोलने नहीं दिया ...(व्यवधान) यह आपने कहा तो था, उस पर आपने क्या व्यवस्था दी? (व्यवधान)

श्री उपाध्यक्ष: वह तो सब ने कह दिया, शांति से, कोई टोका-टोकी...

श्री राजेन्द्र राठौड़ (सार्वजनिक निर्माण मंत्री): आपका सम्मान हम सब करते हैं, आपको अधिकार है बोलने का, आपके बीच में टोकाटोकी हम भी नहीं करें पर कुछ मर्यादाओं में आपके माननीय सदस्य भी रहें।

श्री घनश्याम तिवाड़ी (खाद्य एवं नागरिक आपूर्ति मंत्री): यह की यही बात है।

श्री उपाध्यक्ष: हां, बाकी... (व्यवधान)

श्री जुबेर खान (रामगढ़): एक मिनट सुन तो लीजिये कि दो मिनट बोलने की बात कही थी आपने कल...

श्री उपाध्यक्ष: विरोधी पक्ष के....

श्री जुबेर खान (रामगढ़): स्थगन प्रस्ताव पर, मेरे पर, उसका क्या हुआ?

श्री उपाध्यक्ष: बोल रहे हैं। (व्यवधान) बातें तय हो गईं। (व्यवधान)

श्री महावीर प्रसाद जैन (मुख्य सचेतक): अब वहां तय हो गई उन बातों को वापस यहां लाओगे तो सब बातें आएंगी। (व्यवधान)

श्री जुबेर खान (रामगढ़): बैठें न। कोई बात भी नहीं कह सकते क्या शालीनता से? हमने आसन से कोई बात कही, उन्होंने जवाब दे दिया, आप क्यों बीच में आते हैं? (व्यवधान)

एक माननीय सदस्य: कौन-कौन सी बातें आएंगी, यह तो बताइये? (व्यवधान)

शासकीय वक्तव्य

राज्य में पाले एवं शीतलहर से फसल को हुआ नुकसान

श्री लक्ष्मीनारायण दवे (सहायता मंत्री) : माननीय उपाध्यक्ष महोदय, फरवरी 2008 के प्रथम सप्ताह में राज्य के अधिकांश हिस्से में पाले एवं शीत लहर से किसानों द्वारा बोई गई फसल को क्षति पहुंचने की जानकारी प्राप्त हुई। यह सूचना मिलते ही दिनांक 10 फरवरी, 2008 को राज्य के सभी संभागीय आयुक्तों एवं जिला कलक्टरों को निर्देशित किया गया कि पाला व शीत लहर से प्रभावित क्षेत्रों का त्वरित मूल्यांकन करवाया जाए तथा सूचना दिनांक 14.02.2008 तक भिजवाई जाना सुनिश्चित किया जाएं। राज्य के जिलों से प्राप्त प्रारम्भिक आकलन के आधार पर राज्य सरकार ने दिनांक 15 फरवरी, 2008 को शीत लहर एवं पाला प्रभावित कृषकों के लिए सहायता पैकेज की घोषणा की। राज्य सरकार द्वारा घोषित सहायता पैकेज के महत्वपूर्ण बिंदु इस प्रकार हैं:- जिन काश्तकारों की बोई हुई फसल का पचास प्रतिशत से अधिक नुकसान हुआ है, उनमें सीमांत कृषकों को अधिकतम एक हैक्टेयर तथा लघु एवं वृहत् कृषकों को अधिकतम दो हैक्टेयर तक कृषि आदान अनुदान निम्न प्रकार देय होगा:- असिंचित फसल पर तीन हजार रुपये प्रति हैक्टेयर, सिंचित फसल पर डीजल ईंजन से सिंचित – छह हजार रुपये प्रति हैक्टेयर, बिजली के कुए व नहर से सिंचित- चार हजार रुपये प्रति हैक्टेयर। बोई गई फसल में पचास प्रतिशत से अधिक खराबा वाले लघु एवं सीमांत कृषकों के लिए चार माह का बिजली का बिल माफ किया जाएगा। जिन गांवों में पचास प्रतिशत से ज्यादा का नुकसान होगा उन गांवों को अभावग्रस्त घोषित किया जाकर भू-राजस्व स्थगित किया जाएगा तथा अल्पकालीन सहकारिता ऋणों की वसूली स्थगित कर उन्हें दीर्घकालीन ऋणों में परिवर्तित किया जाएगा। (व्यवधान) प्रभावित पचास प्रतिशत से अधिक खराबा वाले काश्तकारों का...

श्री उपाध्यक्ष: बीच में नहीं, माननीय सदस्य।

श्री सुरेन्द्र सिंह राठौर (श्रीगंगानगर): नहीं, नहरों के बारे में बोले ही नहीं।

श्री उपाध्यक्ष: बीच में नहीं आप। बीच में नहीं। (व्यवधान)

श्री लक्ष्मीनारायण दवे (सहायता मंत्री): नहर भी शामिल है। प्रभावित पचास प्रतिशत से अधिक खराबा वाले काश्तकारों का, सिंचाई विभाग द्वारा लिया जाने वाला आबियाना शुल्क माफ किया जाएगा। किसी काश्तकार द्वारा

(श्री लक्ष्मीनारायण दवे)

अपने स्वतंत्र रूप से नोशनल सेल के आधार पर या स्वतंत्र रूप से धारित भूमि का कुल रकबा यदि सीमांत व लघु कृषकों के लिए धारित रकबा के अनुसार ही हो तो उसे लघु सीमांत कृषक के अनुसार आदान अनुदान स्वीकृत किया जाएगा। राहत पैकेज में घोषित सहायता उन कृषकों को भी दी जाएगी जिनके नाम राजस्व रिकार्ड में दर्ज नहीं हैं पर जिन्होंने भूमि पर ठेकेदारी, बांटेदारी से फसल की है। ऐसे किसान बोई गई भूमि के खातेदारों से पांच रुपये के स्टाम्प पेपर पर सहमति प्राप्त कर तहसील स्तर पर गठित समिति के समक्ष प्रस्तुत करेंगे। इस प्रकार की समस्या के निर्णय हेतु संबंधित तहसीलदार व पटवारी तथा ग्राम सेवक की एक तीन सदस्यीय समिति का गठन किया जाएगा। यह समिति इस प्रकार के बिंदुओं पर निर्णय लेकर निर्धारण करेगी कि राहत किसे दी जानी है। इसके लिए कृषक को अपने खातेदार की लिखित सहमति इस समिति को देनी होगी। इस राहत पैकेज में सभी जिला कलक्टरों को यह भी निर्देशित किया गया है कि रबी फसल में पाला एवं शीत लहर से हुए नुकसान की वास्तविक गिरदावरी माह, 2008 के प्रथम सप्ताह तक करवा कर पैकेज के अनुसार किसानों को तुरंत सहायता वितरित की जावे। पाला एवं शीत लहर प्रभावित गांवों को अभावग्रस्त घोषित करने के लिए पचास प्रतिशत से अधिक खराबा वाले क्षेत्र की रिपोर्ट सूखा प्रबंधन संहिता के प्रपत्र 9(7)(डी) के अनुसार तैयार करवा कर उपलब्ध करवाई जावे ताकि राज्य सरकार द्वारा इन गांवों को अभावग्रस्त घोषित करने की कार्यवाही की जा सके।

केन्द्र सरकार द्वारा आपदा राहत कोष के वर्तमान में नवीनतम घोषित मापदण्ड दिनांक 27 जून, 2007 के अनुसार सीआरएफ स्कीम के अन्तर्गत पाला एवं शीत लहर को नोटिफाइड कैलेमिटी में शामिल नहीं किया गया है लेकिन राज्य के किसानों की गम्भीर स्थिति को दृष्टिगत रखते हुए राज्य सरकार ने अपने संसाधनों से उक्त सहायता पैकेज घोषित किया है। प्रारम्भिक आकलन के अनुसार इस राहत पैकेज के वितरण में अनुमानित 126 करोड़ रुपये व्यय होने का आकलन किया गया है लेकिन गिरदावरी के बाद प्रभावित होने वाले वास्तविक काश्तकारों को इस पैकेज के तहत सहायता उपलब्ध कराई जाएगी चाहे राशि इस प्रारम्भिक आकलन 126 करोड़ रुपये से अधिक ही क्यों न हो। पाला एवं शीत लहर को आपदा राहत कोष के अन्तर्गत अधिसूचित प्राकृतिक आपदा में शामिल करने के लिए माननीय मुख्य मंत्री महोदय ने केन्द्रीय गृह मंत्री को दिनांक 31.01.2008 एवं 12.02.2008 को दो पत्र दिये

(श्री लक्ष्मीनारायण दवे)

तथा दिनांक 12.02.2008 को माननीय केन्द्रीय गृह मंत्रीजी से इस विषय पर विस्तृत चर्चा भी की। माननीय उपाध्यक्ष महोदय, दिनांक 7.2.2008 को मेरे ओर से भी माननीय केन्द्रीय गृह मंत्रीजी को इस आशय का एक विस्तृत पत्र लिखा गया जिसमें पाला एवं शीत लहर को सीआरएफ की अधिसूचित प्राकृतिक आपदा में शामिल करने हेतु निवेदन किया गया है।

श्री हेमाराम चौधरी (नेता, प्रतिपक्ष): कृषि या गृह?

श्री लक्ष्मीनारायण दवे (सहायता मंत्री): इसके अतिरिक्त मेरी ओर से राज्य के सभी माननीय संसद सदस्यगण को इस विषय का पत्र लिखकर यह निवेदन किया गया कि राजस्थान के किसानों के हित एवं उनकी आर्थिक सुरक्षा को ध्यान में रखते हुए माननीय प्रधान मंत्री, माननीय केन्द्रीय गृह मंत्री एवं माननीय केन्द्रीय कृषि मंत्री से विशेष आग्रह करते हुए इस मुद्दे को संसद के वर्तमान सत्र में गम्भीरता से उठाया जावे।

इस प्रकार उपरोक्त विवेचन से यह स्पष्ट है कि राज्य सरकार पाला एवं शीत लहर से उत्पन्न इस स्थिति पर पूर्ण गम्भीर है तथा त्वरित आवश्यक कार्यवाही कर रही है। इस अवसर पर मैं, माननीय उपाध्यक्ष महोदय, आपके माध्यम से सदन के सभी माननीय सदस्यों से निवेदन करता हूं कि एक सर्वसम्मत प्रस्ताव इस आशय का पारित कर केन्द्र सरकार को प्रेषित किया जावे कि पाला एवं शीत लहर को सीआरएफ के द्वारा नोटिफाइड प्राकृतिक आपदा में शीघ्र शामिल किया जावे ताकि भविष्य में भी राज्य के किसानों को इस प्रकार के संकट की घड़ी में प्रभावी एवं उचित राहत प्रदान कराई जावे। माननीय उपाध्यक्ष महोदय, मैं पक्ष और विपक्ष के तमाम माननीय सदस्यों से आग्रह करना चाहता हूं, राज्य का यह पवित्र सदन है और राज्य की साढ़े पाँच करोड़ जनता का यह सदन आस्था और विश्वास का केन्द्र है और राज्य के किसानों पर शीत लहर एवं पाले का जो प्रभाव पड़ा है, उससे किसानों की आर्थिक स्थिति पर प्रभाव पड़ा है। राजस्थान की स्वतंत्रता के पश्चात् इस भारतीय जनता पार्टी की सरकार और राजस्थान की मुख्य मंत्री ने पहली बार शीत लहर और पाले पर यह जो आर्थिक पैकेज, जो अनुदान का पैकेज दिया है, निश्चित रूप से यह सराहनीय है। पाला इसके पहले भी पड़ता रहा, शीत लहर इसके पहले भी होती रही, माननीय उपाध्यक्ष महोदय, जैसी राजस्थान की भौगोलिक परिस्थिति है, राजस्थान का दो तिहाई भाग मरूस्थलीय क्षेत्र है

(श्री लक्ष्मीनारायण दवे)

जिसमें सबसे ज्यादा प्रभावित अकाल से यहां की जनता जूझती है। दूसरा बाढ़ और तीसरा है पाला और शीत लहर। पाला और शीत लहर ये पहले भी थी, परम्परा से चल रही है और यहां का किसान प्रभावित होता रहा है। पंजाब की जहां तक स्थिति है, माननीय उपाध्यक्ष महोदय, वहां अकाल की स्थिति नहीं होती है, वहां पानी पर्याप्त मात्रा में है, वहां मात्र पाला और शीत लहर है। हरियाणा के अंदर पाला और शीत लहर है, पर राजस्थान की जैसी भौगोलिक स्थिति है, एक तरफ तो किसान अकाल से जूझता है, बाढ़ से जूझता है और दूसरी तरफ पाला और शीत लहर से जूझता है। मैं माननीय प्रतिपक्ष के तमाम नेताओं को व माननीय प्रतिपक्ष के नेता से आग्रह करना चाहूंगा कि यह जो मामला है यह राजस्थान के किसानों के हित का मामला है,

किसानों के हित की बात, पर चर्चा के लिए राजस्थान के सदन में पक्ष और विपक्ष को यहां पर भेजा गया है, और मैं उम्मीद करता हूं कि एक इस प्रकार का संकल्प पारित कर भारत सरकार पर का दबाव डालें आग्रह करें कि जो नोटिफाई कैलेमिटी है उसके अंदर शीत लहर और पाले को इसमें इनक्लूड करें ताकि भारत सरकार के द्वारा जो नॉर्म्स निर्धारित हैं उन नॉर्म्स के आधार पर आने वाले समय में भी अनुदान दिया जा सके।

मैं आज माननीय मुख्य मंत्रीजी और भारतीय जनता पार्टी को धन्यवाद देना चाहता हूं कि यह इतिहास एक कायम किया। पाले पर और ओलावृष्टि के अंदर भी भारतीय जनता पार्टी ने जिस हिसाब से अनुदान दिया है, माननीय उपाध्यक्ष महोदय आपसे निवेदन करना चाहता हूं कि विशेष पैकेज में अतिरिक्त विशेषताएं हैं। सीआरएफ के नॉर्म्स के अंदर असिंचित फसल जो प्रभावित होने पर दो हजार के नॉर्म्स है परंतु इस भारतीय जनता पार्टी की सरकार ने पाला और शीत लहर में तीन हजार रुपये प्रति हैक्टेयर के देने की व्यवस्था की है जो सीआरफ के नॉर्म्स से अधिक है। दूसरा डीज़ल पम्पसैट पर जो तीन हजार रुपए देने का है, बिजली के द्वारा इर्रिगेशन कराने पर चार हजार था, माननीय उपाध्यक्ष महोदय हमने छह हजार रुपये का पैकेज दिया है। इसी तरह आबियाना माफ करना, भू-राजस्व स्थगित करना, सहकारी ऋणों को दीर्घकालीन ऋणों में परिवर्तन करना। सीआरफ के नॉर्म्स में देय नहीं होने के बाद में भी इस सरकार ने आबियाना माफ करने का और राजस्व की वसूली

(श्री लक्ष्मीनारायण दवे)

को स्थगित करने का एक ऐतिहासिक निर्णय दिया है। मैं तमाम सदस्यों से आग्रह करना चाहूंगा जो किसानों की हित की बात करते हैं, किसानों के पक्ष की बात करते हैं, माननीय उपाध्यक्ष महोदय, कल हिसाब से उस फसल को जिस अनाज को हम भगवान का स्वरूप मानते हैं, अन्न को देवता मानते हैं, उन देवताओं को राजस्थान के इस पवित्र सदन में उछाल कर जो अपमान किया है, निश्चित रूप से यह शर्मनाक बात है। यह अन्न देवता है जो हमें रोटी देता है जिसके कारण हम ज़िंदे हैं। जो हमारी हर कसरत है, रात और दिन कड़ी मेहनत कर जो पूरे भारतवर्ष, पूरे राजस्थान को अन्न की सप्लाई होती है उसको आकाश में उड़ाना, उसकी धज्जियां उड़ाना, उसका अपमान करना निश्चित रूप से यह चिंता का विषय है। मैं, उपाध्यक्ष महोदय, निवेदन करना चाहता हूं कि पूरा सदन यह संकल्प पारित करे कि सीआरफ के नॉर्म्स में जो नोटिफाइड कैलेमिटी है उसमें शीत लहर, पाले और लू को सम्मिलित किया जाए।

श्री खुशवीर सिंह जोजावर (खारची): माननीय उपाध्यक्ष महोदय, मैं माननीय मंत्री महोदय से यह कहना चाहूंगा, जिस जिले से माननीय मंत्री महोदय आ रहे हैं वहां आंकलन गलत किया गया ...(व्यवधान)

श्री उपाध्यक्ष: माननीय सदस्य आपका अंकित नहीं होगा।

श्री खुशवीर सिंह जोजावर (खारची): ०००

श्री उपाध्यक्ष: आपका अंकित नहीं होगा, आप बीच में बोल रहे हैं। माननीय सदस्य, आप बिना परमिशन के खड़े हो गये हैं।

श्री खुशवीर सिंह जोजावर (खारची): ×××

श्री उपाध्यक्ष: माननीय सदस्य, आपका अंकित नहीं हो रहा है। आप बीच में बोल रहे हैं। आप बिना परमिशन बोल रहे हैं। आप बैठिए, बीच में नहीं। (व्यवधान)

श्री खुशवीर सिंह जोजावर (खारची): ×××

श्री सी. डी. देवल (रायपुर): ×××

श्री उपाध्यक्ष: आपका कुछ भी अंकित नहीं हो रहा है, आप विराजें। कुछ भी अंकित नहीं होगा। आप समय क्यों खराब कर रहे हैं? आप सदन का समय खराब कर रहे हैं, आपका अंकित नहीं होगा। माननीय अमरारामजी, आप ठहरिये थोड़ा-सा, पहले जुबेर खां बोल रहे हैं।

श्रीमती प्रतिभा सिंह (नवलगढ़): ×××

श्री उपाध्यक्ष: आपको बोलने का मौका दिया जाएगा, आप स्थान ग्रहण कीजिए। बीच में नहीं, आपको मौका देंगे बोलने का, स्थान ग्रहण कीजिए आप। पहले बैठिए आप।

श्री सुरेन्द्र सिंह राठौर (श्रीगंगानगर): ×××

श्री उपाध्यक्ष: बैठिए पहले आप। ...(व्यवधान) सुझाव सुनेंगे, पहले जुबेर खां को बोलने दीजिए। बैठिए आप, मैंने इनका नाम पुकार लिया है इसके बाद आपको मौका देंगे, आप बैठिए।

श्री जुबेर खान (रामगढ़): माननीय उपाध्यक्ष महोदय, सहायता और आपदा मंत्री ने जो वक्तव्य दिया है, एक तो पाले से और शीत लहर से कौन-कौनसे जिलों में नुकसान हुआ है, यह आपको अपने वक्तव्य में बताना चाहिए। दूसरा आपके माध्यम से निवेदन है कि कौन-कौनसी फ़सलें आप इसमें लेने जा रहे हैं? तीसरा मंत्री महोदय ने कहा कि सीमान्त कृषक को एक हैक्टेयर के ऊपर मुआवजा मिलेगा, लघु के ऊपर दो हैक्टेयर का मिलेगा, मैं यह जानना चाहता हूं कि अगर कोई व्यक्ति यहां तक भी है जो आप गिरदावरी करा रहे हैं, वहां अगर किसी व्यक्ति के पास जितनी जमीन है उस जमीन का 50 प्रतिशत जमीन में खराबा है और उस 50 प्रतिशत जमीन में भी 50 प्रतिशत से ज्यादा खराबा होगा तब आप उनको सहायता देंगे, अगर किसी आदमी के 20 बीघा जमीन है और उसकी 7 बीघा जमीन में नुकसान हुआ है तो क्या आप उसको नहीं देंगे? यह आप अपने उत्तर में बताइए। इससे बहुत से किसान वंचित रह जाएंगे। आपने दूसरी बात कही है कि तीन हजार रुपए असिंचित के देंगे, छह हजार रुपए डीज़ल सैट से जो सिंचाई हो रही है, चार हजार रुपये जो बिजली से सिंचाई हो रही है आप यह पैसा पर हैक्टेयर देंगे या प्रति बीघा देंगे? अगर प्रति हैक्टेयर देंगे तो तीन हजार रुपये का साढ़े सात सौ रुपये बीघा, छह हजार का पन्द्रह सौ रुपये बीघा और चार हजार का एक हजार रुपये बीघा तो आप ऊँट के मुंह में जीरा का काम करेंगे? क्या साढ़े सात सौ रुपये से किसान का पेट भर जाएगा जिसने इतनी मेहनत करके फसल लगाई है? मंत्री महोदय, आपने यह बात कही कि सीआरफ के नॉर्म्स में नहीं आता है, यह तो आप गत बजट में कह चुके हैं। आपने कहा है पिछले 2005-06 के बजट में कि जो सीआरफ के नॉर्म्स में जो फ़सलें नहीं आती, जो खराबी नहीं आतीं है, हम उसकी व्यवस्था करेंगे। आपने अपने घोषणा पत्र में भी कहा था कि हम 175

(श्री जुबेर खान)

करोड़ से किसान कल्याण कोष बनाएंगे। दूसरा कहा था कि आकस्मिक आपदाओं के समय किसानों को हमेशा केन्द्र की ओर नहीं देखना पड़े, इस हेतु 250 करोड़ रुपए का किसान कल्याण कोष बनाएंगे। यह आपका जन-जन का सपना जो आपने मैनिफेस्टो बनाया था, आज क्यों सीआरफ की तरफ देख रहे हो? आप तो 2003 के चुनाव में ही यह बात कह चुके थे, जनता के सामने कह चुके थे कि हमको सीआरफ की तरफ नहीं देखना पड़े, हम कल्याण कोष बनाएंगे, आपदा सहायता कोष बनाएंगे किसान के लिए। क्या हुआ आपका 250 करोड़ रुपए का और 175 करोड़ रुपये का? आज किसान देख रहा है, कहां आप दे रहे हैं? आप यह मत कहिए। आज सीआरफ के नॉर्म्स हर प्रांत के लिए हैं। हरियाणा और पंजाब में देख लीजिए, किसानों को चाहे जो भी नुकसान होता हो, चाहे पाले से हो, ओलावृष्टि से हो, अतिवृष्टि से हो, कितनी मदद करते हैं। सीआरफ आपको कहीं रोक नहीं लगाती है। आपका 421 करोड़ रुपए जो 2005 में प्लान खतम हुआ है उसको आप प्लान में डलवाने जा रहे हैं। अगर प्लान में डल जाता है तो आपको कोई राइडर नहीं होगा कि आप 421 करोड़ रुपए को राजस्थान के गरीब किसानों के लिए इस्तेमाल नहीं कर सकते हैं। आपको करना चाहिए। आपको अभी भी एक हजार रुपये मिलने वाले हैं, इस सत्र में भी, आप आगे बढ़िये। अगर यह कह कर कि केन्द्र सरकार ने कुछ नहीं किया, हम कर रहे हैं, आप पहले ही जनता से इस आधार पर वोट मांग चुके हैं। एहसान नहीं कर रहे हैं, राजस्थान की जनता आपको सत्ता में इस मेनीफेस्टो के आधार पर लायी है इसलिए आप और लोगों को मुआवजा दीजिये।

अंत में, आपकी गिरदावरी जो हो रही है उपाध्यक्ष महोदय, मैं आपसे ईमानदारी से निवेदन करना चाहता हूं कि पटवारी और गिरदावरों को ये निर्देश दिये गये हैं कि कम से कम खराबा दिखाया जाए। यह आप किसानों के साथ हित कर रहे हैं? आप वाहवाही ले लीजिये, लेकिन 126 करोड़ रुपये की घोषणा कर दी, अगर किसानों को समय पर और ईमानदारी से, जो उनको नुकसान हुआ है उतना पैसा नहीं मिलेगा तो आपकी घोषणा थोथी रहेगी और ये जो आप हर बार हर चीज को मुंगेरी का सपना दिखा देते हैं कि यह आपके साथ है, गलत बात रहेगी। किसानों के साथ अन्याय मत करिये। आप किसानों को देना चाहते हैं, दिल खोल कर दीजिये। आप तो कह रहे हैं कि हमारा तो इतना

(श्री जुबेर खान)

वित्तीय प्रबंधन है, सरप्लस में बजट है हमारा। इतने बड़े आकार की योजना बना दी तो किसान से बड़ा इस राजस्थान में कौन है? आज इस राजस्थान के साठ प्रतिशत से ज्यादा आदमी किसान हैं, खेती करते हैं, आप उनके लिए अपने बजट का खाता क्यों नहीं खोलते? आज स्थिति यह है कि फसल खड़ी दिख रही है लेकिन उसमें दाना नहीं है। सरसों का दूर से देखेंगे पटवारी, हरी फसल नजर आ रही है लेकिन दाना मर चुका है खतम हो गया। मवेशी नहीं बचा है। साग-सब्जी का नुकसान हुआ है। फसलों में सरसों हो, गेहूं हो, जीरा हो, धनिया हो, चाहे कोई भी फसल हो और चाहे कोई भी सब्जी हो, आप सब सब्जियों को भी, फल फ्रूट्स को, भी और सारी फसलों को इसमें शामिल कराइये, तब तो सही मायने में आप किसानों के हितैषी माने जाएंगे नहीं तो वाहवाही झूंठी ले लीजिये। प्रस्ताव यहां पास कर लें, सीआरएफ से पैसा ले लीजिये आपके पास तो पैसे की कमी नहीं है, आपके बार बार स्टेटमेंट आते हैं। आगे बढ़िये और उदाहरण पेश करिये हरियाणा और पंजाब का, सीआरएफ नार्म्स से आगे हट कर ज्यादा से ज्यादा किसानों को मदद की जाए, यह मैं आपके माध्यम से मांग करता हूं, उपाध्यक्ष महोदय।

श्री उपाध्यक्ष: मैं माननीय सदस्यों से निवेदन करूंगा कि नियम 50 के अन्तर्गत भी कई लोगों के प्रस्ताव आये थे और बाकी कइयों ने आज पर्ची भी दी है दो सदस्यश्री गोपाल बाहेती और श्री सुरेश चौधरी ने इसी सिलसिले में।

श्री अमराराम (धोद): पहले नियम 50 वालों को तो कहने दो साहब।

श्री उपाध्यक्ष: मेरा आपसे निवेदन यह करना है कि अकाल राहत के ऊपर भी बहस होगी, अलग से समय दिया जाएगा इसलिए शार्ट में आप दो-दो मिनट में अपनी बात कहें तो ज्यादा अच्छी बात है। अमराराम जी।

श्री सुरेन्द्र सिंह राठौर (श्रीगंगानगर): मैं केवल दो मिनट चाहता हूं।

श्री अमराराम (धोद): माननीय उपाध्यक्ष महोदय, सहायता मंत्री ने...

श्री सुरेन्द्र सिंह राठौर (श्रीगंगानगर): माननीय अमरा राम जी, एक मिनट । अमरा राम जी प्लीज।

श्री अमराराम (धोद): मेरे को अलाउ किया है आप बाद में बोल लेना।

श्री सुरेन्द्र सिंह राठौर (श्रीगंगानगर): एक मिनट में बात खतम करता हूं, प्लीज। अमराराम जी, प्लीज हाथ जोड़ कर विनती करता हूं।

(श्री सुरेन्द्र सिंह राठौर)

माननीय उपाध्यक्ष महोदय, अभी जो मंत्री महोदय ने वक्तव्य दिया मुझे तो इनका जो किसानों के प्रति ज्ञान है, फसलों के प्रति ज्ञान है उसको जानकर बहुत ही खेद हुआ। कह रहे है कि अनाज भगवान माना जाता है, सही मायने में माना जाता है। पर सरसों को इन्होंने कब से अनाज मान लिया? सरसों तो तिलहन होती है, अनाज नहीं होता है। दूसरा, आपने ट्यूबवैल, डीजल इंजन और दूसरी व्यवस्था से इर्रिगेशंस जितनी हैं उसको तो बता दिया कि क्या मिलेगा, लेकिन जो नहरी क्षेत्र में पाले की मार सबसे ज्यादा हुई है वहां आपने क्या किया है? कोई थोड़ा बहुत दृष्टिपात तो करते। हमें बताते, गंगानगर, हनुमानगढ़ जिला और बाकी बीकानेर जिला और जैसलमेर तक के सारे जो इर्रिगेशन हो रहे हैं उनमें आप क्या दे रहे हो यह तो आपने बिलकुल भी नहीं बताया। और तीसरा, आपने जो हैक्टेयर के रूप में बताया है, हमारे किसानों को मैं सही मायने में बताता हूं कि कपास नरमा उसमें तो कम से कम अठारह हजार रुपये बीघा की आमदनी होती है और पन्द्रह हजार के करीब गेहूं में आमदनी होती है और वो ही सरसों में होती है। पर आप तो तीन सौ रुपये, पाँच सौ रुपये देकर उस किसान को क्या करवाना चाहते हैं?

श्री उपाध्यक्षः बस, यह आ गयी आपकी बात।

श्री सुरेन्द्र सिंह राठौर (श्रीगंगानगर): बीज भी नहीं आता है तीन सौ रुपये में तो ।

श्री उपाध्यक्षः आ गयी, बात आ गयी। माननीय अमरा रामजी।

श्री सुरेन्द्र सिंह राठौर (श्रीगंगानगर): तो यह मेरे को कम से कम जवाब तो दिलवाना, साहब।

श्री अमराराम (धोद): माननीय उपाध्यक्ष महोदय, अभी सहायता मंत्री जी ने बयान दिया है, कि पहली बार मैं समझता हूं राजस्थान में इतनी लंबी सर्दी, शीतलहर और पाला पडा है, जनवरी से लेकर 12 फरवरी तक। शायद पिछले पचास साल में इतनी लंबी सर्दी और इतना नुकसान ...

श्री कालूलाल गुर्जर (ग्रामीण विकास एवं पंचायती राज मंत्री): नहीं, नहीं, बिलकुल गलत है।

श्री अमरा राम (धोद): अब बिलकुल गलत है, तो आपको तो लगा नहीं पाला, आप तो मंत्री हैं। नहीं पाला पड़ा है, लेकिन इतनी लंबी सर्दी, एक दिन, दो दिन, पाँच दिन पड़ती थी, एक महीने, सवा महीने तक। 12-13 फरवरी तक...

श्री सुरेन्द्र सिंह राठौर (श्रीगंगानगर): अमरा रामजी, एक बात भूल गया था इसमें। जो पाला था और जो इन्होंने दूसरी क्या आपदा मानी है...

श्री उपाध्यक्ष: वो अमरा रामजी कह देंगे।

श्री अमराराम (धोद): वो मैं बोल दूंगा।

श्री सुरेन्द्र सिंह राठौर (श्रीगंगानगर): ... शीतलहर लेकिन इसमें अतिवृष्टि को कहीं भी जगह नहीं दी गयी है जो कि बरसात के दिनों में आती है। बाड़मेर जैसे एरिया में अतिवृष्टि होकर जब वहां बिलकुल बह सकता है तो हर जगह अतिवृष्टि हमेशा होती है। अतिवृष्टि को इसमें शामिल करना चाहिए।

श्री उपाध्यक्ष: वो देखेंगे होगी तब।

श्री अमराराम (धोद): माननीय उपाध्यक्ष महोदय, पहली बार इतना भारी राजस्थान में मैं समझता हूं कि 1000-1500 करोड़ से ज्यादा का नुकसान शीतलहर से हुआ है। इसमें जो मदद का सवाल है कि सीमांत काश्तकार का बिल माफ होगा, सीमांत काश्तकार तीन बीघा में कोई भी बिजली का कनेक्शन नहीं लेता। यह जो बिजली का बिल है, मैं समझता हूं कि नुकसान सबके हुआ है लघु और सीमांत के बिजली का तो हो सकता है नहरी इलाके में कुछ हो जाए क्योंकि नहरी इलाके में सीमांत और लघु भी सिंचाई करता है। लेकिन बिजली के मामले में लघु और सीमांत काश्तकार जो तीन बीघा का होता है वो कोई भी कुआ नहीं बनाता। हो सकता है कहीं दूसरे से पानी लेता हो। इसलिए जहां तक बिजली के बिल का सवाल है, मैं समझता हूं कि तमाम किसानों का शीतलहर से नुकसान हुआ है इसलिए तमाम किसानों को चार महीने का नहीं पूरी रबी की फसल के लिए 6 महीने का बिल माफ किया जाए। यह राइडर रहेगा तो मैं समझता हूं कि पाँच प्रतिशत किसानों का भी बिजली का बिल माफ नहीं होगा। इस यह राइडर का तो मतलब यह है कि किसी का भी बिजली का बिल माफ नहीं होगा।

दूसरा उपाध्यक्ष महोदय, अभी गिरदावरी के लिए जो प्रोफार्मा जारी किया गया है उसमें इस तरह का प्रोविजन किया गया है। इस तरह से गिरदावरी होगी तो किसी भी किसान को सहायता नहीं मिलेगी। कुल बोये हुए क्षेत्रफल से खराबे का प्रतिशत, बीस बीघा में तीस बीघा में फसल है, अगर 15-20 बीघा में गेहूं है उसमें बीस प्रतिशत ही नुकसान हुआ है और दूसरी सरसों या जीरों या ईसबगोल या सब्जी बोयी है उसमें शत प्रतिशत हो गयी तो इस गिरदावरी के हिसाब से तो मैं समझता हूं कि किसान की सरसों में शत

(श्री अमरा राम)

प्रतिशत हो गयी। सीकर, झुंझुनू और नागौर में पूरी की पूरी सरसों को प्लाऊ से दबा दिया । आप अंदाजा कीजिये, अगर खराबा नहीं होता है तो कोई भी किसान अगर बीस-तीस प्रतिशत भी सरसों बचती है तो सरसों की खड़ी फसल पर प्लाऊ चला कर उस फसल को नहीं दबाता। इसमें पूरे बोये हुए क्षेत्रफल में पचास प्रतिशत से अधिक नहीं होगा, यह मंत्री महोदय जब स्पष्टीकरण करें। सरसों शत-प्रतिशत हो गया, जीरे में शत-प्रतिशत हो गयी, चना शत-प्रतिशत हो गया, तीन फाल आते हैं दो फाल चले गये। जो कुछ भी गेहूं की फसल बची हुई है अभी भी, जितनी बुआई की उतनी बिजली नियमित नहीं देकर, इस शीतलहर के वक्त में सुबह चार बजे बीस मिनट के लिए बिजली देकर पाला जमाने का काम करके उस फसल को तबाह करने का सरकार ने जान बुझकर काम किया। ये आरोप और प्रत्यारोप लगते रहें कि सीआरएफ में शामिल नहीं किया गया है। आज भी शामिल नहीं है, चार साल पहले आप भी वहां थे, न इस सरकार का नुकसान हुआ है न दिल्ली में बैठी हुई सरकार का नुकसान हुआ है। राजस्थान के किसान का नुकसान हुआ है केवल बयान देने से नहीं होगा ...(व्यवधान) नुकसान से ज्यादा फायदे कई हैं।

श्री युनूस खान (यातायात मंत्री): ...(व्यवधान) पूरा आंवला खतम हो गया, नींबू खतम हो गया। ये सरकार में बैठे हैं ये तो बोल ही नहीं रहे।

(13.00 बजे)

श्री अमराराम (धोद): मैं कह रहा हूं, केवल बयान देते रहे तो चार साल पहले आप भी उस सरकार में थे (व्यवधान) लेकिन किसान की 1500-2000 करोड़ की फसल का नुकसान हुआ है उसकी मदद हो, शत-प्रतिशत नहीं तो कम से कम 50-25 प्रतिशत हो । सब के बिल माफ हो । उसने इस फसल के लिये जो फसली ऋण लिया था, खाद बीज के लिये, वह तमाम फसल नष्ट हो गई । उसने पूरी लागत लगाई, वह पूरी फसल नष्ट हो गई और आप उसको केवल लाग टर्म में बदलेंगे । मैं समझता हूं, वह पूरा का पूरा, जो फसली ऋण लेकर उसने फसल में लगाया था, वह फसल नष्ट हो गई, वह ऋण माफ होना चाहिये । जब बडे बडे पैसे वालों का 5-5 सौ करोड़ माफ हो सकता है तो किसान जिसकी 1500-2000 करोड की फसल नष्ट हुई है? सरकार का खजाना भरा हुआ है, वह क्या राजस्थान के पाँच करोड़ किसानों के लिये नहीं है? जो 126 करोड़ की घोषणा की गई है इसका लाभ उस किसान तक नहीं मिलेगा, इसलिए आबियाना माफ किया जाये, 6 महीने का रबी की

(श्री अमरा राम)

फसल का बिल माफ किया जाये, फसली ऋण माफ किया जाए। जितना मैं समझता हूं, जो कुछ किया गया है वह तमाम किसानों को दिया जाए। इसी को लेकर पूरे राजस्थान का किसान आज जिला कलक्टर के कार्यालयों के सामने प्रदर्शन कर रहा है, विधान सभा के सामने भी जयपुर जिले के किसान इसी व्यथा को लेकर आये हैं। केवल सीमांत किसान का बिल माफ करने से उसकी मदद नहीं होगी। शत प्रतिशत वह पैसा उस किसान तक पहुंचे, कोई राइडर नहीं होना चाहिये । मैं 23 तारीख को सीकर के पिपराली गांव में गया था, वहां एक भी पटवारी एक भी गांव में नहीं गया है, घर बैठकर गिरदावरी कर रहा है। और पटवारी तो बता ही नहीं सकता जब तक आपका एग्रीकल्चर का व्यक्ति नहीं जाएगा।

श्री घनश्याम तिवाड़ी (खाद्य एवं नागरिक आपूर्ति मंत्री): अब आप पिपराली में क्यों घूम रहे हो, उधर घूमो ।

श्री अमरा राम (धोद): मैं तो पूरा ही घूमता हूं, पिपराली भी और यहां भी । उपाध्यक्ष महोदय, हालत यह है कि पटवारी एक भी गांव में नहीं गया है और पटवारी नहीं बता सकता जब तक कृषि अधिकारी ....

श्री राजेन्द्र राठौड़ (सार्वजनिक निर्माण मंत्री): उपाध्यक्ष महोदय, परम्परा यह है कि मंत्री महोदय के स्टेटमेंट के बाद कोई पाइंटेड प्रश्न पूछना चाहें तो वह पूछ ले । यह तो भाषण चालू हो गया, बहस चालू कर दी ।

श्री अमरा राम (धोद): मैं पाइंटेड ही पूछ रहा हूं ।

श्री राजेन्द्र राठौड़ (सार्वजनिक निर्माण मंत्री): यह कहां पाइंटेड है? यह आधे आधे घंटे का भाषण हो रहा है ।

श्री अमरा राम (धोद): उपाध्यक्ष महोदय, यह प्रोफोर्मा है जिसमें बाकायदा लिखा है, पूरी बोई हुई फसल में कितना प्रतिशत नुकसान हुआ है। इसी प्रोफोर्मासे गिरदावरी की गई तो यह 126 करोड रुपया भी खजाने में ही रह जाएगा । यह प्रोफोर्मा आप चाहें तो मैं टेबल कर सकता हूं। किसान की सबसे बडी चिंता है, इतनी फसल नष्ट होने के बाद आपने जो कुछ घोषणा की है वह भी सही ... (व्यवधान) मेरा आपके माध्यम से निवेदन है कि दुरुस्त करायी जाए। पटवारियों के साथ साथ अभी तक नहीं आया, आज 27 तारीख है और आज तक .... (व्यवधान)

श्री सांगसिंह भाटी (जैसलमेर): ×××

श्री रामनारायण मीणा (नैनवां): ×××

श्री उपाध्यक्ष: माननीय सदस्य, आपका कोई अंकित नहीं हो रहा ।

श्री राजेन्द्र राठौड़ (सार्वजनिक निर्माण मंत्री): उपाध्यक्ष महोदय, मैं यह प्रार्थना कर रहा था कि इसी संदर्भ में दो माननीय सदस्यों-पुष्कर और भादरा से आने वाले माननीय सदस्य की पर्ची भी निकली है, यही विषय है और जब यह विषय चल ही रहा है तो उनको भी इनके साथ ही दो दो मिनट का मौका दे दें ताकि डिस्पोज हो जाए।

श्री उपाध्यक्ष: डा. किरोडीलाल मीणा । (व्यवधान)

श्री रिछपाल सिंह मिर्धा (डेगाना): ×××

श्री उपाध्यक्ष: यह अकाल राहत मंत्री रह चुके हैं, आपको इनके बाद बुलाएंगे ।

श्री रिछपाल सिंह मिर्धा (डेगाना): ×××

श्री उपाध्यक्ष: आपका नाम है इसमें ।

श्री सी. डी. देवल (रायपुर): ×××

श्री उपाध्यक्ष: सबके लिये थोड़े ही कहा था, आप बैठिए ।

श्री सी. डी. देवल (रायपुर): ×××

श्री उपाध्यक्ष: आप समय बर्बाद कर रहे हैं । माननीय सदस्य, आपका कोई अंकित नहीं हो रहा, आप समय बर्बाद कर रहे हैं ।

डा. किरोड़ी लाल (सवाईमाधोपुर): उपाध्यक्ष महोदय, यह बात सही है कि राज्य सरकार सीआरएफ की गाइड लाइन से बाहर जाकर मदद नहीं कर सकती । जो स्पेशल पैकेज राजस्थान की सरकार ने दिया है उसके लिये मैं मुख्य मंत्री जी का आभार प्रदर्शन करना चाहता हूं । उपाध्यक्ष महोदय, एक बात इसमें महत्वपूर्ण है कि दर्जनों पत्र मेरे समय में भी भारत सरकार को लिखे गये, अब भी पत्र लिख दिये गये, मेरे को लगता नहीं कि भारत सरकार किसी प्रकार का रिलैक्सेशन दे देगी या हमारे पत्रों पर विचार कर लेगी। किन्तु मैं सदन का ध्यान आकर्षित करना चाहता हूं, चाहे ओलावृष्टि हो चाहे अतिवृष्टि हो, चाहे पाल, शीत लहर हो, मौसम के बदल हुए मिज़ाज के कारण यह होता है । आप किसान के बेटे हो आप जानते हो । मंत्री महोदय ने रखा कि हम भारत सरकार को सर्व सम्मत प्रस्ताव भेजें, उस सर्वसम्मत प्रस्ताव का भी

(डा. किरोडी लाल)

कुछ नहीं होने वाला है । आप सभी जानते हैं कि ओलावृष्टि भी मौसम के बदले हुए मिज़ाज के कारण हुई और अनावृष्टि, अतिवृष्टि, पाला और शीत लहर भी, इसलिए सदन में इस ढंग का प्रस्ताव पारित कर लिया जाए कि मौसम के बदले हुए मिज़ाज के कारण पाला पड़ा है, शीतलहर पड़ी है इसलिए सीआरएफ का जितना भी पैसा है वह किसानों को बांटा जाना चाहिये, दिया जाना चाहिये। यह मेरा सुझाव है क्योंकि इस .... (व्यवधान)

श्री सी. डी. देवल (रायपुर): ×××

डा. किरोड़ी लाल (बामनवास): आप विराजो।

श्री सी. डी. देवल (रायपुर): ×××

श्री धर्मपाल चौधरी (संसदीय सचिव): ×××

श्री सी. डी. देवल (रायपुर): ×××

श्री धर्मपाल चौधरी (संसदीय सचिव): ×××

श्री उपाध्यक्ष: माननीय सदस्य, माननीय सदस्य । माननीय देवल साहब आप बैठ जाइए।

श्री सी. डी. देवल (रायपुर): ×××

श्री उपाध्यक्ष: माननीय सदस्य, आपका कुछ भी अंकित नहीं हो रहा, आप बैठ जाइए।

श्री सी. डी. देवल (रायपुर): ×××

श्री उपाध्यक्ष: माननीय सदस्य, माननीय सदस्य ।

श्री सी. डी. देवल (रायपुर): ×××

श्री उपाध्यक्ष: माननीय देवल साहब, आप बार बार बिना परमिशन के खडे हो रहे हैं, यह ठीक बात नहीं है । मैं आपका नाम पुकार लूंगा और आपको बाहर कर दूंगा । यह गलत बात है। आप बिना परमिशन लिये हर टाइम खडे हो जाते हैं, यह बात गलत है और परम्परा के विरुद्ध है । आप आसन की परमिशन से बोलिए ।

डा. किरोड़ी लाल मीणा (बामनवास): उपाध्यक्ष महोदय, मेरी आपसे प्रार्थना है, सीआरएफ के पैसे में भारत सरकार के रिलैक्सेशन की मेरे को आशा नहीं है इसलिए सदन में प्रस्ताव पारित कर लें कि मौसम के बदले हुए मिज़ाज के कारण पाला और शीत लहर पड़ी है और उसमें इसको कवर किया

(डा. किरोडी लाल मीणा)

जाए। दूसरा, हमारे गांव में, यहां 80 प्रतिशत किसानों के बेटे हैं ये जानते हैं कि पाला और शीत लहर के कारण सरसों में या अन्य फसल में कितना नुकसान हुआ है । ग्राम सेवक नहीं जानता, पटवारी नहीं जानता । यत्र तत्र शिकायत मिलती है कि उसने घर बैठे गिरदावरी भेज दी । इसलिए गिरदावरी पूरेइलाके की होनी चाहिये। उस गांव के पाँच किसान क्योंकि टैक्निकली एक्सपर्ट तो किसान है, वही जानता है कि मेरी फसल कितनी नष्ट हुई है, पाँच गांव के चुनिंदा किसान इस गिरदावरी के दौरान उनके संग रहने चाहिये जिससे वास्तविक रिपोर्ट सरकार के पास आ सके ।

उपाध्यक्ष महोदय, बहुत पहले भारत सरकार ने वर्क दिया था फ्लड टू फ्लड । सैंक्शन करेंगे बाढ आएगी तब और काम चलेंगे जब अगली बरसात या आपदा आएगी तब । उसको 30 दिन का कर दिया। उसमें भी रिलैक्सेशन की आशा नहीं है । बहुत पत्र हमने लिखे थे, मंत्री जी ने भी लिख दिये होंगे लेकिन उसमें किसी प्रकार के रिलैक्सेशन की हमको आशा नहीं लगती ।

उपाध्यक्ष महोदय, मैं इस मौके पर एक बात और सरकार को निवेदन करना चाहूंगा, वैसे तो राम रूठा हुआ है लेकिन थोड़ी बहुत राम की कृपा हुई थी तो कुछ डैम भर गये थे लेकिन हमारे कारण वे डैम नहीं खुल पाये। जैसे मैं आपको कोट करना चाहूंगा पांचना का पानी नहीं खुला, किसी कारण नहीं खुला। किसान ने फसल बोई लेकिन सारी फसल नष्ट हुई, क्या, मंत्री जी, आप उन किसानों को, क्योंकि यह आपदा तो राज की है, भगवान की तो है ही, फसल तैयार हुई खतम हो गई, क्या उनको भी आप राहत देंगे ? (व्यवधान)

श्री सुभाष चन्द्र शर्मा (कोटपूतली): उपाध्यक्ष महोदय एक मिनट, माननीय मंत्री जी ने जो वक्तव्य दिया उस बात पर मैं निवेदन करना चाहता हूं कि 126 करोड़ रुपये की जो घोषणा की है उसमें जो जमीन का रेशो लिया वह जमीन का पूरा रेशों नहीं लिया है।(व्यवधान)

श्री उपाध्यक्ष: माननीय सदस्य, एक्सप्लेनेशन नहीं। (व्यवधान)

श्री सुभाष चन्द्र शर्मा (कोटपूतली): जब तक खेत को और फसल को इकाई मानकर मुआवजा नहीं दिया जाएगा तब तक उस किसान को लाभ नहीं मिलने वाला। इसलिए मैं आपके माध्यम से मंत्री जी से और सरकार से यह निवेदन करता हूं कि खेत को इकाई मानकर, उस फसल को जिसका खराबा हुआ है उसको इकाई मानकर फिर मुआवजा दिया जाए। और सभी किसानों को दिया जाए, उसमें लघु और सीमांत की कोई...(व्यवधान)

श्री राकेश मेघवाल (परबतसर): परबतसर विधान सभा क्षेत्र और नागौर जिले में खराबा ज्यादा हुआ है इसलिए ...(व्यवधान) राहत ज्यादा से ज्यादा प्रदान की जाए। परबतसर विधान सभा क्षेत्र और नागौर जिले में ज्यादा खराबा हुआ है। (व्यवधान)

श्री सुभाष चन्द्र शर्मा (कोटपूतली): बहुत सारे किसान सामूहिक रूप से खेती करते हैं, जिनके खेत का बंटवारा नहीं हुआ है..(व्यवधान)

श्री उपाध्यक्ष: एक एक आदमी ही..(व्यवधान)

श्री सुभाष चन्द्र शर्मा (कोटपूतली): बंटवारे के बिना खेती कर रहे हैं उन किसानों को लाभ नहीं। मैं आपके माध्यम से सरकार से कहना चाहता हूं कि जो बंटवारा नहीं हुआ...(व्यवधान)

एक माननीय सदस्य: काश्तकार मानसिक रूप से, आर्थिक रूप से चिन्तित है क्योंकि गत वर्ष...(व्यवधान)

श्री उपाध्यक्ष: माननीय सदस्य। श्री रिछपाल सिंह। माननीय सदस्य....

श्री बद्रीलाल जाट (कपासन): एक मिनट लूंगा। अफीम की खेती चित्तौड़ जिले में, उदयपुर, झालावाड़ में होती है, केन्द्र सरकार द्वारा ... (व्यवधान) पट्टे दिये जाते हैं...

श्री उपाध्यक्ष: नाम पुकार लिया मैंने।

श्री राकेश मेघवाल (परबतसर): आपके माध्यम से मंत्री महोदय का ध्यान आकर्षित करना चाहूंगा....(व्यवधान)

श्री उपाध्यक्ष: माननीय सदस्य। मैंने नाम पुकार लिया।

श्री रिछपाल सिंह मिर्धा (डेगाना): माननीय उपाध्यक्ष महोदय, मैं आपके माध्यम से सिर्फ दो मिनट में ही निवेदन कर दूंगा। मैं ज्यादा लंबी बात नहीं कहूंगा।

उपाध्यक्ष महोदय, राजस्थान का किसान पहले तो अकाल से मर रहा है, उसके बाद पाले और शीतलहर से भंयकर नुकसान हुआ है। आपने एक तो राइडर लगाया है, लघु/सीमांत कृषक, इससे हमारे जिले में करीब-करीब सभी तहसीलों में मेड़ता, परबतसर, डीगाना, नागौर सब इलाकों में शीतलहर का प्रकोप है, सरसों खतम हो गई, जीरा खतम हो गया, ईसबगोल खतम हो गया, सब फसल खतम हो गई, गेहूं में भी नुकसान हुआ है, गेहूं में 20 प्रतिशत, कुचामन में सब जगह नुकसान हुआ है, अगर यह राइडर रहा तो मैं आपके

(श्री रिछपाल सिंह मिर्धा)

माध्यम से सरकार से यह निवेदन करता हूं कि हमारे जिले में किसानों को इसका बिलकुल लाभ नहीं मिलेगा। अब पैसा चाहे सीआरएफ का है, किसका है, आप तो दिल खोलकर बांटो। अभी राजस्थान का किसान दुःखी है, आप बांट दो पैसा घोषणा करके। खेत को इकाई मानो तो किसान को लाभ मिलेगा। किसान के बिजली के बिल माफ करो। उसका जो नुकसान हुआ है प्रति बीघा उसके नुकसान का मुआवजा उसको दिलाओ।

उपाध्यक्ष महोदय, सबसे महत्वपूर्ण बात है गिरदावरी, अगर असली गिरदावरी हो गई तो किसान के घर पर पैसा पहुंच जाएगा और असली गिरदावरी नहीं हुई तो मैं आपके माध्यम से राज्य सरकार से निवेदन करना चाहता हूं कि ये 126 करोड़ आपके खजाने में पड़े रहेंगे, ये भी नहीं बटेंगे। गिरदावरी 50 प्रतिशत से, सब इलाकों में ज्यादा नुकसान हुआ है, राज्य सरकार सही तरीके से गिरदावरी करा दे तो 50 प्रतिशत नुकसान है 50 की करें, 40 है 40 की करें, 70 है 70 की करें। खेत को इकाई मानकर जिनकी फसल नष्ट हुई है उसको मुआवजा दिया जाए। आज राजस्थान का किसान सरकार की तरफ टकटकी लगाये हुए बैठा है कि किसान के दुःख में हमारी मदद राज्य सरकार करेंगी। रेवेन्यू डिपार्टमेंट कहता है गिरदावरी मान्य है, अकाल राहत मंत्री जी का इससे संबंध नहीं है, मैं आपके माध्यम से सर्वप्रथम यही मांग करता हूं कि गिरदावरी सही तरीके से हो और रेवेन्यू डिपार्टमेंट को यह निर्देश दिया जाए कि ईमानदारी से जितना नुकसान हुआ है काश्तकार का वह रिपोर्ट पेश की जाए और उसके आधार पर सरकार मुआवजा दें।

श्री उपाध्यक्ष: डा. श्री गोपाल बाहेती। (व्यवधान) मैं जिसका नाम पुकारूं वही बोलेगा।

श्री रिछपाल सिंह मिर्धा (डेगाना): दूध का दूध पानी का पानी हो जाएगा। (व्यवधान)

श्री उपाध्यक्ष: मैंने नाम पुकारा वही बोलेगा। डा. श्री गोपाल बाहेती। (व्यवधान) मैंने नाम पुकार लिया है। इनकी पर्ची भी आई हुई, पर्ची पर फिर बोलने का समय नहीं देंगे।

डा. श्रीगोपाल बाहेती (पुष्कर): माननीय उपाध्यक्ष महोदय, मैं आपके माध्यम से माननीय राहत मंत्री जी का ध्यान आकर्षित करते हुए यह बताना चाहता हूं, अपने-अपने भाषण के अंदर बहुत महिमामण्डल किया बहुत बढ़िया

(डा. श्रीगोपाल बाहेती)

बात है। किसान की उन्होंने जय-जय की लेकिन एक बात छिपा ली राहत मंत्री जी ने कि सरकार ने पता नहीं क्यों ऐसे निर्देश दिये कि गिरदावरी सही नहीं हो। अजमेर जिले के अंदर पूरी गिरदावरी में खराबा कम दिखाया गया है। चाहे तिलहन हो, चाहे दलहन हो, अनाज हो, चाहे सब्जी, फल हो सबमें खराबा 50 प्रतिशत, या अधिक है लेकिन खराबा दिखया है 20 और 30 प्रतिशत। किस प्रकार आप किसानों को राहत देना चाहते हो एक बात ?

दूसरी बात, अभी माननीय पूर्व राहत मंत्री जी बोल रहे थे, मैंने यह राहत मंत्री थे तब भी कहा था कि खराबे के असैसमेंट के अंदर साथ में कृषि विभाग के आदमी लगें, वहां का किसान लगे, वहां की पंचायती राज का प्रतिनिधि लगे तब उन्होंने ध्यान नहीं दिया और आज खुद मांग कर रहे हैं। मेरा आपके माध्यम से निवेदन है कि खराबे का असैसमेंट सही ढंग से कराया जाए, यदि वास्तव में सरकार ईमानदार है और सरकार चाहती है कि किसान को राहत मिले। केवल बात करना चाहती है तो दूसरी बात है। किसान के आंसू पोंछने के लिए यह बहुत आवश्यक है कि गिरदावरी में कृषि विभाग का आदमी, वहां का पंचायती राज का प्रतिनिधि और वहां के जो मोजिज काश्तकार है वे लगे।

उपाध्यक्ष महोदय, मैं आपके माध्यम से सरकार से कहना चाहता हूं कि सरकार चाहे तो एक कमेटी बना ले विधान सभा के सदस्यों की, वह पाँच फील्ड का देख ले और सर्वे करा ले, पता पड़ जाएगा, कितना घपला हुआ। घपला गिरदावरी में हुआ है, सरकार चाहती नहीं काश्तकार को राहत मिले। सरकार चाहती कि राहत मिले, तो कभी राइडर नहीं लगाती और पटवारी को बुलाकर यह नहीं कहती कि खराबा कम दिखाओ। पटवारी ने खराबा दिखाया 70 प्रतिशत, उसको बुलाते हैं तहसील में, खराबा कम करो और रिपोर्ट आगे जाती है, यह हाल है। काश्तकारों के साथ मजाक है। इससे बड़ा क्रूर और भद्दा मजाक काश्तकार के साथ दूसरा नहीं हो सकता। मैं आपके माध्यम से सरकार से पुरजोर अपील करता हूं कि यदि वास्तव में सरकार ईमानदार है, कार से बड़ी-बड़ी बातें करती है काश्तकार के हित के अंदर, तो सरकार आज हाउस में घोषणा करे कि पूरे राजस्थान के काश्तकार का बिजली का बिल 6 महीने का मांफ किया जाएगा। शीतलहर पूरे राजस्थान में पड़ी है, पूरे राजस्थान में पाला पड़ा है, फसल का नाश हुआ है उसमें कोई सीमांत का या दूसरा फर्क नहीं है। (व्यवधान)

श्री उपाध्यक्ष: डा. सुरेश चौधरी।

डा. श्रीगोपाल बाहेती (पुष्कर): मेरा आपसे निवेदन है कि मेहरबानी करके सरकार को निर्देश दे। (व्यवधान)

श्री उपाध्यक्ष: डा. सुरेश चौधरी।

डा. श्रीगोपाल बाहेती (पुष्कर): सरकार इस बारे में सही कार्यवाही करे।

श्री उपाध्यक्ष: माननीय सदस्य, चर्चा समाप्त कीजिए आप। (व्यवधान) डा. सुरेश चौधरी। मैंने नाम पुकार लिया है। माननीय सदस्यों से निवेदन करना है कि इस पर कोई वाद विवाद का समय नहीं दिया गया है एक-एक, दो-दो मिनट कुछ सदस्यों को बोलने का समय दिया है।

श्री बद्रीलाल जाट (कपासन): माननीय उपाध्यक्ष महोदय, मैं काश्तकार का बेटा भी हूं और राजस्थान का सबसे छोटा एमएलए हूं। (व्यवधान)

श्री उपाध्यक्ष: इस स्टेटमेंट पर कोई वाद विवाद नहीं होगा, एक-एक, दो-दो मिनट में अपनी बात रखनी होगी। पर हर सदस्य ज्यादा से ज्यादा समय ले रहे हैं। बैठिये आप। (व्यवधान)

श्री नन्दलाल पूनिया (सादुलपुर): माननीय उपाध्यक्ष महोदय आज...

डा. सुरेश चौधरी (भादरा): माननीय नंदलाल जी।

श्री उपाध्यक्ष: माननीय सदस्य, मैंने आपका नाम नहीं पुकारा।

डा. सुरेश चौधरी (भादरा): मैं पड़ौसी हूं, आपकी भी समस्या रख दूंगा। नम्बर मेरा है, पर्ची के माध्यम से आया हूं।

श्री उपाध्यक्ष: मैंने नाम पुकार लिया है उनका। (व्यवधान)

डा. सुरेश चौधरी (भादरा): नियम, कायदे, कानून से आया हूं। मैं आपकी बात भी रखूंगा। मैं बता रहा हूं आपकी, मेरे बाद में रह जाए तो आप बोल देना।

श्री उपाध्यक्ष: मैंने नाम पहले उनका पुकारा है।

डा. सुरेश चौधरी (भादरा): जब आसन ने परमिशन मेरे को दी है, आप बीच में खड़े हो रहे हैं। (व्यवधान) बिलकुल पर्ची है। पुकारा गया है मेरा नाम।

श्री उपाध्यक्ष: हां, कहिये कहिये।

डा. सुरेश चौधरी (भादरा): माननीय उपाध्यक्ष जी, 18 तारीख को 12वीं राजस्थान विधान सभा के अंतिम बजट सत्र की शुरूआत हुई। इस माह

(डा. सुरेश चौधरी)

के शुरूआती दिनों में राजस्थान का काश्तकार जो कि पार्टीबाजी नहीं मानता मेरे ख्याल में आजादी के बाद में सबसे ज्यादा त्रस्त, हताश, निराश, उदास दुःखी और परेशान था। बिल्कुल आपके शब्दों का भी इस्तेमाल करूंगा। हालात ऐसे थे कि वह आत्महत्या के कगार पर था। और है भी। (व्यवधान) वह फेज निकल गया।

7 तारीख को हमारे माननीय अकाल राहत मंत्रीजी ने, आपदा राहत मंत्रीजी ने, फिर 9 तारीख को भारतीय जनता पार्टी और समर्थक 120-130 राजस्थान विधान सभा के सदस्यगण, राजस्थान का प्रतिनिधित्व हिन्दुस्तान की लोक सभा में करने वाले लोक सभा सदस्य, राजस्थान भारतीय जनता पार्टी इकाई के विभिन्न पदाधिकारीगण और यहां के प्रदेशाध्यक्ष ने 9 फरवरी को महामहिम राज्यपाल को ज्ञापन दिया महामहिम राष्ट्रपतिजी के नाम कि राजस्थान का आमजन, राजस्थान की जनता, राजस्थान की रीढ़ किसान, इतने साल बाद जब उसकी अच्छी फसल की बारी आई, उस दौरान उसको पाले की सबसे ज्यादा मार ने मार रखा है, आप इस चीज को भी ओलावृष्टि की भांति प्राकृतिक आपदा में शामिल कराने का निवेदन केन्द्र सरकार से हमारी तरफ से करें। यह बात है 9 तारीख की। 12 तारीख को राजस्थान विधान सभा के सभी भारतीय जनता पार्टी और समर्थक माननीय सदस्यों ने मुख्य मंत्रीजी को कहा था कि अगर हमें पैदल चलना पड़े दिल्ली तक, राजस्थान के किसानों के लिये हम आपके साथ तैयार हैं। आप हमारी तरफ से जाकर केन्द्र सरकार से और केन्द्र सरकार के प्रतिनिधि जो इस बारे में फैसला करते हैं, उनसे मुलाकात करें। राजस्थान की माननीय मुख्य मंत्रीजी ने 12 तारीख को ही इस मामले में जो सम्बन्धित व्यक्ति थे, केन्द्र सरकार के, यू.पी.ए. सरकार के केन्द्रीय गृह मंत्री, उनको निवेदन किया। 9 तारीख को हम इतने जने मिले, 10 तारीख गई, 11 तारीख गई, 12 तारीख गई, 13 तारीख गई, 14 तारीख गई। 15 तारीख तक, यह 8 दिन से राजस्थान विधान सभा का यह अंतिम बजट सत्र, क्वश्चन-अवर जो राजस्थान की जनता के हित के लिये होता है, जिसमें एक-एक सवाल पर एक-एक लाख रुपये खर्च होते हैं, उसकी परवाह किये बिना, मान-मर्यादाओं का उल्लंघन करते हुए, यह कहते हुए कि यह जूनियर आदमी है, यह इतना कैसे बोल रहा है, सारी चीजें सीनियर आदमी के लिये नहीं होती हैं, मर्यादाएं भी सीनियर आदमी के लिये होती हैं। सब मर्यादाएं हम सीनियर माननीय सदस्यों से सीखते हैं। 15 तारीख को राजस्थान की संवेदनशील मुख्य

(डा. सुरेश चौधरी)

मंत्रीजी ने 126 करोड़, आजादी के इतिहास में पहली बार किसी भी प्रान्त के मुख्य मंत्री ने, राजस्थान प्रान्त के मुख्य मंत्री ने पहली बार इस तरह की घोषणा की है। ठीक है, अभी आपने फर्माया कि वह प्रतिपक्ष के सदस्यों की तरफ से आया, माननीय सुरेन्द्रजी, गंगानगर से पधारते हैं, इनकी तरफ से आया कि आत्म-हत्या के कगार पर थे, हैं। हैं नहीं, वे थे, आत्म-हत्या के कगार पर थे। माननीय मुख्य मंत्रीजी ने जब यह घोषणा की कि नहीं, डरने की जरूरत नहीं है। केन्द्र सरकार आपकी मदद करे या न करे, लेकिन अंतरिम राहत के रूप में हम आपको 126 करोड़ रुपये देंगे। (व्यवधान) आप सुनिये, मैं बीच में नहीं बोलता हूं जब आप बोलते हैं। लेकिन बात काश्तकार की आ रही है और अगर आप काश्तकार के हितैषी हैं तो बात सुनने का भी माद्दा रखें। सत्तापक्ष के माननीय सदस्य, पूर्व राहत मंत्रीजी भी हैं, बड़ी संवेदनशीलता से उन्होंने अपनी मांग रखी है, यह कहा है कि उस गांव के उस एरिये के पाँच काश्तकार गिरदावरी करते वक्त साथ जाएं। बड़ी वाजिब मांग है। मेरे सीनियर साथी को मैं सैल्यूट करुंगा उनकी मांग के लिये। लेकिन इन्होंने कहा कि यह पहले लागू नहीं किया, अब लागू हो जाए, कौनसी देर हो गई। पहले हफ्ते में आपकी संवेदनशीलता देखिये, आप इन पर अंगुली उठा रहे हैं। मैं इस समय किसी की तरफ नहीं, बीच का आदमी हूं और किसान हित का आदमी होकर बात कर रहा हूं। क्योंकि किसान हित में, किसान हित की सुरक्षा करने के लिये यहां भेजा गया है। इसलिये मैं यह कहना चाहूंगा, 4 तारीख को, 5 तारीख को और 6 तारीख को, और कई जगह तो, हमारे यहां तो एक तरह से उलटा जोड़ा गया। एक अख़बार में पढ़ा कि कांग्रेस ने चुनावी बिगुल बजाया और दूसरे अख़बार में छपा कि बीकानेर सम्भाग में काश्तकार तबाह। कांग्रेस ने चुनावी बिगुल बजाया और बीकानेर सम्भाग का काश्तकार तबाह। मैं असमंजस में पड़ गया। मैंने दोनों अखबारों को मिलाया, तो पता चला कि कांग्रेस के एक नेता जो मुख्य मंत्री के रूप में प्रोजेक्ट हो रहे हैं कांग्रेस की तरफ से, वह उस सम्भाग के दौरे पर गये थे और उस सम्भाग के सारे काश्तकारों पर पाले की मार पड़ गई। लोगों को याद आ गया 1998 से 2003 के बीच का कार्यकाल। (व्यवधान)

श्री उपाध्यक्ष: पाले पर बोलें। (व्यवधान)

डा. सुरेश चौधरी (भादरा): मैं अकाल पर बोल रहा हूं और अकाल से

(डा. सुरेश चौधरी)

जो जुड़ी हुई चीजें हैं, उन पर बोल रहा हूं। अब उसमें बाइ-द-वे, खुदा-न-खास्ता, किस्मत का खेल है, आपकी तरफ से कोई नाम आ गया, आप क्यों इतना ज्यादा उत्तेजित हो रहे हो? मैं तो यह भी कहता हूं कि आजादी के बाद पहली बार इस तरह का, और हमारी तरफ से, मैं अभी गया था, मेरी कांस्टीट्युएंसी से आया हूं, जबरदस्त पाले की मार में है। वहां लोगों का यह कहना था कि या तो महाराजा गंगासिंहजी के टाइम इस तरह एक बार काश्तकारों को फायदा मिला था, जब इस तरह की प्राकृतिक आपदा आई थी या मुख्य मंत्रीजी वसुन्धरा राजेजी के कार्यकाल में इस तरह का मौका आया है कि काश्तकार की तरफ से कोई केन्द्र सरकार नहीं दे पाई, राम ने मार दिया उस समय राज उसको सम्भालने आया है।

श्री उपाध्यक्ष: समाप्त कीजिये।

डा. सुरेश चौधरी (भादरा): मैं तो, उपाध्यक्ष महोदय, मेरी तरफ से निवेदन करना चाहूंगा हाथ जोड़कर इस पवित्र सदन के सभी माननीय सदस्यों से कि काश्तकारों को राहत पहुंचाने के लिये जिसकी बहबूदी के लिये हम आते हैं, हम हमारी तरफ से हमारा एक महीने का वेतन और भत्ता, सभी माननीय सदस्य काश्तकारों के लिये समर्पित करें। राज्य सरकार से भी निवेदन करना चाहूंगा इस चीज के लिये कि वह राज्य और केन्द्र सरकार के कर्मचारियों को विश्वास में ले, जब हम राज्य सरकार के कर्मचारियों के हित में इतना ज्यादा करते हैं तो राज्य सरकार के कर्मचारी भी राजस्थान के काश्तकारों के हित में अपना एक महीने का वेतन और भत्ता देते हुए, कोई विकलांग नहीं होते, अगर उनको विश्वास में लेकर राज्य सरकार काम करे तो उन काश्तकार भाइयों की मदद कर सकते हैं। आपने मुझे बोलने के लिये आदेश दिया, परमिशन दी, एक बात इसमें और रह गई। (व्यवधान)

श्री उपाध्यक्ष: श्री वीरेन्द्र बेनीवाल। श्री वीरेन्द्र बेनीवाल। माननीय सदस्य।

डा. सुरेश चौधरी (भादरा): एक बात इसमें और रह गई। (व्यवधान)

श्री उपाध्यक्ष: माननीय सदस्य, मैंने उनका नाम पुकार लिया। (व्यवधान)

डा. सुरेश चौधरी (भादरा): उपाध्यक्ष महोदय, एक बात इसमें और रह गई। एक मिनट, एक मिनट। (व्यवधान)

श्री अशोक बैरवा (खण्डार): उपाध्यक्ष महोदय, एक मिनट। (व्यवधान)

श्री सांगसिंह भाटी (जैसलमेर): उपाध्यक्ष महोदय, मैं तो सीमा का रहने वाला हूं, सीमा की बात कहना चाह रहा हूं। (व्यवधान)

डा. सुरेश चौधरी (भादरा): एक मिनट, एक मिनट, सांगसिंहजी। इसमें मेरा एक सुझाव और है। चूंकि मेरी पर्ची निकली है, मैं राज्य सरकार को इस चीज पर, 8 दिन से विधान सभा भी नहीं चली, सुझाव देना चाहूंगा कि इसमें न केवल लघु और सीमान्त काश्तकार मैं जिस जिले से आता हूं उस जिले का कुछ एरिया सिंचित है और वहां यह हालत है कि एक काश्तकार के पास एक मुरब्बा जमीन है, एक मुरब्बे में उसने किन्नू का बाग़ लगा रखा था, पूरा का पूरा किन्नू में पानी भर गया, उसके सौ प्रतिशत खराबा हो गया, उनको भी दिया जाए। (व्यवधान)

श्री उपाध्यक्ष: माननीय सदस्य, माननीय सदस्य।

श्री अशोक बैरवा (खण्डार): उपाध्यक्ष महोदय, मैं आपके माध्यम से निवेदन करना चाहता हूं। (व्यवधान)

डा. सुरेश चौधरी (भादरा): इसमें सभी तरह के काश्तकारों को शामिल करें और उसमें हर फसल के खराबे को अलग-अलग माना जाए। (व्यवधान) सरसों में 80 प्रतिशत खराबा हो तो उसको माना जाए। (व्यवधान)

श्री उपाध्यक्ष: मैंने नाम पुकार लिया। (व्यवधान) मैंने नाम पुकार लिया, श्री वीरेन्द्र बेनीवाल। (व्यवधान)

श्री अशोक बैरवा (खण्डार): उपाध्यक्ष महोदय, मैं आपके माध्यम से पूर्व राहत मंत्रीजी ने जो सुझाव दिया है उसमें सरकार क्या विचार कर रही है, यह निवेदन करना चाह रहा हूं। (व्यवधान)

श्री उपाध्यक्ष: श्री वीरेन्द्र बेनीवाल। (व्यवधान)

डा. सुरेश चौधरी (भादरा): गन्ने का 5 प्रतिशत खराबा है तो उसको चने और सरसों के साथ नहीं मिलाया जाए। (व्यवधान) और गेहूं का 10 प्रतिशत है तो उसको अरण्ड या किसी और के साथ नहीं मिलाया जाए। किसी की सरसों की फसल 50 प्रतिशत खराब है तो उसका भी दिया जाए। गेहूं है तो गेहूं का दिया जाए। (व्यवधान)

श्री उपाध्यक्ष: बीच में नहीं, मैंने नाम पुकार लिया। आपने कह दिया। डा. वीरेन्द्र बेनीवाल। (व्यवधान)

श्री अशोक बैरवा (खण्डार): उपाध्यक्ष महोदय, पूर्व राहत मंत्रीजी ने जो सुझाव दिया सरकार को उसके ऊपर एक मिनट निवेदन करना चाह रहा हूं। कमाण्ड एरिया का जो पाचना एरिया है, पाचना बाँध का पानी नहीं छोड़ा गया राज्य सरकार के आदेश के बावजूद तो वहां जो फसलें नष्ट हुई हैं, क्या स्टेट फण्ड से वहां के किसानों को सरकार राहत देगी। दूसरा जो बदलते हुए मिज़ाज का सुझाव दिया है आपने, पूर्व राहत मंत्रीजी ने कहा, वर्तमान राहत मंत्रीजी इस बात को लेकर संकल्प पारित कराएंगे कि सी.आर.एफ. में इन नार्म्स को बदलने के लिये कोई संकल्प यहां पारित किया जाए। दूसरा, जो गलत गिरदावरियां हो रही हैं, उसके लिये सरकार किसानों के हित में कोई निर्णय करेगी, यह मेरा निवेदन है।

श्री उपाध्यक्ष: श्री वीरेन्द्र बेनीवाल। दो मिनट में, डाक्टर साहब, दो मिनट में समाप्त कीजिये। मैं चर्चा समाप्त करुंगा। (व्यवधान)

श्री वीरेन्द्र बेनीवाल (लूणकरणसर): हां, हां, बिलकुल, मेरे दो प्रश्न हैं।

श्री जुबेर खान (रामगढ़): दो मिनट, ये हमारे ही माननीय सदस्यों के लिये हैं क्या? हमारे लिये तो पाइण्टेड सवाल होने चाहिए। आप यह दोहरा मापदण्ड मत रखिये। हम आसन से यह अपेक्षा नहीं रखते हैं।

श्री उपाध्यक्ष: कोई दोहरा नहीं है। दो-दो मिनट में अपनी बात रख दें। कोई ज्यादा समय नहीं देते। (व्यवधान)

श्री श्रवण कुमार (पिलानी): उपाध्यक्ष महोदय, झुंझुनूं जिला कृषि के मामले में अग्रणी जिला है, उसके लिये सुनने के बारे में कोई इच्छा नहीं रखते हैं क्या? (व्यवधान) झुंझुनूं जिला शिक्षा में और कृषि में अग्रणी जिला है और शहीदी में भी अग्रणी है, उसकी कोई बात सुनते नहीं हैं क्या? (व्यवधान)

श्री उपाध्यक्ष: तो आपको मौका दूंगा, आपको मौका दूंगा। (व्यवधान)

श्री वीरेन्द्र बेनीवाल (लूणकरणसर): माननीय उपाध्यक्ष महोदय, मैं आपके माध्यम से माननीय मंत्री महोदय से यह पूछना चाहता हूं, वर्तमान समय में पाले के पड़ने के कारण फसलों का जो खराबा हुआ है, उसका आकलन करने के लिए पटवारियों की जिम्मेदारी लगायी गयी है, वे आज के समय में जिस प्रकार से आकलन कर रहे हैं और राज्य सरकार की मंशा का प्रदर्शन करते हुए 50 परसेंट से नीचे का ही खराबा दिखलाना चाह रहे हैं, क्या राज्य सरकार उनको निर्देशित करने का कष्ट करेगी कि वे जो खराबे का आकलन कर रहे हैं, सही स्थिति को चिह्नित करें, उसका खुलासा किया जाए?

(श्री वीरेन्द्र बेनीवाल)

क्योंकि, माननीय उपाध्यक्ष महोदय, आज जो आकलन किया जाएगा इसका खुलासा आने वाले कुछ महीनों के बाद होगा। उस वक्त की स्थितियां भिन्न हो चुकी होंगी। आम आदमी को आज की स्थिति में अगर पता लगे तो वह अपना विरोध दर्ज कर सकता है। अपने खेत की स्थिति दर्ज करवा सकता है। मेरा निवेदन है कि खराबे का आकलन करने की स्थिति को हर पटवार मण्डल के ऊपर सूची के रूप में लगाया जाए। इस आकलन करने की जो प्रक्रिया आज दिन तक चल रही है, हालांकि राज्य सरकार कह रही है कि आकलन कर लिया गया है लेकिन वस्तुस्थिति यह है कि आज दिन तक आकलन करने के लिए अधिकांश जगहों पर पटवारी नहीं गये हैं। इसके लिए एक टीम बनायी जाए और उस टीम के अन्दर स्थानीय काश्तकारों को भी शामिल किया जाए।

दूसरा मेरा इसमें प्रश्न यह है, माननीय उपाध्यक्ष महोदय, आज जो यहां पर घोषणा की गयी है, किसी भी काश्तकार को अगर सरकार इस घोषणा को शत-प्रतिशत लागू करने का भी विचार रखती है तो लागत का 25 परसेंट भी उसको नहीं मिलेगा। प्रति हैक्टेयर आज अगर केवल सरसों की बात की जाती है तो 9 से 10 हजार रुपया प्रति हैक्टेयर उपज के लिए खर्चा काश्तकार का आ जाता है। इसके अन्दर सिर्फ सरसों को शामिल किया गया है और सरसों में भी खराबा देखा जा रहा है, जबकि प्रति हैक्टेयर जो उपज मिलनी है वह कितनी कम होने वाली है इस बात को नहीं देखा जा रहा है। आज गेहूं अगर प्रति हैक्टेयर कम होगा तो इस पाले के खराबे के कारण होगा। चने की अगर प्रति हैक्टेयर उपज कम प्राप्त होगी तो इसी कारण होगी। आज आंवला नष्ट हो गया है। हमारा टमाटर, बैंगन और जो भी सब्जियां हैं नष्ट हो गयी हैं। ईसबग़ोल, जीरा सब नष्ट हो गया है। तो केवल एक सरसों को आधार बनाकर, और उसमें भी इतनी सारी बंदिशें लगाकर यह जो पैकेज की घोषणा की जा रही है, माननीय उपाध्यक्ष महोदय, अगर यह इन्हीं नियमों के अन्तर्गत चला तो यह 126 करोड़ रुपया राज के घर में ही रहेगा। आम आदमी तक नहीं बंटेगा क्योंकि नियमों में कोई भी नहीं आएगा। तो मेरा यह निवेदन है आपके माध्यम से माननीय मंत्री महोदय से कि सरकार संवेदनशील होकर हर उस व्यक्ति को, माननीय उपाध्यक्ष महोदय, हर उस व्यक्ति को जिसका इसके अन्दर खर्चा हुआ है, उसकी पीड़ा को समझते हुए अगर हम राहत देना

चाहते हैं तो उस तक सही रूप में राहत के लिए हम इसकी घोषणा करें और इसकी क्रियान्विति करें। आपने समय दिया, धन्यवाद।

श्री उपाध्यक्ष: मैंने देखो, इनका नाम पुकार लिया है, आप बीच में नहीं।

चौधरी विनोद कुमार (हनुमानगढ़): माननीय उपाध्यक्ष महोदय, एक सैकण्ड। एक सैकण्ड ... (व्यवधान) दो ही मिनट लगाऊंगा, साहब। पाले से जो फसलें नष्ट हुई हैं अगर उनके नुकसान का आकलन करने की प्रक्रिया को चेंज नहीं किया गया तो 126 करोड़ रुपये ही नहीं, 2000 करोड़ रुपये भी दे दो तो भी लोगों को नहीं मिल सकते, क्योंकि एक चक की, एक ग्राम की इकाई को माना गया है। जब तक एक किसान या एक खेत को इकाई नहीं माना जाएगा तब तक कितने ही पैसे दे दो, किसान को नहीं मिल सकते हैं। मेरा यह सुझाव है कि एक खेत को या एक किसान को इकाई मानकर इसका मुआवजा तय किया जाना चाहिए जिससे आम लोगों को राहत मिल सके। दूसरी बात है, लघु और सीमांत कृषक को नहीं मानकर जिसके जितना नुकसान हुआ है उसको उतनी ही फसल का मुआवजा दिया जाना चाहिए। धन्यवाद, जय हिन्द। (व्यवधान)

श्री श्रवण कुमार (पिलानी): माननीय उपाध्यक्ष महोदय, मेरा एक ही प्रश्न है कि इसको केवल भाषण में परिवर्तन करना है या इसको इम्प्लीमेंट करना है? केवल इस समय भाषण करने और भाषण को भाषण में परिवर्तन करने के लिए आपने भाषण करवाया है तब तो यह बता दो। और अगर यह पैसा किसान तक जाने की आपकी इच्छा है, या इच्छा तो आप रखते हो पर इच्छाशक्ति नहीं रखते हो, इसलिए मैं कहना चाहता हूं इस बी.जे.पी. सरकार को कि आपको अपनी इच्छा को इच्छाशक्ति बनाकर किसान तक पैसा पहुंचना चाहिए, एक बात।

श्री रामप्रताप कासनिया (पीलीबंगा): माननीय उपाध्यक्ष महोदय, मैं भी निवेदन करना चाहता हूं। (व्यवधान)

श्री श्रवण कुमार (पिलानी): क्या बात करते हो? किसी को तसल्ली नहीं है क्या? (व्यवधान) मैं यह कहना चाहता हूं कि आपकी इच्छा तो है पर आपकी इच्छाशक्ति नहीं है। तो मैं बी.जे.पी. सरकार से निवेदन करता हूं कि किसान के हितैषी बन कर, इच्छाशक्ति लगा कर किसान तक पैसा जाना चाहिए, एक बात।

(श्री श्रवण कुमार)

नम्बर-दो, आपने पिछली बार ओलावृष्टि में पंचायत को इकाई मानकर काम किया था। ओलावृष्टि में तो इकाई हो सकता है, पंचायत को मान सकते हो लेकिन जब पाला पड़ता है तो यह सारे क्षेत्र में एक साथ पड़ता है। पचास किलोमीटर में तो इसकी कोई इकाई भी नहीं है, इसको आप ... (व्यवधान)

श्री लक्ष्मीनारायण दवे (खनिज मंत्री): आप समझ ही नहीं रहे हो।

श्री श्रवण कुमार (पिलानी): मैं बता रहा हूं, थोड़ा समझो। काम की बात आएगी, घूमकर आएगी, आपके पास आएगी न। मैं यह कहना चाहता हूं, आपका केवल दृष्टिकोण यह है कि गिरदावरों को यह कह दिया कि आप 40 परसेंट इसमें खराबा दिखा दो। किसान के ईमानदारी की बात यह है कि केवल फसल खड़ी दिखाई देती है क्योंकि हम किसान आदमी हैं। जितने भी यहां भाषण दे रहे हैं इसमें से 30 परसेंट किसान हैं, गांधीजी का सपना था, नेहरूजी का सपना यह था कि खेत और खलिहान से देश की स्वतंत्रता गुजरे और खेत और खलिहान के बारे में इनको कोई चिन्ता नहीं है। अगर केवल थोथे भाषण देकर 126 करोड़ रुपये दे रहे हैं, भाषण से कुछ नहीं होने वाला है। मैं यह कहना चाहता हूं कि सी.आर.एफ. के जो पैसे हैं, ये किसानों के हित के पैसे हैं, आपको कहीं भी लगाने की जरूरत नहीं है। किसान को वाकायदा उनका मुआवजा, 50 परसेंट खराबा हुआ है, छह महीने का बिजली का बिल माफ करें। आपने जो विगत में दुनियाभर के भाषण दिये हैं, इससे किसान खुश नहीं होने वाला है। किसान का जब तक खेत का खराबा दूर नहीं करेंगे, उसकी आत्मा को शांति नहीं मिलेगी जब तक आपके कुछ होने वाला नहीं है। मैं इतना ही कहना चाहता हूं, राजेन्द्रजी, आपके चूरू में फसल नहीं है लेकिन झुन्झुनूं जिला अग्रणी है। (व्यवधान)

श्री उपाध्यक्षः आ गयी बात पूरी। श्री सांगसिंह भाटी। (व्यवधान)

श्री श्रवण कुमार (पिलानी): आप झुन्झुनूं जिले के प्रभारी मंत्री हो, आप जोर लगाकर इस बात को कहो कि झुन्झुनूं जिला शहीदों में अग्रणी है ... (व्यवधान)

श्री सांगसिंह भाटी (जैसलमेर): माननीय उपाध्यक्ष महोदय, एक मिनट। मेरा नाम पुकार लिया पहले ही। पुकार लिया। (व्यवधान)

श्री श्रवण कुमार (पिलानी): शिक्षा में अग्रणी है। (व्यवधान)

(श्री श्रवण कुमार)

ओलावृष्टि में भी और पाले के अन्दर भी अग्रणी है। आप पैसे दिलवाइये। इतना कहकर, माननीय उपाध्यक्ष महोदय, मैं आपको धन्यवाद देता हूं। (व्यवधान)

श्री उपाध्यक्ष: श्रवण कुमारजी, आ गयी बात आपकी। सांगसिंहजी बोल रहे हैं। (व्यवधान)

श्री रामप्रताप कासनिया (पीलीबंगा): इनके बाद तो मेरे को अलाउ कर देना, माननीय उपाध्यक्ष महोदय, मैं रिपीट नहीं करूंगा कोई भी बात। (व्यवधान)

श्री उपाध्यक्ष: सांगसिंहजी, बोल लें। सांगसिंहजी बोल लें। (व्यवधान)

श्री सांगसिंह भाटी (जैसलमेर): गुढ़ा साहब, एक सैकण्ड। माननीय उपाध्यक्ष महोदय, हकीकत में जैसलमेर जिला एक सीमांत जिला है और जैसलमेर जिले में अकाल को किसी ने पूछा कि अगर तुझे ढूंढा जाए तो तू कहां मिलेगा, तो अकाल ने कहा कि धड़ कोटड़ा, पाँव पूंगल, ठाहो जैसलमेर। तो हमेशा के वास्ते अकाल से तो जैसलमेर जिले की जनता जूझती रहती है। एक समय अकाल, दूसरे समय पाला, तीसरे समय ओला। जैसलमेर जिले की फसल, पूरे जिले की, नहरी क्षेत्र में और ट्यूबवैल पर, सारी की सारी चौपट हो गयी। लेकिन शीत लहर की बात आयी, अभी धोद से आने वाले विधायक महोदय ने कहा कि सब से अधिक अगर पाला पड़ा है तो इस वर्ष पड़ा है। माननीय उपाध्यक्ष महोदय, मैं आपका ध्यान आकर्षित करना चाहता हूं कि 1984 में जो पाला पड़ा था, उस समय राजस्थान के मुख्य मंत्री शायद, मुझे याद है, शिवचरणजी माथुर थे जो यहां विराजे हुए हैं, 1984 में इतना पाला पड़ा था कि दरख़्त के दरख्त जल गये थे। कोई चीज बकाया नहीं रही थी। उस समय कांग्रेस का शासन था और उस समय भी जनता का चुना हुआ मुख्य मंत्री था, कोई भी था वह, उस समय क्या किसी ने भी, आज जैसे 125-126 करोड़ रुपये की राजस्थान की मुख्य मंत्रीजी ने घोषणा की है, उस समय किसी ने कोई 5 रुपये की घोषणा भी पाले के नाम की थी क्या, वह भी बता दो? मैं धन्यवाद देना चाहता हूं राजस्थान की मुख्य मंत्रीजी को जिन्होंने काश्तकारों के हित में पाला पड़ते ही किसी के बगैर कहे 126 करोड़ रुपये दिये हैं। यह सराहनीय चीज है। पहली मुख्य मंत्री हैं राजस्थान की। इससे अधिक

(श्री सांगिसंह भाटी)

भी, गिरदावरी होने पर जो नुकसान होगा तो अभी माननीय मंत्रीजी ने कहा है ... (व्यवधान) अभी बैठिये आप, अभी सुनिये आप। (व्यवधान)

श्री रामनारायण मीणा (नैनवां): ... (व्यवधान) क्या आपकी मुख्य मंत्री ज्यादा... (व्यवधान)

श्री सांगसिंह भाटी (जैसलमेर): बैठिये आप, बैठिये और इसके साथ-साथ, अधिकतर समय राजस्थान में राज किस पार्टी ने किया? उस समय पाला नहीं पड़ा क्या? उस समय शीत लहर नहीं आयी क्या? आपने आज दिन तक काश्तकारों के नाम से वोट लिये हैं लेकिन काश्तकारों के हित में कांग्रेस ने कभी कोई कदम नहीं उठाया। (व्यवधान)

श्री उपाध्यक्ष: आप बीच में नहीं।

श्री सांगसिंह भाटी (जैसलमेर): किसान क्रेडिट कार्ड योजना ... (व्यवधान)

श्री उपाध्यक्ष: माननीय मंत्री महोदय। माननीय मंत्री महोदय रिप्लाई देंगे। (व्यवधान)

श्री सांगसिंह भाटी (जैसलमेर): एक मिनट और दिया जाए।

श्री रामप्रताप कासनिया (पीलीबंगा): माननीय उपाध्यक्ष महोदय, मैं एक भी बात रिपीट नहीं करूंगा। (व्यवधान)

श्री सांगसिंह भाटी (जैसलमेर): मैं कहता हूं कि कितना उस समय दिया? (व्यवधान)

श्री बद्रीलाल जाट (कपासन): माननीय उपाध्यक्ष महोदय, मुझे भी एक मिनट का समय दिया जाए। (व्यवधान)

श्री रामप्रताप कासनिया (पीलीबंगा): माननीय उपाध्यक्ष महोदय, जो हाउस में बात नहीं आयी वह कहना चाहता हूं।

श्री उपाध्यक्ष: मंत्रीजी। आप विराजिये। (व्यवधान)

श्री बद्रीलाल जाट (कपासन): राजस्थान की आन-बान-शान चित्तौड़ का काश्तकार जो पाले की समस्या से जूझ रहा है ... (व्यवधान)

श्री सांगसिंह भाटी (जैसलमेर): कृषि बीमा योजना ... (व्यवधान)

श्री रामप्रताप कासनिया (पीलीबंगा): माननीय उपाध्यक्ष महोदय, जो बात इस हाउस में नहीं आयी, वह मैं निवेदन करना चाहता हूं।

श्री सांगसिंह भाटी (जैसलमेर): एक सैकण्ड ... (व्यवधान)

श्री उपाध्यक्ष: आपको बाद में समय दिया जाएगा। (व्यवधान)

श्री सांगसिंह भाटी (जैसलमेर): किसान बीमा योजना।

श्री उपाध्यक्ष: इसकी चर्चा हाउस में आगे होगी। (व्यवधान)

श्री सांगसिंह भाटी (जैसलमेर): कृषि बीमा योजना कब से लागू की? (व्यवधान)

श्री उपाध्यक्ष: सारी चीज, लम्बी-चौड़ी बहस अभी नहीं होगी।

श्री सांगसिंह भाटी (जैसलमेर): कृषि बीमा योजना किसने लागू की?

श्री रामप्रताप कासनिया (पीलीबंगा): माननीय उपाध्यक्ष महोदय, अंकित हो या नहीं हो पर ... (व्यवधान)

श्री उपाध्यक्ष: नहीं, अभी नहीं। (व्यवधान)

श्री बद्रीलाल जाट (कपासन): माननीय उपाध्यक्ष महोदय, एक बात, राजस्थान की आन-बान-शान चित्तौड़ ... (व्यवधान)

श्री सांगसिंह भाटी (जैसलमेर): एक सवाल है, कृषि बीमा योजना किसने लागू की? (व्यवधान)

श्री उपाध्यक्ष: इस पर बहस अब नहीं होगी। (व्यवधान)

श्री रामप्रताप कासनिया (पीलीबंगा): उपाध्यक्ष महोदय, अंकित हो नहीं। (व्यवधान)

श्री उपाध्यक्ष: नहीं, अब किसी को अलाउ नहीं करेंगे। (व्यवधान)

श्री सांगसिंह भाटी (जैसलमेर): किसानों की जो वकालत करते हैं, कृषि बीमा योजना कब से लागू हुई, क्या ये करवा नहीं सकते थे?

श्री उपाध्यक्ष: अब छोड़ो न। (व्यवधान)

श्री सांगसिंह भाटी (जैसलमेर): आज दिन तक काश्तकारों के नाम से, हमेशा के लिए आप काश्तकारों की वकालत करते हो, लेकिन आपके दिलों में काश्तकार नजदीक नहीं हैं, दिलों से बहुत दूर हैं किसान आपसे। (व्यवधान)

श्री हेमाराम चौधरी (नेता, प्रतिपक्ष): कृषि बीमा योजना हमारे समय में शुरू हुई 2003 में। (व्यवधान)

श्री उपाध्यक्षः माननीय मंत्रीजी।

श्री बद्रीलाल जाट (कपासन): माननीय उपाध्यक्ष महोदय, मुझे भी एक मिनट दीजिये। (व्यवधान)

श्री लालचन्द मेघवाल (रायसिंहनगर): माननीय उपाध्यक्ष महोदय, गंगानगर जिले में सरसों का बहुत खराबा हुआ है, शीतलहर और पाले से 126 करोड़ रुपये का पैकेज देकर किसानों को राहत दी और इसके तहत मैं आपके माध्यम से माननीय मंत्रीजी से कुछ कहना चाहूंगा। (व्यवधान)

श्री बद्रीलाल जाट (कपासन): माननीय उपाध्यक्ष महोदय, चित्तौड़ के किसानों की विचित्र समस्या है। (व्यवधान) एक मिनट, माननीय उपाध्यक्ष महोदय, राजस्थान की आन-बान-शान के प्रतीक चित्तौड़ का काश्तकार उससे चिन्तित है। (व्यवधान)

श्री उपाध्यक्षः अब इसके ऊपर बहस हो गयी न। (व्यवधान)

श्री बद्रीलाल जाट (कपासन): काश्तकारों को साथ जोड़कर सर्वे किया जाए और इसके साथ-साथ वर्तमान में जो आबियाना किसानों से ले रहे हैं उसको स्थगित ही नहीं, वह आबियाना किसानों का माफ किया जाए। (व्यवधान)

श्री प्रद्युम्न सिंह (राजाखेड़ा): उपाध्यक्ष महोदय, यहां पर चर्चा हो रही थी कि 126 करोड़ रुपये सरकार ने दिये हैं, ऐसा पहले कभी नहीं हुआ। स्वागत योग्य कदम है, उसमें कहां दिक्कत है। हमने भी अकाल राहत के काम अगस्त में शुरू किये। पूरे राजस्थान में कांग्रेस के शासन के अंदर अकाल राहत कार्य हमने अगस्त-सितम्बर में शुरू किये। जहां जैसी आवश्यकता पड़ती है समय के अनुसार काम होता है। इनके वक्त में मई-जून के अंदर काम करते थे। हमने अगस्त में शुरू किया। जहां जैसी आवश्यकता पड़ती है, करना पड़ता है। अगस्त में कांग्रेस के समय में हुआ। कृषि बीमा योजना 2003 में ही लागू कर दी थी। मैं माननीय सदस्य से निवेदन करना चाहूंगा, आप रिकार्ड देख लीजिये, आपकी सरकार है, रिकार्ड दिखवा लें, कहीं दिक्कत की बात नहीं है। मैं आपसे निवेदन कर रहा था कि सी आर एफ के नार्म्स में नहीं आता।

श्री उपाध्यक्षः परिस्थितियों के अनुसार सब सरकारें करती हैं।

श्री प्रद्युम्न सिंह (राजाखेड़ा): मैं आपको एक मिनट निवेदन कर दूं। 2005-06 में सरकार को 311 करोड़ रुपये सी आर एफ में मिला, 2006-07 में 327 करोड़ ..(व्यवधान) एक मिनट सुन लें, कहां दिक्कत है? 2007-08

(श्री प्रद्युम्न सिंह)

में 343 करोड़ रुपया और 2008-09 में जो मार्च के बाद शुरू हुआ, इनको मिलेगा 360 करोड़ रुपया। यह सब मिलाकर करीब हुआ 1341 करोड़ रुपया और राज्य का कंट्रीब्यूशन 25 प्रतिशत से जाकर करीब-करीब 327-328 करोड़ रुपया राज्य सरकार का बैठता है। आप कहते हैं कि केन्द्र सरकार इस खर्चे को मानेगी नहीं। यह बात भी सही है कि आपकी सरकार के पास यह पैसा आलरेडी ट्रांसफर हो चुका है। सरकार के पास यह पैसा चाहे आप खर्च करें या नहीं करें, आपके अकाउंट में ट्रांसफर हो गया है यह पैसा।

श्री घनश्याम तिवाड़ी (खाद्य एवं नागरिक आपूर्ति मंत्री): इसमें थोड़े ही खर्च कर सकते हैं? (व्यवधान)

श्री प्रद्युम्न सिंह (राजाखेड़ा): हां, मेरी बात सुन लें। 25 प्रतिशत आपका कंट्रीब्यूशन, 25 प्रतिशत कंट्रीब्यूशन का मतलब 328 करोड़ रुपया, अगर भारत सरकार नहीं भी मानती है तो आपके पास आज एक क्वेश्चन है कि 328 करोड़ रुपया आप इस पाले के पेटे, इस नुकसान के पेटे किसान को बांट सकते हैं। ..(व्यवधान)

श्री राजेन्द्र राठौड़ (सार्वजनिक निर्माण मंत्री): मैं आपको टोकना नहीं चाहता, पर यह बताएं कि कौनसी मद में से बांट सकते हैं सी आर एफ का पैसा? (व्यवधान)

श्री प्रद्युम्न सिंह (राजाखेड़ा): आप मेरी बात सुनिये। मैं वही तो बता रहा हूं, आप सुन तो लें। (व्यवधान)

श्री राजेन्द्र राठौड़ (सार्वजनिक निर्माण मंत्री): फाइनेंस कमीशन की रिकमण्ड पर सी आर एफ का पैसा मिलता है, कोई एहसान थोड़े ही है। (व्यवधान)

श्री प्रद्युम्न सिंह (राजाखेड़ा): आपको प्रोविजन करना पड़ता है अपने शेयर के 25 प्रतिशत का। वही तो मैंने कहा है। मैं कौनसी गलत बात कह रहा हूं। आपको अपने 25 प्रतिशत पैसे का प्रोविजन करना पड़ता है और आपको मिलाकर रखना पड़ता है यह पैसा। कहने का मेरा मतलब यह है कि आपके पास आज सरप्लस फण्ड्स हैं, अगर आप किसान को भरपूर सहायता देना चाहते हैं तो आपके पास 328 करोड़ रुपये आज की तारीख में उपलब्ध हैं, आप करें। 430 करोड़ रुपया जो पुराना बचा हुआ है सी आर एफ का पैसा, जिसके लिए आप भारत सरकार से बार-बार कहते हैं, मैं माननीय मंत्रीजी से

(श्री प्रद्युम्न सिंह)

निवेदन करना चाहूंगा कि वह सदन में खड़े होकर यह घोषणा करें कि यह जो 430 करोड़ रुपया आपके पास बचा हुआ है, उस पैसे को खर्च करें। हम आपके साथ हैं।

श्री लक्ष्मीनारायण दवे (खनिज मंत्री): थोड़ा करैक्शन कर दें। यह जो पैसे की बात कर रहे हो, यह सी आर एफ का नहीं, एन सी सी एफ का पैसा 359 करोड़ है।

डा. सी. पी. जोशी (नाथद्वारा): आप करैक्ट कर लें, 100 करोड़ रुपया एन सी सी एफ का है। (व्यवधान)

श्री लक्ष्मीनारायण दवे (खनिज मंत्री): एन सी सी एफ का 100 करोड़ रुपया आया, उसमें भी राइडर लगाया। एक पैसा भी हाथ में नहीं है।

श्री प्रद्युम्न सिंह (राजाखेड़ा): यह अब आपकी इच्छा है। (व्यवधान)

डा. सी. पी. जोशी (नाथद्वारा): नहीं-नहीं, नो कन्फ्यूजन, सी आर एफ और एन सी सी एफ का पैसा जो 2004-05 तक आपके पास है, वह 420 करोड़ रुपया है, उसको आप प्लान में यूज करने के लिए भारत सरकार को लिख रहे हो। (व्यवधान)

श्री लक्ष्मीनारायण दवे (खनिज मंत्री): 420 करोड़ की बात कर रहा हूं, एन सी सी एफ का पैसा तो उसमें ट्रांसफर हो जाएगा पिछले प्लान में। (व्यवधान)

श्री घनश्याम तिवाड़ी (खाद्य एवं नागरिक आपूर्ति मंत्री): एक मिनट, 420 है न। 420 आपके पास हैं वह तो। (व्यवधान)

श्री राजेन्द्र राठौड़ (सार्वजनिक निर्माण मंत्री): उपाध्यक्ष महोदय, यह सही है कि सी आर एफ का जो भी पैसा सरकार को मिलता है, वह फाइनेंस कमीशन की रिकमण्डेशन पर मिलता है। यह सही है कि राजाखेड़ा से आने वाले माननीय सदस्य जब वित्त मंत्री थे, इन्होंने भी अपने आखिरी समय में 156 करोड़ रुपये ट्रांसफर किये थे प्लान में। और यह भी सही है कि इस बार भी जो रिकमण्डेशन है फाइनेंस कमीशन की, उसके अनुसार 430 करोड़ रुपये हमारे प्लान के अंदर आने चाहिये, जो जान-बूझकर भारत सरकार हमारे साथ नाइंसाफी कर रही है। मैं तो निवेदन करूंगा, माननीय उपाध्यक्ष महोदय, बड़ी ... (व्यवधान)

डा. सी. पी. जोशी (नाथद्वारा): उस पैसे तक आप किसान को मदद कीजिये, हम आपके साथ हैं। प्रस्ताव पास करिये। हम केन्द्र सरकार को लिख दें कि जो 400 करोड़ से ज्यादा प्लान में यूज करना चाहते हो, उस प्लान के 400 करोड़ रुपये तक राजस्थान सरकार किसान को बांट दे। हम केन्द्र से मदद के लिए बात करेंगे, आप करिये।

श्री राजेन्द्र राठौड़ (सार्वजनिक निर्माण मंत्री): उपाध्यक्ष महोदय, यह जो सारा पैसा है, यह प्लान ..(व्यवधान)

डा. सी. पी. जोशी (नाथद्वारा): आप प्रस्ताव लाइये न, क्या तकलीफ है? आप चाहते हो कि हम आपकी मदद करें, हम आपकी मदद को खड़े हुए हैं। जो सी आर एफ के 400 करोड़ रुपये प्लान में डाइवर्ट करना चाहते हो, उस 400 करोड़ रुपये तक किसान की मदद कीजिए, प्रस्ताव लाइये, हम प्रस्ताव का समर्थन करते हैं।

श्री लक्ष्मीनारायण दवे (खनिज मंत्री): माननीय उपाध्यक्ष महोदय, सी आर एफ का पैसा स्टेट प्लान में आप भी डाल चुके हो। आपने 42.28 करोड़ रुपये ट्रांसफर किये। यह तो फाइनेंस कमीशन की रिपोर्ट में लास्ट के अंदर डालते रहे हैं। आपने भी डाला है।

डा. सी. पी. जोशी (नाथद्वारा): फिर मुख्य मंत्रीजी क्यों मांग कर रही हैं? केन्द्र अलाउ नहीं कर रहा है, आप केन्द्र को लिख रहे हो..(व्यवधान) आप उलटी बात कर रहे हो। आप केन्द्र सरकार को तो लिख रहे हो कि 400 करोड़ रुपया वह अलाउ करे।

श्री लक्ष्मीनारायण दवे (खनिज मंत्री): हमें तो ..(व्यवधान) एन सी सी एफ का पैसा रखा 349 करोड़ ..(व्यवधान)

श्री रामप्रताप कासनिया (पीलीबंगा): उपाध्यक्ष महोदय, बहस में समय निकल रहा है। एक मिनट में कह रहे थे। (व्यवधान)

श्री सुरेन्द्र सिंह राठौर (श्रीगंगानगर): उपाध्यक्ष महोदय, इस सरकार की नीयत साफ हो रही है कि यह सी आर एफ के पैसे को किसान को नहीं देना चाहते। यह इनकी नीयत साफ हो चुकी है। न यह गिरदावरी कराना चाहते हैं। यह किसानों को ..(व्यवधान)

श्री राजेन्द्र राठौड़ (सार्वजनिक निर्माण मंत्री): उपाध्यक्ष महोदय, नाथद्वारा से आने वाले माननीय सदस्य ने प्रस्ताव रखने की बात कही। उपाध्यक्ष महोदय, माननीय मंत्री महोदय ने अपनी बात कहते हुए कहा था कि

(श्री राजेन्द्र राठौड़)

सी आर एफ का पैसा जो हमारे पास है, हम राजस्थान के किसान तक पहुंचाना चाहते हैं इसलिए सदन एक संकल्प पारित करे। उपाध्यक्ष महोदय, आपके पास रेजीड्यूअल पॉवर है, मैं निवेदन करूंगा ..(व्यवधान)

डा. सी. पी. जोशी (नाथद्वारा): सरकार प्रस्ताव लाए कि 400 करोड़ रुपया बचा हुआ है, केन्द्र सरकार ..(व्यवधान)

श्री सुरेन्द्र सिंह राठौर (श्रीगंगानगर): आप प्रस्ताव लाओ न, कौन रोक रहा है?

डा. सी. पी. जोशी (नाथद्वारा): प्रस्ताव लाइये। माननीय मंत्री महोदय, प्रस्ताव लाइये। (व्यवधान)

श्री राजेन्द्र राठौड़ (सार्वजनिक निर्माण मंत्री): नियम और प्रक्रिया के अंदर मंत्री महोदय प्रस्ताव रख रहे हैं, सदन पारित करे इस प्रस्ताव को। या तो यह कह दें कि सी आर एफ का पैसा राजस्थान के किसानों तक पहुंचाना चाहिये इसलिए सदन जो संकल्प लेकर आ रहा है, उसको पास करें । माननीय मंत्री महोदय ने अपनी भावनाओं से बताया, या तो कांग्रेस कह दे कि हम इनके साथ हैं या फिर कांग्रेस यह कह दे कि हम घड़ियाली आंसू बहा रहे हैं। पैसा हम किसान के पास पहुंचाना चाहते हैं पर सी आर एफ के नार्म्स में .. (व्यवधान)

डा. सी. पी. जोशी (नाथद्वारा): ..(व्यवधान) हम तैयार हैं पर साड़ी और ..(व्यवधान) में बांटने नहीं देंगे। 400 करोड़ रुपये सी आर एफ प्लान के जो पड़े हैं उनको भारत सरकार आपको अलाउ करे किसान के लिए, आप प्रस्ताव लाइये, हम समर्थन करेंगे, हम करवाकर लाएंगे भारत सरकार से। (व्यवधान)

श्री राजेन्द्र राठौड़ (सार्वजनिक निर्माण मंत्री): यह राजस्थान का पैसा है, उसमें एहसान नहीं है। (व्यवधान) प्रस्ताव पारित करेंगे।

श्री सांगसिंह भाटी (जैसलमेर): केन्द्र सरकार में हमारा शेयर नहीं है क्या?

श्री संयम लोढ़ा (सिरोही): 2005 का अनस्पैंट अमाउंट आप किसानों में बांटिये। (व्यवधान)

श्री रामप्रताप कासनिया (पीलीबंगा): बहस का कोई मतलब नहीं है। (व्यवधान)

श्री संयम लोढ़ा (सिरोही): सी आर एफ का अनस्पैंट अमाउंट किसानों में बांटिये आप। (व्यवधान)

श्री सांगसिंह भाटी (जैसलमेर): हम जनता के चुने हुए प्रतिनिधि हैं। (व्यवधान)

श्री रामप्रताप कासनिया (पीलीबंगा): ये विद्वान लोग बहस कर रहे हैं। (व्यवधान) एक मिनट कृपा करके हमें भी दें। उपाध्यक्ष महोदय, हाउस में जो बात नहीं आई है, वह मैं निवेदन करना चाहता हूं।

श्री संयम लोढ़ा (सिरोही): उपाध्यक्ष महोदय, 2004-05 का सेंट्रल रिलीफ फण्ड का जो अनस्पैंट अमाउंट है, वह राजस्थान के किसानों में बांटने का प्रस्ताव लाना चाहिये। कांग्रेस पार्टी उस प्रस्ताव का समर्थन करेगी। (व्यवधान)

श्री उपाध्यक्ष: अंकित नहीं हो।

श्री रामप्रताप कासनिया (पीलीबंगा): ×××

श्री बद्रीलाल जाट (कपासन): ×××

श्री संयम लोढ़ा (सिरोही): ×××

श्री रामप्रताप कासनिया (पीलीबंगा): ×××

श्री उपाध्यक्ष: आप बीच में टोकाटोकी नहीं करें। (व्यवधान)

श्री बद्रीलाल जाट (कपासन): ×××

श्री रामप्रताप कासनिया (पीलीबंगा): ×××

श्री उपाध्यक्ष: वो बोल रहे हैं, आप बीच में टोकाटाकी मत कीजिए। राजाखेड़ा से आने वाले माननीय सदस्य अपनी बात कह रहे हैं, इनको समाप्त करने दीजिए। आप कहना, बाद में मौका मिलेगा आप लोगों को ...(व्यवधान)

श्री रामप्रताप कासनिया (पीलीबंगा): ×××

श्री मुरारी लाल मीणा (बांदीकुई): ×××

श्री उपाध्यक्ष: अभी बहस नहीं हो रही ...(व्यवधान)

श्री रामप्रताप कासनिया (पीलीबंगा): ×××

श्री मुरारी लाल मीणा (बांदीकुई): ×××

श्री उपाध्यक्ष: माननीय सदस्य बोल रहे हैं, आप बीच में नहीं। कुछ अंकित नहीं हो रहा है, माननीय सदस्य।

श्री मुरारी लाल मीणा (बांदीकुई): ×××

श्री रामप्रताप कासनिया (पीलीबंगा): ×××

श्री उपाध्यक्ष: माननीय सदस्य, इनको कहने दीजिए ...(व्यवधान)

श्री रामप्रताप कासनिया (पीलीबंगा): ×××

श्री उपाध्यक्ष: क्या महत्वपूर्ण है?

श्री रामप्रताप कासनिया (पीलीबंगा): माननीय उपाध्यक्ष महोदय, सरकार ने 126 करोड़ रुपये पहली बार दिये, इसके लिए तो बहुत-बहुत धन्यवाद। पर मैं यह निवेदन करना चाहता हूं कि काश्तकार कब तक इस तरह से भिक्षा मांगता रहेगा?

श्री संयम लोढ़ा (सिरोही): माननीय उपाध्यक्ष महोदय, यह इस तरह से नहीं ...(व्यवधान) क्या कर रहे हैं यह?

श्री रामप्रताप कासनिया (पीलीबंगा): मैं कांग्रेस के माननीय सदस्यों से और राजस्थान पूरी विधान सभा से निवेदन करना चाहता हूं कि अब वो समय आ गया है कि काश्तकार ...(व्यवधान) सरकार में आप भी हो, दिल्ली में बैठे हो, आप भी नहीं बच सकते इस जिम्मेदारी से।

कभी हरियाणा, कभी पंजाब का उदाहरण दे रहे हैं, मैं यह निवेदन करना चाहता हूं कि जब भी प्राकृतिक प्रकोप से कोई फसल नष्ट हो तो पाँच हजार रुपये, छः हजार रुपये प्रति बीघा तय होना चाहिए। इसमें स्टेट का शेयर होना चाहिए 30 परसेंट और 70 परसेंट होना चाहिए केन्द्र का ताकि काश्तकार हमेशा भीख नहीं मांगे, कटोरा ले लेकर दर-दर पर मांगा नहीं करे। इस तरह की कोई व्यवस्था करो, इस तरह का कोई प्रस्ताव पारित करो।

श्री उपाध्यक्ष: आ गयी आपकी बात। (व्यवधान)

श्री रामप्रताप कासनिया (पीलीबंगा): यहां आरक्षण पर समय बर्बाद और तरह-तरह के आरोप-प्रत्यारोप पर समय बर्बाद, इस देश को कहां लेकर जाएंगे?

श्री उपाध्यक्ष: माननीय सदस्य। (व्यवधान)

श्री रामप्रताप कासनिया (पीलीबंगा): आरक्षण की बैसाखियों पर वोट नहीं मिलेगा।

श्री सी. डी. देवल (रायपुर): माननीय उपाध्यक्ष महोदय, हमें भी बोलने का मौका देंगे कि नहीं?

श्री रामप्रताप कासनिया (पीलीबंगा): इस देश को बचाना है तो आरक्षण, आरोप-प्रत्यारोप से बचो, काश्तकार के लिए संकल्प पारित करके भेजो।

श्री उपाध्यक्ष: माननीय सदस्य। (व्यवधान) आ गयी बात आपकी, माननीय सदस्य।

श्री रामप्रताप कासनिया (पीलीबंगा): कि 30 परसेंट राजस्थान सरकार देगी, 70 परसेंट केन्द्र से दिलवाओ, यह निवेदन करना चाहता हूं। (व्यवधान)

श्री उपाध्यक्ष: माननीय सदस्य, स्थान ग्रहण कीजिए आप। (व्यवधान)

श्री रामप्रताप कासनिया (पीलीबंगा): क्या गिरदावरी है, क्या हो रहा है? कोई गिरदावरी की जरूरत नहीं है परमानेण्ट इन्तजाम करना पड़ेगा।

श्री उपाध्यक्ष: माननीय सदस्य, स्थान ग्रहण कीजिए आप। बार-बार यही बात रिपीट हो रही है, वही की वही आ रही है, माननीय सदस्य। (व्यवधान) वो की वो ही बात रिपीट कर रहे हैं, माननीय सदस्य। (व्यवधान)

श्री रामप्रताप कासनिया (पीलीबंगा): और मैं आज कहता हूं कि ज्यादा समय अब चलने वाली बात नहीं है, बहुत ज्यादा समय नहीं लगने वाला है, यह करना पड़ेगा ...(व्यवधान)

श्री प्रद्युम्न सिंह (राजाखेड़ा): मैं समाप्त कर रहा हूं।

श्री बद्रीलाल जाट (कपासन): उपाध्यक्ष महोदय, एक मिनट।

श्री उपाध्यक्ष: राजाखेड़ा से आने वाले माननीय सदस्य अपनी बात कम्प्लीट कर रहे हैं।

श्री सी. डी. देवल (रायपुर): तो हमें भी मौका दोगे कि नहीं आप?

श्री उपाध्यक्ष: आप इनको कहने दीजिए, बाद में ...(व्यवधान) माननीय सदस्य, नहीं, विराजें आप, आप मंत्रीजी से बात कर लेना। ...(व्यवधान)

श्री प्रद्युम्न सिंह (राजाखेड़ा): मैं अपनी बात कहना चाहता हूं, माननीय उपाध्यक्ष महोदय, बस दो मिनट में अपनी बात खतम कर दूंगा। (व्यवधान)

(श्री प्रद्युम्न सिंह)

327 करोड़ का जो इनका कंट्रीब्यूशन है, उस सीमा तक यह खर्च करना चाहें खर्च कर सकते हैं, इसमें कहीं बात नहीं है।

श्री राजेन्द्र राठौड़ (सार्वजनिक निर्माण मंत्री): वाह, वाह। (व्यवधान)

श्री प्रद्युम्न सिंह (राजाखेड़ा): यह आपका सोच है, मैं अपना कह रहा हूं, आप मानो चाहे मत मानो। दूसरा, इनको एडवांटेज क्या है ...

श्री लक्ष्मीनारायण दवे (खनिज मंत्री): सी.आर.एफ. के नार्म्स के अन्दर 25 परसेंट से बंधे हुए हैं।

श्री प्रद्युम्न सिंह (राजाखेड़ा): आज एन.आर.ई.जी.पी. के अन्दर पूरा राजस्थान ले लिया गया, आज लोगों को रोजगार मिलेगा। आज राष्ट्रीय ग्रामीण रोजगार गारण्टी योजना के तहत पाँच हजार करोड़ राज्य को मिलने वाला है। पाँच हजार करोड़ रुपया मिलने वाला है, 'भूतो न भविष्यति', इतना पैसा मिलने वाला है केन्द्र सरकार से इनको, इसके। तहत भविष्य के अन्दर अकाल राहत कार्य इतना कोई अहम नहीं रह जाएगा, इतनी इम्पोर्टेन्स नहीं रह जाएगी, यह तो राउण्ड द ईयर लोगों को रोजगार मिलेगा। तो मैं आपसे निवेदन कर रहा हूं कि इस सीमा तक यह मदद करें और कलक्टर्स को निर्देशित करें, यहां से सरकार निर्देशित करे कि जिस प्रकार का प्रोफोर्मा दिया है, जैसा एप्रिहेन्सन सभी तरफ के माननीय सदस्यों के दिमाग में है कि इस प्रोफोर्मा में जो कंडीशनलिटीज डाली गयी हैं उसकी वजह से किसी भी किसान को, जो प्रभावित किसान हैं, पाँच परसेंट को भी राहत नहीं मिलेगी। यही बात आपसे कह कर अपनी बात समाप्त करता हूं। (व्यवधान)

श्री बद्रीलाल जाट (कपासन): माननीय उपाध्यक्ष महोदय, एक मिनट।

श्री कन्हैया लाल मीणा (बस्सी): माननीय उपाध्यक्ष महोदय, एक मिनट। (व्यवधान)

श्री उपाध्यक्ष: माननीय सदस्य ...(व्यवधान) कोई समय नहीं दिया जाएगा।

श्री बद्रीलाल जाट (कपासन): माननीय उपाध्यक्ष महोदय, चित्तौड़ जिले की बात है।

श्री सी. डी. देवल (रायपुर): माननीय उपाध्यक्ष महोदय। (व्यवधान)

श्री उपाध्यक्ष: श्री बुलाकीदास कल्ला। (व्यवधान)

श्री बद्रीलाल जाट (कपासन): सरसों तो हिन्दुस्तान के सभी कोने में होती है अफीम का सोचो।

श्री कन्हैया लाल मीणा (बस्सी): माननीय उपाध्यक्ष महोदय, मैं एक मिनट बोलूंगा मात्र ...(व्यवधान)

श्रीमती प्रतिभा सिंह (नवलगढ़): माननीय उपाध्यक्ष महोदय। (व्यवधान)

श्री बद्रीलाल जाट (कपासन): माननीय उपाध्यक्ष महोदय, सरसों हिन्दुस्तान के सभी कोनों में होती है, सब काश्तकार के खेत में होती है पर अफीम सभी काश्तकार के खेत में नहीं बोई जाती ...(व्यवधान)

एक माननीय सदस्य: किसानों को ज्यादा से ज्यादा गिरदावरी करवा कर उनको फायदा मिले, माननीय उपाध्यक्ष महोदय। (व्यवधान)

श्री बद्रीलाल जाट (कपासन): राजस्थान की आन, बान, शान का प्रतीक चित्तौड़ है, चित्तौड़ का काश्तकार अपनी आन-बान का बाना बुन कर अपने खेत पर टकटकी निगाह से देख रहा था। नारकोटिक्स विभाग, जो फाइनेन्स डिपार्टमेंट है, प्रतिवर्ष उनकी इच्छा अनुसार पट्टे नहीं देता है, जो लाइसेंसधारी काश्तकार हैं उनको एक वर्ष के बाद पुनः पट्टा दिया जाता है। राजस्थान की मुख्य मंत्री ने किसानों के लिए किया है परन्तु जो फाइनेन्स डिपार्टमेंट, केन्द्र सरकार के द्वारा अफीम बोई जाती है, लाइसेंस दिये जाते हैं उन काश्तकारों के शीतलहर और पाले की वजह से पूरी अफीम की फसल चौपट हो चुकी है।

श्री उपाध्यक्ष: माननीय सदस्य।

श्री बद्रीलाल जाट (कपासन): जो औसत उनको देना है वो न तो खरीद सकता है, न बेच सकता है और न ही वो अपने खेत पर खड़ी फसल रख सकता है।

श्री उपाध्यक्ष: इसको अलग से उठाइये आप, माननीय सदस्य।

श्री बद्रीलाल जाट (कपासन): माननीय उपाध्यक्ष महोदय, गत वर्ष जिस काश्तकार ने फसल हकवा दी, वो अब के भी हकवाता है तो द्वि वर्ष के बाद उनके पट्टे स्वतः निरस्त हो जाते हैं विभाग के द्वारा। उनके साथ घोर अन्याय हो रहा है। इस सदन के द्वारा केन्द्र सरकार को एक प्रस्ताव पारित

(श्री बद्रीलाल जाट)

करके भेजें ताकि काश्तकारों के हितों की रक्षा हो सके। उनके बेटे और बच्चियों का जो विवाह करने वाला था, उसका सपना टूटा है, आंसू बह रहे हैं।

श्री उपाध्यक्ष: माननीय सदस्य, आप स्थान ग्रहण कीजिए।

श्री बद्रीलाल जाट (कपासन): मुझे पूरा विश्वास है कि यह सदन अफीम के बारे में काश्तकारों के लिए उचित कदम उठाएगा। (व्यवधान)

श्री उपाध्यक्ष: माननीय सदस्य, आगे आपका अंकित नहीं होगा।

श्री बद्रीलाल जाट (कपासन): ×××

श्री उपाध्यक्ष: मैंने नाम पुकार लिया, माननीय सदस्य।

सूचना

अधिवक्ताओं का आवासीय योजना के लिए विद्यालय पर प्रदर्शन

श्री रणवीर सिंह गुढा (गुढा): माननीय उपाध्यक्ष महोदय, पाइण्ट ऑफ इन्फार्मेशन। माननीय उपाध्यक्ष महोदय, बाहर हजारों अधिवक्ता अपनी आवासीय कालोनी के लिए प्रदर्शन कर रहे हैं ...(व्यवधान)

श्री उपाध्यक्ष: माननीय सदस्य, मैंने नाम पुकार लिया। (व्यवधान)

श्री जोगाराम पटेल (संसदीय सचिव): बात कर रहे हैं, अन्दर पाँच आदमी आ गये हैं ...(व्यवधान)

श्री उपाध्यक्ष: माननीय सदस्य।

श्री रणवीर सिंह गुढा (गुढा): पुलिस ने उनसे धक्का-मुक्की की है। माननीय उपाध्यक्ष महोदय, पाइण्ट ऑफ इन्फार्मेशन के तहत मैं आपसे, माननीय गृह मंत्रीजी से यह पूछना चाहता हूं कि बाहर अधिवक्ता अपने आवास के लिए, अपनी आवासीय कालोनी के लिए ...

श्री उपाध्यक्ष: पाइण्ट ऑफ इफार्मेशन क्या है?

श्री रणवीर सिंह गुढा (गुढा): जो हमारे स्वायत्त शासन मंत्री उनसे भरोसा दिलाकर आये थे, उनसे कमिटमेंट कर आये थे कि आपको आवासीय कालोनी दी जाएगी, उनको आवास की व्यवस्था की जाएगी ...(व्यवधान)

श्री उपाध्यक्ष: सूचना मिल गयी अपने आप।

श्री रणवीर सिंह गुढा (गुढा): माननीय उपाध्यक्ष महोदय, पाइण्ट ऑफ इन्फार्मेशन। वहां पर धक्का-मुक्की हो रही है अधिवक्ताओं के साथ में।

श्री उपाध्यक्ष: कह दी न बात ...(व्यवधान) सूचना मिल गयी अपने आप।

श्री रणवीर सिंह गुढा (गुढा): वकीलों के साथ में पुलिस ने धक्का मुक्की की है, माननीय उपाध्यक्ष महोदय। माननीय गृह मंत्रीजी से यह पूछना चाहता हूं कि क्या इनकी नालेज में है कि नहीं है? वहां जाकर आप जांच करा लें, माननीय उपाध्यक्ष महोदय।

श्री उपाध्यक्ष: माननीय सदस्य, आपने सूचना दे दी, सूचना मिल गयी, विराजिये।

श्रीमती प्रतिभा सिंह (नवलगढ़): माननीय उपाध्यक्ष महोदय, आप मेरे को बोलने का मौका दीजिए। आप क्या महिलाओं को किसान नहीं मानते हैं? (व्यवधान) सारे यही किसान हो गये, महिलाएं किसान नहीं हैं? यह कोई बात है? असल तो वो ही होती हैं।

श्री उपाध्यक्ष: कल्लाजी बोलेंगे, उसके बाद। (व्यवधान)

एक माननीय सदस्य: पचास परसेंट आरक्षण हो गया, अब क्या चाहिए? (व्यवधान)

श्री उपाध्यक्ष: हां, आप अकेली महिला हो देंगे। पहले कल्लाजी बोल लें, फिर आपको देंगे। (व्यवधान)

श्रीमती प्रतिभा सिंह (नवलगढ़): आप सब को दिये जा रहे हैं परमिशन बोलने की और मेरे को दे नहीं रहे हैं। (व्यवधान)

श्री सुभाष चन्द्र शर्मा (कोटपूतली): महिलाओं को भी मौका दो ... (व्यवधान) खेतों में तो महिलाएं काम करती हैं, महिलाओं को भी मौका दो। (व्यवधान)

श्रीमती प्रतिभा सिंह (नवलगढ़): मेरे को बोलने दीजिए आप। (व्यवधान)

श्री कन्हैया लाल मीणा (बस्सी): माननीय उपाध्यक्ष महोदय, इधर भी देखा करो सत्ता पक्ष की तरफ भी, उधर ही उधर रखते हो। कितनी बार खड़ा हो गया बोलने के लिए, आप तो प्रतिपक्ष ही प्रतिपक्ष की तरफ देखते हो, उधर से खड़ा कर देते हो ...(व्यवधान)

श्री उपाध्यक्ष: यह यहां बहस नहीं हो रही है, ऐसे क्या है?

श्री गुरजंट सिंह बराड़ (संगरिया): माननीय उपाध्यक्ष महोदय।

डा. बुलाकीदास कल्ला (बीकानेर): संगरिया से आने वाले माननीय सदस्य, मेरे को पुकार लिया है, आप मेरे बाद में बोल लेना।

शासकीय वक्तव्य

राज्य में पाले एवं शीतलहर से फसल को हुआ नुकसान

माननीय उपाध्यक्ष महोदय, सबसे पहले तो मैं आपके माध्यम से यह जानना चाहता हूं, माननीय राहत मंत्रीजी यह बताएं कि ओलावृष्टि के वक्त में जो पैकेज आपने अनाउंस किया था, क्या उसका 40 परसेंट ही बंटा था? (व्यवधान)

श्री गुरजंट सिंह बराड़ (संगरिया): माननीय उपाध्यक्ष महोदय, मेरा एक सुझाव है।

श्री उपाध्यक्ष: इनके बैठने के बाद। (व्यवधान)

श्री गुरजंट सिंह बराड़ (संगरिया): कमाल है, साहब। माननीय उपाध्यक्ष महोदय, मेरा आपसे एक निवेदन है।

श्री उपाध्यक्ष: इनके समाप्त करने के बाद ...(व्यवधान) इनके दो मिनट के बाद ...(व्यवधान)

डा. बुलाकीदास कल्ला (बीकानेर): माननीय उपाध्यक्ष महोदय, मैं अनेक गांवों में जाकर आया हूं, किसानों की फसलों को 90 परसेंट से ज्यादा नुकसान हुआ है और आप मानेंगे नहीं, पूरे राजस्थान में यह नुकसान हुआ है। अभी जो पैकेज का अनाउंसमेंट किया है उस अनाउंसमेंट में लघु और सीमान्त कृषकों को पर-हैक्टेयर मुआवजा देने की घोषणा की है। मैं आपके माध्यम से जानना चाहता हूं, माननीय, मंत्रीजी, क्या यह मुआवजा चार हजार रुपये, छः हजार रुपये और आठ हजार रुपये करने का विचार रखते हैं? नहीं, तो यह किसानों के साथ धोखा होगा। (व्यवधान)

श्री गुरजंट सिंह बराड़ (संगरिया): मेरा आपसे निवेदन है ....

(समय : 14.00 बजे)

डा. बुलाकीदास कल्ला (बीकानेर): आप बीच में नहीं बोलें, माननीय सदस्य, हम आपके बीच में नहीं बोलते हैं। आप कृपा करके मेरे बाद में बोल लेना ...(व्यवधान)

देखिये, अभी यह तय हुआ था कि अपन अनुशासन में रहेंगे और एक दूसरे की बारी के बाद बोलेंगे। आप वहां बारी तोड़ते हो वैसे ही यहां बारी क्यों तोड़ते हो? आप कृपा करके विराजें।

श्री उपाध्यक्ष: इनके बाद मौका देंगे।

श्री जोगाराम पटेल (संसदीय सचिव): यह बारी नहीं तोड़ते हैं, यह बारी मांगते हैं।

डा. बुलाकीदास कल्ला (बीकानेर): आप कृपा करके विराजें।

श्री उपाध्यक्ष: इनके बाद मौका देंगे, इनके बाद का जवाब देना आप ...(व्यवधान) इनके बाद देंगे आपको।

डा. बुलाकीदास कल्ला (बीकानेर): उपाध्यक्ष महोदय, आप हाउस को आर्डर में लाइये, ऐसे तो ठीक नहीं रहेगा।

एक माननीय सदस्य: कल्लाजी तो महिलाओं को भी नहीं बोलने देते हैं।

डा. बुलाकीदास कल्ला (बीकानेर): उपाध्यक्ष महोदय, मेरा तीसरा प्रश्न इनसे यह है कि 126 करोड़ रुपये का मुआवजा देना आपने तय किया है, आप यह बताएं कि राजस्थान में कुल कितना खराबा हुआ है? हमारी जानकारी के अनुसार राजस्थान में लगभग सात हजार करोड़ की फसलों का नुकसान हुआ है। और राजस्थान में लघु और सीमान्त कृषक सिंचित क्षेत्र में कितने हैं? नागौर में, गंगानगर में, हनुमानगढ़, बीकानेर, जैसलमेर और राज्य के अन्य जिलों में अलवर वगैरह में भी .....

एक माननीय सदस्य: सात हजार का पता कैसे लगा?

डा. बुलाकीदास कल्ला (बीकानेर): जहां किसान खेती करता है वहां लघु और सीमान्त कृषकों की बहुत कम संख्या है, इसलिए आप लघु और सीमान्त कृषक की जगह खेत को इकाई मानें, जो आपने बिल माफ करने की बात की है वह खेतवार इकाई मानकर करने का विचार रखते हैं? इसी प्रकार जो मुआवजा आप देने जा रहे हैं वह भी खेतवार और पर-बीघा देने का विचार रखते हैं या नहीं? अन्तिम बात मेरी यह है कि सी आर एफ के बारे में हमारे पूर्व वित्त मंत्रीजी और राजाखेड़ा से आने वाले माननीय सदस्य ने जो बिंदु उठाये कि राज्य का हिस्सा है उस हिस्से को आप किसानों को दे सकते हैं, जब आप सी आर एफ का पैसा प्लान में ले रहे हैं वह प्राकृतिक आपदाओं के लिए है चाहे वह प्लान में भी आ गया है लेकिन वह प्राकृतिक आपदाओं के लिए है इसलिए मैं ....

श्री लक्ष्मीनारायण दवे (खनिज मंत्री): आपने नहीं दिया।

डा. बुलाकीदास कल्ला (बीकानेर): आप अपनी बात कह देना। प्लान में आप किसी भी प्रकार से जब पैसा ले रहे हैं तो हमने भी वहां केन्द्रीय

(डा. बुलाकीदास कल्ला)

सरकार से मांग की है, हमारे अनेक नेता वहां जाकर हमारी नेता सोनिया गांधी जी से मिले हैं, बात हुई है।

श्री धर्मपाल चौधरी (संसदीय सचिव): आपकी सुनी नहीं।

डा. बुलाकीदास कल्ला (बीकानेर): आप विराज जाएं। प्रधान मंत्रीजी से भी मिले हैं और कृषि मंत्री जी से भी मिले हैं ...(व्यवधान) हमारा पूरा दवाब है।

श्री घनश्याम तिवाड़ी (खाद्य एवं नागरिक आपूर्ति मंत्री): यह मिल लिये, बहुत बड़ी बात है, वर्ना तो इनको सोनियाजी मिलने नहीं देती। एहसान कर रहे हैं कि हम जाकर मिल लिये, बहुत कृपा की। बहुत कृपा की।

श्री जोगाराम पटेल (संसदीय सचिव): बहुत बड़ा अहोभाग्य हो गया।

डा. बुलाकीदास कल्ला (बीकानेर): आपको क्या पता, वह तो हरेक से मिलती हैं। आपको भी मिलना हो तो मिलवा दूं।

श्री रामनारायण मीणा (नैनवां): आपसे तो वसुन्धराजी नहीं मिलतीं चार घंटे ...(व्यवधान)

डा. बुलाकीदास कल्ला (बीकानेर): आपकी मुख्य मंत्री तो छह-छह महीने तक नहीं मिलती हैं। विधवाओं से नहीं मिलतीं, फ्रीडम फाइटर से नहीं मिलतीं और आप लोगों से भी नहीं मिलतीं। यह किरोड़ीलालजी मिलने गये थे, इनसे नहीं मिली थीं।

श्री जोगाराम पटेल (संसदीय सचिव): आपको मिलना हो तो अभी मिला दें।

श्री गुरजंट सिंह बराड़ (संगरिया): यह किसान की बात है आप राजनीति मत करो।

डा. बुलाकीदास कल्ला (बीकानेर): हां, नहीं करूंगा।

श्री गुरजंट सिंह बराड़ (संगरिया): अगर किसान के आप सच्चे वफादार हो तो किसान की बात करो।

डा. बुलाकीदास कल्ला (बीकानेर): हां, किसान की बात करूंगा।

श्री गुरजंट सिंह बराड़ (संगरिया): आप दो मिनट विराजो, बोलने दो, आप तो बहुत बड़े लीडर हो।

डा. बुलाकीदास कल्ला (बीकानेर): मैं कम्प्लीट कर रहा हूं। आप मेरे को डिस्टर्ब करोगे तो ज्यादा बोलूंगा, नहीं तो मैं कम्प्लीट कर रहा हूं।

श्री उपाध्यक्ष: बोलने दें।

डा. बुलाकीदास कल्ला (बीकानेर): माननीय उपाध्यक्ष महोदय, मेरा यह कहना है कि राज्य सरकार को चाहिए कि वह 126 करोड़ में ओलावृष्टि की तरह ...(व्यवधान) जैसे चालीस परसेंट मुआवजा बांटा, बाकी बचा लिया, वैसे का वैसा 126 करोड़ बांटकर जनता के साथ धोखा करना चाहती हैं, हम नहीं होने देंगे। हम चाहते हैं कि पूरा का पूरा पैकेज जो आपने घोषित किया है वह पैकेज ऊँट के मुंह में जीरे के बराबर है इसलिए ज्यादा पैकेज दें और जितना नुकसान हुआ है उसको प्रति बीघा मुआवजा दिया जाए और सबके बिल माफ किये जाएं।

श्री उपाध्यक्ष: हां, बोलिये आप।

श्री गुरजंट सिंह बराड़ (संगरिया): उपाध्यक्ष महोदय, मेरा आपके माध्यम से सरकार से निवेदन है कि गंगानगर, हनुमानगढ़ और कुछ बीकानेर का जो हिस्सा है वहां पाला नहीं ऊपर से बर्फ पड़ी है। चाहे वहां कलक्टर साहब की रिपोर्ट मंगवाओ, चाहे किसी से भी पूछो, सुबह जब हम खेत पर जाते थे तो ऊपर फसल नहीं दिखती थी बर्फ दिखती थी। और कहीं हवा से मारे गये, ज्यादा ठंडी हवा से। गंगानगर में हमने पानी की कमी की वजह से सरसों की खेती सबसे ज्यादा करवाई, उस वजह से हमारा जो भी नुकसान है। अगर किसी के पास दस बीघा जमीन है तो उसने दस बीघा ही सरसों बो दी, चाहे दूसरे हिस्सों से पानी लेकर किया, चाहे वह कैसे भी किया। मेरा सरकार से निवेदन है आपके माध्यम से कि जितने भी ट्यूबवैल हैं उसको उसमें न लिया जाए कि यह थोड़ी जमीन वाला है, ज्यादा जमीन वाला है। हमारी सीलिंग सीमा बहुत पहले से लगी हुई है। मेरा आपसे यह निवेदन है कि सरकार को इस बात पर सोचना चाहिए कि जहां ज्यादा नुकसान हुआ है, गंगानगर में एग्रीकल्चर में 85 परसेंट सरसों का नुकसान डिक्लेयर किया, अखबारों में भी आया और मेरे पास उसकी कापी भी है, तो वहां ऐसी कोई व्यवस्था बना दें चाहे कलक्टर की कमेटी बना दें, वहां के ग्राम की एक इकाई मान लें, चाहे पंचायत की मान लो, गंगानगर में सरसों का तो पूरा का पूरा नुकसान हुआ है। जो फसल बल्ली पर थी तो वह बल्ली सफेद हो गयी। आज भी आप जाकर देख सकते हो।

मेरे भाई कल्लाजी बोल रहे थे, किसान की समस्या आती है तो किसान की बात करनी चाहिए। आप उसको ले जाते हैं कि ऊँट के मुंह में जीरा

(श्री गुरजंट सिंह बराड़)

है। मैं आपको निवेदन करूंगा कि पहली सरकार है जिसने आज से तीन साल पहले गड्डों के पैसे दिये थे। उसके साथ अकाल राहत में जोड़ा। अकाल राहत में जोड़ने के बाद आप गंगानगर, सार्दुलशहर जाकर देख लो, छह करोड़ के पक्के धोरे, खाले दिये थे आज वहां हमारे अन्तिम छोर तक पानी जाने लग गया है। मेरा ख्याल है कि आपने जैसे अकाल राहत में काम करवाये, वे सब कच्चे करवाये। न तो कच्चा किया और न उसका पैसा उठाया आज तक। जो भी पिछली सरकार ने खाले दिये, मैं आपको निमंत्रण देता हूं, चाहे आपकी कमेटी आए, मैं आपके साथ चलता हूं अगर खाले, गांव बोले कि काम हुआ है। अकाल राहत में काम होता तो गंगानगर, राजस्थान की कोई सड़क कच्ची नहीं रहती, वहां पक्के तालाब बन जाते । आज तक का अकाल राहत का पैसा कहीं भी अर्थ में नहीं लिया। अगर आप कोई चैलेंज करें तो जहां अकाल राहत के आपने काम करवाये, राजस्थान में कितने भी करवाये हैं, मैं आपके साथ चलता हूं अगर यह मेरी बात गलत हो तो मैं सदन में ही नहीं आऊंगा, आपको वादा करता हूं। आप जब किसान की बात करो तो प्योरली किसान की बात करो। किसान किसी जाति-पांति का नहीं है- किसान कामरेड भी हो सकता है, किसान बनिया भी हो सकता है, किसान जाट भी हो सकता है, सरदार भी। यहां आकर जो आप करते हो कि आपने नहीं दिया, अब देओ ना आप। हम उस दिन बोले थे, आपने यह कहा था कि मदेरणाजी ने चिट्ठी लिख दी, चिट्ठी लिखने के बाद हुआ क्या? किसान मर रहा है, गवर्नर साहब से मिलने वालों में हम भी थे, हम सरसों लेकर आये, वहां दस-बीस एम एल ए थे, अध्यक्ष महोदय थे, वहां जाकर गवर्ननर साहब को यह कहा कि इतना नुकसान हो गया। आस पर जी रहे हैं आज किसान। गंगानगर का किसान यह हो गया कि सरकार ने दे दिया उस आस पर जी रहा है। नहीं तो आज तक, मेरा ख्याल है, सैकड़ों मौतें हो जातीं। उनको आस है ...(व्यवधान) सरकार पर, सदन पर आस है कि हमारे को कुछ न कुछ देंगे। जैसे आज एक दूसरे से कहकर हम देना नहीं चाहते, उसमें पैसा दे रहे हो खुला दिल करके मैं तो आपसे निवेदन करूंगा कि उस किसान के लिए सोचो जिस किसान ने हमारे को सदन में भेजा है।

मैं इतना ही कहता हुआ आपने जो समय दिया उसके लिए धन्यवाद। (व्यवधान) मैं आपसे निवेदन करूंगा, आप कंसीडर करें।

श्री उपाध्यक्ष: माननीय प्रतिभा सिंहजी ...(व्यवधान)

श्री सी. डी. देवल (रायपुर): ...(व्यवधान) पाली जिले से आ रहे हैं, एक मिनट मेरी बात सुन लीजिए। मुझे तो एक मिनट ही बोलना है, मैं कई देर से खड़ा हूं, उपाध्यक्ष महोदय।

श्री कन्हैया लाल मीणा (बस्सी): प्रतिभा सिंहजी पहले बोलेंगी फिर बाद में बोल लेना ।

श्रीमती प्रतिभा सिंह (नवलगढ़): माननीय उपाध्यक्ष महोदय, यहां पर काफी चर्चा अभी शीतलहर पर और पालावृष्टि पर हुई। एक कहावत है कि गांव के अन्दर जब आकड़ा सूख जाए तो यह मानना चाहिए कि वाकई सर्दी पड़ी है, आप देखिये मीलों-मील आपको कहीं पर भी आकड़ा नजर नहीं आएगा। सूखे हुए हैं यानि कि पूरे राजस्थान में इस बार हम लोग पाले और शीतलहर से प्रभावित हुए। और यह खाली राजस्थान की बात नहीं है, पूरा उत्तर भारत शीतलहर से प्रभावित है और यह शीत लहर बहुत लम्बी चल गयी इसकी वजह से फसल को दुबारा पनपने का मौका नहीं मिला। मैं एक ध्यान और आपका दिलाना चाहूंगी कि जो कृषि का काम है, कम से कम सत्तर प्रतिशत काम महिलाओं के हाथ में है। पुरूष दिन में चौपाल पर बैठे रहते हैं और शाम को घूम-घामकर घर जाते हैं।

श्री विजय बंसल (भरतपुर): यह गलत बात है।

श्रीमती प्रतिभा सिंह (नवलगढ़): सत्तर प्रतिशत काम महिलाएं खेती का देखती हैं।

श्री उपाध्यक्ष: इसीलिए तो साड़ी मिलती है एक्स्ट्रा।

श्रीमती प्रतिभा सिंह (नवलगढ़): साड़ी से चलने वाला नहीं है। साड़ी से पेट थोड़े ही न भर लेंगे, औरतें अपने बच्चों को थोड़े न पाल लेंगी। साड़ी से अपनी शर्म ढक सकती हैं।

श्री जुबेर खान (रामगढ़): आपने लखनऊ में भी बांटी थीं उनका क्या हुआ? ऐसे ही मरवाएंगे यह गरीब औरतों को यहां।

श्री उपाध्यक्ष: उनकी बात काम आयी, भाई।

श्रीमती प्रतिभा सिंह (नवलगढ़): मैं आपका ध्यान दिलाऊंगी, जो मुख्य मंत्रीजी ने 126 करोड़ का पैकेज दिया है, स्वागत योग्य है कि किसान का हुआ। जो उनके पास धन उपलब्ध था उसमें से उन्होंने इतनी नीयत की कि मैं 126 करोड़ रुपया किसानों के लिए दे रही हूं और अपना भी उन्होंने

(श्रीमती प्रतिभा सिंह पाटील)

महिलाओं को समर्पित किया। लेकिन अब कथनी और करनी का अंतर देखिये आप। आपने घोषणाएं तो बहुत कर दीं, कि यह 126 करोड़ रुपया आपदा प्रबंधन के लिए शीतलहर और पाले के लिए रख दिया, लेकिन वास्तव में गिरदावरी हम जब ठीक ढंग से नहीं करा पाएंगे तो इस 126 करोड़ रुपये से, मेरा चैलेंज है, सरकार जिस ढंग से गिरदावरी करना चाहती है, किसान का नुकसान हुआ उसका मुआवजा उसे बिलकुल नहीं मिलने वाला है।

दूसरी मैं आपको बात कहूंगी कि बिजली के बिल छह महीने के माफ करने चाहिये। लोगों के पास खाने के लिए दाने नहीं हैं, बिजली के बिल वे कहां से जमा कराएं ?

तीसरा मेरा पाइंट एक है कि आप खेत को इकाई मानिये और फसल को इकाई मानते हुए पाँच हजार रुपया प्रति बीघा के हिसाब से दीजिए, इसके खर्चे की कमेटी बनाइये। कि वास्तव में खर्चा फसल को बोने पर कितना आता है। जो व्यावहारिक आंकड़े हैं उनमें मत जाइये कि पचास परसेण्ट। आपने गुजरात का रिजल्ट देखते हुए यह तो देख लिया कि महिलाओं को बजट समर्पित कर दो। लिंग भेद अब शुरू हुआ है, इसका असर दस साल बाद जनसंख्या पर आएगा। लेकिन आज तो मतदाता पचास प्रतिशत महिलाएं हैं, आप कथनी और करनी में अंतर देखेंगे तो निश्चित मात खाएंगे ... (व्यवधान) बिलकुल है। जिस ढंग से गिरदावरी करा रहे हैं, मेरा चैलेंज है यदि किसानों को मुआवजा मिल जाए इसका। एक चीज हमें करनी चाहिये, हम जो गिरदावरी करा रहे हैं इसका वहां तहसील स्तर पर, पंचायत स्तर पर तत्काल 15 दिन के अन्दर खुलासा होना चाहिये। इसमें आप पाँच महीने बाद बताओगे तो उस बात का जो दर्द है वह किसान के कम हो जाएगा। वह लड़ने लायक ही नहीं रहेंगे। मैं आशा करती हूं कि माननीय आपदा मंत्रीजी ये जो मुद्दे हैं इनको इसमें शामिल करेंगे और वाकई यह जो 126 करोड़ रुपया है इसको किसानों के लिए बांटेंगे सही तरीके से, प्रापर तरीके से गिरदावरी करा कर। (व्यवधान)

श्री उपाध्यक्षः अब देवल साहब बोलेंगे। देवल साहब। (व्यवधान)

श्री कन्हैया लाल मीणा (बस्सी): जयपुर जिले से किसी ने भी नहीं बोला, मैं आपसे यह निवेदन करना चाहूंगा ... (व्यवधान)

श्री सी. डी. देवल (रायपुर): माननीय उपाध्यक्ष महोदय, मुझे परमिशन दे दी है ... (व्यवधान)

श्री उपाध्यक्ष: अभी आपको बुलाएंगे ... (व्यवधान) कन्हैया लालजी, बुलाएंगे ... (व्यवधान)

श्री कन्हैया लाल मीणा (बस्सी): जयपुर जिला नहीं पूरे राजस्थान के अन्दर ... (व्यवधान) चाहे वह टमाटर का, चाहे मटर का ... (व्यवधान)

श्री सी. डी. देवल (रायपुर): माननीय उपाध्यक्ष महोदय, आपने मुझे अनुमति दी है। उनको बोलना ही नहीं है ... (व्यवधान)

श्री उपाध्यक्ष: बुलाएंगे आपको जयपुर जिले से ... (व्यवधान) बुलाएंगे, आपको बुलाएंगे।

श्री कन्हैया लाल मीणा (बस्सी): चलो, ठीक है।

श्री सी. डी. देवल (रायपुर): माननीय उपाध्यक्ष महोदय, मैं आपके माध्यम से राहत मंत्रीजी का ध्यान आकर्षित करना चाहता हूं, राहत मंत्रीजी पाली जिले से हैं और स्वायत्त शासन राज्य मंत्रीजी भी पाली जिले से हैं, पूरे पाली जिले में शीतलहर का जबरदस्त प्रभाव हुआ है लेकिन अखबारों के माध्यम से जिला प्रशासन ने यह प्रसारित कर दिया है कि पाली जिले में जो खराबा है, फसलों का नुकसान है वह पचास प्रतिशत से कम है। ऐसी परिस्थिति में क्या पाली जिले के काश्तकारों को महरूम रखा जाएगा ? आप इस बात को देखें।

इसके साथ ही आपने जो फसली ऋण स्थगित कर दिया है। मेरा निवेदन है कि फसली ऋण का जितना पैसा आपने दिया था वह बर्बाद हो चुका है, उसने अपने ट्रैक्टर की जुताई का पैसा दिया है, सिंचाई का पैसा दिया है इसलिए फसली ऋण उनका माफ किया जाए और बिजली के बिल माफ किये जाएं। मुझे बहुत खुशी है कि हमारे पूर्व अकाल राहत मंत्रीजी और पाली जिले के प्रभारी माननीय डा. किरोड़ी लालजी, चार साल बाद उनको यह आत्मज्ञान हुआ है कि गिरदावरी के अन्दर किसी चार आदमियों की कमेटी बनाकर आकलन कराया जाए ताकि वास्तविक गिरदावरी हो सके। नहीं तो गिरदावरी बिलकुल गलत हो रही है। राजस्व विभाग के अधिकारियों का स्पष्ट निर्देश है कि पचास प्रतिशत से कम खराबा बताया जाए ताकि न रहे बांस और न बजे बांसुरी। न तो पचास परसेंट से ज्यादा खराबा दर्ज हो न राहत मंत्रीजी को कोई राहत देने की जरूरत पड़े। (व्यवधान)

श्री कन्हैया लाल मीणा (बस्सी): आप तो ऐसे ही बोलते रहते हैं

असत्य बात ... (व्यवधान)

श्री सी. डी. देवल (रायपुर): इसलिए कहां से यह पैसा आवे ? चाहे केन्द्र सरकार दे, चाहे राज्य सरकार दे, कोई सरकार दे लेकिन किसानों को उनके खेत का मुआवजा मिलना चाहिए। अगर पन्द्रह बीघा खेती की है उसमें दस बीघा गेहूं है उसमें नुकसान नहीं हुआ और पाँच बीघा जीरा के अन्दर नुकसान हो गया तो क्या उनको आप यह मुआवजा नहीं देंगे ? इसलिए आप यह व्यवस्था करें, वास्तविक आकलन कराएं और किसी कृषि वैज्ञानिक को लगाकर कराएं, जैसा डा. किरोड़ी लालजी का सुझाव है, आपकी पार्टी के पूर्व में अकाल राहत मंत्री रहे हैं। हालांकि चार साल तक इन्होंने पाली जिले में अकाल का भट्टा बैठाया है फिर भी आप कम से कम उनकी बात मानकर यह करें ... (व्यवधान)

डा. किरोड़ी लाल मीणा (सवाईमाधोपुर): आप अब भी पीछे पड़े हो ... (व्यवधान) अब भी पीछा नहीं ... (व्यवधान) भट्ठा बैठा दिया ... (व्यवधान)

श्री सी. डी. देवल (रायपुर): चार साल तक आपने कोई अकाल राहत काम नहीं कराया। फर्जी गिरदावरियां करवायीं। आपने हाथ में लिखकर ... (व्यवधान) आर्डर करके पटवारियों को सस्पैंड करा दिया। कोई काम नहीं कराया आपने चार साल तक पाली जिले के प्रभारी मंत्री और राजस्थान ... (व्यवधान)

श्री ज्ञानचन्द पारख (पाली): आप बैठ जाओ। श्रीमान जी, बैठ जाओ। ... (व्यवधान)

श्री सी. डी. देवल (रायपुर): पाली जिले का भट्ठा बैठा दिया ... (व्यवधान) इतना अकाल पड़ता है ... (व्यवधान)

श्री उपाध्यक्ष: माननीय सदस्य, आपका कोई अंकित नहीं होगा। (व्यवधान)

श्री सी. डी. देवल (रायपुर): ×××

श्री उपाध्यक्ष: कोई अंकित नहीं होगा। (व्यवधान)

श्री ज्ञानचन्द पारख (पाली): ×××

श्री उपाध्यक्ष: माननीय सदस्य ... (व्यवधान) माननीय सदस्य ... (व्यवधान)

श्री सी. डी. देवल (रायपुर): ×××

श्री ज्ञानचन्द पारख (पाली): ×××

श्री कन्हैया लाल मीणा (बस्सी): ×××

श्री उपाध्यक्ष: आपकी बात आ गयी ... (व्यवधान) माननीय सदस्य ... (व्यवधान)

डा. किरोड़ी लाल मीणा (सवाई माधोपुर): ×××

श्री सी. डी. देवल (रायपुर): ×××

श्री उपाध्यक्ष: आपने बोल दिया, फिर बार-बार ... (व्यवधान) विराज जाइये आप ... (व्यवधान)

डा. किरोड़ी लाल मीणा (सवाई माधोपुर): ×××

श्री सी. डी. देवल (रायपुर): ×××

श्री मदन राठौड़ (सुमेरपुर): ×××

श्री राकेश मेघवाल (परबतसर): ×××

श्री राजेन्द्र राठौड़ (सार्वजनिक निर्माण मंत्री): ×××

डा. बुलाकीदास कल्ला (बीकानेर): ×××

श्री ज्ञानचन्द पारख (पाली): ×××

श्री उपाध्यक्ष: मैंने इजाजत दे दी।

श्री कन्हैया लाल मीणा (बस्सी): मैं इजाजत ले चुका हूं। माननीय उपाध्यक्ष महोदय, मैं आपके माध्यम से सरकार से निवेदन करना चाहूंगा कि राजस्थान में जिन काश्तकारों ने सिर्फ सब्जी पैदा की है, खासकर जयपुर जिले में टमाटर की खेती, मटर की खेती, मिर्ची की खेती और अन्य जो सब्जियां हैं उनको इसके अन्दर नहीं लिया गया है। टमाटर पूरी तरह से खतम हो गया है, कोई टमाटर बिलकुल नहीं बचा है। न सब्जियों के अन्दर मटर बची है। मैं निवेदन करना चाहता हूं, उनके बिल भी माफ किये जाएंगे कि नहीं किये जाएंगे? काश्तकारों के जो बिजली के बिल थे, मात्र उनके सब्जियां थीं इनके बिल माफ किये जाएंगे या नहीं किये जायेंगे ?

दूसरा मैं निवेदन करना चाहूंगा कि उनको राहत के पैकेज में भी शामिल किया जाए जिससे जिन सब्जी वालों की जो सब्जी नष्ट हो गयी है उनको राहत मिल सके। नहीं तो जो काश्तकार केवल सब्जियां पैदा करता है वह काफी बर्बाद हो गया है और बर्बाद हो जाएगा। (व्यवधान)

श्री उपाध्यक्षः माननीय नेता प्रतिपक्ष। (व्यवधान) ठहरिये। आप बोलिये ... (व्यवधान) नेता प्रतिपक्ष को बोलने दीजिये, बीच में नहीं अभी। (व्यवधान)

श्री ज्ञानचन्द पारख (पाली): ×××

श्री मंगला राम गोदारा (श्रीडूंगरगढ़): ×××

श्री अर्जुन सिंह (दानपुर): ×××

श्री उपाध्यक्षः बैठिये आप। नेता प्रतिपक्ष बोल रहे हैं। नेता प्रतिपक्ष बोल रहे हैं कि नहीं? (व्यवधान)

श्री मंगला राम गोदारा (श्रीडूंगरगढ़): ×××

श्री अर्जुन सिंह (दानपुर): ×××

श्री उपाध्यक्षः पांच मिनट में कोई नहीं ... (व्यवधान) यह कोई जनरल बहस नहीं हो रही है ... (व्यवधान) माननीय सदस्य, अभी बैठिये आप। (व्यवधान) नहीं, नहीं, माननीय सदस्य ... (व्यवधान) अब बातें आ चुकी हैं आपकी ... (व्यवधान) अब बैठिये आप ... (व्यवधान)

श्री अर्जुन सिंह (दानपुर): ×××

श्री मंगला राम गोदारा (श्रीडूंगरगढ़): ×××

श्री उपाध्यक्षः अगर नेता प्रतिपक्ष की बात सुनना चाहते हैं ... (व्यवधान) आप विराजिये। आ गयी मुद्दे की बात। आपके नुकसान का सब कह देंगे यह ... (व्यवधान)

श्री मंगला राम गोदारा (श्रीडूंगरगढ़): ×××

श्री अर्जुन सिंह (दानपुर): ×××

श्री उपाध्यक्षः माननीय सदस्य, आप विराजें। (व्यवधान)

श्री मंगला राम गोदारा (श्रीडूंगरगढ़): ×××

श्री उपाध्यक्षः माननीय सदस्य, आपका अंकित नहीं हो रहा है, बीच में नहीं बोलें। (व्यवधान) आ गयी आपकी बात ...(व्यवधान) माननीय सदस्य, स्थान ग्रहण करें। आप बीच में नहीं बोलेंगे।

श्री मंगला राम गोदारा (श्रीडूंगरगढ़): ×××

श्री उपाध्यक्षः कोई अंकित नहीं हो रही है आपकी बात। (व्यवधान)

श्री संयम लोढ़ा (सिरोही): ×××

श्री उपाध्यक्ष: मैंने नेता, प्रतिपक्ष को बुला लिया है। (व्यवधान)

श्री मंगला राम गोदारा (श्रीडूंगरगढ़): ×××

श्री राजेन्द्र राठौड़ (सार्वजनिक निर्माण मंत्री): ×××

श्री उपाध्यक्ष: माननीय सदस्य, आप स्थान ग्रहण करें। (व्यवधान)

श्री राजेन्द्र राठौड़ (सार्वजनिक निर्माण मंत्री): ×××

श्री उपाध्यक्ष: बाद में मौका मिलेगा आपको। बाद में बहुत मौका मिलेगा, कोई आज ही समाप्त थोड़े ही हो रहा है। बैठिये आप। माननीय नेता प्रतिपक्ष। (व्यवधान)

श्री संयम लोढ़ा (सिरोही): ×××

श्री उपाध्यक्ष: कोई डिक्टेट करने की कोशिश नहीं की, चेयर डिक्टेट नहीं होती ...(व्यवधान)

श्री संयम लोढ़ा (सिरोही): ×××

श्री धर्मपाल चौधरी (संसदीय सचिव): ×××

श्री संयम लोढ़ा (सिरोही): ×××

श्री उपाध्यक्ष: कोई डिक्टेट नहीं किया है, कोई अंकित नहीं होगा। (व्यवधान) आप गलत कह रहे हैं। कोई डिक्टेट नहीं कर सकता है आसन को ...(व्यवधान) नेता प्रतिपक्ष।

श्री हेमाराम चौधरी (नेता, प्रतिपक्ष): उपाध्यक्ष महोदय, यहां पर पाले और शीतलहर से जो किसानों की फसल की भारी तबाही हुई, उस पर उनको मुआवजा देने के ऊपर वक्तव्य हुआ। उस पर माननीय सदस्यों ने अपने विचार भी रखे। मैं भी अपने विचार सम्मिलित करना चाहता हूं।

श्री राजेन्द्र राठौड़ (सार्वजनिक निर्माण मंत्री): पाइंटेड सवाल पूछें।

श्री हेमाराम चौधरी (नेता, प्रतिपक्ष): आप तो घंटे-घंटे भर भाषण दे रहे थे, क्या बात करते हो, टाइम देख लो आप। लोगों ने भाषण दिये हैं वह टाइम देख लो। मैंने तो बोलना ही शुरू नहीं किया उससे पहले ही आपको तकलीफ हो गयी। फिर मैं क्या बोलूंगा? (व्यवधान)

श्री उपाध्यक्ष: माननीय सदस्य, आप विराजें। (व्यवधान)

श्री हेमाराम चौधरी (नेता, प्रतिपक्ष): आपने पहले ही कह दिया कि पाइंटेड सवाल ...(व्यवधान) तो इसका मतलब यह हुआ कि मुझे क्या बोलना

(श्री हेमाराम चौधरी)

चाहिए उसके लिए मुझे आप गाइड कर रहे हैं कि मुझे क्या बोलना चाहिए? मुझे वह बोलना चाहिए जो कि मैं बोलना चाहता हूं। आप चाहते हो कि मुझे वह बोलना चाहिए जो आप चाहते हो। मुझे वह बोलना चाहिए क्या? (व्यवधान) उपाध्यक्ष महोदय, थोड़ा सत्ता पक्ष को आप पाबंद करें। यह अच्छी बात नहीं है। (व्यवधान)

श्री महीपाल सिंह यादव (बानसूर): उपाध्यक्ष महोदय, यह संसदीय कार्य मंत्री अभी आपको गुस्से में कह रहे थे, अब इनको टोक रहे हैं ... (व्यवधान)

श्री हेमाराम चौधरी (नेता, प्रतिपक्ष): यह संसदीय कार्य मंत्री हैं, यह सरकार में सबसे ज्यादा जिम्मेदार हैं और हर बात पर ...(व्यवधान) इनको सिवाय इसके कोई काम ही नहीं है ...(व्यवधान)

श्री महीपाल सिंह यादव (बानसूर): आप क्या खुदा बन गये? (व्यवधान)

श्री उपाध्यक्ष: नहीं करेंगे, नहीं करेंगे। (व्यवधान)

श्री हेमाराम चौधरी (नेता, प्रतिपक्ष): उपाध्यक्ष महोदय, पाले और शीत लहर से जो नुकसान हुआ है किसानों का, अभी तत्कालीन अकाल राहत मंत्री जी कह रहे थे कि यह मौसमी मिज़ाज है। मौसमी मिज़ाज भी है और इसके साथ-साथ सरकार का मिज़ाज भी है। आप कहेंगे कि सरकार का मिज़ाज इसमें कैसे? अगर फसलों को पर्याप्त पानी मिल जाता, जिस फसल के लिए जितने पानी की जरूरत थी, तो पाले का असर कम होता, नहीं होता। और अगर होता तो भी बहुत कम होता। आप तो खुद किसान हैं।

श्री उपाध्यक्ष: नो कमेंटस प्लीज ...(व्यवधान)

श्री हेमाराम चौधरी (नेता, प्रतिपक्ष): क्या बात करते हो ...(व्यवधान) जिन फसलों पर कुए हैं, हमारी नहर पर भी खेती है, कुओं से जिन फसलों को पानी उन्होंने पिला दिया था।

श्री उपाध्यक्ष: नो कमेंटस प्लीज ...(व्यवधान)

श्री हेमाराम चौधरी (नेता, प्रतिपक्ष): उन फसलों पर पाले का असर नहीं हुआ। वे फसलें नष्ट नहीं हुई हैं, जली नहीं हैं और नुकसान हुआ है तो भी बहुत कम हुआ है। जिन फसलों को पानी पर्याप्त नहीं मिला, उन फसलों पर पाले का ज्यादा असर हुआ है। अभी पांचना बांध की बात आपके ही

(श्री हेमाराम चौधरी)

तत्कालीन राहत मंत्रीजी कह रहे थे कि पांचना बांध के किसानों को पानी नहीं मिला, फसल नष्ट हुई। आप ही बात कह रहे थे, मैं उसी बात की ताइद कर रहा हूं, कि इसके लिए प्रकृति तो दोषी है ही लेकिन प्रकृति के साथ-साथ सरकार भी दोषी है। नहरों से इन्होंने पानी नहीं दिया, बिजली बहुत कम दी। इन्होंने अपने मैनिफेस्टो में लिखा कि कम से कम आठ घंटे बिजली देंगे, बिजली दी पांच घंटे। घोषणा है कि छह घंटे दे रहे हैं, आदेश हैं छह घंटे के, मिली पांच घंटे ही है। बार-बार ट्रिपिंग होती रहती है। कुल मिलाकर पांच घंटे से ज्यादा नहीं दी। इस वजह से किसान पूरा पानी नहीं दे सका अपनी फसलों को। इससे पाले का सबसे ज्यादा असर हुआ और नुकसान हुआ। उसके लिए क्या ये दोषी नहीं हैं?

उपाध्यक्ष महोदय, ये कह रहे हैं गिरदावरी की बात, पिछली बार ओलावृष्टि हुई, अतिवृष्टि हुई, यह किरोड़ी लालजी बैठे हैं, बाड़मेर गये थे, जिसकी गिरदावरी में लिख दिया ओलावृष्टि, उसको तो कुछ मिला और जिनके अतिवृष्टि लिख दिया उनको एक धेला नहीं मिला, क्योंकि वे सीआरएफ के नार्म्स में नहीं आते हैं। यह हकीकत है, मानें ना मानें, यह किसी को मना नहीं सकते हैं। मुझे तो मालूम है, मेरे यहां का मामला था। रात के समय में बारिश हुई और उसके साथ ओले गिरे कि नहीं गिरे? अब जो होशियार लोग थे, उन्होंने तो कहा कि रात को ओले गिरे और जो होशियार नहीं थे उन्होंने कहा कि रात को बारिश आ गयी और फसल नष्ट हो गयी। उन्होंने बारिश कह दिया, ओला काम में नहीं लिया क्योंकि ओले तो कितनी देर तक ठहरते, ओला टिकता ही नहीं है। सुबह तो कोई ओला मिलना नहीं। जिन लोगों ने होशियारी से ओला लिखा दिया उनको तो मुआवजा कुछ मिल गया। जिन्होंने ओला नहीं लिखा उनको तो पता ही नहीं था कि ओलावृष्टि वालों को मिलेगा और अतिवृष्टि वालों को मुआवजा नहीं मिलेगा। फसल तो चाहे ओलावृष्टि हो या अतिवृष्टि हो, दोनों में नष्ट हो जाती है। जैसे ईसबगोल है, आप तो जानकार हो, ईसबगोल पर अगर जरा-सी भी बूंद गिर जाती है तो वह खतम हो जाती है। उसमें से दाना निकलकर जमीन पर गिर जाता है, वह साफ हो गयी।

डा. किरोड़ी लाल मीणा (सवाईमाधोपुर): एक मिनट कहूंगा, जस्ट ए मिनट, मैं आपके ध्यान में दिलाना चाहूंगा ...(व्यवधान)

श्री हेमाराम चौधरी (नेता, प्रतिपक्ष): एक मिनट, आप बाद में कह

लेना ...(व्यवधान)

डा. किरोड़ी लाल मीणा (सवाईमाधोपुर): आपकी बात को सपोर्ट कर रहा हूं, जब आपके इलाके में मौसम बिगड़ा था तो ईसबगोल और जीरे में पैसा दिया था कि नहीं दिया था? दिया था?

श्री हेमाराम चौधरी (नेता, प्रतिपक्ष): दिया था।

डा. किरोड़ी लाल मीणा (सवाईमाधोपुर): तो मैं उसी लाइन को कह रहा हूं कि पैसा देना चाहें आप सब तो पैसे मिल सकते हैं।

श्री हेमाराम चौधरी (नेता, प्रतिपक्ष): पैसे दिये थे।

श्री उपाध्यक्ष: यही है।

श्री हेमाराम चौधरी (नेता, प्रतिपक्ष): वही तो मैं बात कह रहा हूं, जिन्होंने ओला लिखवा दिया उनको तो मिल गया। जो इसमें रह गये ओला दर्ज करवाने से, और ओले दर्ज करवाना भी हाथ में थोड़े ही है। ओला पड़ने से या वर्षा से नुकसान हुआ, अतिवृष्टि से नुकसान हुआ है, यह लिखने वाला कौन है? भगवान है क्या? भगवान तो ओला गिराने वाला है। ओले गिरे, इस बात को लिखने वाला पटवारी है और पटवारी इनके निर्देश से लिखता है। पटवारी की औकात है कि ऊपर से निर्देश ये हों कि यहां ओले नहीं बताने हैं तो वह ओले लिख देगा? उसको घर नहीं जाना है क्या? नौकरी नहीं करनी है क्या?

श्री उपाध्यक्ष: नेता प्रतिपक्ष, पटवारी तो 70 प्रतिशत काश्तकार हैं, काश्तकारों के ही बच्चे हैं, वे जान-बूझकर गलत गिरदावरी नहीं करेंगे। (व्यवधान)

श्री रामचन्द्र जारोड़ा (मेड़ता): उपाध्यक्ष महोदय, निर्देश तो सरकार देती है ...(व्यवधान) उसके आधार पर ये काम करते हैं ...(व्यवधान)

श्री उपाध्यक्ष: काश्तकार तो अपना ही नुकसान ...(व्यवधान)

श्री हेमाराम चौधरी (नेता, प्रतिपक्ष): उपाध्यक्ष महोदय, काश्तकारों के बजाय ज्यादा ...(व्यवधान) इसका मतलब यह है कि पटवारी ...(व्यवधान)

श्री मोहन मेघवाल (सूरसागर): किसानों ने खुद ओला नहीं लिखाकर बारिश कहा है तो वह बारिश के हिसाब से ही हुआ है ...(व्यवधान) यह खुद के कारण नुकसान हुआ है ...(व्यवधान)

श्री उपाध्यक्ष: माननीय सदस्य, विराजें।

श्री रामचन्द्र जारोड़ा (मेड़ता): आपकी पार्टी के हैं वह ...(व्यवधान)

जिन्होंने नहीं लिखा है वह ...(व्यवधान)

श्री हेमाराम चौधरी (नेता, प्रतिपक्ष): उपाध्यक्ष महोदय, इनको आप रोकें ...(व्यवधान)

श्री रामचन्द्र जारोड़ा (मेड़ता): पार्टी की बात नहीं है, राज्य सरकार के निर्देशों की पालना करते हैं वे। (व्यवधान)

श्री हेमाराम चौधरी (नेता, प्रतिपक्ष): उपाध्यक्ष महोदय, आप कहते हो, पटवारी किसानों के परिवार से हैं। पटवारी के भी तो बच्चे हैं, वह भी बाल बच्चेदार है। वह सरकार के आदेश की पालना नहीं करेगा ...(व्यवधान)

श्री उपाध्यक्ष: माननीय नेता प्रतिपक्ष, यह कहना भी अतिशयोक्ति होगा कि पटवारियों को कह दिया कि गिरदावरी करना ही मत ...(व्यवधान)

श्री हेमाराम चौधरी (नेता, प्रतिपक्ष): गिरदावरी करना, खराबा नहीं लिखना, ओलावृष्टि नहीं लिखना, खराबा कम बताना, ओलावृष्टि नहीं बताना, अतिवृष्टि बताना, ये निर्देश हैं। गिरदावरी तो हुई है ...(व्यवधान)

श्री सी. डी. देवल (रायपुर): यह हकीकत है। पटवारियों को कहा गया है कि खराबा कम दिखाओ, यह हकीकत है। (व्यवधान)

श्री हेमाराम चौधरी (नेता, प्रतिपक्ष): कटारियाजी, आप सिर हिला रहे हो, मैं आपको कसम खाकर के बोल सकता हूं, जिसकी आप मुझे कसम दिलाना चाहें उसकी मुझे कसम दिला दें, ठीक है न? मेरे एक लड़का है, आप कहें तो उसकी भी खा लूंगा, मैं आपको कह सकता हूं कि पिछले वर्ष ओलावृष्टि, अतिवृष्टि के टाइम पर गिरदावरी गलत हुई। जिन लोगों के ओले नहीं गिरे हैं उनको भी मुआवजा नहीं दिया, गिरे उनको भी नहीं दिया। मैंने सैकड़ों काश्तकारों के बाई नेम कलक्टर को पत्र लिखे, यह कह रहे हैं कि दिल्ली को लिखो। मैंने कलक्टर को कई पत्र लिखे, मैंने कहा कि ये काश्तकार हैं, इनके कुए हैं, आप जाकर देख लो, इनके कुए पर इनकी फसल थी, वह नष्ट हो गयी, ईसबगोल नष्ट हो गया। ईसबगोल तो आज, चार महीने, छह महीने बाद भी अगर आप जांच करें तो जमीन के अंदर उसका दाना पड़ा हुआ मिल जाएगा। वह कहीं गायब नहीं हो सकता है। मैंने कहा कि आप जांच करा लें। आप जांच करो और यह लिख दो कि हमने जांच करा ली, जांच में कुछ नहीं पाया है। सही जांच हो। लेकिन आप जांच चाहते ही नहीं हैं। मेरी चिट्ठी पर कोई ध्यान नहीं दिया गया। अब मैं क्या करुं? बताएं, मेरे पास उपाय क्या

(श्री हेमाराम चौधरी)

है? कहने के और पत्र लिखने के अलावा कोई उपाय नहीं है। कोई ध्यान नहीं दिया। खैर, आप इसको ठीक समझते हैं तो कोई तकलीफ नहीं है लेकिन यह हकीकत है। अब आपको लगता होगा, आप तो ऐसा सोचते हैं कि सब काम ठीक-ठाक हो रहा है, गिरदावरी भी ठीक हो जाएगी, पैसा भी सब बंट जाएगा। मैं कहता हूं, जिन लोगों के कुए नहीं थे और बिलकुल एक छंटाक खेती नहीं थी, उन्होंने भी मुआवजा उठा लिया और जिनके कुए थे, जिनकी फसलें नष्ट हो गईं, उनको एक पैसा नहीं मिला। यह मैंने लिख कर दिया लेकिन उसकी जांच ही नहीं हुई। माननीय उपाध्यक्ष महोदय, मेरा कहने का मतलब है कि इसमें ये भी भागी हैं और गिरदावरी सही नहीं होगी तो ये 126 करोड़ रुपए हैं ये भी नहीं बंटेंगे। अभी मुख्य मंत्रीजी ने खुद कहा कि पहले भी सी आर एफ का पैसा प्लान में यूज लिया है, काम में लिया है। तो इसका मतलब सरकार की मंशा तो इन्होंने प्रकट कर दी न कि यह पैसा सी आर एफ का है, यह प्लान में काम में लेना चाहते हैं। ...(व्यवधान) आप बोलने तो दो, आप बाद में जवाब दे देना। आपने पहले सी आर एफ का पैसा प्लान में काम में लिया इसलिए हम भी लेंगे। यह सी आर एफ का पैसा किसानों को आपदा के समय में, नुकसान में देने का है लेकिन ये इसको बचा रहे हैं और बचाकर इसको प्लान में काम में लेना चाहते हैं। आज तक आपके पास सी आर एफ का पैसा बहुत पड़ा है, 2008-2009 में आपको और मिल जाएगा, और सी आर एफ का पैसा अब आपको खर्च कहां करना है? अकाल राहत के काम तो आपने बंद कर दिए। पूरे राजस्थान में इस साल कहीं कोई अकाल है ही नहीं। और अकाल है तो हमने तो 15 अगस्त तक काम खोले थे, आपने आज दिन तक एक भी काम नहीं खोला, अब आप एक अप्रैल से अकाल राहत के काम खोलेंगे। कौन से खोलेंगे, अकाल राहत का एक काम नहीं खोलेंगे आप। राष्ट्रीय ग्रामीण रोजगार योजना है उसका इन्तजार कर रहे हैं। 12 जिलों में तो अभी चल रही है लेकिन बाकी जिलों में नहीं है, अकाल वहां भी है, एक अप्रैल से सभी जिलों में हो जाएगी। तो एक अप्रैल से राष्ट्रीय ग्रामीण रोजगार योजना में काम शुरू करके उसमें एक लाख लोगों को रोजगार मिलेगा, उनको आप अकाल में शुमार करके उससे काम चलाना चाहते हैं और यह सी आर एफ का पूरा का पूरा पैसा बचा कर प्लान में काम लेकर वाहवाही लेना चाहते हैं। यह कतई उचित नहीं है, इसलिए मेरा आपसे आग्रह है कि सी आर एफ का पैसा है, अभी इसको भी

(श्री हेमाराम चौधरी)

आप काम ले लीजिए। आप यह चाहते हैं। हम भी साथ हैं, इस बात से सहमत हैं कि आप प्रस्ताव लाएं। हम कहते हैं, इस सबको काम में ले लीजिए, इसको किसानों में बांट दीजिए, कहां दिक्कत आ रही है, कहां तकलीफ है? प्लान में आप काम ले सकते हैं तो किसानों को बांटने में क्या तकलीफ है?

श्री राजेन्द्र राठौड़ (सार्वजनिक निर्माण मंत्री): धन्यवाद, अब ले लेते हैं प्रस्ताव। बहुत-बहुत धन्यवाद।

श्री हेमाराम चौधरी (नेता, प्रतिपक्ष): इसलिए मैं यह कह रहा था कि इनकी जो मंशा है वह ठीक नहीं है किसानों के प्रति। 126 करोड़ रुपये से क्या होगा? इन्होंने खुद कहा है, 22 जिलों में फसलों को नुकसान हुआ है। कितने किसानों को नुकसान हुआ, कितनी फसलों का नुकसान हुआ, कितने करोड़ रुपए का नुकसान हुआ और 126 करोड़ रुपए की वाहवाही, बहुत प्रशंसा हो रही है।

इनको मुख्य मंत्रीजी ने हिदायत दे दी, इनको कहा, मुंह से कुछ नहीं बोलना है, जो कुछ कहना है लिखित में दो, यह कैसे बोल सकते हैं। आपके मुख्य मंत्रीजी का निर्देश इनको मिल गया कि आपको मुंह से नहीं बोलना है, तो यह मुंह से तो बोल नहीं सकते, इनका मुंह बंद है, यह लिखित में दे सकते हैं जो कुछ देना है। (व्यवधान) नहीं, नहीं, मैंने आज पेपर में पढ़ा, मुख्य मंत्रीजी ने कहा है कि जो कुछ भी आपको कहना है वह आप लिखित में दीजिए, अपने मुख से मत बोलिए, आप अपने मुख को बंद रखिए। आप मुख्य मंत्रीजी को नाराज नहीं कर सकते, चुनाव सिर पर हैं, टिकट आपको मुख्य मंत्रीजी से ही लेना है, टिकट देने वाली वही हैं। आपने उनको नेता घोषित कर दिया तो टिकट तो उन्हीं के हाथ में होगी। तो किसान मर जाए, खड्ड में पड़े, कुए में गिरे, टिकट का तो काम करें। कम से कम टिकट मिलेगी तो चुनाव लडेंगे, चुनाव लडेंगे तो आगे जीत कर आ जाएं।

श्री महावीर प्रसाद जैन (मुख्य सचेतक): माननीय उपाध्यक्ष महोदय, प्रतिपक्ष के नेता और सरकार चाहती है, यह संकल्प आ जाए।

श्री हेमाराम चौधरी (नेता, प्रतिपक्ष): आपको किसानों की चिंता नहीं है, आपको सिर्फ टिकट की चिंता है इसलिए आप केवल वाहवाही के लिए काम कर रहे हैं। (व्यवधान) हमारा यह कहना है कि आप किसानों की मदद कीजिए, सही गिरदावरी करवाइए। अगर आपके पास कोई शिकायत आए, मैंने

जो सुझाव दिये उनको तो मानें, किरोड़ीलालजी के सुझाव को तो मानें।

श्री सुरेन्द्र सिंह राठौर (श्रीगंगानगर): नेता प्रतिपक्षजी, मैं तो आपके भले की बात बता रहा हूं। (व्यवधान)

श्री हेमाराम चौधरी (नेता, प्रतिपक्ष): पांच जनों की कमेटी बना दें जो गिरदावरी करे, उस पर उनके हस्ताक्षर हों। यह करवा लीजिए। (व्यवधान)

श्री सुरेन्द्र सिंह राठौर (श्रीगंगानगर): बारह सौ करोड़ रुपए का तो अकेले गंगानगर जिले में नुकसान हुआ है, 126 करोड़ रुपए में ये पूरे राजस्थान को निहाल कर देंगे? (व्यवधान)

श्री उपाध्यक्ष: माननीय सदस्य, बैठें।

श्री हेमाराम चौधरी (नेता, प्रतिपक्ष): आप 126 करोड़ रुपए देकर किसानों को आपस में लड़वाएंगे, मरवाएंगे। वह आपस में झगड़ा होगा, इनको दे दिया, मुझे नहीं दिया, इसको कैसे मिल गया। ये झगड़े और होंगे। सांवरलालजी, आप भी किसान हो, थोड़ा सोचो, ठीक है क्या? यह तो वक्त है, वक्त चला जाएगा।

श्री सांवर लाल (जल संसाधन मंत्री): हम भी किसान हैं, आप भी किसान हैं लेकिन आपके दिल्ली में राज करने वाले किसान नहीं हैं, ऐसा लग रहा है मुझे कि वहां तो आप कुछ कहना नहीं चाहते हैं। इस देश का रेवेन्यू कलैक्ट करने वाली हिन्दुस्तान की सरकार है, वहां पर आपका शासन है, बार-बार हमारे मंत्रीजी ने कहा कि सी आर एफ के नार्म्स में कवर करवाइये, उन कानूनों को और सरल बनवाइये, किसानों के इंटरेस्ट में बनवाइये। वहां पर जाने में तो आपको डर लगता है और यहां पर डींगे हांक रहे हैं। 126 करोड़ रुपए देश आजाद होने के बाद पहली बार दिये हैं। यह आपको मानना चाहिए कि राजस्थान की मुख्य मंत्री ने राजस्थान के खजाने से पहली बार दिये हैं, हिम्मत की है। आज दिन तक कुछ दिया हो तो बताओ, अपने राज की कोई उपलब्धि हो तो बताओ न कि हमने यह दिया और आप कम दे रहे हो। केवल डींग हांकने से काम नहीं चलता, जानते हैं किसान। (व्यवधान)

श्री सुरेन्द्र सिंह राठौर (श्रीगंगानगर): सांवर लालजी से बड़ा कोई किसान नहीं हो सकता। (व्यवधान)

श्री सांवर लाल (जल संसाधन मंत्री): आपने सत्ता में आने के बाद एक भी पैसे का फायदा किसान का नहीं किया है। (व्यवधान)

(श्री उपाध्यक्ष)

श्री उपाध्यक्षः माननीय सदस्य, आप बीच में बार-बार बोलते हैं, आपका अंकित नहीं होगा। (व्यवधान) माननीय सदस्य, आपका अंकित नहीं होगा। (व्यवधान)

श्री सांवर लाल (जल संसाधन मंत्री): माननीय प्रतिपक्ष के नेता, देश के प्रधान मंत्री को और आपकी अपनी नेता सोनियाजी को कहिए कि किसानों के दु:ख में इस सरकार का सहयोग करें, किसानों का सहयोग करें। केवल बात करने के पैसे नहीं लगते, हिम्मत चाहिए वहां खड़े होकर बात करने की। (व्यवधान)

श्री सुरेन्द्र सिंह राठौर (श्रीगंगानगर): ×××

श्री उपाध्यक्षः माननीय सदस्य, आपका अंकित नहीं होगा। आप फालतू में क्यों बोल रहे हैं?

श्री हेमाराम चौधरी (नेता, प्रतिपक्ष): माननीय उपाध्यक्ष महोदय, यह पाला और शीतलहर पहली बार नहीं पड़े, पहले भी पड़े हैं। उस समय आपकी केन्द्र में भी कई बार सरकार रही, उस समय आप ठीक कर लेते।

उस समय आपके ध्यान क्यों नहीं आया? अब आपको याद आया केन्द्र का, उस समय केन्द्र में बैठे थे, उस समय तो आप भी नशे में चूर थे लेकिन अब आपको याद आ रहा है। मैं हमेशा कहता हूं कि आप अभी नशे में हो, यह नशा उतर जाएगा तब आपको भी याद आ जाएगा, फिर याद आ जाएगा। काम कुछ करेंगे नहीं। आप उस समय केन्द्र में थे, उस समय ठीक कर लेते न सब कुछ तो आज यह कहने की नौबत नहीं आती। आपके कहने और करने में अंतर है। (व्यवधान)

श्री सांवर लाल (जल संसाधन मंत्री): आपने कुछ किया हो तो बताइए न हमको कि हमारे राज में यह दिया। (व्यवधान)

श्री मदन राठौड़ (सुमेरपुर): एक ही बात को बार-बार घुमा कर कह रहे हैं, सदन का समय बर्बाद कर रहे हैं। (व्यवधान) माननीय उपाध्यक्ष महोदय, आप सदन की कार्यवाही को आगे चलाएं।

श्री सुरेन्द्र सिंह राठौर (श्रीगंगानगर): ×××

श्री महावीर प्रसाद जैन (मुख्य सचेतक): चर्चा समाप्त, मंत्रीजी को सुनें। (व्यवधान) चर्चा समाप्त। (व्यवधान)

श्री जुबेर खान (रामगढ़): आप कोई प्रस्ताव लाते हैं तो पहले उस

प्रस्ताव की लैंग्वेज हमको बताइए। (व्यवधान)

श्री उपाध्यक्ष: आपका जवाब देंगे। (व्यवधान) कोई सुओ मोटो नहीं होगा। (व्यवधान) बताएंगे, बताएंगे।

श्री जुबेर खान (रामगढ़): माननीय उपाध्यक्ष महोदय, परम्परा रही है इस सदन की आप पहले प्रस्ताव का प्रारूप बताइए, सहमति बनाइए। यह नहीं चलेगा। (व्यवधान)

श्री सुरेन्द्र सिंह राठौर (श्रीगंगानगर): ×××

श्री उपाध्यक्ष: जवाब आने दीजिए। मंत्रीजी का जवाब आने दीजिए। जवाब सुनिए। (व्यवधान) मंत्रीजी क्या जवाब दे रहे हैं, सुनिए। (व्यवधान)

श्री सुरेन्द्र सिंह राठौर (श्रीगंगानगर): ×××

श्री राजेन्द्र राठौड़ (सार्वजनिक निर्माण मंत्री): माननीय उपाध्यक्ष महोदय, मैं सदन के प्रतिपक्ष के नेता को धन्यवाद दूंगा और उनका आभार व्यक्त करूंगा कि इनके मन में असली किसान जाग्रत हुआ, इन्होंने यह कहा कि अगर सरकार कोई प्रस्ताव लेकर आए सी आर एफ के नार्म्स में तब्दीली का तो ये और इनका दल इसका पूरा स्वागत करता है। मैं पूरे सदन की तरफ से और अपने दल की तरफ से प्रतिपक्ष के नेता का स्वागत करता हूं कि आपने इस बात पर सहमति व्यक्त की है। अगर सहमति व्यक्त की है तो... (व्यवधान)

श्री हेमाराम चौधरी (नेता, प्रतिपक्ष): मैंने यह नहीं कहा है, मैंने कहा है कि आपके पास जो पैसा पड़ा है, उस पैसे को बांटने का कहा है, यह बांट दो आप, फिर आएगा तो और बांटेंगे आप। यह पैसा आप दबा कर बैठे हैं सांप की तरह, इस पर कब्जा करके बैठे हैं, उस पर पालथी मारकर बैठे हैं, उसको किसानों में बांटिए आप। (व्यवधान)

श्री जुबेर खान (रामगढ़): यह पैसा पाले से नुकसान हुआ है उन सब लोगों को मिलेगा, यह जुड़वाइए उसमें आप। यह जुड़वाइए। (व्यवधान)

श्री लक्ष्मीनारायण दवे (सहायता मंत्री): माननीय उपाध्यक्ष महोदय, आज इस पवित्र सदन में पक्ष और प्रतिपक्ष की तरफ से शीतलहर और पाले पर चर्चा हुई है। माननीय उपाध्यक्ष महोदय, एक साल पहले राजस्थान के पश्चिमी क्षेत्र में कवास के अंदर जिस तरह भयानक रूप से बाढ़ की अवस्था हुई, राज्य सरकार ने 3284 करोड़ रुपए का पैकेज भारत सरकार को भेजा। उससे एक फूटी कौड़ी आज तक प्राप्त नहीं हुई।

(श्री लक्ष्मीनारायण दवे)

माननीय उपाध्यक्ष महोदय, आज राजस्थान में जिस तरह से किसानों के लिए यह राज्य सरकार गम्भीर है ...(व्यवधान) माननीय उपाध्यक्ष महोदय, पंजाब में जब इनकी सरकार थी, 1500 किसानों ने आत्महत्या की थी, विदर्भ (महाराष्ट्र) के अंदर 1600 किसानों ने आत्महत्या की और दक्षिणी भारत के अन्दर हजारों किसानों ने मात्र एक वर्ष में अकाल की स्थिति होने के कारण आत्महत्या की। मैं धन्यवाद देना चाहता हूं राजस्थान के उन बहादुर किसानों को ...(व्यवधान)

श्री जुबेर खान (रामगढ़): केन्द्र में जब एनडीए की सरकार थी उसकी नीतियों के कारण पंजाब और महाराष्ट्र में किसानों ने आत्मदाह किये। (व्यवधान)

श्री उपाध्यक्ष: भाषण के बीच में कहेंगे वह अंकित नहीं होगा। माननीय सदस्य ...(व्यवधान)

श्री जुबेर खान (रामगढ़): ×××

श्री उपाध्यक्ष: आप बीच में टोकाटाकी कर रहे हैं।

श्री लक्ष्मीनारायण दवे (सहायता मंत्री): माननीय उपाध्यक्ष महोदय, विधान सभा में चर्चा हुई, माननीय सदस्यों ने गिरदावरी के बारे में चिन्ता प्रकट की। मैं, उपाध्यक्ष महोदय, आपके माध्यम से पूरे सदन को आश्वस्त करना चाहता हूं कि राजस्थान में जो प्रक्रिया और नियम हैं, जो नियमावली 1957 है, भू-अभिलेख नियमावली, 1957 के नियम 58 के आधार पर जो गिरदावरी की जाती है, इस गिरदावरी की 25 परसेंट जांच रेवेन्यू इंस्पेक्टर करता है, 10 परसेंट जांच राजस्व के अधिकारी करते हैं, उपखण्ड अधिकारी इसकी जांच करता है, कलक्टर इसकी जांच करता है। निश्चित रूप से जांच होने के बाद में गिरदावरी राजस्थान सरकार के पास ...(व्यवधान)

श्री हरिमोहन शर्मा (हिण्डौली): ×××

डा. श्रीगोपाल बाहेती (पुष्कर): ×××

श्री लक्ष्मीनारायण दवे (सहायता मंत्री): मैं आपको आश्वासन देता हूं, आपके कार्यकाल में अगर इस प्रकार की अनियमितता हुई है ...(व्यवधान) आपके कार्यकाल में इस प्रकार की अनियमितता हुई है तो इस सरकार के कार्यकाल के अन्दर गिरदावरी में किसी तरह का कोई पक्षपात ...(व्यवधान)

(डा. लक्ष्मीनारायण दवे)

जो वस्तुस्थिति है, पाला और शीत लहर की स्थिति है, खरीफ की फसल की जो स्थिति है उसके अंदर निश्चित रूप से जांच होकर रिपोर्ट राज्य सरकार के पास पहुंचेगी।

माननीय उपाध्यक्ष महोदय, इन्होंने चिन्ता की कि राजस्थान के अन्दर एनसीसीएफ का अनस्पैंट बैलेंस है, वह इलेवन्थ फाइनेंस कमीशन के द्वारा जमा नहीं होकर आपदा कोष के अन्दर जमा किया जाता है। माननीय उपाध्यक्ष महोदय, यह स्टेट प्लान में आप लोगों के समय आपके मिसमैनेजमेंट, फाइनेंस मिसमैनेजमेंट के कारण माइनस रहा था। आपका सीआरएफ नार्म्स का 150 करोड़ रुपया राजस्थान सरकार को स्टेट प्लान से वहन करना पड़ा था। जो बात आप करते हैं 359 करोड़ की, माननीय उपाध्यक्ष महोदय, इसमें हमारा आब्जर्वेशन है, हम भारत सरकार से आग्रह कर रहे हैं कि यह 359 करोड़ रुपया निश्चित रूप से स्टेट प्लान में दिया जाना चाहिए। अभी हमारी वार्ता चल रही है, यह अभी सीआरएफ के नार्म्स के अन्दर पैसा बैलेंस है।

माननीय उपाध्यक्ष महोदय, सदन ने जिस प्रकार से चिन्ता की, राजस्थान के तमाम किसान इस बात के ऊपर इस पवित्र सदन की तरफ देख रहे हैं, कि जो किसानों की बात हो रही है, शीतलहर और पाले की जो चर्चा हुई है उस चर्चा में राजस्थान के किसानों के साथ पक्ष और विपक्ष में कौन है। मैं आपसे निवेदन करना चाहता हूं, माननीय उपाध्यक्ष महोदय, आपके पास जो अधिकार है ...(व्यवधान)

श्री जुबेर खान (रामगढ़): ×××

श्री लक्ष्मीनारायण दवे (सहायता मंत्री): 307 में अवशेष शक्तियां, मैं निवेदन करना चाहता हूं ...(व्यवधान)

श्री उपाध्यक्ष: पहले मंत्रीजी का हो जाने दो।

श्री जुबेर खान (रामगढ़): ×××

श्री लक्ष्मीनारायण दवे (सहायता मंत्री): माननीय उपाध्यक्ष महोदय, राजस्थान के इस पवित्र सदन में आपके माध्यम से निवेदन करना चाहता हूं ...(व्यवधान) ताकि राजस्थान के किसानों को पता पड़े कि राजस्थान के किसानों के साथ भारतीय जनता पार्टी की सरकार है ...(व्यवधान) यह मात्र बात करते हैं, चर्चा करते हैं और किसानों के हितों की कोई बात नहीं करते।

श्री जुबेर खान (रामगढ़): ×××

(श्री हेमाराम चौधरी)

श्री हेमाराम चौधरी (नेता, प्रतिपक्ष): यह एक ही मुद्दे पर कह रहे हैं। ये सदन का समय जाया कर रहे हैं, इसके अलावा सरकार के पास जवाब देने को कुछ भी नहीं है। सरकार का इस बात पर ...(व्यवधान) सरकार ने किसानों को राहत देने की बात नहीं कही है। (व्यवधान)

श्री जुबेर खान (रामगढ़): ×××

श्री लक्ष्मीनारायण दवे (सहायता मंत्री): माननीय उपाध्यक्ष महोदय, आप अपनी शक्ति का प्रयोग कर, आप भी किसान पुत्र हैं, धरती-पुत्र हैं और धरती पुत्र के नाते मैं आपसे निवेदन करना चाहता हूं ...(व्यवधान)

श्री हेमाराम चौधरी (नेता, प्रतिपक्ष): आप मुद्दे से हटकर राजनैतिक भाषण दे रहे हैं, किसानों के लिए कुछ नहीं कर रहे हैं। हम इसके खिलाफ सदन से बहिर्गमन करते हैं।

(कांग्रेस दल द्वारा बहिर्गमन)

शासकीय संकल्प

राष्ट्रीय आपदा कोष के मापदण्डों में पाला व शीतलहर से नष्ट फसल का जुड़ाव

श्री लक्ष्मीनारायण दवे (सहायता मंत्री): मैं आपसे निवेदन करना चाहता हूं, ''यह सदन यह संकल्प करता है कि राष्ट्रीय आपदा कोष के मापदण्डों में संशोधन कर पाला व शीतलहर से नष्ट फसलों को सम्मिलित किया जाए।'' (व्यवधान) इसे कैलेमिटी में सम्मिलित किया जाए।

आप किसान हैं और राजस्थान के इस पवित्र सदन में हमें किसानों ने जिताकर भेजा है। आप किसानों के साथ में हैं या किसानों के खिलाफ हैं? माननीय उपाध्यक्ष महोदय, मैं आपसे निवेदन करना चाहता हूं, संकल्प पारित कराया जाए।

श्री उपाध्यक्ष: प्रश्न यह है कि जो संकल्प मंत्री महोदय ने पेश किया है उसे पारित किया जाए?

(स्वीकृत)

संकल्प पारित किया गया।

श्री राजेन्द्र राठौड़ (सार्वजनिक निर्माण मंत्री): उपाध्यक्ष महोदय, यह

(श्री राजेन्द्र राठौड़)

पहली बार हुआ है, आप सदारत कर रहे थे, कि सरकार एक संकल्प लेकर आयी कि सीआरएफ के नार्म्स के अन्दर परिवर्तन करके इसमें पाला और शीतलहर को शामिल किया जाए। मैं, उपाध्यक्ष महोदय, आपको भी धन्यवाद देना चाहता हूं कि आपने सदन के सम्मुख राहत मंत्रीजी की प्रार्थना पर प्रस्ताव रखा, रूल्स का रिलैक्सेशन देकर प्रस्ताव रखा। निश्चित तौर पर आज भारत सरकार को यह सोचना पड़ेगा, पूरे सदन से एकमत होकर यह संकल्प जो पारित हुआ है यह भारत सरकार के पास जाएगा तो राजस्थान के किसानों को सीआरएफ के नार्म्स में परिवर्तन करने के बाद राजस्थान की सरकार और मदद करेगी, बहुत-बहुत धन्यवाद, उपाध्यक्ष महोदय। (व्यवधान)

स्थगन प्रस्तावों पर व्यवस्था

श्री उपाध्यक्ष: स्थगन प्रस्तावों पर व्यवस्था। मुझे माननीय सदस्यों को सूचित करना है कि निम्नांकित स्थगन प्रस्तावों की सूचना प्राप्त हुई हैः-

1. श्री रणवीर सिंह गुढा, सदस्य की ओर से जिला टौंक के थाना महेन्द्रवास में एक दलित के साथ हुए अत्याचार के संबंध में।

एक व्यक्ति से संबंधित मामला है, स्थगन प्रस्ताव का विषय नहीं है। पुलिस विभाग की अनुदान की मांग पर चर्चा के समय माननीय सदस्य को बोलने का अवसर उपलब्ध रहेगा, अतः अनुमति देने में असमर्थ हूं।

2. श्री खुशवीर सिंह, सदस्य की ओर से पाली की बांडी नदी में प्रदूषित जल प्रवाह रोकने हेतु किये जा रहे आंदोलन के संबंध में।

3. श्री संयम लोढ़ा, सदस्य की ओर से माउन्ट आबू में हाल ही इजरायली पर्यटक की हत्या एवं फ्रांसिसी पर्यटकों की लूट के संबंध में।

उपरोक्त प्रस्ताव ऐसे नहीं हैं कि सदन की पूर्व निर्धारित कार्यवाही को रोककर इन पर विचार किया जाए, अतः अनुमति देने में तो असमर्थ हूं। फिर भी माननीय सदस्य श्री खुशवीर सिंह एवं श्री संयम लोढ़ा को अपने प्रस्ताव के विषय में दो-दो मिनट बोलने की अनुमति होगी।

नियम 295 के अंतर्गत प्राप्त विशेष उल्लेख की सूचनाएं

1. श्री कन्हैया लाल मीणा, सदस्य की ओर से बस्सी में महिला महाविद्यालय खोलने के संबंध में।

2. श्री हरीशचन्द्र कुमावत, सदस्य की ओर से विधान सभा क्षेत्र नावां की

(श्री उपाध्यक्ष)

लम्बित पेयजल योजनाओं की स्वीकृति के संबंध में।

3. श्रीमती सूर्यकान्ता व्यास, सदस्य की ओर से जोधपुर शहर के सार्वजनिक पार्कों के विकास के संबंध में।

4. श्री हीरालाल, सदस्य की ओर से निवाई में महाविद्यालय खोलने के संबंध में।

5. श्रीमती राजकुमारी शर्मा, सदस्य की ओर से विधवा महिलाओं के 18 वर्ष का पुत्र होने पर भी विधवा पेंशन को चालू रखने के संबंध में।

6. श्री बृजकिशोर शर्मा, सदस्य की ओर से जयपुर नगर निगम की हिंगोनिया गौशाला में दो दर्जन गायों की प्रति दिन उचित देखभाल नहीं होने के कारण मौत होने के संबंध में।

7. श्री सुरेश चौधरी, सदस्य की ओर से नये परिसीमन अध्यादेश के अन्तर्गत नोहर विधान सभा की 7 पंचायतें जो भादरा विधान सभा क्षेत्र में शामिल की गईं, के राजस्व मामलों की सुनवाई एवं अपीलीय अधिकार भादरा में किये जाने के संबंध में।

8. श्री अशोक कुमार नवलखा, सदस्य की ओर से गिट्टी क्रैशर व्यवसायियों और इससे जुडे मजदूरों को आर्थिक विपत्ति से मुक्ति दिलाने के संबंध में।

9. श्री भरत सिंह, सदस्य की ओर से प्रदेश में पाले से खराब हुई फसलों की प्रीमियम राशि कटौती के उपरान्त भी उनको फसल बीमा का लाभ नहीं देने के संबंध में।

10. श्री संयम लोढा, सदस्य की ओर से जिला सिरोही में दम तोड़ती चिकित्सा व्यवस्था के संबंध में।

11. श्री जीवाराम चौधरी, सदस्य की ओर से विधान सभा क्षेत्र सांचोर की गांव देवड़ा से निम्बाऊ सड़क का नवीनीकरण करने के संबंध में।

12. श्री मोहन मेघवाल, सदस्य की ओर से विधान सभा क्षेत्र सूरसागर के बनाड़ व प्रतापनगर में सैटेलाइट चिकित्सालय खोलने के संबंध में।

माननीय सदस्यों से प्राप्त सूचनाएं पढ़ी हुई मान ली गई हैं।

(विशेष उल्लेख की सूचनाओं के लिए कृपया परिशिष्ट देखें)

पर्ची। श्री खुशवीर सिंह जोजावर।

श्री रणवीर सिंह गुढा (गुढा): उपाध्यक्ष महोदय, पाइंट आफ इंफार्मेशन

के माध्यम से मैं एक निवेदन करना चाहता हूं।

श्री उपाध्यक्ष: मैंने खुशवीर सिंहजी का नाम पुकार लिया है।

श्री रणवीर सिंह गुढा (गुढा): बाहर मजदूरों के साथ में पुलिस द्वारा धक्का-मुक्की हो गई है।

श्री उपाध्यक्ष: संबंधित मंत्री महोदय को वह सूचना मिल गई है, वह बातचीत कर लें। आपकी सूचना आ गई है। श्री खुशवीर सिंह।

स्थगन प्रस्तावों आदि पर चर्चा

पाली की बांडी नदी में फैक्ट्रियों के प्रदूषित जल का निस्तारण

श्री खुशवीर सिंह जोजावर (खारची): माननीय उपाध्यक्ष महोदय, पाली जिले में बांडी नदी के अन्दर फैक्ट्रियों द्वारा प्रदूषित पानी प्रवाहित किया जा रहा है, हम पिछले तीन वर्षों में लगातार सदन के समक्ष इस समस्या को उठा चुके हैं लेकिन सरकार एवं सरकारी नुमाइंदे सरकार के समक्ष सही स्थिति प्रस्तुत नहीं कर रहे हैं। आज मैं आपको बताना चाहूंगा, उपाध्यक्ष महोदय, कि पिछले चार वर्षों में इन सरकारी नुमाइंदों की वजह से, सरकार की खुफिया एजेंसी विफल रही है, उसी का कारण रहा है कि कावला, घड़साना और सोहेला जैसे कांड प्रदेश के अन्दर हुए हैं। मैं आपको अवगत कराना चाहूंगा सदन के माध्यम से कि यही हालत पाली जिले में होने वाली है। उपाध्यक्ष महोदय, पाली की बांडी नदी में जहां पर प्रदूषित पानी प्रवाहित किया जा रहा है। हाल ही में मैसेसे अवार्ड विजेता वाटरमैन राजेन्द्र सिंहजी द्वारा वहां पर 'नदी रोका' आंदोलन प्रारम्भ किया गया फावड़े लेकर अपने कंधों पर हजारों किसानों ने बांडी नदी के पानी को वहां रोका और वहां बांध बना दिया है। उपाध्यक्ष महोदय, उस बांध से स्थिति यह पैदा हो गई कि पिछले दिनों में तीन भैंसें उस पानी में चली गई और जब दूसरे दिन बाहर निकालने की कोशिश की तो मात्र उनका स्केलेटन ही बाहर आया, पूरा का पूरा मांस उनका समाप्त हो चुका था उस एसिड पानी से। उपाध्यक्ष महोदय, मैं आपके माध्यम से माननीय मंत्री महोदय से यह कहना चाहूंगा कि आपके जो ट्रीटमेंट प्लांट वहां लगे हुए हैं, मंत्री महोदय, आपके अधिकारी आपको गुमराह कर रहे हैं। एक बार आप ध्यान से सोचें, उनकी कथनी पर आपने सही बात मान ली और उसी के आधार पर चले तो आपको पुनः एक बार रावला, घड़साना और सोहेला याद आएगा।

उपाध्यक्ष महोदय, ट्रीटमेंट प्लांट सभी बंद पड़े हैं। आपने यह जरूर

(श्री खुशवीर सिंह जोजावर)

कहा कि हमने उनको अपग्रेड किया। अपग्रेड करने के दो मायने होते हैं, एक तो उसकी क्वालिटी का अपग्रेड है और एक क्वांटिटी का। क्वांटिटी का अप्रग्रेड नहीं हुआ। उपाध्यक्ष महोदय, पिछली बार इस पर खूब चर्चा हुई थी। उस दूषित पानी का 6 गुना अधिक ट्रीटमेंट प्लांट के अन्दर पहुंच रहा है और उसकी वजह से उस नदी के 20 किलोमीटर के रेडियस में सभी कुओं में एसिड पानी आ रहा है। कई जो अनधिकृत रूप से फैक्ट्रियां चल रही हैं, वह सीधा का सीधा पानी उस नदी के अन्दर प्रवाहित हो रहा है। उपाध्यक्ष महोदय, आज वहां का किसान पाले की वजह से तो परेशान हुआ ही है, सर्दी की वजह से, लेकिन दूषित पानी की वजह से ये फसलें जो बर्बाद हो रही हैं उसका हर्जाना हम पाली में रहने वालों को भुगतना पड़ रहा है। पिछली बार ई.टी.वी. की जो एक सीडी तैयार की गई थी, पत्रिका और भास्कर की जो कटिंग थी, वह भी हमने टेबल की, लेकिन, उपाध्यक्ष महोदय, अभी तक उसके बारे में कोई सरकार ने विचार नहीं किया है। मंत्री महोदय को अधिकारी गुमराह कर रहे हैं। मैं आपके माध्यम से यह कहना चाहता हूं कि इनके पोल्यूशन कंट्रोल के, पोल्यूशन विभाग वाले जो वहां बैठे हैं, वे उन फैक्ट्री वालों की वकालत कर रहे हैं कि नहीं। यह पानी सही छोड़ रहे हैं और कैपेसिटी से ज्यादा पानी भी छोड़ा जा रहा है तो भी वे सही हैं, वे मंत्रीजी को गुमराह कर रहे हैं। गुमराह करके गलत रिपोर्ट प्रस्तुत की जा रही है तो इसका हर्जाना वहां की जनता भुगत रही है। अब वह आंदोलन किसी भी वक्त, उपाध्यक्ष महोदय, उग्र रूप ले सकता है। फिर आज इस सदन के माध्यम से सभी को अवगत कराना चाहूंगा कि अगर उग्र रूप ले लिया तो एक बार पुनः हमें रावला, घड़साना और सोहेला की याद नहीं दिला दे। मंत्री महोदय, इनकी बातों में नहीं आकर तुरन्त प्रभाव से उन अनधिकृत रूप से चल रही फैक्ट्रियों, और जो ट्रीटमेंट प्लांट से कैपेसिटी से ज्यादा प्रवाहित हो रहा है दूषित एसिड, उनको तुरन्त प्रभाव से आपने नहीं रोका तो इसके लिए आपको भुगतने के लिए तैयार रहना पड़ेगा। साथ ही, अगर वे यह कहते हैं कि हम ट्रीटमेंट प्लांट से पानी को साफ करके भेज रहे हैं तो आप उन फैक्ट्री वालों से कहिए कि आप उसी पानी को री-यूज कर लें। जो ट्रीटमेंट प्लांट का पानी बाहर आ रहा है, उस पानी की दुबारा रि-यूज कर सकते हैं तो आप या तो वहीं री-यूज करवाइये। अन्यथा उस पानी को नदी में अब नहीं आने देंगे, किसान चेत चुके हैं। किसान ने कसम खा रखी है कि एक

(श्री खुशवीर सिंह जोजावर)

न एक किसान 24 घंटे उस स्थान पर खड़े रहेंगे। आज हजारों की तादाद में वहां किसान फावड़े लेकर खड़े हैं, इनको रिपोर्ट साइट मेरे ख्याल से नहीं दी होगी। इसलिए मैं आपके माध्यम से यह चाहूंगा कि इन फैक्ट्रियों को तुरन्त प्रभाव से बन्द करवाया जाए।

श्री सी. डी. देवल (रायपुर): उपाध्यक्ष महोदय, यह बहुत गम्भीर समस्या है...(व्यवधान)

श्री उपाध्यक्ष: माननीय सदस्य, आपका अंकित नहीं होगा, आप बिना अनुमति के बोल रहे हैं।

श्री सी. डी. देवल (रायपुर): ×××

श्री उपाध्यक्ष: वह आ गई बात, अंकित नहीं होगा।

श्री सी. डी. देवल (रायपुर): ×××

श्री उपाध्यक्ष: आप बीच में नहीं, अंकित नहीं होगा। माननीय सदस्य, आप सदन का समय क्यों खराब कर रहे हैं? आपका अंकित नहीं हो रहा है।

श्री सी. डी. देवल (रायपुर): ×××

श्री उपाध्यक्ष: माननीय सदस्य, आप सदन का समय जाया कर रहे हैं, आपकी कोई बात अंकित नहीं हो रही है।

श्री ज्ञानचन्द पारख (पाली): ×××

श्री उपाध्यक्ष: मंत्रीजी। जवाब देने दीजिए, आप बीच में क्यों खड़े हो गये ?

श्री ज्ञानचन्द पारख (पाली): ×××

श्री उपाध्यक्ष: मंत्रीजी का स्टेटमेंट होगा पहले।

श्री ज्ञानचन्द पारख (पाली): ×××

श्री सी. डी. देवल (रायपुर): ×××

(समय : 15.00 बजे)

(श्री बीरूसिंह राठौड़, सभापति, पदासीन)

श्री सभापति: माननीय, दोनों सदस्यों का विषय आ गया सदन के अन्दर।

आपके सुझाव पर अत्यन्त गम्भीरता से विचार करेंगे। बैठिये आप।

(श्री प्रताप सिंह सिंघवी)

श्री प्रताप सिंह सिंघवी (वन एवं पर्यावरण राज्य मंत्री)ः माननीय सभापति महोदय, खारची से आने वाले माननीय सदस्य ने पाली में जो वस्त्र उद्योग लग रहे हैं और उनसे जो प्रदूषित पानी निकल रहा है उसके बारे में...

श्री सभापतिः नहीं, आपसे स्पष्टीकरण मांगा ही नहीं तो फिर क्यों दे रहे हैं आप?

श्री प्रताप सिंह सिंघवी (वन एवं पर्यावरण राज्य मंत्री)ः एक मिनट में मैं जवाब दे दूं। 3-3 माननीय सदस्यों ने उठाया है।

श्री खुशवीर सिंह जोजावर (खारची)ः माननीय उपाध्यक्ष महोदय ने व्यवस्था दी थी।

श्री प्रताप सिंह सिंघवी (वन एवं पर्यावरण राज्य मंत्री)ः उसके मामले में यहां पर चिंता व्यक्त की। मैं आपको निवेदन करना चाहूंगा कि जिस प्रकार की उनकी मंशा है, सरकार की भी उसी तरह की मंशा है कि...

श्री खुशवीर सिंह जोजावर (खारची)ः इनके कहने से मत देना।

श्री प्रताप सिंह सिंघवी (वन एवं पर्यावरण राज्य मंत्री)ः किसानों को किसी भी प्रकार का कोई नुकसान नहीं हो, किसी भी प्रकार का प्रदूषित पानी उनके खेतों में नहीं पहुंचे, स्वच्छ पेयजल की समुचित व्यवस्था हो। माननीय सभापति महोदय, मैं यह निवेदन करना चाहूंगा, और स्वीकार भी करूंगा, कि जो हमारा ट्रीटमेंट प्लांट है उसकी क्षमता से थोड़ा कहीं अधिक और कुछ नान कन्फोर्मिंग एरिया में जो इण्डस्ट्रीज लग गई हैं उनकी वजह से बांडी नदी में यह पोल्यूटेड वाटर पहुंच रहा है, यह बात सही है। माननीय सभापति महोदय, हमने कोशिश भी की है कि जो इण्डस्ट्रीज नॉन कन्फोर्मिंग एरिया में लगी हैं, इनको बन्द करवा दिया जाए। लेकिन माननीय उच्च न्यायालय के स्थगन के कारण इन इण्डस्ट्रीज को बंद नहीं करवाया जा रहा है। फिर भी राज्य सरकार ने इनको रोकने के लिए कार्यवाही की है। एक केबिनेट सब-कमेटी बनाई है, केबिनेट सब-कमेटी ने जो फाइण्डिंग्स दी हैं उनको त्वरित गति से लागू किया जा रहा है। भारत सरकार से भी हमको एक 12 एम एल डी का ट्रीटमेंट प्लांट बनाने की परमिशन मिली है, उसका एनवायर्नमेंट क्लीयरेंस मिल चुका है, उसका भी काम शीघ्र करवा देंगे। अभी पाली से आने वाले माननीय सदस्य ने जिस प्रकार से अपनी बात को रखा, अगर रोटेशन प्रणाली से भी इण्डस्ट्रीज को चलाया जाता है तो भी बहुत हद तक इस प्रकार की समस्या को दूर किया जा

(श्री प्रताप सिंह सिंघवी)

सकता है। माननीय सभापति महोदय, मैं माननीय सदस्यों को यह अवगत करना चाहूंगा कि जिस प्रकार की बात इन्होंने यहां पर मेरे समक्ष रखी है, मैं निश्चित रूप से उनको गम्भीरता से लूंगा और आप सबको बुलाकर, मेरे अधिकारियों को बुलाकर, मेरे से पूर्व के जो माननीय पर्यावरण मंत्रीजी हैं वो भी उसी पाली जिले से आते हैं उनको भी उस बैठक में शरीक करूंगा और इसकी बात करूंगा ताकि पाली जिले के किसानों को किसी भी प्रकार की कोई दिक्कत का सामना नहीं करना पड़े, उद्योगपतियों को किसी प्रकार की दिक्कत का सामना नहीं करना पड़े, वहां के मजदूरों के सामने किसी प्रकार रोजी-रोटी की समस्या की स्थिति खड़ी नहीं हो। इन सब बातों को देखकर निश्चित रूप से कोई न कोई कार्यवाही करने की चेष्टा करूंगा। आपने समय दिया, बहुत-बहुत धन्यवाद।

श्री ज्ञानचन्द पारख (पाली): ×××

श्री सभापति: देखिये, इस पर कोई वाद-विवाद नहीं होगा। सबका विषय सामने आ गया है, सभी माननीय सदस्यों ने अपना विषय रख दिया है। (व्यवधान) देखिये, जो भी बंधु मेरी अनुमति के बिना खड़े हो रहे हैं उनका बिलकुल भी अंकित नहीं किया जाए।

श्री सी. डी. देवल (रायपुर): ×××

श्री ज्ञानचन्द पारख (पाली): ×××

श्री सभापति: इस सदन में जो भी मेरी अनुमति के बिना खड़े हो रहे हैं उनका बिलकुल भी अंकित नहीं किया जाए।

श्री सी. डी. देवल (रायपुर): ×××

श्री ज्ञानचन्द पारख (पाली): ×××

श्री प्रताप सिंह सिंघवी (वन एवं पर्यावरण राज्य मंत्री): देवल साहब, एक मिनट।

श्री सभापति: जब मैंने आप में से किसी को अनुमति दी ही नहीं तो आप खड़े क्यों हो रहे हैं? एक बार बैठें सब लोग। मेरा आपसे आग्रह है कि बिना अनुमति के कोई भी माननीय सदस्य नहीं बोले।

श्री प्रताप सिंह सिंघवी (वन एवं पर्यावरण राज्य मंत्री): एक मिनट उनकी भी शंका दूर कर दूं।

श्री सभापति: मैं उनसे भी बात करूंगा। माननीय संयमजी लोढ़ा।

माउंट आबू में विदेशी पर्यटकों के साथ लूट व हत्या की घटना

श्री संयम लोढ़ा (सिरोही): माननीय सभापति महोदय, राजस्थान ने दुनिया के पर्यटन मानचित्र में अपनी एक बहुत खास और नामवर जगह बनाई है। राजस्थान का स्थापत्य, यहां की कला, यहां की संस्कृति, हमारी पुरा-सम्पदा, यहां की मेहमान-नवाजी, दुनिया भर में उसका एक खास संदेश है और विगत कुछ सालों में न केवल देश, बल्कि दुनिया भर से पर्यटक राजस्थान की इस महान संस्कृति से रूबरू होने के लिए राजस्थान में आये हैं। माननीय सभापति महोदय, आज मुझे बहुत दु:ख के साथ में राजस्थान के माननीय गृह मंत्रीजी का ध्यान आकृष्ट करना पड़ रहा है कि राजस्थान की एकमात्र पर्वतीय पर्यटन नगरी माउंट आबू जहां विश्व प्रसिद्ध कलात्मक जैन मन्दिर, नक्की झील, वहां का फोरेस्ट और अनेकानेक एक से बढ़कर एक और बेजोड़ दर्शनीय स्थल हैं और दुनियाभर से पर्यटक वहां पर आते हैं, वह माउंट आबू राजस्थान की सरकार की संवेदनहीनता और निकम्मेपन की वजह से एक काला और स्याहनुमा धब्बा राजस्थान के नाम पर लगा रहा है। माननीय सभापति महोदय, मैं आपकी जानकारी में लाना चाहूंगा कि इजरायल का पर्यटक स्पिल निक हमारे 'पधारो म्हारे देस' के संदेश से प्रभावित होकर राजस्थान आया था। स्पिल निक माउंट आबू में 12 फरवरी को पहुंचा और उसके बाद में वहां के फोरेस्ट को देखने के लिए निकला। नक्की झील का जो परिक्रमा पथ है वहां पर स्पिल निक की कुल्हाड़ियों से हत्या कर दी गई। माननीय सभापति महोदय, मरने से पूर्व उसने संघर्ष भी किया और जंगल से जो कैमरा मिला उसमें कुछ फोटो भी उसके मुत्तलिक मिले हैं। सभापति महोदय, अत्यन्त दु:ख का विषय है कि 12 फरवरी को इजरायली पर्यटक की हत्या हो गई, उसके बाद में वहां के पुलिस प्रशासन ने तीन दिन तक इजरायली दूतावास को सूचित तक नहीं किया। 15 तारीख को इजरायली दूतावास को थाने के माध्यम से सूचना मिली और 16 तारीख को इजरायली प्रतिनिधि डी-जुलियस माउंट आबू में उस शव को लेने के लिए पहुंचे और उसकी मां उसके भी बाद इजरायल से दिल्ली पहुंची। माननीय सभापति महोदय, टी.वी. में आ गया, समाचारों में प्रसारित हो गया, टी.वी. के जरिये उनसे सम्बन्धित लोगों को सूचना मिली...

श्री सभापति: आप तो यह बताएं कि इसमें चाहते क्या हैं आप?

श्री संयम लोढ़ा (सिरोही): वो ही तो मैं निवेदन कर रहा हूं।

श्री सभापति: वो ही संक्षेप में बता दें आप।

श्री संयम लोढ़ा (सिरोही): माननीय सभापति महोदय, मैं नियमों के तहत आसन की व्यवस्था के माध्यम से बोल रहा हूं और एक भी इर्रेलेवेंट बात नहीं कर रहा हूं।

श्री सभापति: नहीं, आपको दो मिनट का समय दिया है।

श्री संयम लोढ़ा (सिरोही): मुझे आपका प्रोटेक्शन चाहिए। यह कोई छोटी बात नहीं है। यह छोटी बात नहीं है।

श्री सभापति: आपको दो मिनट का समय दिया है।

श्री संयम लोढ़ा (सिरोही): एक पर्यटक की हत्या हो गई, माउंट आबू में उसके 10 दिन बाद दूसरे के साथ लूट हो गई, दो अलग-अलग देशों के लोगों के साथ हो गई और आप प्रोटेक्शन ही नहीं करते। (व्यवधान)

श्री सभापति: आप अपना विषय रख दें। जो आप चाहते हैं वो संक्षेप में बता दें।

श्री संयम लोढ़ा (सिरोही): यह कोई इर्रेलेवेंट बात है?

श्री जोगाराम पटेल (संसदीय सचिव): आसन को धमकाने का प्रयास नहीं करें। (व्यवधान) आसन को धमकाने का प्रयास न करें।

श्री सभापति: जो आप चाहते हैं वह संक्षेप में बता दें।

श्री संयम लोढ़ा (सिरोही): ... माननीय सभापति महोदय, तीन दिन तक इजरायली दूतावास को सूचना नहीं मिले और मैं वो बात यहां पर नहीं कहूं? इसमें क्या इर्रेलेवेंट बात है?

श्री सभापति: जो आप चाहते हैं वो संक्षेप में बता दीजिये। जो आप चाहते हैं वह संक्षेप में बता दीजिये न।

श्री संयम लोढ़ा (सिरोही): खड़े हुए डेढ़ मिनट तो मुझे हुआ नहीं, अगर आपकी आज्ञा नहीं है तो हुकुम करें, मैं तो बैठ जाता हूं।

श्री जोगाराम पटेल (संसदीय सचिव): पांच मिनट हो गये हैं।

श्री सभापति: देखिये, यहां पर जो विषय बताया गया है और जो आप चाहते हैं उसको संक्षेप में बता दो।

श्री संयम लोढ़ा (सिरोही): माननीय सभापति महोदय, मुझे आपका संरक्षण चाहिए। पिछले दो मिनट की बात में एक शब्द भी मैंने इर्रेलेवेंट नहीं

(श्री संयम लोढ़ा)

कहा है इसलिए मैं आपका प्रोटेक्शन चाहूंगा।

माननीय सभापति महोदय, मैं आपके माध्यम से निवेदन कर रहा था कि 16 तारीख को इजरायली डैलिगेट माउंट आबू पहुंचा और उसके बाद में उसकी बाडी को ले जाया गया। मैं आपके माध्यम से माननीय गृह मंत्रीजी का ध्यान इस ओर आकृष्ट करना चाहता हूं कि मेहरबानी करके इस व्यवस्था को सुनिश्चित करें, दूर देश से आये हुए किसी पर्यटक के साथ ऐसा हो जाए तो आज के इस युग में जो कि सूचना तंत्र का युग है, इतनी विस्तारवादी सूचना का तंत्र हमारे पास मौजूद है, तो कम से कम समय पर उसकी सूचना तो जानी चाहिए। माननीय सभापति महोदय, माउंट आबू की इस घटना के माध्यम से राजस्थान के मुंह पर कालिख पुती है। वहां के पुलिस के नाकारा प्रशासन का प्रमाण यहीं तक नहीं ठहरता, उसके नौ दिन बाद ही 21 फरवरी को दूसरी घटना हुई। माननीय सभापति महोदय, उसी नक्की के परिक्रमा पथ पर हुई जब फ्रांसीसी पर्यटक मिरेला लुइस और रोनाल पेल दोनों भ्रमण के लिए निकले। लोग उनके पीछे लग गये, काफी दूर तक उनका पीछा किया और उसके बाद उनको आवाज दी तो उनके हाथ में पत्थर थे। जब इन फ्रांसीसी महिला और पुरुष ने देखा कि पत्थर से मार देंगे तो उनके पास जो कुछ था, वह उन्होंने उनके हवाले कर दिया और वहां से जान बचाकर भागे और पुलिस थाने के अन्दर उन्होंने जाकर मुकदमा दर्ज कराया। सभापति महोदय, नौ दिन बाद में एक ही जगह पर दूसरी घटना विदेशी पर्यटक के साथ हो, मैं बड़े विनम्र शब्दों में गृह मंत्रीजी से निवेदन करना चाहता हूं कि राजस्थान में क्या संदेश जाएगा? पर्यटन आज राजस्थान की अर्थव्यवस्था की एक बुनियाद बना हुआ है और हम बड़े फख्र के साथ कहते हैं कि हजारों नहीं, लाखों की तादाद में पर्यटकों की संख्या बढ़ रही है। मगर क्या इस तरह से जान खोने के लिए पर्यटक आना चाहेंगे? अगर राजस्थान सरकार विदेशी पर्यटकों की, देशी पर्यटकों की हिफाजत नहीं कर सकती, एक सड़क पर विदेशी पर्यटकों के साथ दूसरी घटना हो जाए तो मेहरबानी करके राजस्थान के अन्दर जगह-जगह पर यह लिखवा दीजिये कि "विदेशी पर्यटक सावधान, यह हत्या का क्षेत्र है, यह लूट का क्षेत्र है, कृपया इसमें प्रवेश नहीं करें" जिससे लोगों की जान तो बच सके। मैं आपके माध्यम से गृह मंत्रीजी से निवेदन करना चाहता हूं कि एक घटना होने के बाद आपकी सरकार ने माउंट आबू में फिर ऐसी

(श्री संयम लोढ़ा)

घटना की पुनरावृत्ति नहीं हो, उसके लिए क्या व्यवस्था की, आप इस सदन को बताएं। और 21 तारीख को फिर उसी जगह पर दूसरे देश के पर्यटक के साथ शर्मनाक हादसा हुआ, इसकी जिम्मेदारी किसकी है? आप वहां के नाकारा पुलिस प्रशासन के खिलाफ क्या कार्यवाही करने की मंशा रखते हैं? पूरी दुनिया के लोगों को राजस्थान की सरकार क्या संदेश देना चाहती है कि वह किस तरह से आने वाले पर्यटकों को हिफाजत देगी, सुरक्षा देगी और राजस्थान जिस शान्ति के लिए मशहूर रहा है, उस शान्ति का उनको भरोसा दिलाएगी जिससे आने वाले समय में राजस्थान की अर्थव्यवस्था को नुकसान न हो और आने वाले हमारे अतिथियों को हमारे यहां प्राण नहीं गंवाना पड़े, यह मैं माननीय गृह मंत्रीजी का ध्यान आकृष्ट करना चाहता हूं।

श्री गुलाब चन्द कटारिया (गृह मंत्री): माननीय सभापति महोदय, जो विषय सिरोही से आने वाले माननीय सदस्य ने उठाया है, वह घटना बिलकुल सही है। दोनों घटना घटी हैं, इसको मैं और मेरा विभाग तो क्या, राजस्थान की कोई भी जनता और उसका प्रतिनिधि नहीं नकार सकता। घटना दोनों ही हुई हैं, दुःखद हैं, इसमें कोई दो राय नहीं है। लेकिन जिस प्रकार की बात आप कह रहे हैं कि हमने दूतावास को सूचना नहीं की, यह गलत है। आप चाहें तो मेरे पास है, जो फैक्स हमने किये हैं लगातार जिस टेलीफोन नम्बर पर हमने कांटेक्ट करने की कोशिश की, आप चाहें तो मैं आपको बता सकता हूं, आधा पेज भरा हुआ है। हमारे यहां पर जो फोरेन डिपार्टमेंट है, उससे भी हमने कांटेक्ट किया, लगातार प्रयास किया। 15 तारीख को जाकर उनसे हमारा कांटेक्ट हो पाया है। हमारे प्रयास में किसी प्रकार की कमी नहीं रही, लेकिन वहां से किसी प्रकार का टेलीफोन का रेस्पोंस नहीं आया। अंत में जाकर वहां की एजेंसी को भेजकर भी उस दफ्तर में जाकर कांटेक्ट किया और उसके बाद यह हुआ। तो हमने प्रयास नहीं किया, यह बात नहीं है। एक विदेशी पर्यटक की हमारे यहां हत्या हो, इसका दुःख हमको है, निश्चित रूप से राजस्थान के पर्यटन पर भी इसका असर जाता है, इस बात की भी चिंता है, लेकिन प्रयास किया है। हमारा एस.पी. तीन दिन वहां रहा, एडिशनल एस.पी. रहा, हमारी पूरी फोर्स वहां रही और हमने उसका प्रयास किया। लगभग 20 लोगों को पकड़ा। ये दोनों घटना हुई, एक घटना घटी 12-13 की रात को और दूसरी घटना और हुई, एक और फ्रांसीसी कपल था, जिसके एक बच्चा भी साथ था, उनसे पहले

(श्री गुलाब चन्द कटारिया)

उन्होंने पैसा मांगा, उसने 500 रुपये का नोट निकालकर एक बार दे दिया लेकिन उन्होंने जब पत्थर उठाया तो उसने सारा का सारा बैग था, वह 4000 रुपये उसके थे, वह दिया है। एफ.आई.आर. दर्ज हुई है, इन्वैस्टिगेशन भी हो रहा है। लगभग 20 लोगों को हमने लाकर इसमें जो कुछ भी उनसे पूछताछ करनी है, पूछताछ की है। एक अलग से भी टीम बनाकर वहां लगा रखी है। निश्चित रूप से आपकी चिंता है, मेरी चिंता है और राजस्थान के सब लोगों की चिंता है। पर्यटक यहां अपने आपको सुरक्षित महसूस करे, यह हमारी जिम्मेदारी है। उसके लिए जो भी प्रयास हो सकता है, किया है, अलग से और टीम बनाकर लगायी है। ये दोनों केस खुलने चाहिए। लेकिन अभी तक 20 लोगों से प्रयास करने के बाद भी घटना खुली नहीं है। यह वास्तव में है। मैं आपको यह आश्वस्त करता हूं कि जो कुछ भी हमारे पास शक्ति है और जितनी भी हम कार्यवाही कर सकते हैं, सक्षम से सक्षम अधिकारी को लगाकर इस घटना को खोलने के लिए प्रयास करेंगे। 13 तारीख से लेकर आज 27 तारीख है, यह बात निश्चित है कि मर्डर हुआ है और मर्डर को खोलने के लिए जो भी प्रयास हो सकता है, वह हम निश्चित रूप से करेंगे। मैं आश्वस्त करता हूं आपके माध्यम से सम्पूर्ण विश्व के सभी पर्यटकों को कि राजस्थान अपनी गरिमा के लिए और जिस मेहमान बाजी के लिए अब तक मशहूर रहा है, वह रहे। शान्ति और अमन-चैन बना रहे, उसके लिए भी जो प्रयास हो सकते हैं, वह करेंगे। लेकिन हमने दूतावास को निश्चित रूप से सूचित किया है। एक बार नहीं, कई बार सूचित किया है, लेकिन इजरायली दूतावास की तरफ से कोई रेस्पास नहीं आने के कारण से लगभग डेढ़ दिन तक की अवधि का समय लगा है। वह मैं आप चाहें तो एक-एक फैक्स को पढ़कर बता सकता हूं कि हमने किस दिन और किस समय और कौन से नम्बर पर फैक्स किया है, किस नम्बर पर हमने बात करने की कोशिश की। बाद में जाकर हमारी बात हुई है। वह सारी की सारी जो भी आगे की कार्यवाही होनी है, आपने जो विषय उठाया है, वह सही है, मैं इसको किसी और रूप में नहीं, गम्भीरता से ले रहा हूं।

केवल यही नहीं, बाकी जो पर्यटन स्थल हैं, वहां पर भी जो कुछ भी हमारे पास हैं, जो लोग हमारे पास उपलब्ध हैं, जो अधिकारी उपलब्ध हैं, उन सबको भी हम और हिदायत देंगे कि वे पर्यटन की दृष्टि से और ज्यादा पुख्ता व्यवस्था करें ताकि भविष्य में इसकी पुनरावृत्ति न हो और जो घटना हुई है,

(श्री गुलाब चन्द कटारिया)

उसको खोलना मेरे और मेरे विभाग के लिए चुनौती का विषय है, मैं पूरा प्रयास करूंगा कि निश्चित रूप से यह घटना खुले और इसके अपराधी पकड़े जाएं।

श्री संयम लोढ़ा (सिरोही): सभापति महोदय, मैं सिर्फ दो बातें माननीय गृह मंत्रीजी, से निवेदन करना चाहता हूं। एक तो यह है कि अधिकारी...

श्री सभापति: देखिये, माननीय संयमजी, आपको कोई शंका हो, आप अलग से गृह मंत्रीजी से मिल लें। माननीय सूर्यकांताजी व्यास।

श्री संयम लोढ़ा (सिरोही): सभापतिजी, मैं दो बातें पूछ रहा हूं। मैं आपसे, मंत्री महोदय, सिर्फ यह निवेदन कर रहा हूं, अधिकारी आपको जो फैक्स पढ़ा रहे हैं, मैं आपका पूरा सम्मान करते हुए आपसे निवेदन कर रहा हूं कि वे आपको गुमराह करने की कोशिश कर रहे हैं, क्योंकि डी जुलियस खुद ने माउंट आबू में 16 तारीख को आने के बाद में इस पर गहरी नाराजगी प्रकट की है कि पुलिस प्रशासन ने उसे सूचना नहीं की। सहारा टी.वी. पर उसके कमेंट रिलीज हो रहे हैं, लोकल प्रशासन को उसने कंडैम किया है, डिस्ट्रिक्ट एडमिनिस्ट्रेशन को और स्टेट गवर्नमेंट को कंडैम किया है। इसलिए, माननीय सभापति महोदय, मैं आपके माध्यम से माननीय गृह मंत्रीजी से प्रार्थना करना चाहता हूं कि आप इस तरीके की लापरवाही की जिम्मेदारी तय करें। फिर दूसरी बात यह है कि 12 तारीख को एक घटना एक रोड पर हो जाए, उसी परिक्रमा पथ पर उसके बाद नौ दिन के बीच में फिर दूसरी घटना हो गई...

श्रीमती सूर्यकान्ता व्यास (जोधपुर): माननीय सभापति महोदय, मंत्रीजी ने उत्तर दे दिया, फिर क्या बात हो गई?

श्री सभापति: आपने अपना विषय विस्तार से रख दिया है।

श्री संयम लोढ़ा (सिरोही):...नहीं, सभापति महोदय, पुलिस प्रशासन ने इस बात का इंतजाम क्यों नहीं किया कि ऐसी घटना नहीं हो?

श्रीमती सूर्यकान्ता व्यास (जोधपुर): माननीय गृह मंत्रीजी ने आपको उत्तर दे दिया है, फिर क्या बात है?

श्री संयम लोढ़ा (सिरोही): उसी तरह का क्राइम नौ दिन के भीतर उसी पर्यटन स्थल पर फिर हो जाए, इसकी कोई जिम्मेदारी नहीं है?

श्री सभापति: ठीक है, आपका विषय आ गया। बैठिये आप।

श्री संयम लोढ़ा (सिरोही): विराजने की बात नहीं है।

श्री सभापतिः आपका विषय आ गया है, बैठिये आप।

श्री संयम लोढ़ा (सिरोही): माननीय सभापति महोदय, बड़े विनम्र शब्दों में मैं निवेदन करूंगा कि अगर...

श्री सभापतिः देखिये, पर्ची पर इतना लम्बा डिस्कशन नहीं चलता है।

श्री संयम लोढ़ा (सिरोही): अगर इस तरह की लीपापोती का हमारा एटीट्यूड रहेगा तो हम राजस्थान के लिए आने वाले वक्त में कोई अच्छे भविष्य का निर्माण नहीं करने जा रहे हैं। मैं आपके माध्यम से निवेदन करना चाहता हूं, गृह मंत्री महोदय, आप इन दोनों बातों के बारे में फर्माएं।

श्री सभापतिः ठीक है, आपका विषय आ गया। माननीय सूर्यकांताजी व्यास। माननीय गृह मंत्रीजी बोलिये।

श्री गुलाब चन्द कटारिया (गृह मंत्री): माननीय सभापति महोदय, हमने फैक्स के माध्यम से और जो प्रयास जितनी बार भी किया है इसमें आपने कोई संदेह जाहिर किया है, मैं निश्चि‍त रूप से किसी उच्चाधिकारी को लगाकर ये जो फैक्स दिये हैं, जैसी बात हुई है, जो हुई है, इसको पुख्ता करूंगा, इसमें अगर कहीं भी कमी होगी तथा जो भी दोषी होगा, वह दण्डित होगा।

श्री सभापतिः माननीय सूर्यकांता व्यास।

श्री रणवीर सिंह गुढा (गुढा): ×××

श्री जोगाराम पटेल (संसदीय सचिव): ×××

श्री सभापतिः आप बैठिये, बैठिये।

डा. ओ. पी. महेन्द्रा (सरकारी उप मुख्य सचेतक): ×××

श्री सभापति: मैं पहले भी आपको कह चुका हूं कि मेरी परमिशन के बिना कोई नहीं बोलेगा। आप बिना परमिशन के खड़े कैसे हो गये? (व्यवधान)

श्री रणवीर सिंह गुढा (गुढा): ×××

श्री सभापतिः नहीं, नहीं, आपको कोई समय नहीं मिलेगा। आपका विषय आ गया है, बैठिये।

श्री जोगाराम पटेल (संसदीय सचिव): ×××

श्री रणवीर सिंह गुढा (गुढा): ×××

श्री सभापतिः आप बैठिये, नीचे बैठिये। मेरा आपसे आग्रह है कि आप अपना स्थान ग्रहण कीजिये।

श्री रणवीर सिंह गुढा (गुढा): ×××

श्री जोगाराम पटेल (संसदीय सचिव): ×××

डा. ओ. पी. महेन्द्रा (उप मुख्य सचेतक): ×××

श्री सभापतिः आप अपना स्थान ग्रहण कीजिये। आपका एक भी शब्द अंकित नहीं हो रहा है। आपका कोई भी शब्द अंकित नहीं हो रहा है। आप अपना स्थान ग्रहण कीजिये।

श्री रणवीर सिंह गुढा (गुढा): ×××

श्रीमती सूर्यकान्ता व्यास (जोधपुर): माननीय सभापति महोदय, मैं जोधपुर शहर की सफाई के संबंध में आपसे निवेदन करना चाहूंगी।

श्री सभापति: देखिये, आपको नैतिक रूप से, यहां पर कोई व्यक्ति नहीं बैठा है यहां पर एक संस्था का प्रतिनिधि बैठा है और किसी भी व्यक्ति को इस संस्था के प्रतिनिधि का अपमान करने का अधिकार नहीं है, आपको कोई समय नहीं दिया जाएगा। माननीय सूर्यकान्ताजी व्यास। (व्यवधान) इस तरह बार-बार खड़े नहीं होंगे आप।

श्री रणवीर सिंह गुढा (गुढा): ×××

श्री जोगाराम पटेल (संसदीय सचिव): ×××

श्री सभापति: नहीं, आप अपना स्थान ग्रहण कीजिये।

श्री रणवीर सिंह गुढा (गुढा): ×××

श्री सभापतिः आप बिना परमिशन के बोल रहे हैं, आपका कोई भी शब्द अंकित नहीं किया जाएगा और आप अपना स्थान ग्रहण करिये।

श्री रणवीर सिंह गुढा (गुढा): ×××

श्री जोगाराम पटेल (संसदीय सचिव): ×××

श्री सभापतिः मेरा आपसे पुनः आग्रह है, आप अपना स्थान ग्रहण कीजिये प्लीज।

श्री रणवीर सिंह गुढा (गुढा): ×××

श्री सभापतिः जब आपको परमिशन ही नहीं मिली है तो आप किससे क्या पूछेंगे? बिना परमिशन के आपको कोई भी जवाब नहीं देगा।

श्री रणवीर सिंह गुढा (गुढा): ×××

श्री यूनूस खान (यातायात मंत्री): ×××

श्री सभापति: माननीय रणवीर सिंहजी गुढा, आप अपना स्थान ग्रहण करें।

श्री रणवीर सिंह गुढा (गुढा): ×××

श्री सभापति: माननीय ।

पर्ची के माध्यम से उठाये गये मुद्दे

जोधपुर शहर की सफाई व्यवस्था

श्रीमती सूर्यकान्ता व्यास (जोधपुर): माननीय सभापति महोदय, मैं जोधपुर शहर की गंदगी के बारे में मेरे विचार रखना चाहती हूं, जोधपुर शहर के अंदर कांग्रेस का बोर्ड है फिर भी शहर के अंदर सफाई नाममात्र की नहीं है और जोधपुर शहर सड़ रहा है। जोधपुर शहर के तीनों विधान सभा क्षेत्र का मैं वर्णन करना चाहूंगी। जहां कहीं भी नजर उठाएंगे, वहां कचरा मिलेगा, गटर का पानी बहता मिलेगा। यहां तक कि, मैं यहां विधान सभा में बैठी हूं, यहां भी फोन आएंगे कि यहां गटर बह रहा है, वह हो रहा है। यह स्थिति कहां तक हम बर्दाश्त करते रहेंगे? सभापति महोदय, मैं आपसे कहना चाहूंगी, मेरे पास बहुत ईजी एप्रोच है, मेरा मकान नहरिया दरवाजा रात को छह घंटे बंद रहता है, बाकी हर टाइम खुला रहता है। मेरे पास कोई भी व्यक्ति, सब्जी लेने गया तो आएगा कि दीदी वहां कचरा पड़ा है, दीदी वहां गटर बह रहा है। अब कहां तक सुनेंगे, भई? नगर पार्षद के काम नहीं करते क्योंकि कांग्रेस का बोर्ड है, बीजेपी के नगर पार्षद हैं उनका कांग्रेस बोर्ड काम नहीं करता। आज सामने बिराजने वाले कितनी जोर-जोर से बातें कर रहे हैं मगर सब बातें गलत कर रहे हैं। इनका बोर्ड होते हुए भी ये इतना-सा भी काम नहीं कर सकते कि जोधपुर शहर को स्वच्छ रखें। जोधपुर शहर के अंदर इस तरीके से हाल है कि मैं एक-एक वर्णन करूं तो कम से कम आधा घंटा, पौन घंटा लगे, मगर वह नहीं कह कर बहुत थोड़े में कहना चाहूंगी आपको। कंदोई बाजार बहुत बढ़िया मार्केट है, साइकिल मार्केट, सिवांची गेट जहां पर कि धान और सारी चीज उपलब्ध होती है, वहां कचरे के ढेर, जानवर मरे हुए पड़े मिलेंगे। यह सारी अव्यवस्था है, बोर्ड देखने के लिए तैयार नहीं है। मेरे को इस बात को कहते हुए बहुत शर्म आती है। जोधपुर अपने आप में सोने की चिड़िया कहलाता था, आज जोधपुर के अंदर कांग्रेस का बोर्ड होकर सारा सत्यानाश हो गया है, कहीं भी सुनने वाला कोई भी नहीं है। मैं माननीय मंत्री महोदय से निवेदन करना चाहूंगी कि आप इसके अंदर दखलंदाजी करें, जोधपुर महापौर को भी हिदायत

(श्रीमती सूर्यकान्ता व्यास)

करें और जोधपुर के बोर्ड को हिदायत करें। महापौर को भी मत करें भले ही आप, जोधपुर बोर्ड को हिदायत करें कि शहर की सफाई रखे। शहर गंदगी से सड़ रहा है और ये बैठे हैं। मैं अभी जोधपुर गई थी तो बच्चे स्कूल जा रहे थे, मैं, सभापति महोदय, बहुत सही बात बता रही हूं, बच्चे स्कूल जा रहे थे, मेरे को देखकर रोक लिया, मैं घबराई कि कोई पानी की समस्या होगी। पर मैंने सोचा, पानी की समस्या तो अब हो ही नहीं सकती, फिर भी मैंने कहा, बोलो भई, क्या हुआ। नीचे उतर कर कहा, देखो, हमारे कपड़े सारे कीचड़ से भर रहे हैं, जहां जाओ वहां गटर का पानी है, किधर से जाएं, सारे कपड़े भर गये, अब हमारी स्कूल में टेलीफोन करो आप कि हम थोड़ा लेट आएंगे। यह स्थिति जोधपुर शहर की बना दी है। अब आप कहते हैं, मुख्य मंत्रीजी ने अच्छा बजट रखा है, तो वह तो सुनना चाहेंगे नहीं। अंट-शंट बात करेंगे सामने बैठे हुए, वह बात तो यह सुनेंगे नहीं। मैं यह आपसे निवेदन... (व्यवधान) न-न, आप बिलकुल नहीं बोलेंगे।

श्री हरिमोहन शर्मा (हिण्डौली): ×××

श्रीमती सूर्यकान्ता व्यास (जोधपुर): मेरी बात सुनिये। मैं बहुत कम बोलती हूं और बोलती हूं वह सही बोलती हूं, आप मेरी सुनिये। मैं आपसे उम्र में बड़ी होंगी मगर अभी अपन सब माननीय सदस्य हैं, आप मेरी बात सुनिये। मैं खुद दो दफा नगर पार्षद रही हुई हूं, मेरे को मालूम है कि जोधपुर शहर की कैसी स्थिति है और आज क्या स्थिति से जोधपुर शहर गुजर रहा है।

मैं चाहूंगी, मंत्री महोदय इसमें हस्तक्षेप करके जोधपुर के अधिकारियों को या जोधपुर के बोर्ड को हिदायत दें कि वे जोधपुर शहर को स्वच्छ रखें। मैं आपको बिलकुल सही बता रही हूं, जोधपुर शहर में पुराने जमाने के अंदर गटर लाइन और पाइप लाइन साथ चलती थी, मगर मैं माननीय मुख्य मंत्रीजी का आभार व्यक्त करना चाहूंगी कि हमारे निवेदन पर उन्होंने 10 करोड़ 75 लाख रुपये दिये जोधपुर शहर की पाइप लाइन चेंज कराने के लिए। अब वह पाइप लाइन चेंज हो गई, मगर गटर का क्या करें? नगर निगम कुछ करना ही नहीं चाहता है। वहां के पार्षद हैं जो कांग्रेस के हैं, कांग्रेस का बोर्ड है, वह तो आराम करना चाहता है, काम करना कोई नहीं चाहता है। जब यह काम कर रहे हैं तो आप उनकी बात नहीं सुन रहे हैं। यहां कितना अच्छा बजट है, उसके ऊपर आप बहस करो, कोई कमी लगी हो तो बताओ। मैं मंत्री महोदय से निवेदन करूंगी सभापति महोदय के माध्यम से कि जोधपुर शहर को सुंदर बनाने के

(श्रीमती सूर्यकान्ता व्यास)

लिए सहयोग करें। सारी सड़कें टूटी हुई, गटर का पानी बह रहा, नालियां बह रहीं, यहां तक कि मैं मेरे आफिस में नहीं बैठ सकती, आप ताज्जुब करेंगे। आप मेरे घर आकर देख लें कि क्या स्थिति है जोधपुर शहर की। मैं एक शहर में रहने वाली हूं और बहुत कंजेस्टेड जगह है, बहुत तंग-तंग गलियां हैं, राजा-महाराजाओं के टाइम का यह जोधपुर बसा हुआ है। सरदारपुरा तो चौड़ी सड़कें हैं मगर शहर है वह बहुत कंजेस्टेड है। इसलिए मैं निवेदन करना चाहूंगी कि शहर को सुंदर बनाने में, सफाई करने में आपका भी सहयोग इतना ही रहना चाहिए और बोर्ड को भेदभाव नहीं रख कर काम करना चाहिए। मैं, सभापति महोदय, आपके माध्यम से चाहूंगी कि मंत्रीजी इसके ऊपर कुछ कहें।

श्री हरिमोहन शर्मा (हिण्डौली): ×××

श्री सभापतिः नहीं, आप माननीय सदस्य ...

श्री हरिमोहन शर्मा (हिण्डौली): ×××

श्रीमती सूर्यकान्ता व्यास (जोधपुर): आपको सही बात सुनने की आदत नहीं है।

श्री हरिमोहन शर्मा (हिण्डौली): ×××

श्री महावीर प्रसाद जैन (मुख्य सचेतक): ×××

श्री सुरेन्द्र गोयल (राज्य मंत्री, नगरीय विकास एवं आवासन): महावीरजी, बैठो आप।

माननीय सभापति महोदय, माननीय सदस्या ने जोधपुर नगर निगम में सफाई व्यवस्था के बारे में चिंता प्रकट की है हाउस में, मैं इनसे निवेदन करना चाहता हूं कि जोधपुर नगर निगम में 60 वार्ड हैं, इसमें से 45 वार्डों में अभी 12.19 करोड़ रुपये की मंजूरी की है। घर-घर कचरा संग्रहण करके बाहर डालने के लिए 711 रुपये प्रति टन के हिसाब से पांच वर्ष के लिए कांट्रेक्ट दिया गया है। वह व्यवस्था चालू हो गई है और वह चल रहा है, इसमें कोई कमी नहीं रहेगी। दूसरा मेरा निवेदन है, माननीय सभापति महोदय, नगर निगम में बारहवें वित्त आयोग से अभी 3.17 करोड़ रुपये आबंटित हुए थे उसमें से 1.3 करोड़ इक्विपमेंट खरीदने के लिए आपके नगर निगम को दे दिये गये हैं और इक्विपमेंट खरीद लिये गये हैं। जहां तक सीवरेज लाइन के बारे में इन्होंने जिक्र किया है, सीवरेज लाइन को दुरूस्त रखने के लिए, उसको ठीक करने के लिए, उसके रखरखाव के लिए 6 करोड़ रुपये स्वीकृत किये जा रहे हैं,

(श्री सुरेन्द्र गोयल)

वे भी निविदाएं आमंत्रित कर ली गई हैं और वह भी आपका काम जल्दी से जल्दी शुरू हो जाएगा। माननीय सभापति महोदय, मैं माननीय सदस्या को यह भी निवेदन करना चाहता हूं कि आपके वहां नेशनल ब्रिज कंस्ट्रक्शन कार्पोरेशन के माध्यम से 19.20 करोड़ की ठोस कचरा प्रबंधन की योजना भी क्रियान्वित की जा रही है। उसमें से 16 करोड़ रुपये कंटेनर, कम्पोजिट प्लांट, लैण्ड फिल साइट व आधारभूत संरचनाओं पर व्यय किये जा चुके हैं और बाकी के कार्य प्रगति पर हैं। माननीय सदस्या से और निवेदन करना चाहता हूं आपके माध्यम से कि कामन बायो मेडिकल वेस्ट ट्रीटमेंट प्लांट की स्थापना कर दी गई है एवं कार्य चल रहा है जिसके द्वारा बायो-मेडिकल वेस्ट ट्रीटमेंट का वैज्ञानिक तरीके से निस्तारण बीओटी आधार पर किया जा रहा है। सफाई व्यवस्था में उक्त अनुसार कार्य किया जा रहा है और इसके भविष्य में आपको बहुत अच्छे परिणाम मिलेंगे। यह मैं आप लोगों को आश्वस्त करना चाहता हूं बहुत-बहुत धन्यवाद।

श्री सभापतिः माननीय सदस्य श्री जयराम जाटव। केवल चार मिनट में आपको अपना विषय रखना है।

खैरथल में कन्या महाविद्यालय की स्थापना

श्री जयराम जाटव (खैरथल): माननीय सभापति महोदय, खैरथल में कन्या महाविद्यालय खोलने के क्रम में पर्ची के माध्यम से आपने मौका दिया, बहुत-बहुत धन्यवाद। 18 फरवरी, 2008 से यह विधान सभा सत्र चल रहा है और इस विधान सभा सत्र में व्यवधान पैदा करने वाले जो लोग हैं उन्होंने पूरे पांच साल तक शिक्षा, चिकित्सा, बेरोजगारी पर जब इनका राज था कोई ध्यान नहीं दिया। मैं धन्यवाद देना चाहता हूं मुख्य मंत्रीजी को, बजट के माध्यम से बार-बार इनको चिंता हो रही है कि हम इस बजट के विरोध में कैसे बोले? मैंने जो विषय उठाया है यह कालेज का विषय है, कन्या महाविद्यालय का है। आज राजस्थान में सड़कों के माध्यम से रास्ते हैं। कांग्रेस के राज में गांवों में जहां एक मिनट बिजली घरेलू नहीं मिलती थी, उन गांवों में छात्र-छात्राएं पढ़ते हैं तो वहां बिजली मिल रही है। मेरे कहने का तात्पर्य यह है कि राजस्थान में छात्र-छात्राओं में एक जाग्रति आई है कि हम पढ़ें। कांग्रेस के राज में यह चिंता हो गई थी कि हम पढ़कर करेंगे क्या? पढ़कर अब ऐसा लगने लगा है, जब लोक सेवा आयोग के द्वारा निष्पक्ष रूप से लाखों अध्यापकों की भर्ती की गई

(श्री जयराम जाटव)

तो गांव-गांव में छात्र-छात्राओं में एक दौड़ लगी, होड़ हुई है कि हम पढ़ना चाहते हैं। मैं इस बात को क्यों कह रहा हूं? अलवर जिले का जो खैरथल कस्बा है, लाल प्याज की सबसे बड़ी राजस्थान में वह मण्डी है, ए ग्रेड अनाज की मण्डी है। अलवर जिले की सात तहसीलें उसमें लगती हैं लेकिन वहां कोई सरकारी कॉलेज नहीं है, प्राइवेट कालेज बहुत है। गांव का चाहे वह शिड्यूल्ड कास्ट का हो या शिड्यूल्ड ट्राइब्स का, या किसान हो, उसकी आर्थिक स्थिति बहुत अच्छी नहीं है और वह सरकारी कालेज की तरफ देखता है। खैरथल से 40 किलोमीटर अलवर जब लड़कियां आती हैं ट्रेन से या बस से तो उनको काफी तकलीफ होती है। दूसरा प्राइवेट कालेज में डोनेशन का मामला है, उनकी फीस का मामला है। गांव के लोग चाहे किसी जाति के हों, किसान गरीब है, छात्र-छात्राएं पढ़ने में असमर्थ तो नहीं हैं लेकिन जब खर्चे को देखते हैं, वहां के प्राइवेट कॉलेज की इस तरह की व्यवस्थाएं हैं उनसे बेचारे गांव के छात्र-छात्राएं पीछे रह जाते हैं। जो बीएड करके बैठे थे, अधिकांश कांग्रेस के राज में जो नुकसान हुआ वह शिड्यून्ड कास्ट के लोगों को हुआ था। मैं मेरे खुद के गांव की बात नहीं पूरे जिले की बात बता रहा हूं। लाखों छात्र जो बीएड करके बैठे थे, एमएड थे, वे घर बैठ गये ओवरएज होकर। मैं माननीय मुख्य मंत्रीजी को और यहां की जो सरकार है इसको इतना धन्यवाद दूं। मैं नहीं दे रहा हूं धन्यवाद, राजस्थान की छह करोड़ जनता धन्यवाद दे रही है। स्तर शिक्षा का सुधरने के बाद में यह भावना जागी है कि हम पढ़ना चाहते हैं। पढ़कर के क्या करना चाहते हैं? कि हम अध्यापक तो बन जाएंगे। मैं, माननीय सभापति महोदय, खुले मन से कह रहा हूं, मैं इसमें कोई लीपापोती नहीं कर रहा हूं। शिड्यूल्ड कास्ट के लोग कोई उद्योगपति नहीं हैं, कोई व्यापारी नहीं हैं, बहुत बड़े किसान भी नहीं हैं, उनके दिल-दिमाग में सिर्फ एक बात रहती है कि मेरा बेटा या बेटी या भाई- बहिन अगर पढ़ जाए, अगर उसको नौकरी मिल जाए तो उसका पूरा जो अंधेरा था 60 साल तक, आजादी के बाद में उसको उजाला मिल जाएगा। उसको रोजी-रोटी का धक्का नहीं खाना पड़ेगा। आज वह भावना जागकर ऐसा लग रहा है कि चाहे वह कर्जा करें, वह पढ़ना चाहता है। क्यों पढ़ना चाहता है? क्योंकि नौकरियों के दरवाजे खुले हैं। हमने देखा, पूर्व शिक्षा मंत्री श्री घनश्यामजी तिवाड़ी ने नीतिगत आधार पर प्रारम्भिक शिक्षा से लेकर शिक्षा का स्तर सुधारा, इनके दिमाग की उपज थी। हम तो गांव में जाते थे, भई क्या कर रहा है? मैं पैराटीचर हूं। स्कूल के बाहर खड़ा क्या कर रहा है?

(श्री जयराम जाटव)

चूना लगा रहा हूं। भई, क्यों लगा रहा है चूना? भई, 1200 में तो चूना ही लगेगा। राजस्थान में लाखों लोगों को इस तरह की व्यवस्था देकर कोई भाई-भतीजावाद या भ्रष्टाचार के माध्यम से नौकरी नहीं दी, लोक सेवा आयोग के द्वारा दी। जब हम अपने प्रदेश से बाहर उत्तरप्रदेश, बिहार या गुजरात में जाते हैं तो वहां लोग यह चर्चा करते हैं कि हमने ऐसा प्रदेश नहीं देखा, राजस्थान जैसा, कि राजस्थान प्रदेश में लोक सेवा आयोग के द्वारा अध्यापकों की नौकरी लगी।

श्री सभापतिः कृपया समाप्त करें।

श्री जयराम जाटव (खैरथल): माननीय सभापति महोदय, मैं उस समाज से हूं, आज भी कुछ लोग कहते हैं, कई लोग चर्चा करते हैं, कासनियाजी कह रहे थे कि आरक्षण से कुछ बनने वाला नहीं है, कासनियाजी लेकिन मैं कह दूं, आरक्षण नहीं होता तो आरक्षण के बिना इन जातियों का भला होने वाला भी नहीं है। इस तरह की चिंगारी लगाना, इस प्रदेश में इस तरह की भाषा बोलना ठीक नहीं है। इस पवित्र सदन में मैं आपसे आग्रह करना चाहता हूं, सरकार से निवेदन करना चाहता हूं, ऐसी सरकार हमने कभी नहीं देखी, मैं 52 साल का हो गया हूं, मैंने कांग्रेस के राज को देखा था, गांवों में...

श्री सभापतिः चलिए आपका विषय पूरा आ गया सदन के अंदर।

श्री जयराम जाटव (खैरथल): मेरा आग्रह है, निवेदन है, प्रार्थना है इस सरकार से इसलिए कि व्यक्ति वहीं मांगता है जहां कुछ मिलता है। गांवों के लोगों की, क्षेत्र के लोगों की जिले के लिए डिमाण्ड है एक हमारे कालेज दिया गया थानागाजी में, उसके लिए मैं मुख्य मंत्रीजी को और सरकार को धन्यवाद देना चाहता हूं। कितने स्कूल खोले, उसके लिए धन्यवाद देना चाहता हूं। विभिन्न योजनाओं के माध्यम से पांच साल में जितने काम अलवर जिले में हुए और मेरे विधान सभा क्षेत्र में हुए, पूरी सरकार को धन्यवाद देना चाहता हूं। लेकिन मेरा विशेष आग्रह है कि खैरथल में एक कन्या महाविद्यालय को इस बजट में जोड़ा जाए, इसको मैं पर्ची के माध्यम से कर रहा हूं। हमारे यहां मत्स्य यूनिवर्सिटी भी चल रही थी, गुरुजी उठाएंगे या उनकी चर्चा करेंगे लेकिन मत्स्य यूनिवर्सिटी नहीं तो कन्या महाविद्यालय खोलने के लिए मेरी मांग को रखा जाए, पर्ची के माध्यम से जो कही है। इन सबके लिए आपका

(श्री जयराम जाटव)

बहुत-बहुत धन्यवाद। हम सीखने के लिए पहली बार आये हैं, यहां लड़ते हैं सीनियर लोग, डा. सुरेशजी चौधरी जो विधायक हैं, सही कह रहे थे कि यह झगड़ा ही सीनियरों का है। मूंछ का बाल बना लेते हैं, बात कुछ है नहीं। हम देख रहे हैं, यहां किसी बात को लेकर के कोई झगड़ा करें तब भी ठीक है, कोई विषय में, कोई सब्जैक्ट में...

श्री सभापति: माननीय सदस्य, विधायक वह प्रभारी होता है जो अपना विषय दो मिनट में रख दे। आपको सात मिनट हो गये हैं।

श्री जयराम जाटव (खैरथल): बहुत-बहुत धन्यवाद।

श्री सभापतिः सदन की मेज पर रखे जाने वाले पत्रादि। अधिसूचनाएं, माननीय श्री घनश्यामजी तिवाड़ी।

सदन की मेज पर रखे गये पत्र

अधिसूचनाएं

वित्त विभाग

श्री घनश्याम तिवाड़ी (खाद्य एवं नागरिक आपूर्ति मंत्री): माननीय सभापति महोदय, मैं आपकी अनुमति से कार्य सूची में किए गए उल्लेख के अनुसार वित्त विभाग की निम्नांकित 13 अधिसूचनाएं सदन की मेज पर रखता हूं :-

1. अधिसूचना संख्या : एफ.12(177)वित्त/कर/06-49 दिनांक 25.9.2007 जिसके द्वारा मैसर्स होण्डा सियेल कार्स इण्डिया लिमिटेड को सीएसटी में 0.05 की सशर्त कर में छूट दी गई हैं ;

2. अधिसूचना संख्या : एफ.12(177)वित्त/कर/06-50 दिनांक 25.9.2007 जिसके द्वारा मैसर्स होण्डा सियेल कार्स इण्डिया लिमिटेड को कार निर्माण व आर. एण्ड डी. सैक्टर के आवासीय व वाणिज्यिक प्रयोजन के लिये विद्युत उपभोग को कर से विमुक्त किया गया हैं ;

3. अधिसूचना संख्या : एफ.20(1)वित्त/कर/90-51 दिनांक 27.9.2007 जिसके द्वारा विभागीय अधिसूचना संख्या : एफ.4(67)वित्त/कर/2004-46 दिनांक 12.7.2004 निष्प्रभावी की गई है ;

(श्री घनश्याम तिवाड़ी)

4. अधिसूचना संख्या : एफ.4(72)वित्त्त/कर/81-52 दिनांक 8.10.2007 जिसके द्वारा विभागीय अधिसूचना संख्या : एफ.4(72)वित्त/ग्रुप-4/81-18 दिनांक 6.5.1986 (समय-समय पर यथा-संशोधित) निष्प्रभावी की गई है;

5. अधिसूचना संख्या : एफ.12(53)वित्त/कर/07-53 दिनांक 3.11.2007 जिसके द्वारा विभागीय अधिसूचना संख्या : एफ.12(63)वित्त/कर/2005-70 दिनांक 11.7.2006 (समय-समय पर यथा-संशोधित) में संशोधन किया गया है;

6. अधिसूचना संख्या : एफ.12(142)वित्त/कर/2006-54 दिनांक 3.11.2007 जिसके द्वारा विभागीय अधिसूचना संख्या : एफ.12(28)वित्त/कर/2007/142 दिनांक 9.3.2007 में संशोधन किया गया है;

7. अधिसूचना संख्या : एफ.12(114)वित्त/कर/07-55 दिनांक 20.11.2007 जिसके द्वारा राजस्थान वैल्यू ऐडेड टैक्स रूल्स, 2006 में संशोधन किया गया है;

8. अधिसूचना संख्या : एफ.12(114)वित्त/कर/07-56 दिनांक 27.11.2007 जिसके द्वारा सूचना प्रौद्योगिकी अधिनियम, 2000 एवं नियमों में किये गये प्रावधान के अन्तर्गत इलैक्ट्रोनिक माध्यम से रिटर्न भेजने एवं ई-पेमेन्ट आदि राजस्थान वैल्यू ऐडेड टैक्स अधिनियम, 2003 के अन्तर्गत भेजे जाने का प्रावधन किया गया है;

9. अधिसूचना संख्या : एफ.12(114)वित्त/कर/07-57 दिनांक 27.11.2007 जिसके द्वारा केन्द्रीय सैल्स टैक्स (राजस्थान) नियम, 1957 में संशोधन किया गया है;

10. अधिसूचना संख्या : एफ.12(114)वित्त/कर/07-58 दिनांक 10.12.2007 जिसके द्वारा राजस्थान वैल्यू एडेड टैक्स, 2006 में संशोधन किया गया है;

11. अधिसूचना संख्या : एफ.12(70)वित्त/कर/06-59 दिनांक 22.1.2008 जिसके द्वारा अधिसूचना संख्या : एफ.12(63)वित्त/कर/2005-32 दिनांक 29.4.2006 (समय-समय पर यथा-संशोधित) में संशोधन किया गया है;

(श्री घनश्याम तिवाड़ी)

12. अधिसूचना संख्या : एफ.12(70)वित्त/कर/डीवी/06-60 दिनांक 22.1.2008 जिसके द्वारा अधिसूचना संख्या : एफ.4(68)वित्त/कर/डीवी/99-270 दिनांक 24.1.2000 (समय-समय पर यथा-संशोधित) में संशोधन किया गया है ; एवं

13. अधिसूचना संख्या : एफ.10(3)वित्त/कर/95-61 दिनांक 23.1.2008 जिसके द्वारा अंग्रेजी फिल्म "अटोनमेन्ट" को आईनोक्स सी-स्कीम में दिनांक 24.1.2008 को आयोजित एक शो को मनोरंजन कर से मुक्त किया गया है

ऊर्जा विभाग

श्री सभापतिः श्री गजेन्द्र सिंहजी।

श्री गजेन्द्र सिंह (राज्य मंत्री, ऊर्जा): माननीय सभापति महोदय, मैं आपकी अनुमति से कार्य सूची में किए गए उल्लेख के अनुसार ऊर्जा विभाग की निम्नांकित 8 अधिसूचनाएं सदन की मेज पर रखता हूं :-

1- अधिसूचना संख्या : एफ.राविविआ/सचिव/विनि./63 दिनांक 2.3.2007 जिसके द्वारा राजस्थान विद्युत विनियामक आयोग (विद्युत प्रदाय कोड और संबंधित मामले) (सप्तम् संशोधन) विनियम, 2004 में संशोधन किया गया है;

2- अधिसूचना संख्या : एफ. राविविआ/सचिव/विनि/64 दिनांक 23.3.2007 जिसके द्वारा राजस्थान विद्युत विनियामक आयोग (कार्य का सम्पादन) विनियम, 2005 (द्वितीय संशोधन) में संशोधन किया गया है ;

3- अधिसूचना संख्या : एफ. राविविआ/सचिव/विनि/65 दिनांक 23.3.2007 जिसके द्वारा राजस्थान विद्युत विनियामक आयोग (व्यापार मार्जिन का स्थिरीकरण) विनियम, 2007 में संशोधन किया गया है ;

4- अधिसूचना संख्या : एफ. राविविआ/सचिव/विनि/66 दिनांक 23.3.2007 जिसके द्वारा राजस्थान विद्युत विनियामक आयोग (अक्षय ऊर्जा बाध्यता) विनियम, 2007 में संशोधन किया गया है ;

5- अधिसूचना संख्या : एफ. राविविआ/सचिव/विनि/67 दिनांक 29.3.2007 जिसके द्वारा राजस्थान विद्युत विनियामक आयोग (टेरिफ निर्धारण हेतु

(श्री गजेन्द्र सिंह)

निबन्धन व शर्तें) (चतुर्थ संशोधन) विनियम, 2007 में संशोधन किया गया है ;

6- अधिसूचना संख्या : एफ. राविविआ/सचिव/विनि/68 दिनांक 30.3.2007 जिसके द्वारा राजस्थान विद्युत विनियामक आयोग (खुला अभिगमन हेतु निबन्धान व शर्तें) (चतुर्थ संशोधन) विनियम, 2007 में संशोधन किया गया है ;

7- अधिसूचना संख्या :एफ. राविविआ/सचिव/विनि/69 दिनांक 18.4.2007 जिसके द्वारा राजस्थान विद्युत विनियामक आयोग (शिकायतों के निवारण हेतु दिशा-निर्देश) (प्रथम संशोधन) विनियम, 2007 में संशोधन किया गया है ; एवं

8- अधिसूचना संख्या :एफ. राविविआ/सचिव/विनि/70 दिनांक 29.5.2007 जिसके द्वारा राजस्थान विद्युत विनियामक आयोग (मीटरिंग) विनियम, 2007 में संशोधन किया गया है ।

श्री सभापति: प्रतिवेदन एवं लेखे। माननीय श्री कालुलालजी गुर्जर।

प्रतिवेदन एवं लेखे

राष्ट्रीय ग्रामीण रोजगार गारण्टी स्कीम का वार्षिक प्रतिवेदन वर्ष 2007-08

श्री कालूलाल गुर्जर (ग्रामीण विकास एवं पंचायती राज मंत्री): माननीय सभापति महोदय, मैं आपकी अनुमति से राष्ट्रीय ग्रामीण रोजगार गारंटी अधिनियम 2005 की धारा 12(3) (एफ) के अंतर्गत राष्ट्रीय ग्रामीण रोजगार गारंटी स्कीम का वार्षिक प्रतिवेदन वर्ष 2007-08 सदन की मेज पर रखता हूं।

राजस्थान स्टेट इण्डस्ट्रील एण्ड इन्वैस्टमेंट कारपोरेशन लि. का 38वां का वार्षिक प्रतिवेदन व लेखे वर्ष 2006-07

डा. दिगम्बर सिंह (उद्योग मंत्री): सभापति महोदय, मैं आपकी अनुमति से कम्पनी अधिनियम, 1956 की धारा-619-ए के अन्तर्गत राजस्थान स्टेट इण्डस्ट्रियल एण्ड इन्वैस्टमेंट कॉरपोरेशन लिमिटेड का 38वां वार्षिक प्रतिवेदन एवं लेखा विवरण वर्ष 2006-07 सदन की मेज पर रखता हूं।

याचिका का उपस्थापन

श्री सभापति: याचिका का उपस्थापन। श्री रामनारायण मीणा। (अनुपस्थित)

श्री घनश्याम तिवाड़ी (खाद्य एवं नागरिक आपूर्ति): सभापति महोदय, तीन बार हाउस में इस प्रकार का प्रसंग आ गया है कि जब याचिका उपस्थित करते हैं, और यह बहुत गम्भीर बात है कि जो सदस्य याचिका देना चाहता है वो सदन में अनुपस्थित रहे और वो भी उप नेता विपक्ष के। तीसरे दिन लगातार यह है। उनका कार्य लिस्ट होता है और वो आकर यह पेश नहीं करते हैं। यह अच्छी बात नहीं है। सदन में हमेशा रहना चाहिए।

श्री सभापति: श्री मदन राठौड़।

राष्ट्रीय राजमार्ग संख्या 14 का चार-लेन में क्रमोन्नयन

श्री मदन राठौड़ (सुमेरपुर): सभापति महोदय, मैं आपकी अनुमति से राष्ट्रीय राज मार्ग संख्या-14 पर बढ़ रही सड़क दुर्घटनाओं को दृष्टिगत रखते हुए इसे शीघ्र चार लेन सड़क में तब्दील करवाने बाबत दो व्यक्तियों द्वारा हस्ताक्षरित एक याचिका का उपस्थापन करता हूं।

आय व्ययक पर सामान्य वाद-विवाद

श्री सभापति: श्रीमती अनिताजी भदेल।

श्रीमती अनिता भदेल (अजमेर पूर्व): माननीय सभापति महोदय, मैं राजस्थान राज्य की मुख्य मंत्री माननीय वसुन्धराजी राजे द्वारा 25 फरवरी को दिये गये बजट भाषण की सराहना करती हूं और इस भाषण के आधार पर इस पवित्र सदन में यह कहना चाहती हूं कि यह बजट राज्य में समृद्धि और खुशहाली लाने वाला साबित होगा। माननीय मुख्य मंत्री द्वारा वित्त मंत्री के रूप में रखे गये बजट पर प्रतिपक्ष के सभी सदस्य जिनको मौका मिला कुछ भी कहने का, उन्होंने इस बार यही कहा कि यह तो चुनावी बजट है, चुनाव आने वाले हैं इस कारण से ऐसा बजट प्रस्तुत किया गया है। मैं इनसे पूछना चाहती हूं कि आपने पिछले चार वर्षों का बजट भी देखा है, आप उन बजटों से एक भी बात ऐसी निकालकर बता दें कि यह आपने गलत घोषणा की, यह कर लगाकर जनता पर भार डाला, या अन्यथा कोई और चीजें डालीं। ऐसा पिछले चार-पांच वर्षों के किसी भी बजट में परिलक्षित नहीं होता है फिर स्पेशली इस

(श्रीमती अनिता भदेल)

बजट को चुनावी बजट आप किस आधार पर कह रहे हैं? इस बात का आप मुझे जवाब देंगे। मुख्य मंत्रीजी द्वारा जब शासन की बागडोर सम्भाली गयी थी तो उसके साथ कुछ नीतिगत निर्णय उन्होंने लिये थे, उनके दिमाग में था । परिवर्तन यात्रा जब उन्होंने प्रारम्भ की तो प्रदेश की स्थिति को देखा कि प्रदेश बीमारू प्रदेश है, यहां के लोगों की आर्थिक स्थिति देखी, सामाजिक स्थिति देखी और विशेषकर महिलाओं के साथ जो व्यवहार इनके शासनकाल में हुआ उसको देखते हुए उन्होंने शासन की बागडोर सम्भालने से पहले ही अपने पूरे दिलोदिमाग में तय कर लिया था कि यदि मैं राजस्थान राज्य की मुख्य मंत्री बनूंगी तो पांच सालों में मेरे ये कार्य होंगे, मेरी प्राथमिकताएं ये होंगी। उन्होंने नीतियां तय कीं, राजनीति नहीं की कि फलानी जगह यह चीज होनी चाहिए, ढीमवी जगह यह चीज होनी चाहिए। नीति तय करके विकास होगा चाहे वो डूंगरपुर हो, चाहे पूर्वी राजस्थान हो, चाहे दक्षिणी राजस्थान हो, चाहे मध्य राजस्थान हो। नीतियों के आधार पर उन्होंने अपने कुछ महत्वपूर्ण फैसले किये और उन फैसलों के तहत त्वरित आर्थिक विकास और राज्य की प्रमुख प्राथमिकता को तय किया गया।

इसके अतिरिक्त उन्होंने आर्थिक नीति और सुधार परिषद का गठन किया। इस परिषद ने अपनी बैठक में राज्य के विकास को गति देने और संतुलित विकास हेतु बहुमूल्य अभिशंसाएं कीं जिनके आधार पर राज्य सरकार द्वारा चिकित्सा, स्वास्थ्य, सड़क, पर्यटन, महिला और बाल विकास, जल संसाधन के क्षेत्र में बहुत से नवाचार लागू किये गये। उन नवाचारों के बहुत अच्छे रिजल्ट्स हमारे सामने आये हैं। परिषद की सिफारिशों के परिणामस्वरूप ही राज्य महिला और बाल विकास, उद्योग, शिक्षा, चिकित्सा, स्वास्थ्य, पर्यटन और सूचना प्रौद्योगिकी के क्षेत्रों में साफ्टवेयर विकास का कार्य किया गया। राज्य सरकार द्वारा माइक्रोसोफ्ट कारपोरेशन और गेट्स फाउंडेशन के माध्यम से एक सहमति बनी जिसके कार्य के परिणाम हमें देखने को मिले हैं। वर्ष 2003-04 में राजस्थान की महत्वपूर्ण बृहत् आर्थिक नीतियों में अनवरत सुधार के कारण राज्य की आर्थिक स्थिति सुदृढ़ हुई और राज्य के आर्थिक हालात की सकारात्मक तस्वीर उभर कर आयी। इनकी सरकार के कार्याकाल के पिछले चारों बजट जो माननीय वित्त मंत्रीजी द्वारा रखे गये थे, राजाखेड़ा से आने वाले माननीय सदस्य द्वारा रखे गये थे उनको मैंने पढ़ा है। प्रत्येक बजट की शुरूआत उन्होंने की कि हमें आर्थिक क्राइसिस से गुजरना पड़ा है, राज्य को

(श्रीमती अनिता भदेल)

आर्थिक चुनौतियां देखने को मिली हैं इस बात से उन्होंने अपने बजट भाषण शुरू किये हैं। लेकिन मैं कहूंगी कि हमारी सरकार की माननीय मुख्य मंत्रीजी ने पांचों बजट भाषण की शुरूआत बहुत अच्छी और मजबूत आर्थिक स्थिति के साथ शुरूआत उन्होंने की है और यह परिलक्षित होता है राज्य के अधिशेष के बजट से। वर्तमान में राज्य की वार्षिक आर्थिक वृद्धि दर 7.1 प्रतिशत हो गयी है। वर्तमान में राजस्व घाटे के सकल राज्य घरेलू उत्पादन का 2.8 प्रतिशत तक रह जाने से राज्य की वित्तीय संरचना में संतोषजनक प्रगति आयी है। राज्य के कर संग्रहण में गतिशीलता आयी है और इसके कारण से योजना व्यय में पर्याप्त बढ़ोतरी हुई है जो सार्वजनिक निवेश की वृद्धि को परिलक्षित करता है। राज्य में किये गये सुधारों के कारण राज्य की अर्थव्यवस्था एक टिकाऊ ऋण मार्ग पर आ गयी है एवं यहां की उच्च आर्थिक वृद्धि दर के परिणामस्वरूप पूर्ववर्ती सकल राज्य घरेलू उत्पाद में वार्षिक वृद्धि दर 5.44 प्रतिशत हुई है जो संकेत करती है हमारे राज्य की खुशहाली का, समृद्धि का और आर्थिक प्रगति का ।

मैं राजाखेड़ा से आने वाले माननीय सदस्य और नाथद्वारा से आने वाले माननीय सदस्य, मेरे सम्माननीय हैं, अधिक नॉलेज उनको है इस विषय में, फिर भी कुछ बातें उनके सामने रखना चाहूंगी। दसवीं पंचवर्षीय योजना के हमारी सरकार के चार वर्षों में ग्रामीण विकास को वे कह रहे थे कि आपकी जो योजनाएं हैं वो क्रियान्वित नहीं हुई हैं। मैं आंकड़ों से अपनी बात सिद्ध करूंगी, ग्रामीण विकास, विशिष्ट क्षेत्रीय विकास, सिंचाई और बाढ़ नियंत्रण, ऊर्जा परिवहन और सामाजिक और सामुदायिक सेवाओं तथा सामान्य सेवाओं में लक्ष्य से अधिक राशि व्यय की गयी है। जो हमारी सरकार का कार्यकाल है दसवीं पंचवर्षीय योजना का, उसकी मैं बात कर रही हूं, जो कुल प्रावधान का 105.98 प्रतिशत रही है। यहां यह भी उल्लेखनीय है कि वार्षिक योजना के क्रियान्वयन के समय राज्य की प्राथमिकताओं एवं संसाधनों को ध्यान में रखते हुए व्यय प्रावधान प्राविधित किये जाते रहे हैं। वर्ष 2006-07 की योजना का आकार दसवीं पंचवर्षीय योजना के प्रथम बीस माह में पूर्व सरकार द्वारा जारी किये गये कुल विनियोजन 6700, प्रतिपक्ष के सदस्य ध्यान से इस बात को सुनेंगे, मैं वापस इस बात को रिपीट कर रही हूं, वर्ष 2006-07 की योजना का आकार दसवीं पंचवर्षीय योजना के प्रथम बीस माह में पूर्व सरकार द्वारा किये गये कुल विनियोजन 6700 करोड़ रुपये से सवा गुना अधिक है, सवा

(श्रीमती अनिता भदेल)

गुना अधिक है। आप चाहेंगे तो मैं यह जो तालिका है, जो सरकार की ओर से सबको प्रेषित की गयी है, इसको टेबल भी मैं कर दूंगी। मुझे यह कहते हुए भी हर्ष होता है कि राज्य की 11वीं पंचवर्षीय योजना जो सन 2012 तक चलेगी, उसका आकार दसवीं पंचवर्षीय योजना के मूलतः अनुमोदित आकार 31832 करोड़ रुपये के मुकाबले 68422 करोड़ रुपये तक ले जा सकेंगे। जो दसवीं पचवर्षीय योजना के आकार का 215 प्रतिशत तक होगा। इस एक वर्ष में हमने साबित किया है वो मैं बताऊंगी आपको कि वर्ष 2007-08 की अनुमोदित योजना 8501 करोड़ रुपये की थी जिसको यहां आप दिखाएंगे, 11वीं पंचवर्षीय योजना के 7.4 प्रतिशत वृद्धि लक्ष्य के सापेक्ष वर्ष 2007-08 में राज्य की आर्थिक वृद्धि दर निम्नानुसार है 11वीं पंचवर्षीय योजना के लक्ष्य और वर्ष 2007-08 के लक्ष्य-कृषि का लक्ष्य 3.5, उद्योग में 8.0, सेवाओं में 8.9 और सकल घरेलू उत्पाद में वृद्धि दर 7.4 । इस प्रकार 2007 का जो सकल घरेलू उत्पाद हमारा है वह 7.1 है जो हमारी पंचवर्षीय योजना के सकल लक्ष्य के बराबर ही दिखाया गया है ।

इसके अतिरिक्त मुझे खुशी है 2007-08 के बजट में जो घोषणाएं की गई हैं उनके लिये नाथद्वारा से आने वाले माननीय सदस्य कह रहे थे कि आपने घोषणाएं कर दीं, उनकी क्रियान्विति नहीं हुई, कोई भी योजना पूर्ण नहीं हुई है, तो मैं यह टेबल करूंगी, और चाह तो मेरे से लेना, मैं आपको दूंगी, बजट घोषणाओं में से 85 प्रतिशत से अधिक की क्रियान्विति हो चुकी है तथा शेष घोषणाएं विभिन्न स्तरों पर प्रक्रियाधीन हैं जिनमें से मैं एक-एक घोषणा आपके सामने पढ़ कर सुनाउंगी कि वर्ष 2007-08 के बजट में हमने महिला सशक्तीकरण, रोजगार, सामाजिक सुरक्षा, सामाजिक कल्याण, शिक्षा, चिकित्सा इन सब में जो लक्ष्य तय किये थे, जो योजनाएं बनाईं थीं उनमें से कितनों की क्रियान्विति हुई है । महिला सशक्तीकरण में हमने 11 योजनाएं बनाईं और 11 ही क्रियान्वित की जा चुकी हैं। सामाजिक सुरक्षा और सामाजिक कल्याण के लिये हमने 15 योजनाएं बनाईं जिन में से 13 पूर्ण हो चुकी हैं और 2 पूर्ण होने जा रही हैं। शिक्षा के लिये 7 योजनाएं बनाईं जिनमें से 6 कम्प्लीट हो चुकी हैं। पेयजल के लिये भी 7 योजनाएं बनीं और पूरी की पूरी 7 कम्प्लीट हो चुकी हैं। ऊर्जा के क्षेत्र में हमने 6 योजनाएं प्रस्तावित कीं, पूरी 6 कम्प्लीट हो चुकी हैं। इस प्रकार यदि हम इन सब योजनाओं का टोटल देखें तो 113 योजनाएं बनाई गई हैं जिनमें से 96 कम्प्लीट हो गईं, 17 का कार्य प्रगति पर

(श्रीमती अनिता भदेल)

है और शीघ्र ही वे सारी योजनाएं पूर्ण हो जाएंगी। यह आपको ध्यान रहे, आपके दिलो दिमाग में रहे ताकि किसी प्रकार की ग़लतफ़हमी आपको न हो ।

इसके साथ ही जो बात मैंने आपको कही है कि राजस्थान समृद्ध हुआ है वह कैसे हुआ है, जो हमारी ग्रोथ रेट है, जीडीपी है, उसके बारे में मैं आपको बताना चाहूंगी। सन् 2005-06 में जो हमारा प्रोविजनल एस्टीमेट था वह 14.70 था, वर्ष 2006-07 में क्विक एस्टीमेट 15.90 था और वर्ष 2007-08 में एडवांस एस्टीमेट 13 था जिसको हमने प्राप्त किया है, जिसको हमने पूर्ण किया है। यह हमारी ग्रोथ रेट बताती है कि राजस्थान प्रगति की ओर अग्रसर है, समृद्धि की ओर अग्रसर है। हमने पैसा निकाला, और पैसा निकालने के साथ ही उस पैसे को कहां लगाया? राजस्थान की सम्पत्तियां खडी की हैं, राज्य के लिये असेट क्रियेट किये हैं ताकि राज्य की सम्पत्ति बने और उसका उपयोग लोग करें और उन सेवाओं का लाभ लोगों को मिले। पूंजीगत व्यय में वर्षवार हुई वृद्धि और लिये गये त्रण का पूंजीगत परिसम्पत्तियों के सृजन में उपयोग-वर्ष 2007-08 में हमने जो ऋण लिये थे, उनसे जो हमने असेट क्रियेट किये हैं उनका प्रतिशत बता रही हूं यह टेबल मैं आपको दूंगी, 120.70 प्रतिशत असेट हमने क्रियेट किये हैं। इसी प्रकार रेवेन्यू रिसीट मैं आपको बताती हूं, वर्ष 2002-03 में 13081.86 करोड़ था जो हमने वर्ष 2003-04 में बढा कर 15423.84 करोड़ की है। जो हमारी करों से आय प्राप्त हुई, उसका 10 प्रतिशत बढ़ा है। इस प्रकार 2005-06 में 20839.19 से बढ़ कर 2006-07 में 25592.18 करोड़ हुई है । इस प्रकार 5 प्रतिशत की वृद्धि भी इस फाइनेंशियल ईयर में हुई है । यह आपको जानकारी रहे, आपके ध्यान में रहे।

माननीय मुख्य मंत्रीजी द्वारा जो राजस्व आधिक्य का बजट प्रस्तुत किया गया है उसके आंकडे भी मैं आपको बताती हूं । वर्ष 2007-08 में राजस्व प्राप्तियों का 0.75 प्रतिशत था, जो हमारा रिवाइज एस्टीमेट आया वर्ष 2007-08 का, उसमें राजस्व प्राप्तियों का 0.82 प्रतिशत रहा है। इसी प्रकार 2008-09 का जो बजट एस्टीमेट है वह उसमें 1183.14 लाख है जो कि राजस्व प्राप्तियों का 3.59 प्रतिशत है। इसी प्रकार से हमने घाटा भी कम किया है । सभापति महोदय, आप देखेंगे, किस प्रकार मुख्य मंत्रीजी ने वित्त मंत्री होते हुए राज्य की आय को बढ़ाया है और घाटा भी कम किया है और सेवाओं में वृद्धि की है । बजटीय अनुमान 2007-08 के अनुसार 5321.52 लाख सकल

(श्रीमती अनिता भदेल)

घरेलू उत्पाद 3.34 प्रतिशत था, वह रिवाइज एस्टीमेट होकर 5420 करोड़ 86 लाख रुपये हुई जो सकल घरेलू उत्पाद का 3.40 प्रतिशत है। बजटीय अनुमान 2008-09 में यह बजट घाटा 5266 करोड़ 91 लाख, जो सकल घरेलू उत्पाद का 3 प्रतिशत ही रहेगा । इस मद में भी हमने लगातार कमी की है, लगातार उसको कम करने का प्रयास किया है । माननीय प्रतिपक्ष के सदस्यों का कहना है कि वर्ष 2008-09 का जो बजट है वह चुनावी बजट है परन्तु मैं उन सदस्यों को यह कहना चाहूंगी कि सरकार ने जो चार वर्षों में काम किये हैं और जो बजट प्रस्तुत किये हैं वे सर्वांगीण समाज के लिये, राजस्थान के सोशियल इन्फ्रास्ट्रक्चर के लिये और भौगोलिक स्थिति को सुधारने के लिये प्रस्तुत किये गये थे और उनके परिणाम हमारे सामने आये हैं। इन पांच बजटों में जो हमारी प्राथमिकताएं रही हैं, वे महिलाओं के लिये रही है, अनुसूचित जाति, जनजाति के लिये रही हैं, छात्र-छात्राओं के लिये रही हैं, युवा, बेरोजगार, कर्मचारियों के लिये, छोटे व्यवसायियों के लिये और बच्चों के लिये सम्पूर्ण राजस्थान के नागरिकों के लिये हमारी प्राथमिकताएं रही हैं । जिनके लिये हमने विभिन्न प्रकार की स्कीमें बनाई हैं और उन स्कीमों के माध्यम से लोगों को लाभ देने की कोशिश की है । यह बजट भाषण जब मीडिया के द्वारा सब लोगों के पास पहुंचा तो उसमें विपक्ष के माननीय कुछ सदस्यों ने अपनी टिप्पणियां कीं। पूर्व की सरकार के मुख्य मंत्री माननीय अशोक गहलोतजी ने भी टिप्पणी की वह मैंने देखी । उसको देखकर मुझे बहुत आश्चर्य हुआ कि हारने के बाद के इन पांच वर्षों में एक भी बार सदन में कोई शब्द उन्होंने जनता के लिये नहीं कहा, कुछ नहीं कहा और टिप्पणी के लिये अखबारों में अपनी टिप्पणी दे रहे हैं । आप तो करके बताते न। आपने क्या करके दिखाया अपने कार्यकाल में जो हमारे लिये आप टिप्पणी कर रहे हैं?

मोहम्मद माहिर आजाद (नगर): जो अटलजी ने लोक सभा में किया है वही उन्होंने यहां राजस्थान में किया है ।

श्रीमती अनिता भदेल (अजमेर पूर्व): वह ठीक है ।

मोहम्मद माहिर आजाद (नगर): अटलजी को तो आपने रिटायर ही कर दिया, इस योग्य ही नहीं समझा जिनके नाम पर वोट लिये थे ... (व्यवधान)

श्री युनूस खान (यातायात मंत्री): आप भी यहां अशोकजी को रिटायर कर रहे हैं क्या?

श्रीमती अनिता भदेल (अजमेर पूर्व): हमने रिटायर नहीं किया है ।

श्री सभापतिः देखिए, यह विषय कल भी आया था । मेरा सभी माननीय सदस्यों से आग्रह है कि कल भी यह विषय आया था, माननीय महिला सदस्य को आप बोलने दें । सदन को आपका प्रोटेक्शन चाहिये, बोलिए आप ।

श्रीमती अनिता भदेल (अजमेर पूर्व): माननीय सभापति महोदय, मुख्य मंत्रीजी द्वारा कई सारे ऐसे कदम उठाये गये जिनको मैं साहसिक और क्रांतिकारी कहूंगी । इसी बजट में उन्होंने महिलाओं के लिये पंचायती राज में जो 50 प्रतिशत आरक्षण किया है यह पंचायती राज संस्थाओं से जुडने का अवसर उनको प्रदान करेगा। हम कहते हैं कि पंचायती राज संस्थाएं लोकतंत्र का मूल आधार होती हैं, वहां महिलाएं जब आती हैं तो राजनीति में उनका द्वार खुलेगा और राजनीति में द्वार खुलने से उनका आत्म सम्मान भी बढेगा । इसके अतिरिक्त 50 प्रतिशत महिलाओं के आने से राजस्थान राज्य के भविष्य के लिए दूसरे विषय हैं जैसे शिक्षा है और चिकित्सा है, इन सब विषयों में उनकी भागीदारी बनेगी। वे जो सोचती हैं, जो महसूस करती हैं, जो अनुभव करती हैं यहां आकर उनका समाधान ढूंढेंगी कि किस प्रकार से समाधान हो सकता है, तो इससे ज्यादा से ज्यादा लोगों को हम फायदा दे पाएंगे । इस कार्य को केन्द्र सरकार ने नहीं किया कि 50 प्रतिशत आरक्षण दे दे। बीजेपी मांग कर रही है कि महिलाओं के लिये विधान सभा में 33 प्रतिशत आरक्षण दिया जाए, और यह आपके मिनिमम प्रोग्राम में था। यूपीए सरकार के मिनिमम प्रोग्राम में होने के बावजूद भी चार साल तक उस पर कोई कार्य नहीं हुआ, न कोई पहल की गई । हमने यह कहा है, हमारे प्रतिपक्ष के जो नेता हैं माननीय आडवाणीजी, उन्होंने कहा है आप किसी भी रूप में, किसी भी प्रारूप में यह बिल लाइए तो सही हम स्वीकार करेंगे। लेकिन नहीं । बस घोषणाएं कर दी हैं, उन पर अमल के लिये कुछ नहीं हुआ । आप बताएंगे जरा कि इस मिनिमम प्रोग्राम में जो आपने यह घोषणा की थी, उसका आपने क्या किया? आने वाले समय में राजस्थान में जो 50 प्रतिशत आरक्षण हुआ है

(समय : 16.00 बजे)

इसके बहुत बड़े परिणाम देखने को मिलेंगे। पंचायती राज संस्थाएं सही

(श्रीमती अनिता भदेल)

अर्थों में लोकतंत्र का बड़ा आधार मानी जाती हैं उनमें एक लाख से अधिक पंच और लगभग बीस हजार सरपंच, जिला परिषद सदस्य आदि हैं। अब इनमें आधी संख्या लगभग साठ हजार महिलाओं की होगी तो यह राजनीति में आने के लिए प्रवेशद्वार साबित होगा और महिला भागीदारी का एक नया इतिहास बनेगा। इसका लाभ बड़े सामाजिक परिवर्तन के रूप में सामने आएगा। महिलाएं शिक्षा और सामर्थ्य बढ़ाने में जुटेंगी, राज्य की काया पलट होगी। मुख्य मंत्री को बधाई इस बात के लिए कि उन्होंने इस कार्य की पहल की। कुछ राजनीतिक संगठन ऐसे हैं जिनको नाराजगी हो सकती है क्योंकि उनके पास महिलाएं नहीं हैं, कार्यकर्ता नहीं हैं काम करने के लिए, इसलिए सोच रहे हैं कि हमारा क्या होगा। लेकिन क्रांति का अर्थ ही चुनौती है और चुनौतियों से संघर्ष करना मुख्य मंत्रीजी को बहुत भली प्रकार से आता है।

इसी तरह आपने महिलाओं के नाम बचत खाते में 1500 सरकारी अनुदान का जो प्रावधान किया है, उससे कम से कम परिवार में महिलाओं का कद और हैसियत बढ़ेगी, उसका आत्म सम्मान बढ़ेगा, उसकी कहीं पूछ होगी कि वह महिला है, उसको भी पूछा जाए, निर्णयों में उसको भागीदार बनाया जाए, अच्छे-बुरे कामों में उसकी सलाह ली जाए। लगेगा कि हां कोई महिला भी है। चूंकि इन्होंने नहीं किया है इसलिए इनको दर्द है कि हम क्यों नहीं कर पाये, इन्होंने कैसे कर दिया।

इसी प्रकार रोजगार गांरटी योजना में 100 दिन कार्य करने पर वस्त्र दिये जाएंगे, यह भी महिला के श्रम का सम्मान है। मैं यह सोचती हूं कि महिला जो श्रम करती है उसकी कोई वैल्यू नहीं है। आज भी परिवार में, कृषि में, जैसा नवलगढ़ से आने वाले सदस्य बोल रहे थे कि कृषि में महिलाएं काम करती हैं, सही बोल रहे हैं, 100 प्रतिशत महिलाएं कृषि का काम करती हैं, जोत का काम करती हैं पर वे जो काम करती हैं उसकी कोई वैल्यू नहीं समझता, कि यह तो घर की खेती है कभी भी इस्तेमाल कर लो इन्हें तो। इस देश की विडम्बना है कि यहां श्रम का सम्मान नहीं होता। अकुशल श्रमिकों में महिलाओं की संख्या कम नहीं है, इनको दैनिक मजदूरी बढ़ने का लाभ भी मिलेगा। माननीय मुख्य मंत्रीजी ने स्किल्ड लेबर के क्षेत्र में उनकी जो दैनिक मजदूरी बढ़ाई है उनका लाभ महिलाओं को मिलेगा। आने वाले समय में, विकास चाहने वाले अन्य प्रदेश भी इसका अनुसरण करेंगे।

(श्रीमती अनिता भदेल)

बजट इतिहास में यह पहला मौका होगा, सी.पी. जोशी साहब को बहुत पीड़ा हो रही थी जब मुख्य मंत्रीजी ने अपने बजट भाषण में पान वाले, धोबी, नाई, मोची और निर्माण कारीगर, खाती जैसे लोगों के वर्ग का उल्लेख किया तो उन्हें लगा कि यह क्या हो गया, यह तो हमारे नीचे से जमीन ही खिसक गई, अब क्या करें। लेकिन मैं यह कहती हूं कि इस वर्ग को भी उन्होंने ध्यान में रखा। इस वर्ग के बारे में सोचा। इस वर्ग के व्यवसाय में आने वाले औजारों पर उन्होंने जो टैक्स में रिलीफ दी है, निश्च‍ित रूप से इससे उनके मान-सम्मान में बढ़ोतरी होगी और उनके काम में उनको मदद मिलेगी।

मुख्य मंत्रीजी ने राजस्थान के भविष्य का सपना दिखाया है, मुख्य मंत्रीजी ने अगले वित्तीय वर्ष में 180 करोड़ रुपये के फायदे के बजट में ग्रामीण महिलाओं, पूर्व सैनिकों, कर्मचारियों, नि:शक्त जनों, छात्र-छात्राओं के लिए सर्वोच्च प्राथमिकता दी है। हमारी सरकार ने बिजली, पानी, सड़क की सुविधाएं अभूतपूर्व स्तर पर नागरिकों को उपलब्ध कराकर राज्य के फिजिकल इन्फ्रास्ट्रक्चर को मजबूत किया है। हमने स्कूल, अस्पतालों, छात्रावासों, आंगनबाड़ी जैसी सुविधाओं का व्यापक स्तर पर विस्तार कर राज्य के सोशल इन्फ्रास्ट्रक्चर को मजबूत किया है।

माननीय सी.पी. जोशी साहब ने जो मेगा हाइवे के लिए प्रश्न उठाया था, सर्वप्रथम 2005-06 में मुख्य मंत्रीजी के बजट भाषण के पैरा नम्बर 131 पर उन्होंने जो बात कही है उसको मैं पढ़कर सुनाती हूं। सड़क निर्माण के क्षेत्र में सहभागिता के क्रम में रोड इन्फ्रास्ट्रक्चर डवलपमेंट कम्पनी आफ राजस्थान स्थापित की गई है जिसके द्वारा 4 राष्ट्रीय उच्च मार्गों के विकास का कार्य बीओटी पद्धति पर किया जाएगा। पुनः मैं इस लाइन को दोहराती हूं, जिसके द्वारा कुल चार मार्गों के विकास का कार्य बीओटी पद्धति पर किया जाकर 1019 किलोमीटर लम्बाई की सड़कों का निर्माण कार्य होगा । इस परियोजना का कार्य जुलाई 2005 में प्रारम्भ होकर, जो कम्प्लीट होने की तारीख है वह भी बोल देती हूं, सितम्बर, 2007 तक समाप्त हो जाएगा। जुलाई 2005 में प्रारम्भ होगा और सितम्बर, 2007 में समाप्त होगा। कुल लम्बाई 1019 किलोमीटर है और चार रोड हैं, यह बजट भाषण 2005-06 का पैरा नम्बर 131 है।

अब मैं पिछले साल जो घोषणाएं हुईं, जो बात कही गई है उसको

(श्रीमती अनिता भदेल)

रिपीट करती हूं। सड़क के हैड में सन् 2007-08 में, मुझे कहते हुए प्रसन्नता है कि 1019 से 1053 यानि लम्बाई बढ़ी 24 किलोमीटर। 1053 किलोमीटर लम्बाई की मेगा हाइवे परियोजना का 33 प्रतिशत कार्य पूर्ण कर लिया गया है। दिसम्बर, 2007 तक चार परियोजना पूर्ण कर राज्य को समर्पित कर दी जाएंगी। लालसोट से कोटा की परियोजना मई, 2008 तक पूर्ण होगी। चार कम्प्लीट हो जाएंगी जो उन्होंने पहले बजट भाषण में कहा था। एक जो उन्होंने बाद में जोड़ी सन् 2007-08 में, उसको कम्प्लीट करने की तारीख उन्होंने मई, 2008 कही है। यह कोई असत्य वादा नहीं है, आप जाकर देख सकते हैं। ऐसी चीजों को क्यों नकारते हैं जो दिखाई देती हैं ?

श्री बाबूसिंह राठौड़ (शेरगढ़): 2007 में मेरे यहां उद्‌घाटन हो गया मेगा हाइवे का। (व्यवधान)

श्रीमती अनिता भदेल (अजमेर पूर्व): (व्यवधान) हां, मैं बोल रही हूं। अभी आप देखें चार मेगा हाइवे जो उन्होंने घोषणा की थी-फलौदी से रामजी की गोल, हनुमानगढ़ से किशनगढ़, अलवर से सिकन्दरा और बारां से झालावाड़, इन रोड्स का काम पूर्ण हो चुका है, दो रोड लोगों का समर्पित कर दी गई हैं। एक रोड पर जो बाइपास बन रहा है, दूसरी रोड पर आरओबी बन रहा है वह भी आपको आंकड़ों से बताऊंगी। इस प्रकार से जो हमने निर्धारित की थीं सन् 2005-06 के बजट में, उनका काम पूर्ण हो चुका है। हमने असत्य वादा नहीं किया है, न काम में ढिलाई बरती। मानिटरिंग पूरी हुई और उसको कम्प्लीट किया है, हमने और सड़क जोड़ी। लालसोट से कोटा जाने वाली सड़क जोड़ी थी, उसका काम कम्प्लीट नहीं हुआ। यह सदन को गुमराह करना चाहते हैं गलत-गलत बातें कहकर। (व्यवधान)

श्री हरिमोहन शर्मा (हिण्डौली): देना तो जवाब था राठौड़ साहब को। राठौड़ साहब की तो हिम्मत नहीं हुई जोशी साहब का जवाब दे दें, इसलिए आप प्रत्यक्ष रूप से उपलब्ध कराकर बात कर रहे हैं। (व्यवधान) अगर पीडब्ल्यू मिनिस्टर को देना ही था तो जिस समय सीपी जोशी बोल रहे थे, तत्काल कहना चाहिए था, उस समय क्या जानकारी नहीं थी? (व्यवधान)

श्रीमती अनिता भदेल (अजमेर पूर्व): हां, हां, बोल रही हूं न। (व्यवधान)

श्री हरिमोहन शर्मा (हिण्डौली): उस समय क्या जानकारी नहीं थी?

श्रीमती अनिता भदेल (अजमेर पूर्व): मैं जवाब दे रही हूं। मेरे को जवाब उन्होंने उपलब्ध कराई...(व्यवधान)

श्री हरिमोहन शर्मा (हिण्डौली): महिलाओं से मैं क्या घबरा रहा हूं, आपकी स्थिति देखकर मैं भी देख रहा हूं, क्या हालत होने वाली है ।

श्री महावीर प्रसाद जैन (मुख्य सचेतक): क्या हो गया, मेरा क्या हुआ? (व्यवधान)

श्री हरिमोहन शर्मा (हिण्डौली):आप अपने मन को टटोलो कि आपकी क्या दुर्गति हुई।

श्रीमती अनिता भदेल (अजमेर पूर्व): माननीय हरिमोहनजी, आप थोड़ा विराजेंगे? (व्यवधान)

श्री महावीर प्रसाद जैन (मुख्य सचेतक): आप खुद ही टटोल लो, ईमानदारी से कह दो मैंने आपकी कैसी दुर्गति की है...(व्यवधान)

श्रीमती अनिता भदेल (अजमेर पूर्व): मैं आपको कहना चाहूंगी कि चार मेगा हाइवे के अतिरिक्त जो नये हाइवे जोड़े गये हैं उनमें कुछ आरओबी प्रस्तावित थे जो रेल लाइन के कारण से नहीं हो पाये। मेरा माननीय सदस्यों से आग्रह है कि वे लालू यादवजी जिन्होंने आज बजट प्रस्तुत किया, उनको जाकर कहें कि वह इस प्रकार हर्डल्स क्रीएट नहीं करें। जो हमारा विकास हो रहा है, उसको धक्का लग रहा है, उसमें और इन्वैस्टमेंट की आवश्यकता होती है क्योंकि जब योजना लेट होती है तो उसमें और मूल्य बढ़ता है और मूल्य बढ़ने से सरकार को नुकसान होता है। तो आप वहां जाकर लालूजी से कहें कि आप हमें समय से परमीशन दे दें ताकि हम कार्य को समयबद्ध तरीके से पूर्ण कर सकें। यह जो आपका हनुमानगढ़, रतनगढ़ वाला हाइवे है इस पर रेलवे द्वारा मार्ग स्थानान्तरण कर दिया गया इसकी वजह से परेशानी आई है। इसके कारण से वह हम लोकार्पित नहीं कर पाये । आपकी जानकारी के लिए मैं बताना चाहती हूं।

राजस्थान प्रदेश का अग्रणी राज्य बने, इसके लिए तो सरकार प्रतिबद्ध है और इसमें कोई आशंका, शंका नहीं है। पिछले चार सालों का जो विकास हुआ है वह इस बात का प्रत्यक्ष प्रमाण है। हमारा प्रदेश बीमारू राज्य की श्रेणी से निकलकर प्रगतिशील और विकसित राज्य की श्रेणी में आकर खड़ा हुआ है। यह बदलाव हमें दिखाई देता है, हम अनुभव करते हैं यह बदलाव। जैसा मैंने पहले कहा, माननीय मुख्य मंत्री की सोच थी कि जो सरकार बनेगी वह पांच साल में क्या-क्या काम करेगी, कैसे हम जो पैसा लगाएंगे उसका उपयोग

(श्रीमती अनिता भदेल)

अधिक समय तक जनता उठा पाए, वह फिजूल में खर्च न हो। इसके कारण से सड़क क्षेत्र में ही कुछ नीतियों, कुछ उनके द्वारा लिये गये निर्णयों को बताना चाहूंगी जिसका परिणाम खुद महसूस करेंगे, क्योंकि आप जब विधान सभा क्षेत्र में जाते हैं तो कई बार ऐसी परेशानी क्रीएट होती है जिसका समाधान हमारे पास नहीं होता है और वह नीतिगत निर्णयों के माध्यम से हमें समाधान मिला है। नवनिर्मित सड़कों का रखरखाव, 5 वर्ष तक नवीनीकृत और क्रमोन्नत सड़कों का रखरखाव, 3 वर्ष तक संम्बन्धित संवेदक द्वारा ही कराये जाने का निश्चय किया गया, जिससे सड़कों के निर्माण की गुणवत्ता में सुधार हुआ है। क्वांटिटी नहीं, क्वालिटी भी चाहिए, ताकि लगे कि नहीं, सरकारी काम में क्वालिटी होती है। (व्यवधान) यातायात सुविधा के लिये भविष्य में राज्य सरकार का कोई भी विभाग, संस्था डामर के प्रावधानों के बिना बी.एम.डब्ल्यू. सड़कों का निर्माण कार्य नहीं करा सकेगा। आबादी क्षेत्रों में पानी का निकास न होने के कारण डामर सड़कें बार-बार क्षतिग्रस्त होती हैं तथा भविष्य में ऐसे हिस्सों में केवल सीमेण्ट सड़कें या पत्थर के खरंजों से निर्माण किया जाएगा। सड़कों के विकास हेतु इतने निर्णयों के साथ में हमने ऊंची छलांग भी लगाई है। पिछली सरकार द्वारा अपने 5 वर्षों के कार्यकाल में कुल 1905 करोड़ रुपये औसतन प्रतिवर्ष 381 करोड़ रुपये व्यय किये गये जबकि वर्तमान सरकार ने 47 माह में ही कुल 6641 करोड़ रुपये व्यय किये जिसका औसत 1696 करोड़ रुपये प्रतिवर्ष है। इस प्रकार वर्तमान सरकार के द्वारा सड़कों के विकास पर तिगुने से भी अधिक व्यय किया गया। इसके अतिरिक्त जो वर्ष 2008-09 की जो बजट घोषणाएं हैं उनकी मैं सराहना भी करती हूं और मुख्य मंत्रीजी के साहस की दाद देती हूं कि उन्होंने अपने बजट भाषण में कहा कि 9188 ग्राम पंचायत मुख्यालयों में से 9096 को पक्की सड़कों से जोड़ा जा चुका है और शेष 92 मुख्यालयों को भी अक्टूबर, 2008 तक पक्की सड़कों से जोड़ दिया जाएगा। प्रदेश के 500 तक की आबादी के समस्त गांवों को और जनजाति व रेगिस्तानी इलाकों के ढाई सौ तक की आबादी के समस्त गांवों को दिसम्बर, 2008 तक पूर्ण किया जाएगा। इससे कम आबादी के गांवों को सड़क से जोड़ने के लिये केन्द्र की कोई योजना नहीं है परन्तु राज्य सरकार ने अपने स्तर पर नीतिगत निर्णय लिया है और सामान्य क्षेत्रों में 250 से 499 तक की आबादी के रेगिस्तानी और जनजाति क्षेत्रों के समस्त गांवों को बिना केन्द्र की योजना, बिना केन्द्र के अनुदान के समस्त गांवों को सड़कों से जोड़े जाने का कार्यक्रम

(श्रीमती अनिता भदेल)

हाथ में लिया गया है। 3276 करोड़ रुपये की व्यवस्था बाहरी ऋण के माध्यम से करवाने का प्रावधान भी उन्होंने किया है। आपकी जानकारी के लिये यह सारी चीजें बता रही हूं।

श्री बाबूसिंह राठौड़ (शेरगढ़): अभी और राजस्व गांव जुड़ेंगे, नये वाले, मुख्य मंत्री सड़क योजना में। (व्यवधान)

श्रीमती अनिता भदेल (अजमेर पूर्व): माननीय सभापति महोदय, यहां किसानों की बात पर बहुत सारी चर्चाएं हुईं- बिजली के बिल माफ किये जाएं, यह हो और वह हो, विद्युत उत्पादन आपने नहीं किया है, यह किया है वह किया है। पर मैं कुछ इनकी सरकार में किये गये कार्यों की बानगी यहां प्रस्तुत करना चाहती हूं। इन्होंने क्या किया और हमने क्या किया, यह एक तुलनात्मक स्टेटमेंट मैं आपको देना चाहती हूं। राजस्थान ने बिजली के क्षेत्र में 4 साल में नयी ऊंचाइयों को छुआ है। बिजली का उत्पादन बढ़ाने की बात आई हो या उपभोक्ताओं को अच्छी क्वालिटी की बिजली देने की, छीजत कम करने की, मैं इस विषय पर बोलूंगी। आपने, सी.पी. जोशी साहब ने बोला था कि श्यामाप्रसाद मुखर्जी के नाम से आपने छीजत कम करने की योजना बनाई और क्या किया। तो उनके ध्यान में रहना चाहिए कि हमने 9 प्रतिशत बिजली की छीजत कम की है इस स्कीम के माध्यम से। 9 प्रतिशत बहुत होती है। इनकी सरकार के कार्यकाल में कुछ नहीं हुआ था। छीजत कम करने के प्रयास हों या किसानों और गरीबों को सस्ती और पूरी बिजली देने की, सभी क्षेत्रों में सरकार ने नये कीर्तिमान बनाये हैं। राजस्थान के फीडर सुधार अभियान की सफलता को केन्द्र सरकार, हां, केन्द्र सरकार ने एप्रिशिएट किया है। इसको अन्य राज्यों ने भी अनुकरणीय बताया है और अपने यहां क्रियान्वित करने में गहरी दिलचस्पी दिखाई है। भारतीय जनता पार्टी की सरकार ने काम सम्भाला तो कोई नई परियोजना का काम नहीं चल रहा था। किसानों को मुश्किल से 3 घण्टे बिजली मिल रही थी, उनकी फसलों को नुकसान हो रहा था। पूर्ववर्ती कांग्रेस सरकार के समय सूरतगढ़ ताप बिजलीघर की जिन तीन इकाइयों में उत्पादन प्रारम्भ हुआ उसका भी काम उससे पहले ही भा.ज.पा. सरकार ने चालू करवा दिया था। सही मायने में कांग्रेस सरकार ने उत्पादन बढ़ाने के प्रयास ही नहीं किये जिससे किसान सहित सभी श्रेणी के उपभोक्ताओं को जबरदस्त कटौती का सामना करना पड़ा। इसके अलावा जो आपने बिजली की

(श्रीमती अनिता भदेल)

दरों में बढ़ोतरी की है, आप कह सकते हैं क्या कि हमारी सरकार ने बिजली की दरों में बढ़ोतरी की है? नहीं कह सकते हैं। आपकी सरकारों में बिजली की दरों में बहुत बढ़ोतरी की गई थी। हमने जो किसानों के लिये किया, उसके लिये मैं कुछ उल्लेख करना चाहूंगी। कांग्रेस सरकार ने दो बार, एक बार नहीं, दो बार किसानों के लिये बिजली की दरें 80 प्रतिशत तक बढ़ाई। 80 प्रतिशत बहुत होता है, शेम, 80 प्रतिशत तक बढ़ाई। पर इस सरकार ने कोई बढ़ोतरी नहीं की। नियामक आयोग ने 2005 में दरों में बढ़ोतरी की, ऐसा नहीं है कि केन्द्र सरकार या जो नियामक आयोग बिजली के लिये बना है, उसने बढ़ोतरी नहीं की है, हमारी सरकार के कार्यकाल में उन्होंने बढ़ोतरी की है, पर उस बढ़ोतरी का भार हमने किसानों पर नहीं डाला है। सरकार ने स्वयं वहन किया है, सब्सिडी दी है कम्पनियों को। स्वयं वहन करके बढ़ोतरी की है और उसका भी भार किसानों पर नहीं डाला गया। 74 करोड़ रुपये का सालाना भार सरकार वहन कर रही है। किसानों के लिये फ्लैट रेट की दरें में कांग्रेस सरकार ने 37 रुपये 50 पैसे से 150 प्रतिशत बढ़ाकर 85 रुपये प्रति हार्स पावर कर दी थीं, मतलब बिजली की दरों में जो बढ़ोतरी हुई वह आश्चर्यजनक है। इसके बाद नियामक आयोग की ओर से की गई बढ़ोतरी का भार सरकार ने किसानों पर नहीं डाला और 128 करोड़ रुपये प्रतिवर्ष का भार खुद ही वहन कर रही है। इस तरह अभी तक एक हजार करोड़ रुपये से अधिक का भार सरकार वहन कर चुकी है जिसका लाभ इस प्रदेश के 8 लाख किसानों को मिल रहा है। किसानों को 4 साल में सरकार ने डेढ लाख नये कनेक्शन दिये हैं और एक साल में 40 हजार और देने जा रहे हैं। हमारे 4 साल के कार्यकाल का आंकड़ा मैं बता रही हूं, अभी तो और बढ़ोतरी होगी, वह अलग है। एक लाख 11 हजार कनेक्शन दिये थे आपने पूरे अपने 5 साल के कार्यकाल में। विशेष श्रेणी में 62 हजार कनेक्शनों को 2 साल बाद ही सामान्य श्रेणी में करके किसानों को लाभ पहुंचाया है और 50 करोड़ रुपये का सालाना भार वहन कर रहे हैं।

श्री धर्मपाल चौधरी (संसदीय सचिव): हरिमोहनजी, नींद मत लो, आंकड़े सुन लो।

श्रीमती अनिता भदेल (अजमेर पूर्व): विशेष श्रेणी के बाकी 26 हजार आवेदकों पर भी समुचित कार्यवाही जल्दी ही कर दी जाएगी। किसानों के जले ट्रांसफर 72 घण्टे में बदले गये और ये निर्देश भी दिये गये कि नये ट्रांसफर

(श्रीमती अनिता भदेल)

बदलने तक पुराने नहीं हटाये जाएंगे। किसानों को एक कनेक्शन से दो कुएं चलाने और पंचायत समिति क्षेत्र में कनेक्शन कहीं भी स्थानान्तरित करने की सुविधा दी गई है। औसत अब हम बिजली कितनी दे रहे हैं और इन्होंने कितनी दी थी, यह भी आप देख लें। बार-बार चिल्लाते हैं कि बिजली नहीं दे रहे हैं, बिजली नहीं दे रहे हैं। मैं बताती हूं, भाई साहब, आप सुनिये। बिजली की सप्लाई 2003 में जहां औसत 700 लाख यूनिट प्रति दिन थी, वह आज 1100 लाख यूनिट पहुंच गई है। इस बार रबी में...

श्री जोगाराम पटेल (संसदीय सचिव): एक बार तो ताली बजा दो।

श्री हरिमोहन शर्मा (हिण्डौली): आप हो जो ताली बजाने के लिये।

श्री जोगाराम पटेल (संसदीय सचिव): हम तो हैं, पर कभी-कभी आप भी बजा दो।

श्रीमती अनिता भदेल (अजमेर पूर्व): इस साल रबी में 1200 रुपये की महंगी बिजली खरीद कर किसानों को उपलब्ध कराई गई है। फीडर सुधार अभियान के तहत छीजत को 43 प्रतिशत से 28 प्रतिशत तक कम करके 19 हजार गांवों को 24 घण्टे बिजली देने का कार्य किया जा रहा है और जून, 2008 तक सभी गांवों के घरों को 24 घण्टे बिजली देने का लक्ष्य पूर्ण कर लिया जाएगा। हम एनर्जी सरप्लस हो जाएंगे। कुटीर ज्योति योजना में ढाई लाख कनेक्शन गरीब परिवारों को दिये गये हैं। अभी हरिमोहनजी पूछ रहे थे कुटीर ज्योति योजना में, आप बैठिये, भाई साहब, आप जाइये नहीं, बैठिये आप, कुटीर ज्योति का बता रही हूं मैं। क्योंकि इनका प्रश्न था आज, आपको बता रही हूं मैं। आपने कुटीर ज्योति का प्रश्न पूछा था, इसका जवाब दे रही हूं मैं। (व्यवधान)

श्री हरिमोहन शर्मा (हिण्डौली): नहीं, मुझे यह प्रसन्नता है कि आप मेरी यहां उपस्थिति पसंद करते हैं, धन्यवाद। (व्यवधान)

श्रीमती अनिता भदेल (अजमेर पूर्व): नहीं, आपने जो चीज पूछी थी वह ... (व्यवधान)

श्री बाबूसिंह राठौड़ (शेरगढ़): अभी तो मुख्य मंत्री सबके लिए, वह बाकी है, आपके लिए भी ... (व्यवधान)

श्री जोगाराम पटेल (संसदीय सचिव): ऐसा है, पहली बार आप सुन तो रहे हैं, नींद लेते हुए ... (व्यवधान)

श्रीमती अनिता भदेल (अजमेर पूर्व): नहीं, आपने जो कुटीर ज्योति वाला प्रश्न पूछा था, उसके बारे में बताना चाहती हूं। कुटीर ज्योति योजना में ढाई लाख कनेक्शन गरीब परिवारों को दिये गये हैं जो पिछली सरकार के मुकाबले, आप सुनिये, पिछली सरकार के मुकाबले तीन गुणा से अधिक है। (व्यवधान)

श्री युनूस खान (यातायात मंत्री): देखो, आप सुनिये अब।

श्रीमती अनिता भदेल (अजमेर पूर्व): तीन लाख उपभोक्ताओं को सस्ती बिजली देकर सरकार 32 करोड़ रुपये का वार्षिक भार वहन कर रही है। ऐसे नहीं कि कम्पनियां बन गयीं तो आप कामर्शियलाइज्ड, बिलकुल ही हो जाओ और किसानों से भी वसूलो, उपभोक्ताओं से भी वसूलो। सरकार के कुछ नैतिक दायित्व होते हैं उनको पूरा करने के लिए ये सारी चीजें करनी पड़ती हैं। (व्यवधान)

श्री हरिमोहन शर्मा (हिण्डौली): हां। (व्यवधान)

श्री जोगाराम पटेल (संसदीय सचिव): जो लीला मदेरणा ने बता दिये हैं। आज लीलाजी मदेरणा ने नैतिक मूल्य बता दिये हैं।

श्री बाबूसिंह राठौड़ (शेरगढ़): 56 से 25 तक ही आओगे। 56 से 25 ही। (व्यवधान)

श्री जोगाराम पटेल (संसदीय सचिव): लीलाजी मदेरणा ने, राजस्थान पत्रिका में आया है, बहुत बड़ी-बड़ी खबर। (व्यवधान)

श्री बाबूसिंह राठौड़ (शेरगढ़): 56 से 25 का कहा है।

श्री युनूस खान (यातायात मंत्री): सारा समझा दिया इनको।

श्री जोगाराम पटेल (संसदीय सचिव): लीलाजी ने सारा समझा दिया है और राजस्थान पत्रिका ने बहुत बड़े विस्तृत रूप से लिखा है। यहां पर कम आया है और जोधपुर में ज्यादा आया है। (व्यवधान)

श्री बाबूसिंह राठौड़ (शेरगढ़): यहां पूरा आया है। (व्यवधान)

श्री हरिमोहन शर्मा (हिण्डौली): पर राजस्थान पत्रिका ने आपकी सरकार के नैतिक मूल्यों का जो बार-बार में प्रदर्शन किया है न, माननीय, आप संसदीय सचिव बने हो, उसको भी पढ़ दो। (व्यवधान)

श्री जोगाराम पटेल (संसदीय सचिव): किस में? (व्यवधान)

श्री हरिमोहन शर्मा (हिण्डौली): जो राजस्थान पत्रिका ने आपके नैतिक मूल्यों के लिए लिखा है। (व्यवधान)

श्री जोगाराम पटेल (संसदीय सचिव): राजस्थान पत्रिका ने ... (व्यवधान)

श्री हरिमोहन शर्मा (हिण्डौली): राजस्थान सरकार का जो आकलन किया है कि किस प्रकार के नैतिक मूल्य ... (व्यवधान)

श्री जोगाराम पटेल (संसदीय सचिव): आपके आडिटर ने लिखा है, हरिमोहनजी, सुनो-सुनो। (व्यवधान)

श्री हरिमोहन शर्मा (हिण्डौली): कितना अनैतिक काम किया है और किस प्रकार के काम हुए हैं। आप इनको भी पढ़ो न। राजस्थान पत्रिका का एक हवाला देना ... (व्यवधान)

श्री जोगाराम पटेल (संसदीय सचिव): सुनो, राजस्थान पत्रिका के आशुतोष गुप्ता ने आज लिखा है, कांग्रेस के लिए जो ... (व्यवधान) कांग्रेस के लिए लिखा है। आप पढ़ो न । (व्यवधान)

श्री हरिमोहन शर्मा (हिण्डौली): और दूसरी, राजस्थान पत्रिका ने जो आपके लिए लिखा है उनको भी आप पढ़ो। (व्यवधान)

श्री सभापति: मेरा दोनों माननीय सदस्यों से आग्रह है ... (व्यवधान)

श्री जोगाराम पटेल (संसदीय सचिव): राजस्थान पत्रिका में आशुतोष गुप्ता ने यह लिखा है, कांग्रेस के लिए कि आखिर क्या चाहती है, पता तो लगे हमको। आप पढ़िये आज की पत्रिका। (व्यवधान)

श्री सभापति: मेरे दोनों विद्वान साथी, नये सदस्यों को बोलने दें। (व्यवधान)

श्री हरिमोहन शर्मा (हिण्डौली): राजस्थान पत्रिका ने आपके कार्य-कलापों के मामले में, आपके भ्रष्टाचार के मामले में नियमित रूप से लिखा है, आप उसको भी तो पढ़ो। (व्यवधान)

श्री सभापति: मेरा दोनों विद्वान साथियों से आग्रह है कि बीच-बीच में नहीं बोलें। (व्यवधान)

श्री जोगाराम पटेल (संसदीय सचिव): उसको पढ़ो, राजस्थान पत्रिका में क्या लिखा है। (व्यवधान)

श्री हरिमोहन शर्मा (हिण्डौली): आपकी क्या नैतिकता है, आप उसको पढ़ो। (व्यवधान)

श्री जोगाराम पटेल (संसदीय सचिव): हमारी नैतिकता हमको पता है।

श्री हरिमोहन शर्मा (हिण्डौली): आपको पता नहीं है।

श्री जोगाराम पटेल (संसदीय सचिव): हमको सब पता है1

श्री हरिमोहन शर्मा (हिण्डौली): आपने राजस्थान पत्रिका के लिखने के बाद भी उस पर अमल नहीं किया। (व्यवधान)

श्री जोगाराम पटेल (संसदीय सचिव): आप पढ़ो, आप पढ़ो। कांग्रेस पार्टी के लिए लिखा है, वह पढ़ो। (व्यवधान)

श्री युनूस खान (यातायात मंत्री): साहब, आपको सुनने के लिए बुलाया है, बोलने के लिए थोड़े ही वापस बुलाया था। सुनिये आप, प्लीज। (व्यवधान)

श्री हरिमोहन शर्मा (हिण्डौली): वह जोगारामजी से कहो। (व्यवधान)

श्री जोगाराम पटेल (संसदीय सचिव): वह लीलाजी वाला पढ़ो, लीलाजी वाला। ... (व्यवधान)

श्री संयम लोढ़ा (सिरोही): आपकी पार्टी के सांसद कैलाश मेघवाल ने +++ का आरोप लगाया है, वह नैतिकता है आपकी। वह नैतिकता है। +++ बी.जे.पी. के सांसद ने आरोप लगाया है। कोई जवाब है क्या आपके पास में?

श्री जोगाराम पटेल (संसदीय सचिव): कोई नहीं लगाया है, नहीं लगाया है। आप मौजूद थे क्या? (व्यवधान)

एक माननीय सदस्य: ध्यान नहीं है, बिलकुल ध्यान नहीं है। (व्यवधान)

श्री टीकम चन्द कान्त (सिवाना): यह बहुत अच्छा बोल रही हैं। बहुत अच्छा प्रजेंटेशन है, बोलने दीजिए। (व्यवधान)

श्रीमती अनिता भदेल (अजमेर पूर्व): माननीय सभापति महोदय, नाथद्वारा से आने वाले माननीय सदस्य ने एक प्रश्न उठाया था और वह प्रश्न था सोशल सैक्टर में वायबिलिटी गेप फंडिंग का। यह स्कीम जो वायबिलिटी गैप फंडिंग की है, यह आपके पास नहीं उपलब्ध हुई है तो मैं आपको उपलब्ध करा दूंगी। आप इसको देख लें कि सोशल वायबिलिटी फंडिंग में हमने क्या किया है।

(श्रीमती अनिता भदेल)

जीवन की मूलभूत आवश्यकताओं में पेयजल नितान्त आवश्यक है और पेयजल उपलब्ध कराना, सिंचाई हेतु जल उपलब्ध कराना, यह सरकार की प्राथमिकता रही है। सरकार प्रतिबद्ध रही है इसके लिए। सरकार ने जो काम किया है, उसको मैं यहां बताना चाहती हूं। चूंकि हमारे प्रदेश में कम वर्षा होती है और भूजल से अधिक दोहन होता है, इसके फलस्वरूप जल स्तर में गिरावट को दृष्टिगत रखते हुए सतही स्रोतों पर आधारित वृहत् पेयजल परियोजनाओं पर प्राथमिकता से क्रियान्वयन किया गया। इस निर्णय के अनुरूप राज्य में अब तक स्वीकृत 60 वृहत् पेयजल परियोजनाओं में 65 शहरों व हजारों ग्राम-ढाणियों को लाभान्वित किया गया है। राजस्थान में प्रथम चरण में 5 पी.पी.एम. से अधिक फ्लोराइड वाली कुल 2643 बस्तियों को यूनिसेफ एवं एन.जी.ओ. के माध्यम से लाभान्वित किया गया। दूसरे चरण में 3 से 5 पी.पी.एम. वाले 5056 ग्रामों को लाभान्वित करने हेतु 74.06 करोड़ रुपये की योजनाएं सरकार ने स्वीकृत कीं जो लागू हो गयी हैं। तृतीय चरण में 1.5 से 3 पी.पी.एम. वाले 15595 ग्राम लाभान्वित किये गये हैं। पेयजल के लिए ही दिसम्बर, 2003 से अक्टूबर, 2007 तक की अवधि में 14480 करोड़ रुपये अनुमानित लागत की कुल 2069 पेयजल योजनाएं स्वीकृत की गयीं। राज्य में पेयजल योजनाओं के निर्माण पर कुल व्यय में दिसम्बर, 2003 से पूर्व के 5 वर्षों के औसत में पौने दो गुणा वृद्धि हुई है। इस अवसर पर चूंकि मुझे बोलने का अधिकार मिला है, मैं यह कहना चाहूंगी, अजमेर की बहुत लम्बे समय से मांग थी कि पेयजल हेतु बीसलपुर के द्वितीय चरण की शुरूआत की जाए। जब माननीय भैरोंसिंहजी की सरकार थी यहां प्रदेश में, तब अजमेर के पेयजल हेतु बीसलपुर योजना प्रारम्भ की गयी। उसकी फंडिंग की गयी। उसको लागू किया गया और उसको पूर्ण किया गया। विकास एक सतत् प्रक्रिया है। सरकारें आएंगी और जाएंगी, लेकिन विकास नहीं रुकना चाहिए। यदि विकास रुका तो इसके हमें बहुत गम्भीर परिणाम भुगतने होते हैं। यही हमारे साथ भी हुआ। कांग्रेस सरकार जब आयी यहां प्रदेश में तो बीसलपुर परियोजना का द्वितीय चरण प्रारम्भ होना था। योजना को क्या लेना-देना कि यहां कांग्रेस सरकार है या बी.जे.पी. है, कौन है, योजना को कम्प्लीट होना होता है, सभी लोगों को फायदा मिलता है। पर नहीं, सरकार बदल गयी इसलिए बीसलपुर परियोजना के द्वितीय चरण का कार्य प्रारम्भ नहीं हुआ। पूरे 5 साल तक न तो उस हेतु ध्यान दिया गया, न उसके लिए फंडिंग की गयी और न उसके लिए स्कीम

(श्रीमती अनिता भदेल)

बनायी गयी। उसका परिणाम यह हुआ, माननीय सभापति महोदय, कि जो लागत उस योजना में आने वाली थी उस समय, पांच गुणा, छह गुणा वह लागत बढ़ गयी, अतिरिक्त आर्थिक भार सरकार पर आ पड़ा। मैं इनसे पूछना चाहती हूं कि यदि आप वहीं उस द्वितीय चरण को कम्प्लीट कर देते तो जो 1000 करोड़ रुपये उस योजना में खर्च होना है, वह 4000-5000 करोड़ तक नहीं पहुंचता कम से कम। कम राशि में ही हमारा काम हो जाता और पूर्ण भी हो जाती। पर नहीं, ऐसा नहीं किया। पुन: जब माननीय मुख्य मंत्रीजी ने सरकार बनायी, माननीय मुख्य मंत्रीजी ने जब फाइनेंस मिनिस्टर के नाते अपना काम हाथ में लिया तो उन्होंने अजमेर की पेयजल समस्या को गम्भीरता से लिया। इस समस्या के समाधान के लिए अजमेर बीसलपुर पाइप लाइन परियोजना से संबंधित ग्रामीण और शहरी क्षेत्रों में वर्तमान में ट्री-स्ट्रक्चर-कंकरीट पाइप लाइन के बार-बार टूटे जाने पर पैदा होने वाली जल समस्या के स्थाई निराकरण के लिए माइल्ड स्टील की पाइप लाइन बदलने हेतु 359.46 करोड़ रुपये की परियोजना स्वीकृत कर कार्य प्रारम्भ किया जा चुका है। सरवाड़ से नसीराबाद तक की एम.एम. पाइप लाइन बिछाने के लिए 80.68 करोड़ रुपये लागत का एडवांस पैकेज स्वीकृत कर 40.20 किलोमीटर पाइप लाइन का कार्य पूर्ण कर लिया गया है। यहां पर यह प्रश्न भी उठा था कि अजमेर-बीसलपुर-जयपुर योजना का क्या हुआ, कब कम्प्लीट होगी। तो माननीय मंत्री महोदय जब डिमांड पर बोलेंगे तो उनका जवाब शायद मंत्री महोदय ही आपको बहुत अच्छे से देंगे। इसके अतिरिक्त जो अन्य हमारी पेयजल योजनाएं हैं, हैण्डपम्प के जो आकड़े हैं, वह मैं बताना चाहूंगी। दिसम्बर, 2003 से आज तक 1 लाख से ज्यादा नये हैण्डपम्प लगाये गये हैं पेयजल की व्यवस्था हेतु। 60 हजार से अधिक ट्यूबवैल्स का निर्माण किया गया है। राज्य में पेयजल परियोजना पर 400 से 500 करोड़ रुपये वार्षिक रूप से व्यय हुआ करता था, इसको स्टैप-अप करते हुए वर्ष 2004-05 में 619 करोड़ रुपये, वर्ष 2005 में 790 करोड़ रुपये, वर्ष 2006-07 में 1242 करोड़ रुपये और 2007-08 में 2238 करोड़ रुपये व्यय होना अनुमानित है। आप नोट कर लीजिए।

इसके अतिरिक्त जल संसाधन से जो सिंचाई परियोजनाएं बनायी गयी हैं उसके लिए भी मैं आपको बताना चाहूंगी, सरकार ने सभी 163 लम्बित परियोजनाओं को पूर्ण करने का जो बीड़ा उठाया था इसमें से सभी 149 माइनर

(श्रीमती अनिता भदेल)

परियोजनाओं का कार्य पूर्ण किया जा चका है। 7 में से 6 मध्यम सिंचाई परियोनाएं पूर्ण कर ली गयी हैं। 7 में से 3 बड़ी सिंचाई परियोजनाएं यथा-माही, बीसलपुर, रतनपुरा को भी पूर्ण कर लिया गया है। गत चार वर्षों में एक लाख हैक्टेयर से अधिक क्षेत्र में सिंचाई क्षमता का सृजन किया गया है। माही बेसिन में 147 टी एम सी पानी है, राज्य सरकार द्वारा बनाई गई माही, कडाना और अन्य परियोजनाओं से 123 टी एम सी पानी का उपयोग सुनिश्चित हुआ है। पानी के पूर्ण उपयोग हेतु एक मास्टर प्लान बनाकर इसको प्राथमिकता के आधार पर क्रियान्वित किया जाएगा जिससे एक लाख से अधिक हैक्टेयर क्षेत्र में सिंचाई सुविधा उपलब्ध हो सकेगी। पुरानी सिंचाई परियोजनाओं के रख-रखाव हेतु, अब यह चीज भी आप नोट करियेगा कि हमने असैट्स को क्रीएट किया है, कई सुविधाएं लोगों को दीं। जब उसका रख-रखाव नहीं करेंगे और वह जर्जर हालत में हो जाएगी तो उसके निर्माण में जो हमारा पैसा लगा है, वह व्यर्थ ही बहेगा। लेकिन ऐसी सोच हमारी सरकारों में नहीं होती कि बना दिया उन्होंने, वही जाने। वह है सरकार में तो ठीक है, नहीं है तो उसकी क्या हालत होने वाली है, यह ईश्वर ही जाने। मैं आपको बताना चाहूंगी कि पुरानी सिंचाई परियोजनाओं के रख-रखाव हेतु दशकों से वित्तीय प्रावधान नगण्य के बराबर हुए। इस वित्तीय वर्ष में पहली बार रख-रखाव हेतु 50 करोड़ रुपये का प्रावधान वर्ष 2008-09 में प्रस्तावित है जिसमें पार्वती नहर परियोजना की रीवैम्पिंग भी सम्मिलित होगी। आप देखिये इसको।

श्री सभापतिः एक मिनट माननीय सदस्य, आप बैठिये। माननीय ओ.पी. महेन्द्राजी, आपने जो सूची दी है अपने सदस्यों की, इसमें आपने टाइम नहीं बताया है कि कौन सदस्य कितने समय बोलेगा। या तो आप औसत टाइम बता दें 30 मिनट, 40 मिनट, 45 मिनट नहीं तो बाकी सदस्यों का नम्बर नहीं आएगा। अलग से बता दें।

श्री राजेन्द्र राठौड़ (सार्वजनिक निर्माण मंत्री): माननीय सभापति महोदय, यह तो आसन को ही तय करना है क्योंकि समय के बंटवारे की पहले आपने व्यवस्था कर रखी है। हमारे माननीय सदस्यों की संख्या के अनुरूप हमें समय दे रखा है, प्रतिपक्ष को भी दे रखा है। अब जितना समय है उस समय में आप ही तय कर लें।

श्री सभापतिः ठीक है। अनिताजी, पांच मिनट में आप अपना भाषण समाप्त करें, 45 मिनट हो गये हैं आपको।

श्रीमती अनिता भदेल (अजमेर पूर्व): माननीय सभापति महोदय, मुझे बहुत सारी बातें और कहनी हैं।

श्री सभापति: 45 मिनट हो गये, अभी बहुत-से सदस्य बाकी हैं।

श्रीमती अनिता भदेल (अजमेर पूर्व): माननीय सभापति महोदय, मैं शिक्षा के लिए कुछ बोलना चाहती हूं। हमारी सरकार ने शिक्षा के क्षेत्र में अभूतपूर्व कार्य किये हैं। शिक्षा प्रत्येक बालक का मूलभूत अधिकार है, उसको शिक्षा मिलनी चाहिये। राज्य की तरफ से शिक्षा की व्यवस्था हो, ऐसा हमारे नीति-निर्देशक तत्वों में लिखा गया है। आज मैंने अख़बार पढ़ा तो उसमें मैंने एक खबर पढ़ी थी कि शिक्षा के अधिकार का जो बिल है, उसका कोई अता-पता नहीं है। केन्द्र सरकार को जो बिल पास करना था, उसके लिए कोई रूपरेखा तैयार नहीं हो पाई है। हमारी सरकार ने शिक्षा के क्षेत्र में जो मोटे-मोटे काम किये हैं, उनको मैं बताना चाहूंगी। 4,162 नये राजकीय प्राथमिक विद्यालय हमारी सरकार ने खोले, 11080 राजकीय प्राथमिक विद्यालयों को उच्च प्राथमिक विद्यालयों में क्रमोन्नत किया और 926 उच्च प्राथमिक विद्यालयों को माध्यमिक विद्यालयों में क्रमोन्नत किया गया। इसी प्रकार जो नियुक्तियां सरकार ने दी हैं, उनको मैं बताना चाहूंगी कि स्कूल और सांस्कृतिक शिक्षा विभाग के अन्तर्गत 37099 तृतीय श्रेणी के शिक्षको को पदों पर नियुक्त किया गया। 3,655 विधवा और विवाह-विच्छेद महिलाओं को नियुक्तियां दी गयीं। इसके अतिरिक्त हमारी सरकार के कार्यकाल में जो शिक्षा के लिए कार्य हुआ, उससे नामांकन दर भी बढ़ी है। स्कूल ड्राप आउट की समस्या से जूझ रहे थे कि बालक नामांकन तो करा लेते थे, लेकिन बालकों का स्कूलों में ठहराव नहीं होता था। तो बालक स्कूल में रुकें, ठहरें, शैक्षिक वातावरण उनको मिले, इस नाते माननीय मुख्य मंत्रीजी ने मिड-डे-मील की व्यवस्था की। उनको दोपहर का भोजन उपलब्ध करवाया ताकि वे भोजन के लालच में ही रुकें पर स्कूल में रुक जाएं, शिक्षा ग्रहण करें। इनकी सरकार में सिर्फ गेहूं की घूघरी ही बंटा करती थी, और कुछ नहीं होता था। इसलिए मैं आपको यह बताना चाहती हूं कि नामांकन वृद्धि हुई, ठहराव हुआ और उसका ही परिणाम है कि हमारा जो शिक्षा का औसत है, वह राष्ट्रीय औसत के लगभग बराबर या उससे ज्यादा पहुंचने वाला है। जो हमारे कालेजों की संख्या है वह भी राष्ट्रीय औसत को पार कर आगे निकल चुकी है। मानव संसाधन के लिए हमने जो काम किये, उसमें वर्ष 2002-03 में राज्य में तकनीकी शिक्षा के 254 संस्थान थे, जिनमें कुल प्रवेश क्षमता 26 हजार थी। अब ऐसे तकनीकी शिक्षण संस्थानों की संख्या

(श्रीमती अनिता भदेल)

729 और प्रवेश क्षमता तीन गुणा हो गयी है। मैं यह बात कहना चाहूंगी कि तकनीकी रूप से हमारे बालक स्किल्ड नहीं होते थे, इसके कारण उनको बेरोजगारी की समस्या का सामना करना पड़ता था। यदि हम तकनीकी रूप से उनको कार्यकुशल बना दें तो सरकारी नौकरियों की तरफ उनको मुंह देखने की आवश्यकता नहीं रहेगी। वह अपना स्वयं का ..(व्यवधान)

श्री सभापतिः माननीय सदस्य, समाप्त करें अब।

श्रीमती अनिता भदेल (अजमेर पूर्व): समाप्त कर रही हूं बस। (व्यवधान)

श्री सभापतिः नहीं, यहां पर सभी विधायक हैं।

श्रीमती अनिता भदेल (अजमेर पूर्व): हां, कोई बात नहीं, मैं समाप्त कर रही हूं।

श्री जोगाराम पटेल (संसदीय सचिव): नहीं, आरक्षण मिला हुआ है। फिफ्टी-फिफ्टी का आरक्षण मिल गया अब तो इनको। (व्यवधान)

श्रीमती अनिता भदेल (अजमेर पूर्व): मैं एक बात यहां पर कोट करना चाहूंगी जो मुझे बहुत अच्छी लगी है। वर्ष 2004 में स्थापित राजस्थान मिशन आल लाइफ सोसायटी के द्वारा गत तीन वर्षों में एक लाख आठ हजार युवकों को रोजगार लायक क्षमताओं में प्रशिक्षित किया गया है। स्थापित एनीमेशन एकेडमी में 100 युवाओं के प्रथम बैच को प्रशिक्षित किया जा रहा है। सफलता को देखते हुए वर्ष 2008-09 में जो कोटा, अजमेर, उदयपुर में एकेडमी खोलने की घोषणा की है, उसका मैं बहुत-बहुत स्वागत करती हूं। जो एनीमेशन एकेडमी को बढ़ाकर आटोमैटिव डिजाइन, ड्राफ्ट्समैनशिप, ग्राफिक्स डिजाइन के कोर्सेज सरकार शुरू करने जा रही है, उसके लिए मैं सरकार का बहुत-बहुत धन्यवाद करती हूं कि जो नये क्षेत्र खुल रहे हैं रोजगार के लिए, उसमें युवाओं को प्रशिक्षित करने के लिए एक मंच उपलब्ध कराया गया है, एक संस्था उनको दी गई है।

स्वास्थ्य के क्षेत्र में भी सरकार ने बहुत सारे काम किये हैं, मैं कुछ मोटी-मोटी बातें कहना चाहती हूं। शिक्षा, पुलिस और मेडिकल में जो नियुक्तियां दी हैं, ये सेवाएं ऐसी सेवाएं हैं जो अति-आवश्यक हैं और जिनके कर्मचारियों के अभाव में ये विभाग ठीक प्रकार से नहीं चल सकते। सरकार ने चिकित्सा में

(श्रीमती अनिता भदेल)

जो 40 नये आयुर्वेद औषधालय खोलने की घोषणा की है, उसका मैं स्वागत करती हूं। इसके अतिरिक्त अजमेर मेडिकल कालेज में कार्डियो थोरोसिक सेंटर की स्थापना के लिए जो एक करोड़ रुपये दिये हैं, उसके लिए मैं माननीय मुख्य मंत्रीजी का धन्यवाद करती हूं। आल ओवर राजस्थान की जितनी भी मेडिकल कालेजेज से जुड़ी हुई जनाना विंग्स हैं, उनके विस्तार के लिए, विकास के लिए पैसा दिया है। पूर्व की किसी भी सरकार में जनाना विंग्स की ओर ध्यान नहीं दिया जाता था। हमारे यहां फण्डिंग की कमी के कारण से हमेशा ये विभाग लचर स्थिति में रहते थे। पहली बार महिला मुख्य मंत्री होने के नाते उन्होंने इस जनाना विंग की ओर ध्यान दिया, उनका मैं बहुत-बहुत आभार व्यक्त करती हूं।

इसके अतिरिक्त महिलाओं के सशक्तीकरण का उन्होंने जो काम किया है, बीपीएल परिवारों के सशक्तीकरण का जो उन्होंने काम किया है ...(व्यवधान)

श्री सभापतिः माननीय सदस्य श्री मोहनलाल जी गुप्ता।

श्रीमती अनिता भदेल (अजमेर पूर्व)ः कम्प्लीट कर रही हूं, बस पांच मिनट में।

श्री सभापतिः यह ठीक नहीं है। आपकी पार्टी को 9 घण्टे मिले हैं, आप दो घण्टे बोलेंगे तो बाकी सदस्य कैसे बोलेंगे?

श्रीमती अनिता भदेल (अजमेर पूर्व)ः मैं अब जो मेरी मांग है, उसको बोलना चाहती हूं और उसके बाद मैं समाप्त कर रही हूं।

श्री सभापतिः अब आपको एक घण्टे और बोलना पड़ेगा।

श्रीमती अनिता भदेल (अजमेर पूर्व)ः एक घण्टे नहीं बोलूंगी, सिर्फ पांच मिनट।

श्री सभापतिः इसके बाद आपको एक घण्टे और बोलना पड़ेगा।

श्रीमती अनिता भदेल (अजमेर पूर्व)ः मैं सिर्फ तीन बातें कहना चाहती हूं। (व्यवधान)

श्री धर्मपाल चौधरी (संसदीय सचिव)ः माननीय सभापति महोदय, विपक्ष तो है ही नहीं यहां पर, बोलना हमको ही है सारे समय। ये तो पांच जने बैठे हैं। ये कितने सीरियस हैं, यह इस बात से पता लगता है। (व्यवधान)

श्री जोगाराम पटेल (संसदीय सचिव): माननीय सभापति महोदय, विपक्ष किसके नेतृत्व में है?

श्री धर्मपाल चौधरी (संसदीय सचिव): प्रतिपक्ष के लोग इस बारे में बिलकुल चिन्तित नहीं हैं तो सारा समय इधर से ही बोलना है। ये तो हैं नहीं। (व्यवधान)

श्री सभापति: अगर विपक्ष नहीं है तो यह आपकी पार्टी के लिए शुभ संकेत है।

श्री धर्मपाल चौधरी (संसदीय सचिव): हां, तो यह शुभ संकेत है तो बोलने दो इनको। (व्यवधान) इनको चिन्ता नहीं है कि बजट इतना अच्छा पेश हुआ है। (व्यवधान)बोलने के लिये इनके पास कुछ है नहीं। आप भी अपने जाओ। क्यों तकलीफ पा रहे हो, जाओ? (व्यवधान)

एक माननीय सदस्य: वह एक-एक जवाब दे देंगे तो बोलना भारी पड़ जाएगा।

श्री धर्मपाल चौधरी (संसदीय सचिव): सारी बैंचे तो खाली पड़ी हैं। इनके आज जितने सीनियर नेता हैं, एक नहीं है। (व्यवधान) इतना बड़ा जो राजस्थान का बजट पेश हुआ, उस पर बहस होने लग रही है और प्रतिपक्ष का यह हाल है। (व्यवधान)

श्री सभापति: आप बोलिये, माननीय सदस्य।

श्रीमती अनिता भदेल (अजमेर पूर्व): माननीय सभापति महोदय, मैं अपने क्षेत्र की कुछ मांग यहां रखना चाहती हूं और उसके बाद में अपना भाषण समाप्त करती हूं। माननीय मुख्य मंत्रीजी जब अजमेर यात्रा पर गई थीं तो उन्होंने अजमेर में एक-दो बातें कहीं थीं, मैं आपका ध्यान उस ओर आकर्षित करना चाहूंगी। वह जब 29 तारीख को बजट की रिप्लाई दें उस समय उनका उल्लेख करेंगी तो अच्छा रहेगा। सरकार हमारी जो प्राचीन धरोहर हैं, उनके सरंक्षण के लिए बहुत अच्छा काम कर रही है, पर्यटन का वहां विकास होगा, हमारी रेवेन्यू बढ़ेगी। इसके तहत मैं यह चाहती हूं कि अजमेर में चूंकि कोली समाज के लोग फिफ्टी परसेंट में रहते हैं तो जलकाई बाई का स्मारक बनाने के लिये वह कोई वितीय प्रावधान करें, उसकी बात कहें।

इसके अतिरिक्त जिला अस्पताल, जो सैटेलाइट अस्पताल हैं, उसमें कुछ डॉक्टर्स के पदों का सृजन किया जाए। महिला राजकीय महाविद्यालय का भवन निर्माण और ला कालेज के भवन निर्माण के प्रावधान अपने उत्तर के समय अपने भाषण में बताएंगी तो मुझे अच्छा लगेगा।

(श्रीमती अनिता भदेल)

अंत में मैं कुछ पंक्तियां कह कर अपना वक्तव्य समाप्त करती हूं।

'ऊँचा मस्तक सजल नयन, वसुन्धरासम धैर्य,
शक्ति पुंज तुम करो सामना, बाधाएं यदि आएं,
देख तुम्हारे मन की दृढ़ता, पर्वत शीश नवाएं,
लक्ष्मी, सरस्वती, दुर्गा, तुम पर सब की टिकीं निगाहें।' धन्यवाद।

श्री सभापति: माननीय सदस्य श्री मोहनलालजी गुप्ता।

श्री मोहन लाल गुप्ता (किशनपोल): माननीय सभापति महोदय, माननीय मुख्य मंत्रीजी ने जो बजट पेश किया है वह बेमिसाल वित्तीय प्रबन्धन का प्रतीक है। जिस प्रकार से सभी वर्गों को राहत दी है ...

श्री जोगाराम पटेल (संसदीय सचिव): नवम्बर आएगा जितने कोई नहीं रहेगा।

श्री अर्जुन सिंह (दानपुर): 40 की बराबरी कर लेंगे।

श्री मोहन लाल गुप्ता (किशनपोल): सभी लोगों को राहत दी गयी है महिलाओं को, युवकों को, किसानों को, मजदूरों को, कर्मचारियों को। यह एक ऐसा बजट है जो जानदार है, शानदार है और राजस्थान की तकदीर को बनाने वाला है, राजस्थान के लोगों को एक नयी रोशनी देने वाला है, राजस्थान के विकास को एक नयी दिशा और नया आयाम देने वाला है।

राजस्थान का जो विकास हुआ है गत चार सालों में, वह भी बेमिसाल है। आज इस राजस्थान के विकास को देखने के लिए देश और विदेश से लोग आ रहे हैं कि वसुन्धराजी ने क्या किया है। मैं कहना चाहूंगा कि जिस प्रकार से राजस्थान के विकास की देशभर में चर्चा हो रही है, राजस्थान के वित्तीय प्रबन्धन की देश भर में चर्चा हो रही है, उसको देख कर कांग्रेस के लोग भी आज सामने बैठे नहीं हैं। वो सुनना नहीं चाहते हैं, किस प्रकार का राजस्थान का वित्तीय प्रबन्धन है, राजस्थान का किस प्रकार का विकास है। भाग गये। इस बजट के लिए मैं कहना चाहूंगा कि सब को सब कुछ मिल गया, खूब मिला सौगात, उपहारों की हो गयी जैसे बरसात। मैं तो यह कहना चाहूंगा कि सी.एम. साहिबा ने जिस प्रकार से बजट प्रस्तुत किया है आम जन की प्रतिक्रिया है, व्यक्ति व्यक्ति की प्रतिक्रिया है कि, यार, क्या शानदार बजट प्रस्तुत किया है। हर वर्ग के लोगों के लिए कोई न कोई राहत दी गयी है, हर

(श्री मोहन लाल गुप्ता)

वर्ग के लोगों को किसी न किसी प्रकार का कुछ दिया है सरकार ने। हर वर्ग से जुड़ा है, हर घर से जुड़ा है, हर पीढ़ी से जुड़ा है, हर खलिहान से जुड़ा है।

श्री जोगाराम पटेल (संसदीय सचिव): हर घर दीवाली हुई है, बजट से हर घर दीवाली हुई है।

श्री मोहन लाल गुप्ता (किशनपोल): बजट दीवाली ऐसे बन गया। बजट दीवाली बना जैसे हो त्यौहार और महारानी की हो रही है अब जय जयकार।

श्री महावीर प्रसाद जैन (मुख्य सचेतक): यह तो अंतिम यात्रा की ओर प्रस्थान कर रहे हैं।

श्री मोहन लाल गुप्ता (किशनपोल): और महिलाओं का जिस प्रकार से सम्मान बढ़ाया है ...

श्री महावीर प्रसाद जैन (मुख्य सचेतक): पांच बैठे हैं आदमी, उसमें जाना पड़े तो जल्दी से चल जाएं।

श्री अर्जुन सिंह (दानपुर): आप दिल से बोल रहे हो कि मुंह से बोल रहे हो?

श्री जोगाराम पटेल (संसदीय सचिव): दोनों से।

श्री अर्जुन सिंह (दानपुर): आपकी दुर्गति देख कर फिर बोलो ... (व्यवधान)

श्री जोगाराम पटेल (संसदीय सचिव): नहीं हुई है, वो दुर्गति तो आपकी देखो।

श्री महावीर प्रसाद जैन (मुख्य सचेतक): मन, वचन, काया से बोलता हूं मैं तो।

श्री सभापति: जयपुर के प्रथम महापौर बोल रहे हैं, कृपया इनको आप गम्भीरता से सुनें।

एक माननीय सदस्य: पूर्व महापौर।

श्री मोहन लाल गुप्ता (किशनपोल): मैं बोलना चाहता हूं कि महिलाओं के लिए बजट में जिस प्रकार प्रावधान किये गये हैं, जन-जन तो कह ही रहा है और त्यौहार मना रहा है। महिलाओं के खातों में 1500 रुपया जा रहा है, बैंक में खाते खुलाये जा रहे हैं, उसकी घोषणा हुई है। बी.पी.एल. परिवारों में जिस

(श्री मोहन लाल गुप्ता)

प्रकार खुशियां मन रही हैं, उसके बारे में मैं कहना चाहूंगा कि महिलाओं का सम्मान बढ़ाया है आपने, हक हकीकत में दिलाया है आपने, इतिहास दोहराएगा और गाएंगी पीढ़ियां, परचम जिंदादिली का फहराया है आपने।

मैं यह कहना चाहूंगा, माननीय सभापति महोदय, राजस्थान का जिस प्रकार से विकास हुआ है, मैं थोड़े-से सैम्पल आंकड़े देना चाहूंगा। हमारे राजस्थान में प्रति व्यक्ति विद्युत का उपयोग 328 किलोवाट है, केरल में 296 है, बिहार में 44 है और असम में केवल 85 है। हमारे यहां जिस प्रकार से विकास हुआ है, राजस्थान में प्रति लाख की जनसंख्या पर मोटर गाड़ियों की संख्या 6368 है, उत्तर प्रदेश में केवल 3649 है और बिहार में 854 है। यह हमारी आर्थिक प्रगति का सूचक है कि हम किस प्रकार से बिजली का उपयोग कर रहे हैं, किस प्रकार से हमारे यहां मोटर गाड़ियों की संख्या बढ़ रही है। हमारे यहां प्रति लाख जनसंख्या पर बैंक 5.6 हैं, असम में 4.3 हैं, बिहार में 3.9 हैं और उत्तर प्रदेश में, सभापति महोदय, केवल 4.6 है। सभापति महोदय, हमारे राजस्थान की समृद्धि बढ़ रही है, प्रति व्यक्ति बैंकों में 10 हजार जमा हैं तो बिहार में केवल 6408 हैं और उत्तर प्रदेश में 10 हजार हैं। मैं कहना चाहूंगा, माननीय सभापति महोदय, कि हमारे यहां प्रति व्यक्ति आय बढ़ी है। कांग्रेस के समय केवल 13 हजार रुपया प्रति व्यक्ति आय थी, आज 21 हजार रुपया है। कांग्रेस के लोग किस मुंह से इस बजट की आलोचना कर रहे हैं, यह मुझे समझ में नहीं आता है। बड़ा एहसान करते हैं कि जैसे हमने कुछ किया ही नहीं हो, हमने किसी प्रकार का कोई काम ही नहीं किया हो। मैं कहना चाहूंगा सड़क निर्माण के क्षेत्र में ...

श्री अर्जुन सिंह (दानपुर): हर सैकण्ड लाइन की इनकम जरूर बढ़ गयी।

श्री मोहन लाल गुप्ता (किशनपोल): सड़क निर्माण के क्षेत्र में जिस प्रकार से हमने काम किया है वह अभूतपूर्व काम है। राजस्थान राज्य पथ परिवहन निगम राज्य के आर्थिक विकास को गति प्रदान करने हेतु राजस्थान में एक सुविकसित परिवहन एवं संचार तंत्र के रूप में बुनियादी आधार प्रदान कर रहा है, यह रिपोर्ट है। निगम यात्रियों को राज्य एवं राज्य के बाहर एक दूसरे स्थान पर ले जाने हेतु बसें संचालित कर रहा है। सड़क तंत्र को सुदृढ़ करने के लिए सरकार प्रयासरत है, उसके सतत प्रयासों से 2007-08 के अंत

(श्री मोहन लाल गुप्ता)

तक राज्य में सड़कों की कुल लम्बाई एक लाख 80 हजार 854 किलोमीटर पर पहुंचना है। 2002 में सड़कों के राष्ट्रीय औसत घनत्व 323 किलोमीटर प्रति लाख व्यक्तियों के सापेक्ष राजस्थान में 267 किलोमीटर प्रति व्यक्ति प्रति लाख था। राज्य में सड़क तंत्र के विस्तार हेतु किये गये बड़े निवेश के कारण अब सड़क घनत्व 318 किलोमीटर प्रति लाख प्रति व्यक्ति हो गया है जो राष्ट्रीय औसत के बराबर है। कांग्रेस के समय राष्ट्रीय औसत से नीचे था, 30-40 परसेंट नीचे था, लेकिन आज हम सड़क निर्माण के क्षेत्र में राष्ट्रीय औसत के बराबर पहुंच गये हैं। यह एक बहुत बड़ी उपलब्धि है। यह बहुत बड़ी उपलब्धि है, राष्ट्रीय औसत के ऊपर ही पहुंच गये हम।

देश में राजस्थान प्रधानमंत्री ग्राम सड़क योजना को क्रियान्वित करने वाला अग्रणी राज्य है। आपके कांग्रेस के राज्यों ने भी इस प्रकार से प्रगति नहीं की है जिस प्रकार से हमने की है। मैं कहना चाहूंगा कि 500, 250 की आबादी को जोड़ने वाला हमारा राजस्थान बहुत आगे पहुंच चुका है।

आपने क्या किया है? आपके पांच साल के काम और हमारे चार साल के काम, इनकी यदि तुलना की जाए तो बेमिसाल है। केवल चार साल के आंकड़े आपको दे रहा हूं मैं। सड़क निर्माण पर आपने पांच साल में 1905 करोड़ रुपया खर्च किया और हमारे चार सालों में हमने क्या किया? 7527 करोड़ रुपये ...

श्री जोगाराम पटेल (संसदीय सचिव): एक हजार करोड़ और सात हजार करोड़, वन इन्टू सेवन।

श्री मोहन लाल गुप्ता (किशनपोल): सड़क का निर्माण आपके पांच सालों में 3936 किलोमीटर हुआ और हमारे केवल चार साल की, श्रीमान, सुनिये, आप आश्चर्यचकित रह जाएंगे, 23869 किलोमीटर हुआ।

श्री जोगाराम पटेल (संसदीय सचिव): तीन हजार इन्टू 23 हजार।

श्री मोहन लाल गुप्ता (किशनपोल): ये आंकड़े हैं। आप कहते हो, हमने कुछ नहीं किया। जोशीजी बोल रहे थे हमने कुछ नहीं किया, एचीवमेंट ही नहीं किया हमने। व्यय की गयी राशि आपके पांच सालों में 502 करोड़ और हमारे यहां 3667 करोड़। मुख्य मंत्री हाई-वे योजना, आपके यहां तो थी ही नहीं, आप तो भीख का कटोरा लेकर मांगने करके जाते थे कि हमारे पास पैसा नहीं है, पैसा नहीं है। सड़क योजना पर, मेगा हाई-वे पर आपके यहां जीरो और हमारे यहां 1500 करोड़ रुपया। आपके यहां जीरो, हमारे यहां 1053

(श्री मोहन लाल गुप्ता)

किलोमीटर। आर ओ बी के निर्माण की लागत आपके यहां जीरो, हमारे यहां 187 किलोमीटर। आर ओ बी के निर्माण की संख्या सोलह, आपके यहां जीरो। कितने आंकड़े दूं मैं? मैटल सड़कों का डामरीकरण आपके यहां जीरो, पांच साल में जीरो, मुख्य मंत्री आपका अशोक गहलोत भी जीरो और हमारी मुख्य मंत्री हीरो जिसने 5195 करोड़ रुपया खर्च किया है ...(व्यवधान)

एक माननीय सदस्य: इनका मुख्य मंत्री नम्बर वन था।

श्री मोहन लाल गुप्ता (किशनपोल): अच्छा, अब आप देखिये, यह तो सड़क की बात है केवल मात्र। कल हमारे पूर्व शिक्षा मंत्री महोदय बोल रहे थे, शिक्षा पर आपने कितना खर्चा किया...

श्री संयम लोढ़ा (सिरोही): आपकी मुख्य मंत्री के नाम पर तीन उपलब्धियां और हैं। (व्यवधान)

श्री मोहन लाल गुप्ता (किशनपोल): आप बैठिये, मैंने आपके भाषण में डिस्टर्ब नहीं किया। आप सुनिये ...(व्यवधान) मैंने आपको डिस्टर्ब नहीं किया।

श्री राजेन्द्र राठौड़ (सार्वजनिक निर्माण मंत्री): भाषण चल रहा है इनका ...(व्यवधान) सभापति महोदय, यह नहीं चलेगा।

श्री संयम लोढ़ा (सिरोही): मैं आपकी हीरो की उपलब्धियां बता रहा हूं।

श्री सभापति: माननीय सदस्य, अभी आपका नम्बर आएगा उस समय आप बोलिएगा ...(व्यवधान)

श्री जोगाराम पटेल (संसदीय सचिव): आज की राजस्थान पत्रिका में पढ़ लो आपके हीरो की, आज की राजस्थान पत्रिका में लीला मदेरणाजी ने लिखा है कि 56 की जगह 25 आएंगे ...(व्यवधान)

एक माननीय सदस्य: उनकी तीन उपलब्धियां और गिना दो हमारी तरफ से ...(व्यवधान)

श्री मोहन लाल गुप्ता (किशनपोल): सभापति महोदय, आपका प्रोटेक्शन ...(व्यवधान) वह डिस्टर्ब कर रहे हैं ।

श्री रामनारायण डूडी (राजस्व मंत्री): आज का स्टेटमेंट पढ़ लो ।

श्री जोगाराम पटेल (संसदीय सचिव): 56 की जगह 25 ...(व्यवधान) परसरामजी मदेरणा की जो दुर्गति की, उसके बारे में लिखा है।

श्री युनूस खान (यातायात मंत्री): कल इनका फोटो छपेगा, इनको लग रहा है कि नम्बर वन ये नहीं आये। (व्यवधान)

श्री संयम लोढ़ा (सिरोही): माननीय सभापति महोदय, बी.जे.पी. के तीन नये अर्थ हुए हैं, एक तो ...(व्यवधान)

श्री राजेन्द्र राठौड़ (सार्वजनिक निर्माण मंत्री): माननीय सभापति महोदय, यह बीच में टोका-टोकी नहीं चलेगी। फिर हम भी नहीं बोलने देंगे। सभापति महोदय, फिर उधर से कोई बोलेगा तो हम भी डिस्टर्ब करेंगे। (व्यवधान)

श्री सभापतिः माननीय सिरोही से आने वाले सदस्य, आप अपना स्थान ग्रहण करें।

सदन की कार्यवाही

विधान सभा की बैठक के निर्धारित समय में वृद्धि

श्री महावीर प्रसाद जैन (मुख्य सचेतक): माननीय सभापति महोदय, मैं प्रस्ताव करता हूं कि सदन का समय दो घंटे बढ़ाया जाए।

श्री सभापति: क्या सदन की सहमति है कि सदन का समय दो घंटे बढ़ाया जाए?

(स्वीकृत)

सदन का समय दो घंटे बढ़ाया गया।

आय व्ययक पर सामान्य वाद-विवाद

श्री संयम लोढ़ा (सिरोही): माननीय सभापति महोदय, ...(व्यवधान)

श्री राजेन्द्र राठौड़ (सार्वजनिक निर्माण मंत्री): माननीय सभापति महोदय, अगर यह इस तरह से डिस्टर्ब करेंगे तो ....

श्री सभापतिः सिरोही से आने वाले माननीय सदस्य।

श्री राजेन्द्र राठौड़ (सार्वजनिक निर्माण मंत्री): फिर हम भी नहीं बोलने देंगे ...(व्यवधान) यह कोई बात हुई क्या, यह अपनी बात कह रहे हैं, इनका नम्बर जब आए बोलें। (व्यवधान)

श्री संयम लोढ़ा (सिरोही): जीरो को सुनो तो सही। हम तो जीरो हैं, जीरो को सुनो तो सही। (व्यवधान)

श्री जोगाराम पटेल (संसदीय सचिव): हमारी हीरो का जनता को पता है आपको कहने की जरुरत नहीं है। (व्यवधान)

श्री सभापति: माननीय सिरोही से आने वाले सदस्य ....

श्री राजेन्द्र राठौड़ (सार्वजनिक निर्माण मंत्री): माननीय सभापति महोदय, आज उपाध्यक्ष महोदय के वेश्म में यह बात हुई थी कि ...(व्यवधान)

श्री धर्मपाल चौधरी (संसदीय सचिव): माननीय सभापतिजी, अगर यह बीच में बोलेंगे तो एक मिनट भी नहीं बोलने देंगे।

श्री राजेन्द्र राठौड़ (सार्वजनिक निर्माण मंत्री): दोनों अपनी मर्यादा में रहें, नियमों में आएं। माननीय सदस्य अपनी बात कह रहे हैं। सभापति महोदय, आज माननीय सदस्य का जो भाषण है यह एक ऐसा भाषण है जो विधान सभा के इतिहास में दर्ज होने जा रहा है और यह टोका-टोकी करके उस भाषण को खराब करना चाहते हैं।

डा. ओ. पी. महेन्द्रा (केसरीसिंहपुर): बिना अनुमति के बोलेंगे वह दर्ज नहीं होगा। माननीय सभापति महोदय, यह तय हुआ है, चेयर के द्वारा बिना अनुमति के जो बोलेगा अंकित नहीं होगा। (व्यवधान)

श्री सभापति: सिरोही से आने वाले माननीय सदस्य कह दें ... (व्यवधान)

श्री महावीर प्रसाद जैन (मुख्य सचेतक): जो माननीय सदस्य बोल रहे हैं, बोलने दें उनको। (व्यवधान) प्रस्ताव लाना पड़ेगा ...(व्यवधान)

श्री संयम लोढ़ा (सिरोही): सभापति महोदय, यह ...(व्यवधान)

एक माननीय सदस्य: ऐसा है, इनको तो बाहर निकालो, जब ही ठीक रहेगा। (व्यवधान)

श्री राजेन्द्र राठौड़ (सार्वजनिक निर्माण मंत्री): सदन की परम्परा और नियमों को तोड़ना इनकी आदत है। सभापति महोदय, पिछली बार भी ... (व्यवधान)

एक माननीय सदस्य: यह चार कमियां बताएं जब तो ठीक है ... (व्यवधान)

श्री संयम लोढ़ा (सिरोही): इनकी तारीफ में दो शब्द अर्ज कर रहा हूं।

श्री धर्मपाल चौधरी (संसदीय सचिव): हमको नहीं चाहिए तारीफ, आप बैठ जाओ। आपने तो अशोक महान बनाया था ...(व्यवधान) अशोक महान

(श्री धर्मपाल चौधरी)

बनाया था, नम्बर एक बनाया था । हमको नहीं चाहिए आपकी सिफारिश। (व्यवधान)

श्री जोगाराम पटेल (संसदीय सचिव): अशोकजी की सिफारिश तो आज लीला मदेरणाजी ने कर दी, अख़बार में बड़ी-बड़ी कर दी लीला मदेरणा ने। (व्यवधान)

श्री सभापति: सिरोही से आने वाले माननीय सदस्य, मेरा आपसे पुनः आग्रह है, जैसा आपका नाम है उसी प्रकार से व्यवहार करें।

श्री जोगाराम पटेल (संसदीय सचिव): उलटा है, उलटा।

श्री मोहन लाल गुप्ता (किशनपोल): माननीय सभापति महोदय, मैं चार लाइन आपके लिए कहना चाहता हूं, जरा अर्ज करें- कमी कोई मिल न सकी ...

श्री संयम लोढ़ा (सिरोही): विद योअर परमिशन।

श्री मोहन लाल गुप्ता (किशनपोल): कमी कोई मिल न सकी...

श्री घनश्याम तिवाड़ी (खाद्य एवं नागरिक आपूर्ति मंत्री): चेयर पर टिप्पणी नहीं कर सकते।

श्री मोहन लाल गुप्ता (किशनपोल): मैं चेयर पर नहीं कर रहा हूं, चेयर के माध्यम से कह रहा हूं । चेयर के माध्यम से विपक्षी सदस्यों को कह रहा हूं कि कमी कोई मिल न सकी, कमी कहां से लाएं। चर्चा में चिन्ता रही क्या आरोप लगाएं। (व्यवधान) फिर खड़े हो गये ।

श्री संयम लोढ़ा (सिरोही): जब पर्सनली अपोजिशन मैम्बर्स को कोट करके वह बोल सकते हैं तो हम क्यों नहीं बोल सकते? (व्यवधान)

श्री धर्मपाल चौधरी (संसदीय सचिव): आपका कोई नाम नहीं लिया ... (व्यवधान) कोई नाम नहीं लिया आपका ।

श्री मोहन लाल गुप्ता (किशनपोल): मैंने आपका नाम नहीं लिया है ...(व्यवधान)

श्री संयम लोढ़ा (सिरोही): माननीय सभापति महोदय, ...(व्यवधान)

श्री धर्मपाल चौधरी (संसदीय सचिव): माननीय सभापति महोदय, अगर बीच में टोका-टोकी करेंगे, एक मिनट नहीं बोलने देंगे ...(व्यवधान)

श्री संयम लोढ़ा (सिरोही): एक काम तो करो, जय जमीन, एक नारा लगा दो ...(व्यवधान) जय जमीन ...(व्यवधान)

श्री धर्मपाल चौधरी (संसदीय सचिव): आप तो एक नारा लगाओ, अशोक महान, अशोक महान लगाओ ...(व्यवधान)

श्री जोगाराम पटेल (संसदीय सचिव): जय जय राजस्थान, जय जय राजस्थान ...(व्यवधान)

श्री धर्मपाल चौधरी (संसदीय सचिव): माननीय सभापति महोदय, आपके बार-बार कहने के बाद यह संयम नहीं बरत रहे हैं और यह जब बोलेंगे, हम एक मिनट नहीं बोलने देंगे। (व्यवधान)

श्री राजेन्द्र राठौड़ (सार्वजनिक निर्माण मंत्री): माननीय सभापति महोदय, माननीय सदस्य बीच में बोल रहे हैं ...(व्यवधान) आज जब उपाध्यक्ष महोदय के वेश्म में सारी बात तय हो गयी थी ...(व्यवधान)

श्री महावीर प्रसाद जैन (मुख्य सचेतक): माननीय सभापति महोदय, लगातार आसन की व्यवस्था की अवहेलना कर रहे हैं। (व्यवधान)

श्री धर्मपाल चौधरी (संसदीय सचिव): जमीन तो जे डी ए में है आपकी वहां पर। (व्यवधान)

श्री मोहन लाल गुप्ता (किशनपोल): मैं सब जवाब दे दूंगा आप चिन्ता मत करो। (व्यवधान) माननीय सभापति महोदय, मैं यह कहना चाहता हूं कि कांग्रेस ने अपने पांच साल के कार्यकाल में सर्वश्रेष्ठ मुख्य मंत्री, नम्बर वन मुख्य मंत्री, सबको पढ़ाओ, सबको शिक्षा दो, इस प्रकार का नारा लगाने वाले, स्कूल बैग पर अपना फोटो छपवाने वाले नम्बर वन के मुख्य मंत्री ने शिक्षा के बारे में क्या किया, पांच साल में उन्होंने क्या किया, चार साल में हमने क्या किया, इसकी भी मिसाल प्रस्तुत करना चाहता हूं, कृपया स्वीकार करें। (व्यवधान) प्राथमिक विद्यालय से उच्च प्राथमिक विद्यालय में क्रमोन्नत आपके पाँच साल में 3089 और हमारे केवल चार साल में 15 हजार 829, पाँच गुना। उसके बाद माध्यमिक विद्यालय से सीनियर विद्यालयों में क्रमोन्नयन आपके पाँच साल में 787 और हमारे कार्यकाल चार साल में एक हजार सात, ये तो खोल दिये और तीन हजार और खोलने जा रहे हैं, तीन हजार और क्रमोन्नत करने जा रहे हैं। ये क्या उपलब्धियां कम हैं। यह नम्बर वन के मुख्य मंत्री के लिए आँख खोलने वाली बात है। नम्बर वन का मुख्य मंत्री है, यह जीरो मुख्य मंत्री रहा है ...(व्यवधान)

श्री हरिमोहन शर्मा (हिण्डौली): आपने गत बजट भाषण में 1500 सैकण्डरी स्कूल खोलने का वादा किया था और एक खोली है 1500 में से, शर्म नहीं आ रही है, 1500 स्कूलें ...

श्री मोहन लाल गुप्ता (किशनपोल): आप बीच में मत बोलिये ।

श्री हरिमोहन शर्मा (हिण्डौली): उच्च प्राथमिक विद्यालयों से क्रमोन्नत करने का वादा किया था और एक खोला है एक ...(व्यवधान) शर्म नहीं है।

श्री धर्मपाल चौधरी (संसदीय सचिव): यह तो आपकी सरकार की मेहरबानी होगी, पचास परसेंट कर दिया 25 परसेंट से राजस्थान का शेयर, वह आपकी मेहरबानी से नहीं खुले। यह आपकी मेहरबानी है ।

श्री हरिमोहन शर्मा (हिण्डौली): हमको आधार बनाकर करोगे तो डूबोगे ...(व्यवधान) हमको आधार बनाकर बोलते फिरोगे तो डूबना ही है आपको ...(व्यवधान)

श्री धर्मपाल चौधरी (संसदीय सचिव): केन्द्र सरकार दान में नहीं देती जो शेयर पच्चीस परसेंट था उसको बढ़ाकर पचास परसेंट किया, उसकी मेहरबानी है ...(व्यवधान)

श्री हरिमोहन शर्मा (हिण्डौली): अपने बलबूते पर करते आप, किसने रोका था? अब शर्म आ रही है, 1500 स्कूलों का वादा कर लिया और एक स्कूल खोली केन्द्र के भरोसे। और अब ...(व्यवधान) केन्द्र तीन हजार स्कूल का पैसा दे रहा है इसलिए घोषणा कर दी, थोड़ी बहुत तो शर्म करो ।

श्री मोहन लाल गुप्ता (किशनपोल): मैं इस बात पर भी आऊंगा, प्लीज लिसन मी। (व्यवधान)

डा. श्रीगोपाल बाहेती (पुष्कर): आप सारा काम केन्द्र के भरोसे कर रहे हो क्या? सारा ही काम केन्द्र के भरोसे कर रहे हो क्या?

श्री धर्मपाल चौधरी (संसदीय सचिव): केन्द्र दान में नहीं देता जब पच्चीस परसेंट शेयर था उसको पचास परसेंट ...(व्यवधान)

श्री सभापति: जो भी माननीय सदस्य बिना अनुमति के बोल रहे हैं उनके माइक बंद कर दिये जाएं और उनका कोई भी वाक्य अंकित नहीं किया जाए।

श्री हरिमोहन शर्मा (हिण्डौली): ×××

श्री सभापति: जो भी माननीय सदस्य बिना अनुमति के बोल रहे हैं उनके माइक बंद कर दिये जाएं और उनका कोई भी शब्द अंकित नहीं हो।

श्री हरिमोहन शर्मा (हिण्डौली): ×××

श्री मोहन लाल गुप्ता (किशनपोल): मैं आपके भाषण में डिस्टर्ब नहीं करता हूं आप मेरे बीच में क्यों बोल रहे हो?

श्री हरिमोहन शर्मा (हिण्डौली): ×××

(समय : 17.00 बजे)

श्री मोहन लाल गुप्ता (किशनपोल): अच्छा सुन लो आप। आपके पांच साल में विद्यालय भवनों का निर्माण हुआ 772 और हमारे यहां 9113, 772 से 9113 । अतिरिक्त कक्षा भवनों का निर्माण आपके पांच साल में 5605 और हमारे चार साल में 47,910 और देऊं आपके? ब्रिज कोर्स से लाभान्वित होने वाले बालक-बालिकाएं आपके पांच साल में 6576 और हमारे यहां 149911 और आप तो अल्पसंख्यकों की बात करते हो, मदरसों के आपके समय कम्प्यूटरीकरण हुआ है जीरो, हमारे समय हुआ है एक सौ तीन। मदरसों को मुख्य धारा से जोड़ने, बच्चों को मुख्य धारा से जोड़ने में आपके यहां जीरो स्टूडेंटस की संख्या थी और हमारे यहां हुई पन्द्रह हजार। जीरो से पन्द्रह हजार। ये आंकड़े बोलते हैं ऊंचाइयों के। ये आंकड़े बोलते हैं पहाड़ों के। पहाड़ों को आप छू नहीं सकते हो और टक्कर ले नहीं सकते हो।

मैं आपको बताना चाहता हूं कि नवीन विषय जो हमने खोले हैं, आपके राज में थी सीटों की संख्या 7447 और हमारे चार साल के राज में चौंतीस हजार ... (व्यवधान)

श्री गोविन्द राम मेघवाल (नोखा): ×××

श्री मोहन लाल गुप्ता (किशनपोल): चौंतीस हजार सीटों की संख्या बढ़ गयी उच्च शिक्षा में। ये आंकड़े कोई कम हैं? ये उपलब्धियां कोई कम हैं ? इस प्रकार की बातें बहुत सारी हैं, मैं बहुत कम बातें बोल रहा हूं क्योंकि समय कम है।

ऊर्जा के क्षेत्र में हमने जिस प्रकार से काम किया है, कृषि विद्युत कनेक्शन आपने एक लाख ग्यारह हजार दिये, हमने चार साल में एक लाख तीस हजार दे दिये और घोषणा कर दी है कि अगले साल तक कोई भी कृषि कनेक्शन बाकी नहीं रहेगा। आन डिमाण्ड आज जिस प्रकार से टेलीफोन मिल रहा है, उसी प्रकार से वसुन्धराजी के राज में आन डिमाण्ड कृषि कनेक्शन मिला करेंगे। इस प्रकार की घोषणा हमारे मुख्य मंत्रीजी ने की है टेलीफोन कनेक्शन के समान। आपके यहां कोटा था, परमिट था, लाइसेंस था, किसान चक्कर काटता रहता था कि हमें कृषि कनेक्शन दो, कृषि कनेक्शन दो। हमने घोषणा कर दी है कि अब कृषि कनेक्शन टेलीफोन की भांति मिला करेंगे। ऑन डिमाण्ड कृषि कनेक्शन मिला करेंगे।

(श्री मोहन लाल गुप्ता)

अनुसूचित जाति के कुओं का ऊर्जीकरण आपने तेरह हजार कराया पाँच साल में, हमने चार साल में ही 29486 करा दिया। कुटीर ज्योति कनेक्शन में आपके यहां केवल पैंसठ हजार हुए। आप तो गांवों का कहते हो कि हम गांवों में बहुत ज्यादा प्रभावी हैं, गांवों के बहुत चिंतक हैं और गांवों के बारे में बहुत सोचते हैं, खूब करते हैं, कितने कनेक्शन दिये आपने? पैंसठ हजार। हमारे चार साल में आश्चर्य करेंगे, सदन का ध्यान आकर्षित करना चाहूंगा, माननीय सभापति महोदय, मैं आपका आशीर्वाद भी चाहूंगा, 322886 कनेक्शन। चौबीस घण्टे बिजली की गांवों में सप्लाई हो जाएगी। इस बात की कोई कल्पना भी नहीं कर सकता था। आपने तो केवल चार सौ गांवों में दिये हैं और हमने अभी दे दिये 18960 गांवों को विद्युत कनेक्शन और उसके बाद अभी हमारी घोषणा और है बजट में। सुन लेना साफ-साफ, कान खोल कर और सुन लेना। माननीय सभापति महोदय, आपका आशीर्वाद चाहता हूं, मुख्य मंत्रीजी ने घोषणा कर दी है कि सारे अड़तीस हजार गांवों को हम सड़क से नहीं जोड़ेंगे चौबीस घण्टे वहां घरेलू विद्युत सप्लाई करेंगे। सुनिये। भाषण ढंग से सुनिये ... (व्यवधान) लट्टू जलाएंगे। (व्यवधान) मेरे मित्र हैं इसलिए।

पानी की बात कर रहे हैं, कल कह दिया आपने कि पानी के टार्गेट पूरे नहीं किये। पानी के बारे में आप योजनाएं गांवों से नहीं लाये। आप केन्द्र सरकार से पैसा नहीं लाये। आपने यह नहीं किया, आपने वह नहीं किया। अब पानी के आंकड़े भी आपको बता देता हूं। मेरे पास भी आंकड़े हैं। कांग्रेस सरकार के समय आपकी स्वीकृत योजनाएं थीं सजल धारा की इसमें पैंतीस ... (व्यवधान)

श्री बृजकिशोर शर्मा (जयपुर ग्रामीण): ×××

श्री हरिमोहन शर्मा (हिण्डौली): ×××

श्री मोहन लाल गुप्ता (किशनपोल): उस पर चर्चा हो गयी। उस पर चर्चा हो गयी। आप सुनें ... (व्यवधान)

श्री हरिमोहन शर्मा (हिण्डौली): ×××

श्री मोहन लाल गुप्ता (किशनपोल): कर लेंगे। पानी के लिए सजल धारा में काम चलाया गया ... (व्यवधान)

श्री महावीर प्रसाद जैन (मुख्य सचेतक): ×××

श्री मोहन लाल गुप्ता (किशनपोल): आपके राज में सजल धारा में पैंतीस योजनाएं स्वीकृत हुई और हमारे चार साल में 2429 योजनाएं स्वीकृत हुई हैं। आपके राज में योजना की अनुमानित लागत थी चार करोड़ रुपये, और हमारे चार साल में चार करोड़ की अपेक्षा एक सौ अड़तीस करोड़ रुपया खर्च हो गया, एक सौ अड़तीस करोड़ रुपया। आपके राज में हैंड पम्प स्थापित हुए, हैंड पम्प लगे जबकि अकाल था, आपको पानी पर ज्यादा ध्यान देना चाहिये था, पानी के लिए ज्यादा हैंड पम्प लगाने चाहिये थे लेकिन आपने बहत्तर हजार हैंड पम्प लगाये और हमने बरसात की पूरी कृपा होने के बावजूद, भगवान की पूरी कृपा होने के बावजूद एक लाख एक हजार दो सौ तेइस हैंड पम्प लगाये हैं।

अनुसूचित जातियों के आप मसीहा बनते हो, आपने 3951 बस्तियों में पेयजल की आपूर्ति की, हमने केवल चार साल में 4473 जगह पर पेयजल की आपूर्ति की। आप कल कह रहे थे कि पाठशालाओं के लिए आपने पेयजल की आपूर्ति नहीं की। आपने पाठशालाओं में यह काम नहीं किया, आपने वह नहीं किया। आपके राज में आपने क्या किया ? जीरो। आपके पांच साल में जीरो और चार साल में हमने 24569 पाठशालाओं में पेयजल की सुविधाएं उपलब्ध करायी हैं। जीरो से चौबीस हजार। आप देखिये ये आंकड़े। सड़क मार्गों द्वारा ढाणियों को पेयजल की उपलब्धि आपकी थी 6877 गांवों की और हमारी है। 32680 आप चाहें तो मैं टेबल कर देता हूं। ये हमारी सरकार के विभिन्न डिपार्टमेंट्स की उपलब्धियों के आंकड़े हैं। ये आंकड़े सत्य हैं। इसमें किसी प्रकार की कोई असत्यता हो तो बता दीजिएगा। आपके पाँच साल और हमारे चार साल। आप जीरो और हम हीरो। (व्यवधान)

श्री टीकम चन्द कान्त (सिवाना): ×××

श्री हरिमोहन शर्मा (हिण्डौली): ×××

श्री मदन राठौड़ (सुमेरपुर): ×××

श्री जुबेर खान (रामगढ़): ×××

श्री धर्मपाल चौधरी (संसदीय सचिव): ×××

श्री जुबेर खान (रामगढ़): ×××

श्री मोहन लाल गुप्ता (किशनपोल): अभी आ रहा हूं। मैं उस पर भी आ रहा हूं। (व्यवधान)

श्री धर्मपाल चौधरी (संसदीय सचिव): ×××

श्री जुबेर खान (रामगढ़): ×××

श्री रामचन्द्र सराधना (जमवारामगढ़): ×××

श्री संयम लोढ़ा (सिरोही): ×××

श्री राजेन्द्र राठौड़ (सार्वजनिक निर्माण मंत्री): ×××

श्री जोगाराम पटेल (संसदीय सचिव): ×××

डा. ओ. पी. महेन्द्रा (उप मुख्य सचेतक): ×××

श्री गोविन्द राम मेघवाल (नोखा): ×××

श्री युनूस खान (यातायात मंत्री): ×××

श्री ओम बिरला (संसदीय सचिव): ×××

श्री लक्ष्मीनारायण दवे (खनिज मंत्री): ×××

श्री धर्मपाल चौधरी (संसदीय सचिव): ×××

श्री जोगाराम पटेल (संसदीय सचिव): ×××

श्री मदन राठौड़ (सुमेरपुर): ×××

श्री मदन दिलावर (सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता मंत्री): ×××

श्री संयम लोढ़ा (सिरोही): ×××

श्री राजेन्द्र राठौड़ (सार्वजनिक निर्माण मंत्री): ×××

श्री सभापति: मैं पहले भी आग्रह कर चुका हूं, जो भी माननीय सदस्य बिना परमीशन के बोल रहे हैं उनका कोई शब्द अंकित नहीं किया जाए। उनके माइक तत्काल बंद कर दिये जाएं। मैं पहले भी कह चुका हूं, कौन देखता है माइक यहां पर ...(व्यवधान)

श्री राजेन्द्र राठौड़ (सार्वजनिक निर्माण मंत्री): ×××

श्री संयम लोढ़ा (सिरोही): ×××

श्री सभापति: आपको यह अधिकार नहीं है कि आप बार-बार आसन का अपमान करेंगे ...(व्यवधान) आपको अधिकार नहीं है यहां पर ...(व्यवधान)

श्री राजेन्द्र राठौड़ (सार्वजनिक निर्माण मंत्री): ×××

श्री सभापतिः इस राजस्थान की जनता ने अपने मत का दान किया है आपको, उस दान का आप दुरूपयोग कर रहे हैं, यह बड़े दुःख की बात है। दान का हमेशा सदुपयोग होता है, मत का दान किया है आप लोगों को जनता ने ...(व्यवधान)

श्री मोहन लाल गुप्ता (किशनपोल): सभापति महोदय, विपक्ष के सदस्य कहते हैं कि आपने रोजगार के अवसर प्रदान नहीं किये। आपने यह घोषणा की थी कि एक लाख रोजगार प्रतिवर्ष देंगे। हम यह करेंगे, हम वह करेंगे, आपने कुछ नहीं किया। मैं रोजगार के आंकड़े भी आपको देना चाहता हूं, आप कृपया ध्यान से सुन लें और आपको लगता है कि ये गलत हैं तो मैं टेबल कर दूंगा इन आंकड़ों को। देखिये, सरकार द्वारा सीधी भर्ती है 92471, मृतक आश्रितों को अनुकंपा पर नियुक्ति दी है 7297, संविदा के आधार पर नियुक्तियां दी हैं 11883, अन्य परियोजनाओं की समाप्ति पर कार्मिकों का समायोजन 11634, कुल योग 124285 है। अन्य माध्यमों से उपलब्ध कराये गये रोजगार, आशाओं को रोजगार उपलब्ध कराये गये 37851, साथिनों को रोजगार उपलब्ध कराये गये 6752, सहयोगिनियों को रोजगार उपलब्ध कराये गये 33772, आंगनबाड़ी कार्यकर्ताओं को 12318, आंगनबाड़ी सहयोगिनियों को 12501, परिचारिकाओं को 271, विद्यार्थी मित्रों को 44 हजार, इस प्रकार से ए और बी का योग 270750 है।

सभापति महोदय, प्रक्रियाधीन नियुक्तियां और हैं, अभी और नियुक्तियां होंगी-शिक्षकों की 32 हजार प्रस्तावित हैं, चिकित्सा एवं पैरा मेडिकल में 23177 हैं, पुलिस कर्मी 3900 हैं, पशु चिकित्सक 200 हैं, व्याख्याता उच्च शिक्षा के 456 हैं, मदरसा पैरा टीचर्स 1400 हैं, विद्युत कर्मी 4272 हैं। इस प्रकार से एक लाख नियुक्तियां की गयीं। हमने राजस्थान मिशन लिवलीहुड चलाया है, उसके माध्यम से 10 हजार लोगों को रोजगार उपलब्ध हुआ है। इस मिशन में 2007-08 के तहत एक लाख लोगों को रोजगार उपलब्ध कराने का वादा किया है। इस प्रकार से हम लोगों का टैक्निकल अपग्रेडेशन करके प्राइवेट सैक्टर में भी रोजगार उपलब्ध कराने जा रहे हैं...(व्यवधान)

सभापति महोदय, इसी के साथ-साथ विभिन्न माध्यमों से दिये गये रोजगार इस प्रकार से 449146 हैं। निजी क्षेत्र में साढ़े 7 लाख लोगों को रोजगार दिया गया। अब आप कहेंगे कि राष्ट्रीय ग्रामीण रोजगार योजना हमारी है। मैं उसका भी जवाब दूंगा। आप मेरे आंकड़े सुन लीजिये। भारत सरकार की राष्ट्रीय ग्रामीण रोजगार योजना के अंतर्गत और भी स्टेट काम कर रहे हैं

(श्री मोहन लाल गुप्ता)

लेकिन राजस्थान ने सर्वश्रेष्ठ काम किया है और उसके तहत 39 लाख 22 हजार लोगों को रोजगार दिया गया है। इस प्रकार से टोटल हमारी सरकार ने राजस्थान में रोजगार के क्षेत्र में नये कीर्तिमान स्थापित करके 46 लाख 72 हजार लोगों को रोजगार के अवसर प्रदान किये हैं।

श्री रामचन्द्र सराधना (जमआरामगढ़): ×××

श्री मोहन लाल गुप्ता (किशनपोल): सभापति महोदय, हमारे पूर्व मुख्य मंत्री महोदय ने इन्वैस्टमेंट लाने के लिए बहुत बड़ा हल्ला मचाया था ... (व्यवधान)

श्री जोगाराम पटेल (संसदीय सचिव): ×××

श्री मोहन लाल गुप्ता (किशनपोल): बड़े-बड़े उद्योगपतियों को राजस्थान में आमंत्रित किया था। उसके बाद में क्या इन्वैस्टमेंट आया, यह तो मुझे मालूम नहीं है। मैंने सरकारी आंकड़े काफी निकलवाये, उनके पास में कोई आंकड़े ही नहीं हैं। उस वक्त जो प्रवासी राजस्थानियों का सम्मेलन हुआ था, होटल राजमहल में हुआ था, वहां पांच सितारा की फैसिलिटी उनको दी गयी थी। सारे के सारे उद्योगपति वहां आये थे। एक पैसे का भी इन्वैस्टमेंट राजस्थान में नहीं हुआ। और हमारी सरकार ने रिइसर्जेंट राजस्थान फिक्की के सहयोग से इन्वैस्टमेंट के एमओयू बनाकर एक वातावरण बनाया और 1 लाख 62 हजार करोड़ के एमओयू साइन हुए हैं।

श्री हरिमोहन शर्मा (हिण्डौली): ×××

श्री महावीर प्रसाद जैन (मुख्य सचेतक): ×××

श्री मोहन लाल गुप्ता (किशनपोल): अच्छा, आप सुन लीजिये। माननीय सदस्य, आप बैठें। (व्यवधान) मैं आंकड़े लेकर आया हूं अपने पास में। देखिये, तीन सौ तो सहमति पत्र हैं, 1 लाख 61 हजार करोड़ रुपये के एमओयू हैं, अब उसमें आप आंकड़े देख लीजिये। उद्योग के क्षेत्र में 136 हुए हैं 14227 करोड़ रुपये के। खनिज एवं पैट्रोलियम के क्षेत्र में 21 हुए हैं 60259 करोड़ रुपये के। ऊर्जा के क्षेत्र में 15 एमओयू हुए हैं 9624 करोड़ के। एसइजेड के 11 हुए हैं 35534 करोड़ रुपये के। शहरी सुविधा एवं टाउनशिप के 7 हुए हैं जिसमें 28125 करोड़ रुपये लगेंगे। कृषि एवं बागवानी के क्षेत्र में 9 एमओयू साइन हुए हैं जिसमें 1478 करोड़ रुपये लगेंगे। पशुपालन के क्षेत्र में 350 करोड़ रुपये का एमओयू हुआ है। पर्यटन के क्षेत्र में 34 हुए हैं जिसमें 5332

(श्री मोहन लाल गुप्ता)

करोड़ रुपये के निवेश होंगे। उच्च शिक्षा में 25 एमओयू हुए हैं जिसमें 2278 करोड़ रुपये खर्च होंगे। तकनीकी शिक्षा में 22 एमओयू हुए हैं जिसमें 600 करोड़ रुपये खर्च होंगे। चिकित्सा के क्षेत्र में 19 एमओयू हुए हैं जिसमें 4800 करोड़ रुपये खर्च होंगे। इस प्रकार से कुल 300 एमओयू हुए हैं और 1 लाख 62 हजार करोड़ रुपये खर्च होंगे।

सभापति महोदय, मैं आपको यह कहना चाहूंगा कि जनवरी, 2008 तक तीन परियोजनाएं प्रारम्भ भी हो गयीं- सोमानी वर्क्स लि., सिलिकॉन सिटी और मैसर्स जकुवार इन तीनों परियोजनाओं में 60 हजार का डायरेक्ट, इनडायरेक्ट रोजगार मिलेगा। ये केवल झूठे वादे नहीं हैं। आप कहते हो कि आपने क्या किया, आपके यहां राजस्थान में कोई विकास नहीं हुआ, आप झूठे वादे करते हो। आपका कुशल वित्तीय प्रबंधन नहीं था। जब हमारा कुशल वित्तीय प्रबंधन नहीं था तो हमारे उद्योगपति कैसे आ गये? हमारे उद्योगपतियों ने आकर किस प्रकार से एमओयू कर लिये और लगे हैं लाइन में कि हमें फैसिलिटी दे दीजिये? हम उनको कोई विशेष सुविधा भी नहीं दे रहे हैं। वह खुद आ रहे हैं राजस्थान में उद्योग लगाने के लिए, राजस्थान में इन्वैस्टमेंट करने के लिए। हमारी महारानी ने इक्कीसवीं सदी के विजन को देखते हुए किया। यह विजन है कि यहां पर किसी प्रकार की प्रशासनिक दिक्कतें नहीं होंगी। मैं कहना चाहूंगा कि हीरो होंडा यहां कार का प्लांट लेकर आये हैं। नीमराणा में जापानी इन्वैस्टमेंट से सात कंपनियों को लैंड अलॉटमेंट हो गया। नौ कंपनियों की लैंड रिजर्व हो गयी। इसके अलावा हैं ये सब। आप अभी जाकर देखिये वहां पर। माननीय हरिमोहनजी, आप कृपया जाकर देखिये, उस लैंड को देख लीजिये, वहां पर काम हो रहा है। जहां जापानी इन्वैस्टमेंट आता है, वहां वारे-न्यारे होते हैं। एम्प्लायमेंट भी अच्छा मिलता है, क्वालिटी टैक्निक से काम होता है। उद्योगों की गुणवत्ता वहां कायम होती है। जापानी जिस प्रकार से उत्पादन करते हैं, वे लोग हमारे राजस्थान में आ रहे हैं। नारायण हार्ट हास्पिटल जयपुर में आ रहा है, मणिपाल यूनिवर्सिटी का कैम्प्स आ रहा है। बॉम्बे हास्पिटल आ रहा है ...(व्यवधान)

श्री हरिमोहन शर्मा (हिण्डौली): ×××

श्री जुबेर खान (रामगढ़): ×××

श्री मोहन लाल गुप्ता (किशनपोल): मैं कहना चाहता हूं कि रिसर्जेंट ऑफ राजस्थान में जिस प्रकार से ...(व्यवधान)

श्री जुबेर खान (रामगढ़): ×××

श्री युनूस खान (यातायात मंत्री): ×××

मोहम्मद माहिर आजाद (नगर): ×××

श्री सभापति: माननीय सदस्य, समाप्त करें।

श्री मोहन लाल गुप्ता (किशनपोल): सभापति महोदय, मैं आपका आशीर्वाद चाहूंगा ...(व्यवधान)

श्री सभापति: मेरा आपको भरपूर आशीर्वाद है लेकिन समय मेरे बस में नहीं है ...(व्यवधान)

श्री मोहन लाल गुप्ता (किशनपोल): लेकिन मेरी पार्टी चाहेगी तो समय दे देगी। मैं यह कहना चाहूंगा कि बच्चों की शिक्षा के लिये जिस प्रकार से संसाधन उपलब्ध कराये हैं...

श्री सभापति: आप ढाई मिनट में समाप्त करें।

श्री मोहन लाल गुप्ता (किशनपोल): मैं यह कहना चाहूंगा कि बच्चों को शिक्षा दी जा रही है, बच्चे स्कूलों में पढ़ रहे हैं। मिड-डे मील मिल रहा है। बच्चों को पढ़ाई के लिए किताबें मुफ्त हैं, बच्चों की साइकिलें हैं आने-जाने के लिए। और अब मुख्य मंत्रीजी ने घोषणा कर दी है कि उनकी चिकित्सा की व्यवस्था भी हो जाएगी। बैग भी मुफ्त है, किताबें भी मुफ्त हैं, उनकी कापियां भी मुफ्त हैं और उनको आने-जाने के लिए सुविधा दी है और चिकित्सा भी हो गयी। मैं माननीय मुख्य मंत्रीजी से निवेदन करूंगा कि इस प्रकार से बच्चों को पैदा करने पर कोई टैक्स ही नहीं लगेगा। यह तो बहुत बढ़िया बात हो गयी। मैं यह कहना चाहता हूं कि परिवार नियोजन पर इसे लागू करें, जिस लोगों के पास परिवार नियोजन है उनके बच्चों को इस प्रकार की सुविधा मिले। बाकी सभी बच्चों को भी इसी प्रकार की सुविधाएं उपलब्ध कराएं। आखिर बच्चों के लिए हमारी सरकार कितना काम कर रही है। यह हमारी मुख्य मंत्री की संवेदनशीलता है कि गरीब बच्चों को सभी प्रकार की सुविधाएं उपलब्ध कराई जाएं।

माननीय सभापति महोदय, पूजा स्थलों को हमने बिजली के कमर्शियल चार्ज से मुक्त कर दिया, अब उनको घरेलू दर से चार्ज करने की सुविधा दे रहे हैं। हमने धन्वंतरि एम्बुलेंस सेवा योजना प्रारम्भ की है जिसमें 24 घण्टे के अंदर-अंदर एम्बुलेंस पहुंच जाएगी।

(श्री मोहन लाल गुप्ता)

माननीय सभापति महोदय, इसके साथ-साथ मैं यह कहना चाहता हूं कि मिल्क यूनियनों द्वारा पहले 220 और 275 रुपये प्रति किलोग्राम के हिसाब से फैट का भुगतान किया जा रहा था, इन दरों में असमानता थी। हमारी मुख्य मंत्रीजी ने 280 रुपये प्रति किलो ग्राम फैट की दर से पूरे राजस्थान में मिल्क लेने की घोषणा की है, यह पशु पालकों को सीधा लाभ है। पहले यह दर कहीं 220 थी तो कहीं कुछ ज्यादा थी, अब 280 रुपये की घोषणा की है।

गरीब कुलियों के लिए, गरीब लोगों के लिए भी हमने बहुत काम किए हैं। माननीय सभापति महोदय, मैं कहना चाहूंगा कि गरीबों के लिए जिस प्रकार से हमारी मुख्य मंत्रीजी ने घोषणाएं की हैं-

झोली भर दी दीन की, खूब दिया है साथ,

हर गरीब के सिर पर महारानी ने रखा है हाथ।

माननीय सभापति महोदय, जयपुर की कच्ची बस्तियों में जिस प्रकार से कैम्प लगाकर पट्टे बांटे जा रहे हैं, पिछले तीस-चालीस सालों के इतिहास में ऐसा कभी नहीं हुआ। माननीय सभापति महोदय, आपके विधान सभा क्षेत्र में भी एक ही टैण्ट के नीचे एल.डी.सी., यू.डी.सी., आर.ओ., इंजीनियर, सब लोग एक साथ बैठकर पट्टे दे रहे हैं, कच्ची बस्तियों के गरीब लोगों को इस प्रकार से पट्टे देने का अभियान पिछले पैंतीस-चालीस सालों में आज तक कभी नहीं हुआ।

कल सी.पी. जोशी साहब ने कुछ आरोप लगाये थे और यह कहा था कि आप लैण्ड यूज चेंज कर रहे हैं। हम यह कह रहे हैं कि हम क्या इल्लीगल कर रहे हैं? जो भी काम कर रहे हैं लीगल कर रहे हैं, कानून से कर रहे हैं, नियमानुसार कर रहे हैं। क्या आपने लैण्ड यूज चेंज नहीं किया? आपने एण्टरटेनमेंट पैराडाइज का लैण्ड यूज चेंज किया, कितने रुपए दिए, इसकी आप जांच करवा लीजिए। आपने जल महल का लैण्ड यूज चेंज कर दिया, बेशकीमती जमीन आपने दे दी तो क्या आपने गलत काम किया? आप इस प्रकार का आरोप लगाकर सदन को गुमराह करना चाहते हैं। मैं यह कहना चाहता हूं कि हमने जो भी काम किया है, नियमानुसार ही किया है। उद्योगों को सुविधा दी है, नियमानुसार दी है। किसी प्रकार का गैर नियम से काम किया हो तो आप बताइए। आरोप लगाते रहेंगे, आरोप लगते रहेंगे लेकिन आरोप सिद्ध नहीं होंगे। आरोप सिद्ध करने के लिए जरूरी है कि आप यह सिद्ध करें

(श्री मोहन लाल गुप्ता)

कि कौनसा काम हमने गैर नियम से किया, गैर कानूनी किया है। जो पावर हमको था, सरकार को था, वह कर सकते हैं, उद्योगों को लगाने के लिए, राजस्थान की बहबूदी को बढ़ाने के लिए। राजस्थान के लोगों को सुविधा देने के लिए सब काम हमने किये हैं।

माननीय सभापति महोदय, मैं बहुत कुछ कहना चाहता हूं लेकिन जिस प्रकार से समय बचा है, मैं यह कहना चाहता हूं कि पापड़ पर टैक्स खतम कर दिया, मार्बल पर साढ़े बारह प्रतिशत से चार प्रतिशत कर दिया, और भी उद्योगों को सहायता दी है। मैं तो यह कहता हूं कि सारे उद्योगों को हमने वैट में सहायता दी है, वैट का सरलीकरण किया है। वैट कर का सरलीकरण करके उद्योगों को एक ऐसे विकास का रास्ता दिखाया है कि राजस्थान के व्यापारी और उद्योगपति स्वाभिमान के साथ जी सकें, अपना व्यापार कर सकें, कृषि कर सकें, पशु पालन भी कर सकें।

श्री सभापति: माननीय सदस्य, आप तत्काल अपनी बात समाप्त करें, मैं अगला नाम पुकार रहा हूं।

श्री मोहन लाल गुप्ता (किशनपोल): माननीय सभापति महोदय, मैं यह कहना चाहता हूं कि रिक्शे वाले, तांगे वाले, कुली, तेली, नाई, धोबी ये जो छोटे-छोटे तबके के लोग हैं इनकी तरफ आज तक किसी ने ध्यान हीं नहीं दिया, नम्बर वन मुख्य मंत्री ने भी ध्यान नहीं दिया।

श्री सभापति: मोहम्मद माहिर आजाद।

श्री मोहन लाल गुप्ता (किशनपोल): हमने करोड़ों रुपये के काम किए हैं।

(समय-समाप्ति-सूचक घंटी)

माननीय सभापति महोदय, मैं एक अनुशासित विधान सभा सदस्य हूं इसलिए मैं इतना ही कहना चाहता हूं:-

बजट देख भर गया जनता में उल्लास,
शासन ने जैसे किया सबके लिए प्रयास,
सबके लिए प्रयास, बहुत हैं खुशियां छाईं,
इस मौके पर स्वीकारें सभी गुप्ता की बधाई।

मोहम्मद माहिर आजाद (नगर): माननीय सभापति महोदय, मैं 5.25 पर शुरू कर रहा हूं।

(मोहम्मद माहिर आजाद)

मानिनीय सभापति महोदय, यह सदन राजस्थान के आय व्ययक यानि बजट पर चर्चा कर रहा है। कोई भी दल जनता के बीच में चुनाव में जाते समय अपना एक घोषणा पत्र जारी करता है और उसके माध्यम से जनता को यह भरोसा दिलाता है कि हम यदि सत्ता में आए तो अपने कार्यकाल में हमारी ये प्राथमिकताएं होंगी। हम जनता की भलाई और प्रदेश के चहुंमुखी विकास के लिए निम्नलिखित काम करेंगे। फिर सरकार इस पवित्र सदन के माध्यम से दो दस्तावेजों के जरिये, एक दस्तावेज महामहिम राज्यपाल महोदय का अभिभाषण होता है जिसमें विगत वर्षों में सरकार के द्वारा किए गए कार्यों का गुणगान किया जाता है और दूसरा दस्तावेज सरकार के आगामी वित्त वर्ष के लिए क्या-क्या प्लान हैं, क्या-क्या प्राथमिकताएं हैं, बजट के जरिये राजस्थान की जनता को प्रस्तुत करने का काम करते हैं। इस सदन में 25 फरवरी को सदन की नेता जिनके पास वित्त विभाग भी है, उन्होंने राजस्थान के इस आने वाले वर्ष में क्या प्राथमिकताएं होंगी, जनता की भलाई के लिए और प्रदेश के विकास के लिए क्या काम किए जाएंगे, इसका दस्तावेज बजट भाषण के जरिये इस सदन में रखा है।

माननीय सभापति महोदय, आपने प्लान साइज खूब बड़ा करके दिखाया, राजस्व घाटा बढ़ रहा है, हमारा प्रदेश डैट ट्रैप की तरफ यानि कर्जे के कुचक्र की तरफ जा रहा है, आज हमको कर्ज की अदायगी के लिए नया कर्जा लेना पड़ रहा है या कर्जे के ब्याज को चुकाने के लिए नया कर्जा लेना पड़ रहा है, प्रति व्यक्ति हर साल एक हजार रुपये का कर्ज भार बढ़ रहा है, यह लिया हुआ कर्जा इन्फ्रास्ट्रक्चर डवलपमेंट पर खर्च न होकर अधिकारियों की सुख सुविधा और वेतन-भत्तों पर जा रहा है, परिसम्पत्तियां कम सृजित की जा रही हैं, मैं इन आंकड़ों के जाल में और डिटेल में नहीं जाकर आपके माध्यम से राजस्थान सरकार के अन्य वरिष्ठ मंत्री जो यहां विराजमान हैं, जिनमें कई पार्टी के पदाधिकारी भी रहे हैं और आज भी हैं, उनसे जानना चाहता हूं कि यहां आप बड़ी-बड़ी बातें कर रहे हैं, आप जब चुनाव में गए थे 2003 में तो आपने राजस्थान की जनता के सामने अपना चुनाव घोषणा पत्र रखा था, अपनी प्राथमिकताएं बताई थीं, क्या आपको याद है कि आपने कितनी प्राथमिकताएं बताईं? कितनी बताई थीं? आपमें से एक भी माई का लाल खड़ा होकर अपने चुनाव घोषणा पत्र में कितनी प्राथमिकताएं बताईं, वह बता दे तो मैं आपको चुनौती देता हूं। (व्यवधान) आप बैठ जाइए, डोंट डिस्टर्ब मी।

श्री सभापतिः कोई भी माननीय सदस्य बीच में नहीं बोलेगा। माननीय सदस्य, आपकी रचनात्मक बात कर रहे हैं उसको आप सुनें।

श्री मदन राठौड़ (सुमेरपुर): ×××

मोहम्मद माहिर आजाद (नगर): सुमेरपुर से आने वाले माननीय सदस्य को बैठा दीजिए। मैं किसी का नाम नहीं ले रहा हूं, मैं नीति और सिद्धान्तों की बात कर रहा हूं। मैं आपके घोषणा-पत्र की बात कर रहा हूं, कांग्रेस के घोषणा-पत्र की बात नहीं कर रहा। जिस घोषणा-पत्र पर आपने वोट लिये और राजस्थान की जनता को ठगने का काम किया, मैं उस घोषणा-पत्र की बात कर रहा हूं। (व्यवधान) माननीय सभापति महोदय, मैं आपसे संरक्षण चाहूंगा ..(व्यवधान)

श्री सभापतिः माननीय सदस्य, बीच में टोका-टाकी न करें क्योंकि .. (व्यवधान)

मोहम्मद माहिर आजाद (नगर): सभापति महोदय, यह कहते हुए और भी आश्चर्य हो रहा है कि इस सदन में तीन सदस्य तो ऐसे भी बैठे हैं जो चुनाव घोषणा-पत्र समिति के सदस्य भी थे- माननीय खाद्य आपूर्ति मंत्रीजी, आप भी उसके सदस्य थे, जनजाति विकास मंत्री माननीय नंदलालजी मीणा भी उसके सदस्य थे और समाज कल्याण मंत्री मदन दिलावरजी भी उसके सदस्य थे। हमारे गृह मंत्री गुलाबचंदजी कटारिया यहां मौजूद नहीं हैं, वे भी उसके सदस्य थे। आपको पता है कि क्या-क्या प्राथमिकताएं रखी थीं आपने?

श्री जोगाराम पटेल (संसदीय सचिव): ×××

मोहम्मद माहिर आजाद (नगर): मैं आपसे कुछ नहीं कह रहा हूं। आप विद्वान हैं, वकील हैं, पहली बार आये हैं, संसदीय सचिव बने हैं, मैं आपको कुछ और नहीं कहना चाहता, मैं आसन से अपनी बात कह रहा हूं। आपको थोड़ा-बहुत तरीका सीखना चाहिए, यह कोर्ट नहीं है, यह राजस्थान का पवित्र सदन है, आप अपनी बात कहें, मैं अपनी। मैं कभी भी आप जो चाहेंगे, मुंह से वह नहीं कहूंगा। मैं कभी अपशब्द का प्रयोग नहीं करूंगा, मैं कभी असंसदीय भाषा का प्रयोग नहीं करूंगा। मैं जो इच्छा होती है, वह बात कहूंगा। मैं आपसे पूछ रहा हूं, एक भी माननीय सदस्य सत्ता पक्ष का अगर बता दे अपनी प्राथमिकताएं, नहीं तो मैं फिर बताऊं यदि आपको याद नहीं हो तो।

श्री बत्तीलाल (टोडाभीम): ×××

मोहम्मद माहिर आजाद (नगर): यह प्राथमिकता नहीं थी। इसका मतलब आपको प्राथमिकता का पता ही नहीं है। मुझे तरस आ रहा है। इसीलिए वसुंधराजी ने आपको मंत्री नहीं बनाया कि आपकी क्या प्रायरटीज हैं उसका ज्ञान ही नहीं है। सभापति महोदय, ये रहीं। मैं तो आपसे यह नहीं पूछ रहा, क्या-क्या प्राथमिकताएं थीं, मैं तो केवल यह पूछ रहा हूं कि कितनी थीं। वह बात तो बाद में आएगी कि उसमें से कितनी पूरी हुईं और कितनी नहीं हुईं, आपका रिपोर्ट कार्ड क्या है, आपको नम्बर कितने मिलेंगे। यह तो बाद की बात है, पहले तो आपको यह तो पता होना चाहिए कि आपने कहा क्या था, आपकी प्राथमिकताएं क्या थीं, यही आपको पता नहीं है। मुझे तो ताज्जुब होता है इस चीज पर।

माननीय सभापति महोदय, मैं बताना चाहता हूं कि इन्होंने 61 प्राथमिकताएं दी थीं क्योंकि इनको यह उम्मीद ही नहीं थी कि हमारा राज आ जाएगा। इन्होंने तो सोचा कि जो जंचे जो हां कर लो। एक विधायक के पास कुछ गांव के लोग चले गये। कहने लगे कि आपने हमारे से वादा किया था कि प्राइमरी स्कूल को मिडिल करा देंगे, नहीं कराया। बोले, अब की बार करा दूंगा। फिर कहा कि आपने कहा था कि सड़क नहीं बनी। कहा कि अब की बार सड़क भी बनवा दूंगा। आपने कहा कि मेरी लड़की की नौकरी लगवा देंगे, वह नहीं लगी। कहा कि अब की बार वह भी लगा दूंगा। फिर कहा कि अकाल पड़ रहा है, अब की बार मेह नहीं बरसा। बोले, 8, सिविल लाइन आ जाओ, महारानीजी से कहकर मेह भी बरसवा दूंगा। ऐसी बात आप लोगों ने की जो आपकी पूरी होना स्वाभाविक ही नहीं थी, व्यावहारिक भी नहीं थी। इसलिए, सभापति महोदय, मैं यह निवेदन करना चाहता हूं कि इनकी प्राथमिकताओं को इन्होंने पढ़ा नहीं, इनको ज्ञान नहीं। मैं आपसे निवेदन करूं कि 61 में से 40 ऐसी हैं जिन पर अभी कोई कार्यवाही शुरू ही नहीं हुई। अगर यह बात हम पिछली साल कहते, हमने जैसे पिछली बार हाउस टैक्स की कही थी, हमने एक-दो और बातें कही थीं, तब सत्ता पक्ष के लोगों ने, मंत्रियों ने कहा था कि पांच साल का चुनाव घोषणा-पत्र है, पांच साल में कभी भी पूरा कर लेंगे। अब तो चुनाव का अंतिम वर्ष है, ''जब दिल लगता है फटने तब तो खैरात लगती है बंटने।'' तो इस साल तो कम से कम इनको पूरा कर देते। अब भी नहीं करोगे तो फिर तो यह बाकी की बाकी रह गई, कहां जाओगे आप? यह तो सोचो, कम से कम आप जो लुटा रहे हो। ये इन्होंने पूरी नहीं की। अब ये कह रहे हैं, इनकी डिटेल में यदि मैं जाऊं, बंद उद्योगों को पुनर्जीवित करने हेतु 50 करोड़

(मोहम्मद माहिर आजाद)

का तकनीकी पुनरुत्थान कोष बनाया जाएगा, 175 करोड़ के किसान कल्याण कोष की स्थापना की जाएगी, 250 करोड़ का किसान सहायता कोष बनाया जाएगा, सभी फसलों के लिए फसल बीमा योजना के लिए 75 करोड़ का कोष बनाया जाएगा। किसानों को 8 घण्टे बिजली दी जाएगी, बिजली में आत्मनिर्भरता हो जाएगी। बिजली की कटौती हो रही है। कांग्रेस के 50 साल के राज में केवल रबी की फसल के टाइम कुछ घण्टे बिजली की कटौती होती थी बाकी कभी मार्च में, फरवरी में, अप्रैल में, मई में बिजली कटौती नहीं हुई जो आपके राज में हो रही है। कांग्रेस के 5 साल के राज में 1752 मेगावाट बिजली का रिकार्ड उत्पादन हुआ जिसकी तत्कालीन प्रधानमंत्री माननीय अटल जी ने कोटा की एक सभा में भूरि-भूरि प्रशंसा की थी। आपने कितना किया? आप तो कह रहे हो 2008 में शुरू हो जाएगा, 2009 में शुरू हो जाएगा, यह तो 2011 में शुरू हो जाएगा। मैं अभी आऊंगा कि आपने अपने बजट में ... (व्यवधान) कई चीजें होती हैं माननीय सभापति महोदय, एक तो यह होती है, ले, यह पैसे ले जा। एक यह होती है, पैसा आपको कल दे दूंगा। और एक यह होती है, होली आएगी तब आपको पैसा दे दूंगा। और एक यह, जब मेरे पास आएंगे तब दे दूंगा। इस बजट भाषण में देखना, मुख्य मंत्रीजी ने कैसे शब्दों के जाल में राजस्थान की जनता को भ्रमित किया है। कहीं तो कहा है कि इसके लिए इतने करोड़ का प्रावधान रखा है, कहीं कहा है इस पर इतना पैसा खर्च किया जाएगा और कहीं यह कहा है कि इतने की योजना बनायी जाएगी और इतने का यह किया जाएगा। ''अगर, मगर, लेकिन और गोया, सबने मिलकर बात को खोया।'' मैं यह कह दूं, मैं आपको एक लाख रुपये देता, लेकिन मेरे पास तो एक लाख रुपये हैं ही नहीं। लेकिन लगते ही पहले की बात का कोई मतलब ही नहीं रहेगा। इसलिए मैं यह बात आपसे इसलिए कहना चाहता हूं कि इस बजट की सैंक्टिटी क्या है कि हम कोई बात कहें उस बात के ऊपर हम कितने कायम रह रहे हैं, हम उसको कितना पूरा कर पा रहे हैं। जब चुनाव घोषणा-पत्र में आपने 61 प्राथमिकताएं दीं, 40 पर अभी आपका काम ही शुरू नहीं हुआ है, अगला जन्म लेना पड़ेगा, घनश्यामजी, आपने जो वादे किये हैं इनको पूरा करने के लिए।

अभी किशनपोल से आने वाले माननीय सदस्य कह रहे थे कि हम अगली साल बिजली के अंदर जितने किसान कनेक्शन मांगेंगे उनको कनेक्शन दे देंगे। जिनके डिमाण्ड नोट निकले हुए हैं, कई साल हो गये, उनको तो अभी

(मोहम्मद माहिर आजाद)

तक आप दे नहीं रहे। पानी की बात कर रहे हैं कि हम सबको पूरा पानी पिला देंगे। मैं दावे के साथ कह रहा हूं, कल ही मीटिंग थी पीएचईडी की कि 2005 में जो हैण्ड पम्प स्वीकृत हुए थे अभी वे ही ड्रिल नहीं हुए, वे ही इंस्टाल नहीं हुए तो करोगे क्या उसका इलाज? यह स्थिति आपकी हो रही है।

अब आप इस बजट के अंदर कह रहे हो कि हम दिसम्बर, 2009 तक यह कर देंगे। दिसम्बर में आप कहां होंगे? दिसम्बर, 2008 में आपका विदाई समारोह हो जाएगा, 2009 में क्या करोगे? इसलिए आदमी को अपने कार्यकाल में ..(व्यवधान) आज किरोड़ी लालजी कह रहे थे, चार साल अकाल राहत और आपदा प्रबंधन मंत्री रहे जब उनके दिमाग में यह बात नहीं आयी, तब उनका दिमाग इंग्लैंड गया हुआ था या ह्यूस्टन, अमरीका गया हुआ था, तब यह बात नहीं आई कि गिरदावरी के लिए 4-5 आदमी गांव के लेने चाहिए ताकि सही गिरदावरी हो। आज याद आ रही है जब पद से हट गये। इसलिए आपको भी सारी बातें अगली साल याद आ रही हैं, मार्च, 2009 में जब आप नहीं होंगे कि हम यह करेंगे।

माननीय सभापति महोदय, इनका जो बजट है इसको आपने पढ़ने का काम नहीं किया, माननीय राठौड़ साहब। ऊपर हवा के अंदर ही मुख्य मंत्री के नजदीक रहो आप, लेकिन बजट के अंदर क्या है जो आज मैं आपको निवेदन करना चाहता हूं। बजट की किताब आपके पास है, ठीक है, जो-जो मैं बताऊं आप अगर नोट कर लें या आपके कोई अधिकारी बैठे हैं नोट कर लें तो मैं समझता हूं आपके हित में रहेगा। पेज 2, सीरियल नम्बर 4, बिजली की बात कर लो। मैं कह रहा हूं बिजली तो अभी नहीं मिल रही। ईमानदारी से कोई सदस्य कह दे कि उसके क्षेत्र में 8 घण्टे बिजली मिली है क्या? अगर यहां हां कर लोगे तो जब गांवों में जाएंगे तो जनता कहेगी कि असत्य हां कैसे कर आये।

श्रीमती राजकुमारी शर्मा (सीकर): ×××

मोहम्मद माहिर आजाद (नगर): आपने वादा 8 का किया है, 5 या 6 की हम भी मानते हैं। 8 घण्टे तो कहीं नहीं मिली इसलिए हम बात कर रहे हैं। आप तो सीकर की कर रहे हो, गांव की स्थिति क्या है? (व्यवधान) आप तो सुन लो। आपका तो खेती से कोई वास्ता ही नहीं है।

श्री हरिमोहन शर्मा (हिण्डौली): ×××

मोहम्मद माहिर आजाद (नगर): वह तो एक भी नहीं बोला। माननीय सभापति महोदय, इतने सदस्यों में से एक बोली, मैं राजकुमारी जी को धन्यवाद देता हूं बहुत सच्ची महिला हैं, धार्मिक प्रवृत्ति की हैं, उन्होंने कहा कि 8 घण्टे नहीं मिल रही, 6 घण्टे मिली। बाकी सबको तो सांप सूंघ गया। यह स्थिति तो यहां हैं इनके दस्तावेजों की।

श्री जोगाराम पटेल (संसदीय सचिव): ×××

मोहम्मद माहिर आजाद (नगर): सुन लो मेरी बात। (व्यवधान) प्लीज आप बैठ जाइए। मैं कह रहा हूं आप बैठ जाएं, वर्ना किसी को नहीं बोलने दूंगा। आप बैठ जाएं। आप बैठ जाओ।

श्री महावीर प्रसाद जैन (मुख्य सचेतक): ×××

मोहम्मद माहिर आजाद (नगर): अगर यह संसदीय सचिवों को अवैध बताया हमारी पार्टी ने गलत नहीं बताया, सही बात है। हम जानते हैं, वैध और अवैध संतान में कितना फर्क होता है, जायज और नाजायज में। बहुत बढ़िया बताया, और बोलो उसको, माननीय सभापति महोदय, ...(व्यवधान)

सभापति महोदय, मैंने घड़ी में टाइम देख लिया था, मैं बोला था। तब डिस्टर्बेंस को काटूंगा, डेढ़ घंटा बोलूंगा, उससे पहले बैठूंगा नहीं। (व्यवधान)

श्री सभापति: सभी माननीय सदस्य अपना स्थान ग्रहण करें। (व्यवधान) जो भी आपत्तिजनक शब्द बोले जा रहे हैं उसको अंकित नहीं किया जाएगा। (व्यवधान)

मोहम्मद माहिर आजाद (नगर): नहीं, नहीं, मैंने यह नहीं कहा, गलत। मैंने कहा है कि संसदीय सचिवों को मतलब जो डाउन साइज से ज्यादा हैं उनको ज्ञापन दिया है, हमने तो सदन में भी कहा है कि ये लीगल नहीं हैं। लीगल नहीं हैं, वे इल्लीगल हैं। इसमें क्या दिक्कत आ गई। (व्यवधान)

श्री महावीर प्रसाद जैन (मुख्य सचेतक): ×××

मोहम्मद माहिर आजाद (नगर): देखो, आप अब धर्म पर आ गये।

श्री सभापति: बैठिए, माननीय सदस्य।

मोहम्मद माहिर आजाद (नगर): सभापति महोदय, महावीरजी ने अभी धर्म और जाति का, आपको कह रहा हूं महावीरजी, खास कर आपको-

(मोहम्मद माहिर आजाद)

शान वाले हैं, शान रखते हैं और तीरो-कमान रखते हैं,
तल्ख लहजे में मुझसे गुफ्तगू मत करना,
हम भी मुंह में जबान रखते हैं।

श्री महावीर प्रसाद जैन (मुख्य सचेतक): ×××

मोहम्मद माहिर आजाद (नगर): सभापति महोदय, मेरे को बोलने दो। मेरे पास इतनी सारी चीजें हैं, महावीरजी, प्लीज, आप मेरे पिताजी के समान हो, बैठ जाइए, महाराज। अब मैं जैसा हूं, वो ही आप हो, इसमें फर्क नहीं है अपने दोनों में, एक से ही हैं, बैठ जाइए आप। (व्यवधान)

श्री सभापति: हां, बोलिए, माननीय सदस्य। आप बोलिए।

मोहम्मद माहिर आजाद (नगर): मैं आपसे निवेदन यह कर रहा था।

श्री महावीर प्रसाद जैन (मुख्य सचेतक): ×××

मोहम्मद माहिर आजाद (नगर): अच्छा, सभापति महोदय, इनको मैं अपने बेटे के समान कह नहीं सकता, अगर पिता के समान कह दिया, इस पर बताइए, क्या दिक्कत हो गई ?

श्री सभापति: नहीं, आप दोनों अलग से चैम्बर में मिल लेना, आपकी दोनों की शंका का समाधान कर दूंगा मैं।

मोहम्मद माहिर आजाद (नगर): यह आपके निवाई का मामला है, आप जानो। माननीय सभापति महोदय, मैं यह निवेदन कर रहा था। (व्यवधान) आपकी सारी जांच हो जाएगी अगले साल, चिंता ही मत करो आप। माननीय सभापति महोदय, मैं निवेदन कर रहा था, बिजली की स्थिति छिपी नहीं है। अब पानी पर आ जाइए। इन्होंने कहा लोगों को हमने पर्याप्त और स्वच्छ पेयजल उपलब्ध कराया। राजस्थान में पहले कभी पानी से मौतें हुई थीं? पानी से मौतें हो रही हैं। कभी जानवर निकल रहे हैं पाइप लाइनों में, कभी कुछ हो रहा है। मुख्य मंत्री मंत्रीजी को रोज डांट रही हैं, मंत्रिमण्डल की बैठक में भी डांट रही हैं, कार्य सलाहकार समिति में भी डांट रही हैं, अखबारों में भी छप रहा है। माननीय सभापति महोदय, यह स्थिति पानी की है। पानी मांगो तो गोली मिल रही है, सोहेला में मांगे तो गोली। ये टौंक के लोग बैठे हैं, अब ये नहीं बोलें, इनका तो क्या करें इलाज ? मुख्य मंत्रीजी ने कल तो फरमान ही जारी कर दिया कि लिख कर दे दो, बोलने की जरूरत नहीं है।

(मोहम्मद माहिर आजाद)

तालाबंद, मुख बंद। मैंने जैन साधुओं को तो मुंह पर कपड़ा लगा देखा था सफेद, महावीरजी, आप भी लगा लो आज से, कल से आप बिना कपड़ा लगाए मत आना, मुंह बंद।

श्री महावीर प्रसाद जैन (मुख्य सचेतक): ×××

मोहम्मद माहिर आजाद (नगर): पलसाना में हुआ, सब जगह हुआ।

श्री महावीर प्रसाद जैन (मुख्य सचेतक): ×××

मोहम्मद माहिर आजाद (नगर): यह भी कला होती है, सीखो कला।

श्री महावीर प्रसाद जैन (मुख्य सचेतक): ×××

मोहम्मद माहिर आजाद (नगर): माननीय सभापति महोदय, मैं चार मिनट बोला हूं अभी, बाकी डिस्टर्बेंस में गया, मैं नोट कर रहा हूं। (व्यवधान) अब आप कहोगे तो फिर मैं लेकर भी आया हूं सब, ऐसे नहीं है। पेज वाइज बता रहा हूं मैं तो। (व्यवधान) मैंने तो टौंक महावीरजी के लिए छोड़ रखा है, मैं टौंक जाता ही नहीं हूं। (व्यवधान)

श्री सभापतिः दोनों माननीय सदस्य अपना स्थान ग्रहण करें।

मोहम्मद माहिर आजाद (नगर): टौंक का मुझे नहीं मालूम। (व्यवधान) अब माननीय सभापति महोदय, आजादी के 60 साल बाद यहां तत्कालीन शिक्षा मंत्रीजी ने कहा था, राजस्थान में शिक्षा में आमूल-चूल परिवर्तन कर देंगे और अगले शैक्षणिक सत्र तक सारी स्कूलों में अध्यापकों के पद भर देंगे। बड़े शर्म की बात है। यह हंसने की बात भी नहीं है। मैं आज भी कह रहा हूं, अध्यापकविहीन विद्यालय हैं आज भी राजस्थान में। अध्यापक विहीन विद्यालय होते हैं कहीं कि छात्र-छात्राएं आ रहे हैं और अध्यापक नहीं हैं? नहीं, हों तो बता दीजिए। आपने मेरे एक सवाल के जवाब में कहा है। यह आपके चार साल के अन्दर आपकी उपलब्धि है कि आप अध्यापकों के सारे पद भर रहे थे। मैं उर्दू के अध्यापकों की बात ही नहीं करता कि आपने नहीं लगाये। उसकी तो आपसे उम्मीद ही नहीं की जा सकती। लेकिन अध्यापक-विहीन विद्यालय कोई सुनने में नहीं आया था, आज अध्यापकविहीन विद्यालय आपके चल रहे हैं। (व्यवधान) यह क्या है, आप निर्दलीय आ गये कि क्या आफत हो गई? मेरे मित्र हो फिर भी। (व्यवधान) सभापति महोदय, ऐसे तो मेरा भाषण हो गया।

श्री सभापतिः आप दोनों माननीय सदस्यों को बहुत-बहुत धन्यवाद।

(श्री सभापति)

आप बिना अनुमति के बार-बार बोलते हैं, अपने विधान सभा क्षेत्र में ऐसे ही करना आप लोग। (व्यवधान)

मोहम्मद माहिर आजाद (नगर): हम भी आए हैं आपके जैसे पहले। (व्यवधान) माननीय सभापति महोदय, ऐसे तो आपको दो घंटे के बजाय दो दिन बढ़ाना पड़ेगा फिर सदन का समय। तब मेरी बात पूरी होगी, ऐसे तो होगी नहीं।

माननीय सभापति महोदय, मैं आपसे निवेदन कर रहा था, बजट भाषण के पेज 3 के सीरियल नम्बर 6 को पढ़ें, इसमें क्या कह रही हैं। अगले पांच वर्षों में राजस्थान को देश के विकसित राज्यों की अग्रिम श्रेणी में जरूर ला खड़ा करेंगी, यानी आज की तारीख में तो नहीं है।

(समय : 17.47 बजे)

(श्री शांतिलाल चपलोत, सभापति, पदासीन)

अगर आज विकसित हैं तो अगली बार क्या करोगे आप ? इसका मतलब 4 साल में तो भट्ठा बैठा दिया, आपको पांच साल और चाहिए। आप खुद लिख रहे हो, इसमें पढ़ लो आप। अगर नहीं लिखा है तो किसने लिखा है। लिख रहे हैं कि अगले पांच वर्ष में राजस्थान को देश के विकसित राज्यों की अग्रिम श्रेणी में जरूर ला खड़ा करेंगी। मैं आज अपने बजट प्रस्ताव इसी भावना और लक्ष्य को सामने रख कर प्रस्तुत कर रही हूं। अगले पांच वर्ष किसने देखे? ये मुंगेरी लाल के हसीन सपने। राजेन्द्रजी, पिछली बार भी यह हुआ था कि 32 रह गये थे। इस संख्या के घमण्ड में किसी को नहीं रहना चाहिए।

श्री राजेन्द्र राठौड़ (सार्वजनिक निर्माण मंत्री): ×××

मोहम्मद माहिर आजाद (नगर): 56, आपसे डबल।

श्री राजेन्द्र राठौड़ (सार्वजनिक निर्माण मंत्री): ×××

मोहम्मद माहिर आजाद (नगर): आपसे तो ज्यादा आये। माननीय सभापति महोदय, अगर हमारा एक घटा तो हम तो 56 रह गये ...(व्यवधान) आपका एक घटेगा तो 20 ही रह जाओगे आप तो। गणित तो देखें आप।

माननीय सभापति महोदय, इसी तरीके से पेज 3 के सीरियल नम्बर 7 पर देखें आप, जहां आपकी इच्छा हो रही है वहां तो आप आर ई ले रहे हैं, रिवाइज्ड एस्टीमेट, जहां आपकी इच्छा हो रही है, वहां लिख रहे हो आप बजट

(मोहम्मद माहिर आजाद)

एस्टीमेट, यानी जो आपको सूट करे, वह काम आप करने का काम कर रहे हो। इसी तरीके से आपने पेज 9 सीरियल 17 पर कहा है कि जो गैर आबाद गांव हैं उनमें भी अगर 10 फाइल जमा होंगी तो एक किलोमीटर तक हम 3,500 रुपये में घरेलू कनेक्शन दे देंगे। कब दे देंगे ? 2008-09 में। मतलब घोषणा आपने कर दी और कनेक्शन देने का जिम्मा हमारे ऊपर डाल दिया। वाह वाह, बहुत बढ़िया, साहब, राजेन्द्रजी, क्या अजीब बात है?

श्री राजेन्द्र राठौड़ (सार्वजनिक निर्माण मंत्री): ×××

एक माननीय सदस्य: ×××

मोहम्मद माहिर आजाद (नगर): आप दिसम्बर 8 तक करो

मैं भी कह रहा हूं। आज घोषणा कर रहा हूं कि दिसम्बर, 2009 में, राजेन्द्रजी, आपको राजस्थान का उप मुख्य मंत्री बना दूंगा। यह क्या बात हुई? मतलब जो चीज आपके वश में नहीं है उसको आप यहां हाउस में कह कर राजस्थान की जनता को मूर्ख बनाने का काम कर रहे हो। कहीं तो कोई स्थिति होगी। मुख्य मंत्री सब के लिए विद्युत योजना चला रही हैं। पेज 14, सीरियल नम्बर 26 पर आप देखें। राजकीय कार्य क्या होता है, राजकीय सेवा के बारे में पेज नम्बर 14 पर देखिये। इस 14 में आप कह रहे हैं कि ढाई लाख व्यक्तियों को जुड़ने का मौका दिया गया। आप तो कह रहे थे कि एक साल में एक लाख लोगों को रोजगार देंगे, फिर ये 4 लाख होने चाहिए थे। यह ढाई लाख तो आप ही लिख रहे हो और यह भी कि जुड़ने का मौका दिया गया। यह नहीं लिखा है आपने कि आपने ढाई लाख लोगों को सरकारी नौकरी दी। अगर दी हो एक लाख प्रति ईयर के हिसाब से तो, माननीय सभापति महोदय, मैं आपके माध्यम से कहना चाहता हूं कि सरकार उन चार लाख लोगों की लिस्ट को टेबल करे जिनको इन्होंने चार साल के अन्दर सरकारी नौकरी मुहैया कराई हो। अगर हिम्मत है तो टेबल करिये आप। आपके अलग-अलग आंकड़े हैं, अभी किशनपोल से आने वाले माननीय सदस्य बोल रहे थे, वो कुछ और बता रहे थे।

श्री ज्ञानचन्द पारख (पाली): ×××

मोहम्मद माहिर आजाद (नगर): आपका यह दस्तावेज है। (व्यवधान) मेरी बात क्यों कर रहे हैं? अभी उनको ही रोते रहोगे क्या? एक औरत भी 40

(मोहम्मद माहिर आजाद)

दिन बाद या 12वें के बाद चुप हो जाती है और आप पांच साल में भी रोते रहोगे क्या? (व्यवधान) अब तो बंद कर दो। (व्यवधान) 40 दिन के बाद, हमारे 40वें दिन चुप हो जाती है। (व्यवधान)

श्री ज्ञानचन्द पारख (पाली): ×××

मोहम्मद माहिर आजाद (नगर): यह देखो आप। इनकी हालत देखो। पाँच साल में तो चुप हो जाओ। देखो तो सही जरा इनकी स्थिति। पढ़ते रहो क्या? (व्यवधान) कल्ला साहब, आप ब्राह्मण हो, आपके 12वें दिन उठावणा हो जाता है न? हमारे 40वें में हो जाता है। ये चार साल में ही रो रहे हैं। अभी तक आपका उठावना ही नहीं हो रहा है क्या? हमें ही करना पड़ेगा यह काम भी? (व्यवधान)

(समय : 17.52 बजे)

(श्री राव राजेन्द्र सिंह, सभापति, पदासीन)

अब आइये पेज 17 पर। पेज नम्बर 17, इसमें तो मुझे आपकी भौगोलिक और राजस्थान की राजनैतिक स्थिति की समझ पर भी तरस आ रहा है। माननीय सभापति महोदय, आप खुद भी जानते हैं, आप देखिये, पेज नम्बर 17 पर क्या लिखा है सीरियल 30-31 में। इन्होंने लिखा है - ''मेरा दृढ़ विश्वास है कि हमारी अगली पीढ़ी के लिए कम्प्यूटर शिक्षा बिल्कुल आवश्यक है। वर्तमान में 3 हजार 500 माध्यमिक अथवा उच्च माध्यमिक विद्यालय ऐसे हैं जिनमें कम्प्यूटर शिक्षा की व्यवस्था नहीं है। आप कह रहे हो कि हम इसमें फ्री कम्प्यूटर दे देंगे। आप सीरियल 32 में क्या कह रहे हो कि प्रदेश के 14 शहरों में अल्पसंख्यकों की संख्या अधिक है तथा महिला साक्षरता दर कम है। इसी प्रकार रेगिस्तानी इलाके में तीन पंचायत समितियां ऐसी हैं जहां जनसंख्या घनत्व 20 व्यक्ति प्रति वर्ग किलोमीटर से कम है। इन इलाकों की विशिष्ट समस्या को देखते हुए मैं घोषणा हूं कि राजगढ़, सरदारशहर, चूरू, रतनगढ़, सूरजगढ़.... माननीय सभापति महोदय, मैं दावे के साथ आपको कह सकता हूं कि यह सूरजगढ़ मिसप्रिंट हो गया और इसको आपने प्रूफ रीडिंग में नहीं देखा, न आपने देखा- न आपके अधिकारियों ने देखा, न आपके मुख्य मंत्रीजी ने देखा। यहां काका सुन्दरलालजी बैठे हैं जो सूरजगढ़ से विधायक आते हैं। सूरजगढ़ में तो अल्पसंख्यक आबादी ही नहीं है। यह सुजानगढ़ की जगह सूरजगढ़ छप गया। देख लो, आप सोच लो, विचार कर लो, अगर मैं

(मोहम्मद माहिर आजाद)

गलत हूं तो। यह सुजानगढ़ है जहां थिकली माइनोरिटीज की पापुलेशन है। आपने ये सारे जो कस्बे लिखे हैं राजगढ़, सरदारशहर, चूरू, रतनगढ़, झुन्झुनूं, नवलगढ़, गंगापुरसिटी, फतेहपुर, सीकर, लाडनूं, नागौर, मकराना और टौंक, मेहरबानी करके इसको करैक्ट कर लें। सूरजगढ़ में तो केवल 56 घर हैं अल्पसंख्यकों के। थिकली पापुलेटेड नहीं है। इसको आप सुजानगढ़ कर लें ताकि वहां के अल्पसंख्यकों को इसका लाभ मिल सके। और आइंदा से यह दस्तावेज इस सदन में रखने से पहले अधिकारी देख लें, मुख्य मंत्रीजी देख लें। उनको समय नहीं है तो आप जो उनके इर्द-गिर्द रहते हो न छाया की तरह, कम से कम आप तो देख लेते। आप तो भिड़े हुए हो इन इलाकों से, आपको तो एक-एक जगह का पता है। इसलिए मेरा आपसे अनुरोध है कि इसको आप सुजानगढ़ करने का कष्ट करें। सही हूं या नहीं हूं साहब?

श्री विजय बंसल (भरतपुर): ×××

मोहम्मद माहिर आजाद (नगर): यह कब कहा मैंने?

श्री विजय बंसल (भरतपुर): ×××

मोहम्मद माहिर आजाद (नगर): ....आप तो हमारे पास आ रहे हो, कभी राजद के पास जा रहे हो, कभी इनेलो में जा रहे हो। आप मेरे से अलग से बात कर लेना, अपन तो साथ ही रहेंगे, अपन आएंगे यहां। क्या इनके चक्कर में पड़ रहे हो?

श्री हेमराज मीणा (किशनगंज): ×××

मोहम्मद माहिर आजाद (नगर): ये वित्त मंत्री नहीं हैं। सैटिंग ऐसी होती है क्या? यह यूरोपीय देश नहीं है जहां सैटिंग हो जाती हो।

श्री विजय बंसल (भरतपुर): सभापति महोदय, पाइंट ऑफ इन्फार्मेशन।

मोहम्मद माहिर आजाद (नगर): I am in possession of the Floor of the House. हाउस के फ्लोर पर मेरा कब्जा है।

श्री राजेन्द्र राठौड़ (सार्वजनिक निर्माण मंत्री): ×××

मोहम्मद माहिर आजाद (नगर): किसको? आप ही दे देना इनकी तरफ से। ये मेरे मित्र हैं, इनको आप मत उकसाओ।

सूचना

विश्वविद्यालय हेतु भरतपुर में चल रहा आन्दोलन

श्री विजय बंसल (भरतपुर): एक मिनट। माननीय सभापति महोदय, पाइंट ऑफ इन्फार्मेशन के माध्यम से मैं यह कहना चाह रहा हूं कि पिछले काफी समय से भरतपुर में यूनिवर्सिटी खोले जाने के बाबत् बहुत बड़ा आंदोलन हो रहा है और वह आंदोलन हिंसक रूप ले चुका है। अभी-अभी मुझे खबर मिली है कि करीब 50 छात्र वहां पानी की टंकियों पर चढ़ गये हैं और आत्मदाह की धमकी दे रहे हैं। सभापति महोदय, मैं आपके माध्यम से सदन से आग्रह करना चाहूंगा कि कोई अनहोनी नहीं हो इसके लिए सरकार कोई न कोई ऐसा वक्तव्य दे जिससे वह आंदोलन और जन-हानि होने से रुक सके।

श्री सभापति: मैं संसदीय कार्य मंत्रीजी से निवेदन करूंगा कि इस बारे में आप जो भी हो....

श्री राजेन्द्र राठौड़ (सार्वजनिक निर्माण मंत्री): सभापति महोदय, मालूम करके।

श्री सभापति: आप जानकारी करके करें। एक मिनट, आप सब से निवेदन है कि जो सम्माननीय सदस्य बोल रहे हैं, आप उनको अपना वक्तव्य अच्छी तरीके से बोलने दें। अगर बीच में टीका-टिप्पणी हुई तो सदन का वक्त भी बर्बाद होता है और सज्जन अपनी बात भी पूरी तरीके से नहीं कह पाते। आप सब से भी यह निवेदन है कि आसन की तरफ देखें।

आय व्ययक पर सामान्य वाद-विवाद

मोहम्मद माहिर आजाद (नगर): अब अर्जुन सिंहजी, आपको देखे बिना तो मैं रह नहीं सकता। आपको देखे बिना तो रह ही नहीं सकता। माननीय सभापति महोदय, इसके बाद इन्होंने कहा कि कोलायत, जैसलमेर और सम पंचायत समितियों में उच्च प्राथमिक विद्यालय के विद्यार्थी हेतु एक-एक छात्रावास खोला जाएगा। मेरा इसमें भी सुझाव यह है कि दो क्षेत्र और इसमें रह गये हैं जो हमारे सीमावर्ती इलाके हैं। एक हमारे माननीय उपाध्यक्ष का स्वयं का निर्वाचन क्षेत्र है फलौदी और एक पोकरण है। एक जोधपुर जिले का फलौदी है और एक आपके जैसलमेर जिले का पोकरण है। इन दोनों में भी सिंधी मुसलमान अल्पसंख्यकों की बहुतायत है। अगर वो भी शिक्षा की मेनस्ट्रीम से जुड सकें तो मैं समझता हूं कि आपको इसमें उनको जोड़ने का काम करना चाहिए।

(मोहम्मद माहिर आजाद)

माननीय सभापति महोदय, मैं आपके पेज 21 सीरियल नम्बर 41 की तरफ ध्यान दिलाना चाहूंगा, ''दसवीं कक्षा में 75 प्रतिशत से ज्यादा अंक प्राप्त करने वाली छात्राओं को सीनियर सैकण्डरी कक्षाओं में पढ़ने के दौरान एक हजार रुपये प्रतिवर्ष की दर से गार्गी पुरस्कार दिया जाता है। वर्तमान में ऐसी 13 हजार छात्राएं हैं। मैं इस राशि को बढ़ाकर 1500 रुपये प्रतिवर्ष कर रही हूं।'' यानि इसको 75 प्रतिशत आपने किया है। माननीय सभापति महोदय, मैं पूछना चाहता हूं कि संसदीय कार्य मंत्रीजी के कभी 60 प्रतिशत भी अंक आये क्या अपनी स्टूडेंट लाइफ में? मैं भी पढ़ता था, मेरे भी नहीं आये, इनके भी नहीं आये। आप उस आदिवासी बालिका से जहां टीचर नहीं है, सब्जैक्ट का टीचर नहीं है, वर्षों से टीचर नहीं हैं, लाइट आती नहीं है पढ़ने के लिए और आप उससे 75 प्रतिशत की अपेक्षा कर रहे हो। यह अच्छी बात नहीं है। इसलिए मेरा निवेदन है कि इस 75 प्रतिशत को घटाकर 60 प्रतिशत किया जाना चाहिए। हमारी हमसे पूछ लेना आप। इसी तरीके से मैं आपसे यह निवेदन करना चाहता हूं आप यह भी कृपया बताएं कि गार्गी पुरस्कार कितनी बालिकाओं को पिछले साल दिये हैं, आपने इतना बजट रखा था। मैं समझता हूं कि इसमें 75 प्रतिशत की अर्हता रखने वाली बालिकाएं नहीं आई होंगी। (व्यवधान) 13 आई हैं। अब बताइये, 13 बालिका हैं। 60 प्रतिशत करने पर सहमत हो या नहीं हो आप? यह बोलो, ठीक है, खतम बात। समर्थन करो न, ज्यादा क्यों कर रही हो।

(समय : 18.00 बजे)

पेज 31 पर आप जाएं। पेज 31 के ऊपर आप जरा देखें। पेज 31 में आपने लिखा है, बिन्दु 64 का एंड है, चालू वित्त वर्ष में हम इतने मेडिकल कालेज खोलेंगे, इतने आयुर्वेद कालेज खोलेंगे, इतने अपग्रेडेशन करेंगे, इतना यह करेंगे, इतना वह करेंगे लेकिन इसमें आपने एक भी यूनानी चिकित्सालय नहीं लिया है। यूनानी पैथी भी भारत की बहुत पुरानी चिकित्सा पद्धति है चाहे दो-चार ही खोलते, कम से कम इसका नाम भी इसमें आना चाहिए था। इसलिए मेरा आपसे निवेदन है कि कृपया आप इसमें यूनानीपैथी को भी लेने का काम करें।

पेज 38 देखें आप, इसमें क्या कह रहे हैं आप।

श्री मदन राठौड़ (सुमेरपुर): ×××

मोहम्मद माहिर आजाद (नगर): 24 को 34 पढ़ते हो क्या? चश्मे का

(मोहम्मद माहिर आजाद)

नम्बर चेंज कराओ। मैं पिछले साल की बात नहीं कह रहा हूं, मैं अगले बजट की बात कर रहा हूं। मदनजी, इतना तो सीखो। हां, बोलने खड़े हो जाते हो।

मैं, सभापति महोदय, निवेदन कर रहा हूं, जरा पेज 38 के सीरियल नम्बर 81 को पढ़ें, आपने इसमें क्या लिखा है। "वर्ष 2003 के शेष रहे लगभग सभी 66,000 आवेदकों को डिमाण्ड नोट अप्रैल से अक्टूबर, 2008 तक की अवधि में जारी कर मार्च, 2009 तक कनेक्शन दे दिये जाएंगे।" अब मार्च, 2009 में आपकी सरकार रहेगी क्या? काहे को रहेगी? कहां से रहेगी? भूल जाओ। (व्यवधान) आप क्या कह रहे हो। फिर इसी में कह रहा हूं "वादे से भी अधिक, 26,000 स्पेशल कैटेगरी के आवेदकों को भी आने वाले वित्तीय वर्ष में कनेक्शन दे दिये जाएंगे।" आने वाले यानी 2011, 2012, 2015, 2020, आप तो 100 साल जीओगे। आपकी उम्र तो गिद्ध से भी ज्यादा हो रही है। कब दोगे, कौन से साल में दोगे, यह तो बताओ आप? इसी तरह से आगे लिख रहे हो आप, "यही नहीं, वर्ष 2004 से अब तक बिजली कम्पनियों को लगभग 60,000 और आवेदन प्राप्त हुए हैं। मैं घोषणा करती हूं कि इन सबको भी 2009 तक कनेक्शन दे दिये जाएंगे।" दिसम्बर, 2009 तक। कार्यकाल खतम हो रहा है 2008 में और कनेक्शन दे रहे हो 2009 में। बहुत बढ़िया काम आप कर रहे हो। आगे लिख रहे हो आप, "अतः लगभग एक लाख 50,000 कनेक्शन वर्ष 2009 तक दिये जाएंगे, जिससे कि दिसम्बर, 2007 तक प्राप्त हुआ एक भी आवेदन वर्ष 2009 के बाद शेष नहीं रहेगा। मुझे आशा है कि तत्पश्चात् किसानों को कनेक्शन आन डिमाण्ड मिला करेगा।" आप यह बात शपथ लेकर कह सकते हो क्या कि आन डिमाण्ड दिया जाएगा? चार साल में आप दे नहीं पाये।

श्री प्रद्युम्न सिंह (राजाखेड़ा): ऐसा है, इस साल के डिमांड नोटिस जमा हो गये हैं, संसदीय कार्य मंत्रीजी, उनको तो आज दिन तक भी कनेक्शन नहीं मिला है अभी। आपने इतने मैसिव प्रोग्राम की घोषणा कर दी है, ईश्वर करे, यह पूरी हो जाये। लेकिन यह असम्भव है। मैं आपसे कहता हूं, जब बिजली ही नहीं है, कहां से दोगे आप? जिनके पहले डिमांड नोटिस जारी हो गये हैं, उनको तो अभी तक मिले नहीं हैं, आप क्या बात कर रहे हो? यह कहां से इन्कोरपोरेट कर दिया है इसके अन्दर आप लोगों ने?

श्री ज्ञानचन्द पारख (पाली): ×××

मोहम्मद माहिर आजाद (नगर): माननीय सभापति महोदय, मैं निवेदन कर रहा हूं, पेज 46 पर आपने लिखा है कि जो भूतपूर्व सैनिक हैं, हम उनको नौकरियों में प्राथमिकता देंगे। मैं इस बात का स्वागत करता हूं, सम्मान करता हूं और आपसे यह निवेदन करता हूं कि अगर वनों की रक्षा चाहते हो और वन्य जीवों की रक्षा चाहते हो तो उसके जो खाली पद पड़े हुए हैं, उनको भी आप इन भूतपूर्व सैनिकों से भरने का काम करें।

सभापति महोदय, पेज 48 के सीरियल नम्बर 102 पर देखिये, इसमें कह रहे हैं कि "इस अभियान को जारी रखते हुए मैं घोषणा करती हूं कि राज्य सरकार ने अनुसूचित जनजाति की छात्राओं को 75 प्रतिशत अंक प्राप्त करने पर स्कूटी प्रदान करने की जो योजना बनाई थी, उसमें संशोधन कर अब अनुसूचित जनजाति उप योजना क्षेत्र के विद्यालयों में पढ़ने वाली बच्चियों के लिए अंक आवश्यकता को 65 प्रतिशत किया जाएगा।" आपने स्कूटी देने की घोषणा कर दी कितनी बच्चियां आईं? छह कुल, और स्कूटी कितनी बच्चियों को दी है आपने? छह को, मैं बता रहा हूं आपको। अच्छा, आप बता दो। अगर छह से ज्यादा दी हों तो आप बता दो। अगर मैं गलत हूं तो आप मुझे करैक्ट कर दें। आपने पिछले साल के बजट में कितना रखा है और छह स्कूटी आप दे रहे हैं। अब कह रहे हैं कि हम 75 प्रतिशत से घटाकर 65 प्रतिशत कर रहे हैं। मेरा आपसे फिर निवेदन है कि इसको भी आप 65 की बजाय 60 प्रतिशत कर दीजिये। माननीय सभापति महोदय, मैं आपके माध्यम से सरकार से निवेदन करना चाहता हूं कि इसको भी आप 60 प्रतिशत करने का काम कर दें।

अब आइये पेज नम्बर 55 पर, आपने 121 में लिखा है, "नेशनल रूरल एम्प्लायमेंट गारंटी स्कीम का विस्तार कर इसे एक अप्रैल, 2008 से पूरे राज्य के ग्रामीण क्षेत्रों में लागू किया जा रहा है।" कौन लागू कर रहा है? राजनाथजी कर रहे हैं, आप कर रहे हैं, हम कर रहे हैं, यू.पी.ए. कर रही है? यह लिखने में शर्म आ रही थी आपको कि इसको हम कर रहे हैं? इतना तो एहसान-फरामोश आदमी को नहीं होना चाहिए। वहां पर जाओ, तब तो आप सबकी तारीफ करो- योजना आयोग की भी, मोटेंक सिंहजी की भी, प्रधानमंत्रीजी की और इसमें आप यह लिख रहे हो कि नेशनल रूरल एम्प्लायमेंट गारंटी स्कीम का विस्तार कर इसे एक अप्रैल, 2008 से पूरे राज्य के ग्रामीण क्षेत्रों में लागू किया जा रहा है। फोटो तो आप लगाओ या नहीं लगाओ, औरों में तो आप लिख रहे हैं कि यह हम कर रहे हैं, यह फलाना कर रहे हैं। यह मुक्तिधाम योजना हो रही है, यह बैकुंठधाम योजना हो रही है। यह

(मोहम्मद माहिर आजाद)

नरक में जाने की हो रही है, यह स्वर्ग में जाने की हो रही है। और इसमें आपको यह लिखने में शर्म आ रही है कि यह योजना लागू कौन कर रहा है। इसलिए मेरा आपसे निवेदन है कि इतना एहसान-फरामोश नहीं होना चाहिए। इसमें आप लिखिये कि भारत सरकार...

श्री मोहन लाल गुप्ता (किशनपोल): ×××

मोहम्मद माहिर आजाद (नगर): आप बोले तब मैं नहीं बोला। आप अपनी जेब से दे रहे हैं? यह महारानी लाई हैं क्या? पोल्ट्री फार्म बेचकर यह महारानी लाई हैं क्या?

श्री मोहन लाल गुप्ता (किशनपोल): ×××

मोहम्मद माहिर आजाद (नगर): यह पूना से, ग्वालियर से महारानी लाई हैं क्या? यह धौलपुर से लाई हैं क्या? (व्यवधान) आप सुन लो मेरी बात।

श्री मोहन लाल गुप्ता (किशनपोल): ×××

मोहम्मद माहिर आजाद (नगर): मैं उसमें भी आउंगा। अब सेन्ट्रल स्पोन्सर्ड स्कीम और केन्द्र ने जो पैसा दिया है, उस पर भी आऊंगा, आप सुनने की हिम्मत तो रखो।

श्री मोहन लाल गुप्ता (किशनपोल): ×××

डा. बुलाकीदास कल्ला (बीकानेर): On a point of order.

श्री सभापतिः आदरणीय सदस्यजी, आप विराज जाइये कृपा करके। बगैर कोई इजाजत अपनी जगह से खड़े नहीं हों।

डा. बुलाकीदास कल्ला (बीकानेर): सभापति महोदय, मेरा पाइंट आफ आर्डर यह है, इन नियमों में यह व्यवस्था दे रखी है कि कोई भी माननीय सदस्य अपना भाषण दें आपकी इजाजत से, तो कोई व्यक्ति व्यवधान नहीं करेगा। मैं कम से कम 20-25 मिनट से देख रहा हूं कि हमारे माननीय सदस्य बोल रहे हैं तो उधर से व्यवधान हो रहा है, तो आप उनको नियमों का पालन करवाइये।

श्री मोहन लाल गुप्ता (किशनपोल): ×××

डा. बुलाकीदास कल्ला (बीकानेर): मैं उस समय मीटिंग में गया हुआ था। मैं उस समय मीटिंग में गया हुआ था।

मोहम्मद माहिर आजाद (नगर): कोई नहीं बोला, आपके भाषण में कुछ था ही नहीं। (व्यवधान)

श्री सभापति: आप कृपा करके थोड़ी देर के लिए शांत हो जाएं। Let us adhere to it in letter and spirit.

डा. बुलाकीदास कल्ला (बीकानेर): मुख्य मंत्रीजी जवाब देंगे जो ये बोलेंगे। आपको बोलने की क्या आवश्यकता है?

श्री सभापति: एक मिनट, मैं आपसे भी निवेदन करना चाहूंगा, आपने 5.25 पर चालू किया है। मैं आपसे निवेदन कर रहा हूं कि अगले 10 मिनट में आप इस चीज को कनक्लूड कर दें।

मोहम्मद माहिर आजाद (नगर): साहब, 10 मिनट कैसे है, माननीय सभापति महोदय, 20 मिनट तो व्यवधान में ही निकल गये। खैर, आपके आदेश का पालन करूंगा।

श्री सभापति: और मैं आप सबसे निवेदन कर रहा हूं कि माननीय सदस्य बोल रहे हैं, वे अपनी बात सही तरीके से बोलें और नियत समय में बोल लें, आप माननीय सदस्य व्यवधान नहीं डालेंगे तो यह कार्य अपने तरीके से पूरा हो जाएगा।

मोहम्मद माहिर आजाद (नगर): तो मेरा आपसे निवेदन इतना ही था, माननीय सभापति महोदय, कि कम से कम इतनी बड़ी योजना लागू की है और हर व्यक्ति को साल में 100 दिन का रोजगार का कानूनी अधिकार दे दिया, ऐसे प्रधानमंत्री डाक्टर मनमोहन सिंह और ऐसी यू.पी.ए. की अध्यक्षा आदरणीय सोनियाजी के तो इनको चरण धोकर पीने चाहिए थे कि इन्होंने राजस्थान का उद्धार करने का काम कर दिया। और इसमें नाम तक नहीं लिखने का काम इन्होंने किया है। ऐसी योजना तुम लागू कर दो कि राजस्थान के हर व्यक्ति को रोजगार देने का काम करेंगे तो लो, हम आपकी जय-जयकर करेंगे। एक अच्छी बात को अच्छी नहीं कह सकते। बहुत अच्छा किया है।

दूसरा निवेदन, माननीय सभापति महोदय, मैं आपके माध्यम से यह कहना चाहता हूं, इन्होंने इसमें कहा है कि जो महिला श्रमिक 100 दिन का काम पूरा कर लेगी, उसको एक साड़ी या उसकी कीमत की लूगड़ी या घाघरा दिया जाएगा। माननीय सभापति महोदय, मैं थोड़ा-सा क्लैरिफिकेशन चाहता हूं क्योंकि 100 दिन तो काम करना ही नहीं है। यू.पी.ए. की अध्यक्षा और प्रधान मंत्रीजी ने और भारत सरकार ने इतना सोच-समझकर फैसला किया है कि 80

(मोहम्मद माहिर आजाद)

दिन जो अपना श्रम और अपना रोजगार पूरा कर लेगा, 20 दिन तो उसको बोनस के रूप में वैसे ही दे दिये जाएंगे। तो 80 दिन के ऊपर 20 दिन, ये तो 100 दिन करके देंगे, तो क्या इसमें एक को भी दे पाएंगे कि नहीं दे पाएंगे? इसमें क्या है, उसको तो क्लीयर करें। कि यह बावला बनाने का अभियान हो रहा है? हम तो 80 दिन जो काम करे, उसको 100 दिन की मजदूरी दे रहे हैं। ये कह रहे हैं कि नहीं, 100 दिन काम करोगे, तब एक साड़ी और मिलेगी। तो 20 दिन की मजदूरी ज्यादा बनती है या एक साड़ी की कीमत ज्यादा बनती है, कम से कम उसको तो आप क्लीयर कर दो कि आप चाह क्या रहे हो?

सभापति महोदय, मेरे से पहले नवलगढ़ से आने वाली माननीय सदस्य भी कह रही थीं, और हमारी और जो बहनें यहां पर बैठी हैं सदस्याएं, कि शारीरिक जो मजदूरी करने जाते हैं वे ज्यादातर महिलाएं जाती हैं, पुरूष नहीं जाते। महिलाएं जाकर मजदूरी भी करें और आकर रोटी भी बनाएं, घर का काम भी करें, जानवर की वार-न्यार भी करें, चौका-बर्तन भी करें, झाड़ू-पोंछा भी करे, पानी-वानी भी भर कर लाएं और बच्चों को भी नहलाएं-धुलाएं, स्कूल भेजे, सारे काम करें और पुरूष काम करते नहीं हैं इसलिए जो आप इसके अंदर सुविधा दे रहे हैं महिलाओं को आकर्षित करने के लिए, अगर यह महिलाओं की बजाय पुरूषों को देते तो पुरूष भी मजदूरी करने आते और महिलाओं के साथ-साथ उनको भी वहां काम करना पड़ता, उनको श्रम करना पड़ता। उनको भी दिया जाना चाहिए, यह मेरा सुझाव है। (व्यवधान) नहीं, सही बात है या नहीं है?

माननीय सभापति महोदय, पेज 57, सीरियल नम्बर 125 पर आपने माडा, सहरिया और मेवात विकास बोर्ड, इसके बजट को पाँच करोड़ से बढ़ा कर सात करोड़ करने का काम किया है। माननीय सभापति महोदय, दस करोड़ करने की हमारी मांग थी। क्या आप बालिका आवासीय विद्यालय उसमें बनाना चाहते हैं? आप उसके अंदर श्मशान और कब्रिस्तानों की चारदीवारी मेवात विकास बोर्ड से कराना चाहते हैं? आप उसमें मेवात क्षेत्र के लोगों की सांस्कृतिक धरोहर को सुरक्षित रखना चाहते हैं इसलिए मेरा इसमें यह निवेदन है कि यह जो पाँच करोड़ से सात करोड़ किया है, इसको बढ़ाकर दस करोड़ करना चाहिए।

इसी तरीके से पेज 58 सीरियल नम्बर 127, अभी बड़े जोर-शोर से

(मोहम्मद माहिर आजाद)

अजमेर से आने वाली माननीय सदस्य यहां कह रही थीं, मुझे एक बात बताइये, सभापति महोदय, मां के लिए तो बच्चे दो हों तो दोनों बराबर होते हैं, समान होते हैं कि नहीं, चाहे एक लड़का हो, चाहे एक लड़की हो। अगर उसमें फर्क करे तो फिर वह मां नहीं कहलाती, वह डायन कहलाती है कि फर्क कर रही है बच्चे और बच्चियों में। इसलिए कोई फर्क नहीं होना चाहिए। आपने महिलाओं की पंचायतों में भागीदारी बढ़ाने के लिए उनका आरक्षण 33 प्रतिशत से बढ़ाकर 50 प्रतिशत कर दिया, स्थानीय निकायों में शहर की महिलाओं के साथ अन्याय करने का काम किया है, उनको 50 प्रतिशत क्यों नहीं किया आपने? यह फर्क क्यों किया आपने? क्या शहर की महिलाएं महिलाएं नहीं होती हैं। आप सीकर में बैठी हो, आपको हक नहीं दिया यह। यह केवल देसूरी वालियों को दिया है, आपको नहीं दिया है अजमेर वालियों को, ममताजी को, बूंदी वालियों को नहीं दिया। यह फर्क महिलाओं में भी....

श्रीमती लक्ष्मी बारूपाल (देसूरी): आप सोनियाजी से कह कर विधायिका में भी हमको 33 प्रतिशत तो दिलाओ। आप पहल तो कराओ, हमने तो दिया है। (व्यवधान)

मोहम्मद माहिर आजाद (नगर): हम तो चाहते हैं। हम तो चाहते हैं, घूँघट उठवाओ और जो पार्षद पति और सरपंच पति आते हैं उनकी जगह खुद महिलाएं काम करें। महिलाओं की भागीदारी बढ़े, हम यह भी चाहते हैं।

श्रीमती लक्ष्मी बारूपाल (देसूरी): तो चाहते हो तो फिर उसका स्वागत करो। आप यह कैसे कह रहे हो?

मोहम्मद माहिर आजाद (नगर): पहले आप तो यह बता दो कि आप म्यूनिसिपैलिटीज में भी महिलाओं को 50 प्रतिशत चाहती हो कि नहीं?

श्रीमती राजकुमारी शर्मा (सीकर): हम तो चाहते हैं...

मोहम्मद माहिर आजाद (नगर): चाहते हो न, तो यह मुख्य मंत्रीजी ने गलत काम किया है, यह अन्याय किया है आप शहरी महिलाओं के साथ। (व्यवधान)

श्रीमती लक्ष्मी बारूपाल (देसूरी): हम तो सब चाहते हैं। हम तो चाहते हैं कि आप जहां से जीत कर आएं वहां से भी महिला जीत कर आएं। वहां से भी महिला को मौका मिले, हम तो यह चाहते हैं।

श्रीमती अनिता भदेल (अजमेर पूर्व): हम तो इससे भी आगे चाहते हैं।

(श्रीमती अनिता भदेल)

हम यह चाहते हैं, अलवर के उससे आने वाले माननीय सदस्य, हम इससे भी आगे चाहते हैं, इससे भी आगे। विधान सभाओं में और लोक सभा में 33 प्रतिशत चाहते हैं, आप बोलिये, सोनियाजी को बोलिये, वह तो अध्यक्ष हैं, महिला हैं, फिर वह क्यों नहीं करती हैं, उनको बोलिये।

मोहम्मद माहिर आजाद (नगर): ठीक है, बिलकुल ठीक। माननीय सभापति महोदय, आप क्या कांग्रेस की बात कर रही हैं और क्या सोनियाजी की बात कर रही हैं...

श्री सभापति: मैं पुन: आप लोगों से निवेदन करूंगा कि Let us bring the House to order again.

मोहम्मद माहिर आजाद (नगर): माननीय सभापति महोदय, आप सोनियाजी की और कांग्रेस की क्या बात कर रहे हैं, सोनियाजी ने इस देश में और इस दुनिया में उदाहरण प्रस्तुत किया है, एक महिला को देश का प्रथम नागरिक बनाकर प्रतिभा पाटीलजी को राष्ट्रपति बनाने का काम किया है। वह काम सोनियाजी ने किया है और खुद ने प्रधानमंत्री पद के ठोकर मार दी। ऐसी त्यागी और तपस्वी महिला विश्व में दूसरी मिल नहीं सकती आपको। आप लालटेन लेकर ढूंढो तो भी आपको नहीं मिल सकती, मरकरी लेकर ढूंढो तो भी नहीं मिल सकती। (व्यवधान)

श्रीमती लक्ष्मी बारूपाल (देसूरी): राजस्थान की बेटी में प्रतिभा थी इसलिए वह राष्ट्रपति बनीं, वह क्या बनाई।

मोहम्मद माहिर आजाद (नगर): माननीय सभापति महोदय, इन चेचरियों को ठीक करो।

श्री सभापति: आप सबसे आग्रह है कि आप अपने-अपने स्थान पर विराजे रहें, यह जो बात कह रहे हैं उसको सुन लें। उसके बाद आपको जब मौका मिले तब आप उसका उत्तर दे सकते हैं। (व्यवधान) अब यह हो सकता है आपकी मजबूरी हो, लेकिन सुनना तो आपको और हमको पड़ेगा, क्योंकि वह जब बात अपनी कह रहे हैं तो उसको सुन लें आप। (व्यवधान)

मोहम्मद माहिर आजाद (नगर): हां, वह आपकी क्वालिस मिल गई क्या?

श्री ज्ञानचन्द पारख (पाली): मेरी क्वालिस तो नहीं मिली...

मोहम्मद माहिर आजाद (नगर): नहीं मिली न। हां, हां, कभी बीजेपी के राज में चोरी गई चीज मिल ही नहीं सकती।

श्री सभापति: पाली से आने वाले माननीय सदस्य, आप विराज जाएं।

मोहम्मद माहिर आजाद (नगर): वह तो हमारा राज आएगा तब क्वालिस आपके घर आ जाएगी और एक के बजाय सवा आ जाएगी।

श्री ज्ञानचन्द पारख (पाली): मेरी क्वालिस की चिंता मत करो। (व्यवधान)

श्री सभापति: अब इसको कनक्लूड कर लें।

मोहम्मद माहिर आजाद (नगर): बस पन्द्रह मिनट। माननीय सभापति महोदय, मैं आपसे निवेदन कर रहा था, मुख्य मंत्रीजी ने यहां एक बात कही, मुझे भी वाकई में बहुत अच्छा लगा जब कानों में मैंने सुनी। मुख्य मंत्रीजी ने कहा कि मैं प्रदेश के सभी लोगों को एक ही थाली में खिलाना चाहती हूं यानि किसी तरीके का भेदभाव नहीं करना चाहते हैं। मुझे भी लगा कि वाकई में महिला हो तो ऐसी हो। कतई फर्क नहीं है। हिन्दू हो, मुसलमान हो, सवर्ण हो, दलित हो, सबको बराबर चाहती हैं, वाकई में यह अच्छी बात है। लेकिन, सभापति महोदय, होता उलटा है। शेर लिखने में भी मजा आता है, शेर कहने में भी मजा आता है और शेर सुनने में भी मजा आता है लेकिन हार्ट अटैक हो जाता है जब शेर सामने आता है। किसी भी चीज की घोषणा कर देना और मुंह से कह देना अलग बात होती है। पर उपदेश कुशल बहुतेरे। लेकिन अपनी वाणी से, अपने कथन से कही हुई बात को अमली जामा पहनाना और कर्म, वाणी और आचरण में समरूपता होना एक बहुत मुश्किल का काम है। मुख्य मंत्रीजी ने कह दिया लेकिन करा क्या? पेज 58 पर कह रही हैं, सीरियल नम्बर 28 पर, कि देवस्थान, पर्यटन, कला और संस्कृति को बढ़ावा देने के लिए हम राजस्थान के मंदिरों का जीर्णोद्धार करेंगे, हम तेजाजी के मंदिर को ये देंगे, हम गोगामेड़ी को यह देंगे। हम उसको ये देंगे। हम मना नहीं करते, यह सब राजस्थान की विरासत हैं, धरोहर हैं, खण्डहर नहीं हैं कभी खण्डहर बता दें और कभी धरोहर बता दें, यह काम आप कर सकते हैं, हम नहीं कर सकते। अटलजी गुजरात में कह दें हमारा सर शर्म से झुक गया है, राजनीतिक धर्म का पालन नहीं किया। और गोवा में जाकर कह दें उसको अपने राजनीतिक धर्म का, ऐसा रोज हम बदलते नहीं हैं। पहले तो विरासत को खण्डहर बता दिया, अब विरासत बता रहे हैं। कुछ भी हो, आपने इन धार्मिक स्थलों को जो भी पैसा जीर्णोद्धार के लिए दिया, मैं उसका स्वागत करता हूं और मुझसे चाहोगे तो मैं एक महीने की तनख्वाह और दे सकता हूं। लेकिन मैं पूछना चाहता हूं, सभापति महोदय, मुख्य मंत्रीजी को भरतपुर की जामा

(मोहम्मद माहिर आजाद)

मस्जिद याद नहीं आई, मुख्य मंत्रीजी को नरहड़ की और सरवाड़ की दरगाह याद नहीं आई, नागौर की दरगाह याद नहीं आई, यूनूस खान भी नहीं दिखे उस वक्त, सांभर की दरगाह भी याद नहीं आई, नरपत सिंहजी भी नहीं दिखे? (व्यवधान) आप बैठ जाइये, आप बैठ जाओ प्लीज, ज्ञान पारखजी, आप बैठ जाइये, आपके यह मिर्ची नहीं लगनी चाहिए। (व्यवधान)

श्री मदन राठौड़ (सुमेरपुर): अजमेर में कितना दिया, मालूम है?

मोहम्मद माहिर आजाद (नगर): वह भारत सरकार ने दिया है, आपने नहीं दिया। वह भारत सरकार के अंडर में आती है, राजस्थान के अंडर में ही नहीं आती है, कुछ तो पता कर, भाई, अजमेर की दरगाह तो सेंट्रल वक्फ बोर्ड के अंडर में आती है। (व्यवधान) अब क्या हो गया, साहब? सभापति महोदय, मैंने कोई एक गलत बात कही हो तो आप मुझे बता दीजिये, बोलिये आप। राजेन्द्रजी से कहलवा दें, राजेन्द्रजी, मैंने गलत बात कही? सवाल ही नहीं उठता, कह ही नहीं सकता मैं। (व्यवधान) और तो और, सोजत से आने वाले खनिज मंत्री की सोजत की दरगाह याद आ जाती, मतलब कहीं भी थोड़ा-बहुत। माना नब्बे प्रतिशत आप वहां दो, एक मोटर साइकिल है और उसके एक पहिये में तो पच्चीस पौंड हवा हो और एक में दो ही पौंड हवा हो तो वह मोटर साइकिल नहीं चल सकती। थोड़ा-बहुत फर्क कर दो लेकिन इतनी पार्शियलिटी, इतनी संकीर्णता, इतना फर्क किया है। फिर एक थाली में खिलाने की बात तय मानिये, मैं इस बात का कंडैम करता हूं और मैं विरोध करता हूं। इनको भी दिया जाना चाहिए। (व्यवधान)

माननीय सभापति महोदय, पेज 61 देखिये, सीरियल नम्बर 133, मदरसा बोर्ड को भूमि दी जाएगी रियायती दर पर। मदरसा बोर्ड कोई मुसलमानों की संस्था है क्या? It is part and parcel of the Education Department. Haz Committee and Haz House are the part and parcel of the Home Department. तो आप इसमें एहसान कर रहे हो क्या? खाली रियायती दर पर भूमि दे रहे हो, भवन काहे से बनेगा? कोई बात नहीं, भवन हम बना देंगे। घोषणा करते हैं आज कि अगली साल आप जमीन दे दो, उस पर भवन आलीशान बिल्डिंग हम बना देंगे। आपको भवन के लिए कम से कम पैसा देना चाहिए। हज हाउस भी नहीं बनाया इन्होंने। (व्यवधान)

श्री बृजकिशोर शर्मा (जयपुर ग्रामीण): हज हाउस नहीं बनाया, ऐसा मत कराना। (व्यवधान)

मोहम्मद माहिर आजाद (नगर): माननीय सभापति महोदय, आपने बजट भाषण के पेज 71 पर सीरियल नम्बर 159 पर कहा है कि हम राजस्थान में 2750 नये पुलिस कांस्टेबलों की भर्ती करेंगे। क्या ऐसी भर्ती करेंगे कि परीक्षा तो दे रहा है कौन, फिजिकल में आ रहा है कौन, भाला फेंकने में आ रहा है कौन और दौड़ने में आ रहा है कौन और इंटरव्यू में आ रहा है कौन? यह हुआ है या नहीं हुआ यहां जयपुर के अंदर? ऐसी भर्ती करोगे आप? (व्यवधान) माननीय गृह राज्य मंत्रीजी, आपके वश में तो थानेदार छोड़, सिपाही ही नहीं हैं, आप तो नाम के ही गृह राज्य मंत्री हैं, जेल ही नहीं है आपके अंडर।

श्री अमराराम चौधरी (राज्य मंत्री, गृह): वे पकड़े भी गये हैं, उन पर मुकदमे बने हैं। पहले कभी पकड़े थे? आये हैं तो उनके खिलाफ में कानूनी कार्यवाही हो रही है न।

मोहम्मद माहिर आजाद (नगर): आपने भर्ती कैंसिल की क्या? आज तक नहीं की, आज तक नहीं, till Now. मेरा चैलेंज है कि इतना सब होने के बाद में भी पुलिस की भर्ती में परीक्षा कोई दे गया, फिजिकल में कौन आ गया, दौड़ में कौन आ गया, भाला फेंकने में कौन आ गया और इंटरव्यू में कौन आ गया, आपने आज तक उस पुलिस की भर्ती को कैंसिल नहीं किया। आज भी राजस्थान के हज़ारों नौजवान आपकी तरफ देख रहे हैं। इस तरीके की भर्ती करना चाहते हो?

श्री अमराराम चौधरी (राज्य मंत्री, गृह): भर्ती कैंसिल सबके लिए नहीं होगी, जिन्होंने गुनाह किया है उनकी आटोमेटिकली ही हो गई, जब मुकदमे बन गये तो।

मोहम्मद माहिर आजाद (नगर): क्या हो जाएगा? दूसरा अगर आकर भर्ती कर गया, कोई और परीक्षा दे गया ...(व्यवधान)

श्री अमराराम चौधरी (राज्य मंत्री, गृह): जो दोषी थे उनके खिलाफ मुक़दमे हैं हमारी पुलिस ने पकड़े हैं। पहले कभी ऐसा हुआ है? आपने तो जो फर्जी थे वे लिए होंगे, लेकिन यह पहली बार हुआ है कि पारदर्शिता से और अच्छी तरह से परीक्षाएं हुई हैं। जब ही तो पकड़ा है उनको।

श्री दाताराम गुर्जर (खेतड़ी): वे सारे यूथ कांग्रेस वाले थे, उठा के देख लो आप ...(व्यवधान)

मोहम्मद माहिर आजाद (नगर): माननीय सभापति महोदय, मैं

(मोहम्मद माहिर आजाद)

निवेदन कर रहा था, मुक़दमे दर्ज करने से क्या होता है? एक शायर ने सही कहा है-

मस्जिद तो बना दी शब भर में, ईमां की हरारत वालों ने
और मन जो पुराना पापी था, बरसों में नमाजी हो न सका।

आपके गृह ज़िले में मंत्रियों के खिलाफ नारकोटिक्स का मुकदमा दर्ज हुआ, क्या हो गया उसमें? क्या हो गया मुकदमा दर्ज होने से? क्या हो गया, दो जवाब, कुछ है क्या आपके पास? मुकदमा दर्ज हो गया कह दिया यहां उठाकर। माननीय सभापति महोदय केवल कायदे-कानून बना देने से, संविधान संशोधन कर देने से, कागजों में लिख देने से ...(व्यवधान)

श्री अमराराम चौधरी (राज्य मंत्री, गृह): अगर कोई भी ऐसा है, कोई मुकदमा दर्ज होना एक अलग बात है और उसको साबित करना दूसरी बात है।

मोहम्मद माहिर आजाद (नगर): प्रदेश का भला होने वाला नहीं है। इसके लिए नीयत और नीति चाहिए। आपकी पूरी जो है पूरा वह चाहिए।

माननीय सभापति महोदय, मैं एक निवेदन और करना चाहता हूं, बजट में छूट दी है, किसमें छूट दी है, सुनना जरा। करणी, गुरूमाला, लोहे की छैनी, सावल, घुनियां, रंदा, भसौला, जूते के वो सुराग करता है कटारी, सुआ, रेती, खुरपी, ये किसी फैक्ट्री में बनती हैं? उद्योग मंत्रीजी जरा किसी फैक्ट्री का नाम तो बताइए, किस फैक्ट्री में बनती हैं ये जो इस पर टैक्स था? क्या इस पर कोई टैक्स था पहले? मैं इसको करमुक्त कर रही हूं। अगर इसमें कर था तो बताइए कितना प्रतिशत कर था? और यह तो बताइए, इसकी फैक्ट्री कौनसी है? हम बना रहे हैं इसको। यह तो लुहार बनाता है गांव का बेचारा, इस पर टैक्स में छूट दे रहे हैं। राजस्थान की जनता को जमाई बावला समझ रखा है। क्या हालत हो गई ...(व्यवधान) हालत देखो जरा इनकी।

श्री मोहन लाल गुप्ता (किशनपोल): उन्हीं लोगों को बचाया है हमने। (व्यवधान)

मोहम्मद माहिर आजाद (नगर): बताइए, किस फैक्ट्री में बनती हैं? इस पर कितना टैक्स था? लुहार बनाते हैं, लुहारपुरा का लुहार बनाता है और इस पर टैक्स नहीं है...

श्री मोहन लाल गुप्ता (किशनपोल): ...(व्यवधान) पर लग रहा था टैक्स, उसको टैक्स मुक्त कर दिया। चार प्रतिशत था।

मोहम्मद माहिर आजाद (नगर): सुनो आगे, यह जवाब दे देंगे।

श्री महावीर प्रसाद जैन (मुख्य सचेतक): ...(व्यवधान) यह मशीन, कैची ...(व्यवधान) आपकी किस्मत में यही लिखा है। कभी सोनियाजी का करो, कभी अशोकजी का करो, यह आपके किस्मत में है। (व्यवधान)

श्री सभापतिः अब आपसे निवेदन है कि दो मिनट में आप समाप्त करें। (व्यवधान) 5.25 से 6.24 तो हो गये हैं, पूरा एक घंटा हो गया।

मोहम्मद माहिर आजाद (नगर): ये बोलने नहीं दे रहे हैं, मेरा कागज ही रह जाएगा, मैं मेरी बीवी को जाकर सुनाऊंगा क्या घर पर फिर? माननीय सभापति महोदय, अच्छा ये चुप रहें तो मैं जल्दी से खतम कर दूंगा। माननीय सभापति महोदय, मार्बल में साढ़े 12 प्रतिशत से आपने चार प्रतिशत कर दिया। मार्बल कोई गरीब आदमी लगाता है? गरीब आदमी लगाता है क्या? यह सब पैसे वाले लोग लगाते हैं, इसमें पैसे का मजा आता है। इसलिए मार्बल पर छूट। आपने चेजा पत्थर पर क्यों नहीं दी? चेजा पत्थर पर स्टोन जो है ... (व्यवधान) आप सुन तो लो मेरी बात। आप बोले जब मैं बोला क्या? (व्यवधान)

श्री राजेन्द्र राठौड़ (सार्वजनिक निर्माण मंत्री): आप यह कह दो, मार्बल पर जो टैक्स कम किया मैं इसका विरोध करता हूं।

मोहम्मद माहिर आजाद (नगर): हां, मैं इसका विरोध करता हूं। इसलिए विरोध करता हूं वह भी सुन लीजिए। मैं इसलिए विरोध कर रहा हूं कि मार्बल काम आता है पैसे वाले आदमी के। और जो स्टोन क्रैशर की गिट्टी है वह गरीब आदमी के भी काम आती है छत डालने के और फ़र्श डालने के, उस पर आप ले रहे हो। चेजा पत्थर पर 12 रुपए टन, रॉयलटी एक्स्ट्रा 8 रुपए टन, गिट्टी पर 20 रुपए टन। सेल्स टैक्स के अलावा 8 रुपए और रॉयल्टी 28 रुपए। अगर माफ करना था तो उस गिट्टी पर भी करते कम। कम करते आप बताइए गरीब आदमी के काम आ रही है ...(व्यवधान) मैं आठ बजे तक नहीं बैठूंगा, चाहे सारे लोग कह देना फिर आठ बजे तक नहीं बैठूंगा। मैं किशनपोल तक नहीं छोड़ूंगा ...(व्यवधान)

श्री सभापतिः अब आप कृपा करके थोड़ी ...(व्यवधान)

मोहम्मद माहिर आजाद (नगर): माननीय सभापति महोदय, सिनेमा पर 35 से 30 प्रतिशत कर यानी जो गरीब आदमी को राहत देनी थी वो तो आपने नहीं दी। सभापति महोदय, मैं एक निवेदन और आपके माध्यम से

(मोहम्मद माहिर आजाद)

करना चाहता हूं। आपने ऊँट के महत्व को तो समझ लिया और ऊँट के ऊपर आपने कह दिया कि अगर आप बीमा कराओगे तो उसका अनुदान दिया जाएगा। लेकिन बस्सी से आते हैं हमारे डा. कन्हैयालालजी मीणा, माननीय सभापति महोदय, मैं ईमानदारी से आपको कह रहा हूं, पिछले चार सालों में राजस्थान में गधों की तादाद भी बढ़ी है इसलिए गधों के ऊपर भी आप पशु बीमा में कुछ छूट दे दें तो अच्छा है। पिछले चार सालों में इसलिए ऊँट के साथ ...(व्यवधान) कुम्हार के काम आता है और शेखावाटी में तो जाओ घनश्यामजी आ गये, बोलो गधा गाड़ी सीकर में चलती है या नहीं चलती है? गधे का काम लिया जा रहा है वहां पर। और बीजेपी के राज में आने के बाद में तो सारे गधों को काम में लिया जा रहा है, स्पेशल तौर से लिया जा रहा है...

एक माननीय सदस्य: वहां आपके पास कितने गधे हैं, वह संख्या बता दो?

मोहम्मद माहिर आजाद (नगर): माननीय सभापति महोदय, मैं आपके माध्यम से एक निवेदन और करना चाहता हूं। भरतपुर को एक प्राइवेट-पब्लिक पार्टनरशिप में आपने मेडिकल कॉलेज की घोषणा की है, उसमें उद्योग मंत्रीजी हिस्सेदार होंगे...

श्री सांगसिंह भाटी (जैसलमेर): गधों से ज्यादा प्रेम कैसे हो गया? आपको गधों से प्रेम ज्यादा कैसे हो गया, यह तो बता दीजिए?

मोहम्मद माहिर आजाद (नगर): मुझे आपसे है इसलिए कह रहा हूं। माननीय सभापति महोदय, एक निवेदन और कर रहा हूं। राजस्थान में केवल मात्र एक भरतपुर संभाग ऐसा है जहां कोई यूनिवर्सिटी नहीं है इसलिए भरतपुर में एक यूनिवर्सिटी खोली जानी चाहिए। पहली बार वहां दो दिन से आंदोलन चल रहा है और अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद और एनएसयूआई दोनों विपरीत ध्रुव मिलकर उसके लिए आंदोलन कर रहे हैं। यह मेरी प्रबल मांग है कि भरतपुर संभाग में भरतपुर में एक विश्वविद्यालय खोलने के लिए सरकार प्रयास करे।

मैं एक और निवेदन आपके माध्यम से करना चाहता हूं, इस बजट में अल्पसंख्यकों के लिए भारत सरकार ने, यूपीए सरकार ने 15 सूत्री नया कार्यक्रम बनाया, एक पैसा आपने इसके लिए रखा नहीं है। इसलिए मेरा

(मोहम्मद माहिर आजाद)

निवेदन है कि कृपा करके आप इसके ऊपर भी ध्यान दे। और एक निवेदन अंत में एक मिनट में करना चाहता हूं, मुख्य मंत्रीजी को शायद किसी ने लिखकर दिया जो शेर उन्होंने पढ़ा था उसमें बड़ी त्रुटियां थीं आप प्रोसीडिंग देख लें। उसका सही शेर मैं पढ़ देता हूं ताकि वह उसको सुधार कर लें। एक शायर ने सही कहा है -

एक स्कूल अब ऐसा भी चलाया जाए,
जिसमें कुछ और नहीं प्यार सिखाया जाए।
किसी मंदिर में दीया ऐसा जलाया जाए
जिसके उजाले में कुरान पढ़ाया जाए।
रावणों की यहां वैसे भी कमी कहां है लोगों,
अब तो दशहरे पर तो रावण न जलाया जाए।
जो यह कहते हैं यह देश है कुछ लोगों का,
ऐसे लोगों को इतिहास पढ़ाया जाए।

अंत में, माननीय सभापति महोदय, मैं यह बात कह कर अपनी बात खतम करना चाहता हूं कि हिन्दू धर्म में रावण भगवान राम से ज्यादा शक्तिशाली, ज्ञानी और पराक्रमी था लेकिन उसमें अहंकार था तो दशहरे पर सारे हिंदू भाई रावण का वध करते हैं। और इस्लाम मजहब में इब्लिश फरिश्तों का उस्ताद था, फरिश्तों को पढ़ाता था लेकिन जब आदम को पैदा किया तमाम फरिश्तों को कहा, इसको सजदा करो और दण्डोत करो। तो उसके मन में घमण्ड आ गया कि मैं तो आग से बना हूं और यह मिट्टी से बना है, मैं इसको क्या दण्डोत करुंगा। तो उसके गले में शैतानियत का तोग डाल दिया गया। जब कोई मुसलमान मक्का-मदीना में हज करने जाता है तो उस शैतान के कंकरी मारता है। हमारे मारवाड़ी में एक कहावत है जो होवे घमंडित, वो बेगो होवे खंडित। इसलिए रावण की तरह बारह माथे के मत हो, मत घुमो। सद्दाम हुसैन 17 हजार एकड़ के महल में रहता था, दस बाई दस की कोठरी में उसका अंत हुआ। इस संख्या बल पर मत इतराओ। एक शायर ने सही कहा है-

(मोहम्मद माहिर आजाद)

आंधी मगरूर दरख्तों को पटक जाएगी,
बस वहीं शाख बचेगी जो लचक जाएगी।
इन बीजेपी वालों को आसमां छूने का अंदाज भी हो जाएगा'
जब आने वाले चुनावों में कुर्सी तुम्हारे नीचे से खिसक जाएगी।

धन्यवाद, जय हिन्द।

श्री सभापतिः श्री टीकमचंद जी कांत।

श्री टीकमचन्द कांत (सिवाना): सभापति महोदय, चर्चा प्रारम्भ हो गयी है बजट पर, पक्ष के भी बोले हैं, विपक्ष के भी बोले हैं। कुछ अर्थशास्त्रियों ने और आर्थिक विश्लेषकों ने भी इसका विश्लेषण किया है और इस पर अपना मत भी दिया है, अपनी राय भी दी है। हालांकि इसके अन्दर थोड़ा समय जरूर लग जाएगा, सभापति महोदय, बहुत ज्यादा तो नहीं लगेगा, लेकिन मैं चाहता हूं कि वो जो है राय उनकी और उन्होंने जो विश्लेषण किया है इस बजट का, वो मैं जरूर पढ़ लूं। श्री एल.एन. नाथूरामकाजी वरिष्ठ आर्थिक विश्लेषक हैं और आज तक जितने भी बजट आते हैं वो हमेशा उस पर लिखते रहते हैं। उन्होंने लिखा है इस बजट के बारे में कि वर्ष 2008-09 के बजट पर चुनावी झलक स्पष्ट रूप से दिखायी पड़ रही है, यह जरूर कहा है उन्होंने, लेकिन, लोगों के अनुकूल योजनाओं की अधिकता के कारण बजट को जनकल्याणकारी माना जा सकता है । बजट में ऐसा कोई भी क्षेत्र नहीं छोड़ा गया है जिस पर खर्च नहीं बढ़ाया गया है। बजट में हर वर्ग को खुश करने का प्रयास किया गया है, ऐसा कोई वर्ग नहीं है जिसके लिए बजट में राहत के प्रयास नहीं हैं। सड़कों का विकास, पानी, शिक्षा की व्यवस्था, ग्राम विकास की योजनाएं, गुर्जरों के लिए पैकेज, वृद्ध और महिला कल्याण के प्रभावी प्रयास बजट अनुमानों में दिख रहे हैं। लेकिन इन घोषणाओं का इसी रूप में क्रियान्वयन सरकार के सामने एक चुनौती है। बिलकुल ठीक है, सामने चुनौती है, लेकिन वर्ष 2008-09 में नयी घोषणाओं पर 1780 हजार करोड़ रुपये का प्रावधान किया गया है इससे विकास की तस्वीर निश्चित रूप से बदलेगी। वैसे मेरी राय में यदि राजस्थान रिसर्जेन्ट में प्रस्तावित निवेश, यह वाक्य पढ़ने लायक है, समझने लायक भी है, यदि राजस्थान रिसर्जेंट में प्रस्तावित निवेश आ जाएगा तो किसी अनुदान या विशेष प्रयासों की जरूरत नहीं होगी। राज्य सरकार ने वैट का सरलीकरण कर जो खामियां सुधारी हैं, उसका स्वागत है। यह है एन,एल नाथूरामकाजी का। मैं जानबूझकर थोड़ा समय इसके वाचन में देना चाहता हूं ताकि समझ में आए कि बजट का विश्लेषण हमारे अन्य जो आर्थिक विश्लेषक हैं उन्होंने किस रूप में किया है ।

(श्री टीकमचन्द कांत)

सभापति महोदय, एम.एल. छीपा साहब, पूर्व कुलपति, महर्षि दयानन्द सरस्वती विश्वविद्यालय, वो विशेष रूप से इस रूप में लिखा भी करते हैं। ''राजस्थान सरकार का वर्ष 2008-09 का बजट राज्य के लिए आर्थिक खुशहाली का अनुपम खजाना साबित होगा जो हर वर्ग और हर क्षेत्र में समृद्धि, सम्पन्नता और विकास की गंगा लाएगा। ग्रामीण अर्थव्यवस्था को समझने और उसे मजबूती देने का प्रयास बजट प्रावधानों में किया गया है जो राज्य के विकास को एक दिशा और मजबूत आधार देगा। आजादी के बाद पहली बार राज्य में किसी सरकार ने गाय का महत्व समझा है। गाय ग्रामीण अर्थव्यवस्था की धुरी मानी जा सकती है लेकिन अब तक इसकी उपेक्षा होती रही है। वसुन्धरा राजेजी की पहल पर राज्य में गौ आधारित कृषि और अर्थव्यवस्था विकसित करने का सार्थक प्रयास किया जा रहा है। राजस्थान में पशुधन अर्थव्यवस्था का आधार रहा है, इस बार बजट में पशुधन संरक्षण के लिए विशेष प्रावधान किये गये हैं। इससे राज्य दुग्ध उत्पादन में विकास करेगा। गाय के महत्व को देखते हुए सरकार ने एक पीठ स्थापित करने की घोषणा की है जिसमें पंचकर्म चिकित्सा और अन्य शोध होंगे, इससे राज्य में वैकल्पिक चिकित्सा पद्धति विकसित होगी।'' कुल मिलाकर और भी था लेकिन मैं समय और ज्यादा नहीं लेना चाहता हूं । उसके बाद डा. ज्योतिकरण शुक्ल ने भी कहा है, उनका एक पीछे का हिस्सा पढ़ता हूं, कुल मिलाकर विकास इच्छा के लिए सरकार की भूमिका और सघन योगदान के लिए विस्तृत दस्तावेज के रूप में यह बजट याद किया जाएगा।

सभापति महोदय, मेरा ख्याल है इससे पहले भी हमने बजट दिया है पर आर्थिक जो हमारा प्रबंध रहा है, इस सरकार का प्रबंध रहा है, आज ये भी कई सारी त्रुटियां निकाल सकते हैं, बातें कर सकते हैं, बहस कर सकते हैं, लेकिन केन्द्र सरकार से लगाकर योजना आयोग के उपाध्यक्ष अहलूवालियाजी, विश्व बैंक, अन्तरराष्ट्रीय संस्थाएं सबने यह सराहना की है कि राजस्थान की सरकार का आर्थिक प्रबंध बिलकुल ठीक है, उचित है। अगर यह नहीं होता तो अभी-अभी किशनपोल से आने वाले माननीय सदस्य ने कहा था, पिछली बार भी लोगों को बुलाया गया था, बाहर से लोगों को कहा गया कि आओ और इस प्रदेश के अन्दर कुछ अपनी पूंजी लगाओ, कुछ अपने उद्योग लगाओ, कुछ संस्थाएं बनाओ, लेकिन बाहर से उस समय कोई नहीं आया। न मालूम खर्च भी पिछली बार कितना किया गया था। और, मोहनजी गुलाबो भी नाची थी

(श्री टीकमचन्द कांत)

क्या? (व्यवधान) नाची थी, लेकिन वो नहीं। श्रीमान, इस बार 1 लाख 62 हजार करोड़ की बात आयी, 300 एमओयूज के सिग्नेचर की बात आयी और यह कहा गया कि यह सारा पैसा इस राजस्थान में लगेगा, जिसके विषय में श्री नाथूरामकाजी ने यह कहा है कि अगर यह पैसा आ जाता है तो राजस्थान में कोई भी चिन्ता करने की जरूरत नहीं है। उन्होंने एक बात और कही थी कि शायद हमारा ब्याज बढ़े लेकिन अगर ये सारी चीजें आ जाती हैं तो हम यह ब्याज की पूर्ति भी कर पाएंगे और राजस्थान को हम आगे और ले जाएंगे।

सभापति महोदय, कर्ज के लिए बहुत कुछ कहा गया है, मुझे आंकड़े याद नहीं हैं, घनश्यामजी को शायद याद होंगे। जब 1998 में राजस्थान के ऊपर 23 हजार करोड़ था या 27 हजार करोड़ ...(व्यवधान) 22 हजार करोड़ रुपये था, उसके बाद मात्र पाँच साल अशोकजी, राजस्थान पिछड़ गया, कोई विकास किसी भी प्रकार का नहीं हुआ। न टूटी हुई सड़कें ठीक हुईं, न पानी का इंतजाम हुआ, न बिजली का उत्पादन बढ़ा। सारा भौतिक इन्फ्रास्ट्रक्चर जिसको कह सकते हैं, वो सारा नाश होकर रह गया है। कुछ भी राजस्थान का उस समय नहीं बना और रुपये कहां तक पहुंच गये बढ़कर? (व्यवधान) 56 हजार करोड़ और 22 हजार करोड़ के बीच में 34 हजार करोड़ का तो गैप हो गया। पाँच साल में 34 हजार करोड़ का गैप। फिर कर्ज के लिए हमको कह रहे हैं कि आपको कर्ज लेना पड़ रहा है। अब हमारी व्यवस्था है 73 हजार। 56 और 73 (व्यवधान) 17 बन गया। तो सभापति महोदय, पाँच साल के अन्दर राजस्थान पिछड़ गया उसका विकास नहीं हुआ, तरसते रहे हम विकास को। टूटी हुई सड़कों पर हमारी सेना की जब गाड़ियां चलती थी, बॉर्डर में था मैं, टूटी हुई सड़कों पर जब सेना की गाड़ियां चलती थीं तो इतने बड़े-बड़े खड्डों के अन्दर से घुसना पड़ता था। मैं माहिर आजाद जी से पूछता हूं कि वो किनकी कब्रें खोदकर रखी थीं उन्होंने? क्या हालत थी इतने बड़े कर्ज के अन्दर। और अब कह रहे हैं कि कर्ज के रूप में तो कर्ज तो लेना पड़ता है। इसका मतलब तो यह हुआ कि कर्ज लेना पड़ता है किसी भी शासन को चलाने के लिए, उद्योग को चलाने के लिए, किसी संस्था को चलाने के लिए। प्रश्न यह है कि आप कर्ज लेकर कर्ज का उपयोग उचित ढंग से कर रहे हैं या नहीं। सरकारें जब कर्ज लेती हैं तो परिसंपत्तियों का निर्माण हो रहा है कि नहीं हो रहा है, इन्फ्रास्ट्रक्चर ठीक हो रहा है कि नहीं हो रहा है। आपका फिजिकल इन्फ्रास्ट्रक्चर, आपका सोशल इन्फ्रास्ट्रक्चर, इसकी कुछ बुनियाद बना रहे हो

(श्री टीकमचन्द कांत)

आप कि नहीं। अगर ये बुनियाद बनती है तो कर्ज लिया हुआ हमारे लिये उपयोगी सिद्ध होता है। और लेना चाहिए, और लेना पड़ता है, अगर कुछ करने की आपके अन्दर गुंजाइश है, कुछ आपके अन्दर ऐसा आयोजन है दिमाग के अन्दर, तो लिया जा सकता है। इस प्रकार से राजस्थान के अन्दर पाँच साल के अन्दर जितना कांग्रेस सरकार ने कर्ज लिया था, उससे बहुत कम कर्ज लेने के बाद में भी राजस्थान ने विकास की जो गति पकड़ी है,

आज आंखों में नजर आ रही है । इस बजट के आने के बाद गांधी जी की आत्मा जरूर खुश हुई होगी । गांव और गरीब, वह व्यक्ति, वह कारीगर जिसको कोई नहीं पूछ रहा था, जो सड़क के किनारे फुटपाथ पर बैठे हुए अपनी रोजी कमा रहा था, राजस्थान के इस बजट से उसके विकास की सोच वहां तक पहुंच गई, उसको राहत देने की सोच तक पहुंच गई। यह राजस्थान का बजट है। हैव्ज एण्ड हैव नाट राजस्थान के वित्त मंत्री की सोच, मुख्य मंत्री जी की सोच उस हैव्ज नाट तक पहुंच गई । आज मार्क्स भी सोच रहा होगा, हालांकि बिना शासन के समाज नहीं रह सकता, वे फेल हो गये सारे कम्युनिस्ट, बिना शासन व्यवस्था के सिर्फ सामाजिक व्यवस्थाओं में कम्युनिस्ट नहीं हो सकते। आज फिर माओवादियों का जोर कर रहे हैं, कहीं न कहीं वह नुकसान कर रहे हैं, वह बात अलग है। लेकिन मार्क्स की एक सोच हैव्ज एण्ड हैव नाट, नाट हैव्ज की तरफ जहां तक देखने की बात है, जहां तक दृष्टि की बात है, इस शासन ने उनकी तरफ देखा है, उनकी चिंता की है, इस कारण खुश वे भी हुए होंगे । पंडित दीनदयाल की एक नई सोच थी । पंडित दीनदयाल उपाध्याय एक सामान्य चिंतक थे, उनकी नई सोच थी। यह विश्व आर्थिक दृष्टि से सिर्फ दो भागों में बटा हुआ है- एक छोर है जहां सिर्फ पूंजीवादी चिंतन है और एक छोर है जहां सिर्फ कम्युनिस्टवादी चिंतन है, साम्यवादी चिंतन है। समाज के लिये दोनों किसी न किसी रूप से इतने परिपूर्ण नहीं है कि व्यक्ति को पूर्णता दे सकें । तब एक भारतीय विचार पंडित दीनदयाल उपाध्याय के अंदर से निकला, उन्होंने कहा कि अपनी स्वतंत्रता रहनी चाहिये और व्यक्ति अपने समाज के काम आना चाहिये । कम्युनिज्म समाज के नाम पर व्यक्ति खत्म हो जाता है, व्यक्तित्व जब खत्म हो जाता है तो सब कुछ खत्म हो जाता है । पूंजीवाद में इस पूंजी के लिये व्यक्ति बलिदान हो जाता है । हालांकि पंडित दीनदयाल उपाध्याय का चिंतन था कि जिनके

(श्री टीकमचन्द कांत)

पांवों में बिवाई फट गई है उनके पाँव जब तक ठीक नहीं होंगे, उन तक जब तक हम नहीं पहुंचेंगे यह सोच थी। भारतीय जन संघ के चिंतकों में वह रहे और उनकी सोच थी, उस गरीब तक हमको पहुंचना है । दीन हमारा नारा है, गरीब हमारा नारा है। उन्होंने तब यह कहा था कि व्यक्ति को अगर एक इकाई मान कर धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष इस चिंतन के आधार पर यह समाज चले, व्यक्ति चले तो यह तीसरा चिंतन जो इसमें था आर्थिक चिंतन, वह उन्होंने किया था । आज उस गरीब के दृष्टिकोण से समाज के एक एक अंग का विकास हो, समाज के एक-एक अंग की संभाल हो । बजट का एक सामाजिक दायित्व है, बजट सामान्य आय-व्यय का लेखा जोखा नहीं है, इसमें एक सामाजिक दायित्व है। कि समाज को कहां-कहां तक हम उसका लाभ दे सकते हैं । मुझे अच्छा लगा, आज प्रत्येक व्यक्ति खुश है। लोगों ने कहा, हम खुश है, महिलाएं खुश हैं, कुली खुश है । कुछ घोषणाएं पूरी नहीं हुई, राज्यपाल महोदय के अभिभाषण में भी था, पर 85 प्रतिशत पूरी हो चुकी हैं । 75 प्रतिशत पर तो डिस्टिंक्शन मिलता है, 60 पर फर्स्ट डिवीजन होता है हम तो 85 तक भी पहुंच गये। लेकिन अगर कांग्रेस का काल हम उठा कर देखें तो वह कहते रही रहे, कुछ नहीं हुआ। सिर्फ उन्होंने एक ही लगा रखा था भैरोंसिंह जी के राज में हमने कभी नहीं कहा कि हमारे पास कमी है। नई स्कीमें हम लेकर आये, नई योजनाएं लेकर आये । गांव को, गरीब को, मजदूर को किसान को यह सोच थी उस राज की । शहरों का बजट हमेशा 60 के ऊपर जाता था और यह भैरोंसिंहजी थे जिन्होंने बजट को बदल दिया । उन्होंने गांवों का हिस्सा ज्यादा कर दिया, शहरों का हिस्सा कम करके। यह गांवों की सोच और गांवों की योजनाओं तक पहुंचने की सोच थी । राजस्थान गांवों का प्रदेश है । गांव हमारे ऊपर आएंगे तो हम कहेंगे, राजस्थान ऊपर आया हुआ है। गांवों का विकास होगा तो हम कहेंगे कि राजस्थान का विकास हुआ है । इसलिए गांव की सोच, गरीब की सोच और हर दृष्टिकोण से समय की गति के साथ कैसे चलें, यह आवश्यकता है । जमाना बदल गया है । इलैक्ट्रोनिक युग है, कम्प्यूटर का युग है, तकनीकी का युग है, अलग-अलग जानकारियों का युग है, ऐसे समय में राजस्थान अगर पीछे रह जाए तो ठीक नहीं है । कम्प्यूटर शिक्षा तकनीकी में क्या-क्या वृद्धि हो, कैसे किया जाए, इस राजस्थान का एक-एक बच्चा किस प्रकार से शिक्षित हो और किस प्रकार से आधुनिक शिक्षा में

(श्री टीकमचन्द कांत)

वह आगे बढ़े, इसके लिये हमें जिस प्रकार की शालाओं की आवश्यकता थी, जिस प्रकार के विद्यालयों की आवश्यकता थी, जिस प्रकार की तकनीक की आवश्यकता थी उस प्रकार के विद्यालय, उस प्रकार की शालाएं, उस प्रकार की तकनीक, उस प्रकार के कोर्स वह राजस्थान में प्रारम्भ किये जाएंगे । शिक्षा बहुत आवश्यक है, मानव संसाधन की हम बात जरूर करते हैं, लेकिन अगर शिक्षा नहीं होगी तो मानव संसाधन की बात करने से कुछ नहीं होगा, विकास नहीं हो पाएगा। और जिस क्षेत्र का, जिस देश का, जिस प्रदेश का मानव संसाधन का विकास हो गया, वहां शिक्षा का प्रसार हो गया। आज की आधुनिक तकनीकी शिक्षा की जहां आवश्यकता है, वह अगर हो गई तो वह प्रदेश आगे आ जाएगा । पर सबसे अहम कार्य है, यह सबसे महत्वपूर्ण बात है, घनश्यामजी खूब काम किया शिक्षा में आपने। और अब कालीचरणजी कर रहे हैं, बहुत अच्छा। हमारी बहुत अच्छी। सोच थी और बहुत बढ़िया हुआ। आज गांव- गांव हमारी शालाएं पहुंच गई हैं। अभी इन्होंने जो आंकडा दिया है उसमें उन्होंने कहा, कभी 33 लाख बच्चियां पढ़ रही थीं, आज 56 लाख बच्चियां पढ रही हैं। एक परिवर्तन, एक बहुत बड़ा परिवर्तन जो इस प्रदेश में आया है कि यह प्रदेश शिक्षित हो रहा है । हमारी भावी पीढ़ी शिक्षित हो रही है, हमारा भविष्य शिक्षित हो रहा है । यह पाँच साल का प्रयास मात्र एक प्रदेश को ऊपर लाने के लिये, मात्र पाँच साल में हमारी काया पलट गई, पाँच साल में हमारा चित्र बदल गया, पाँच साल में हमारी व्यवस्थाएं पलट गईं, पाँच साल में हमारी एक-एक सड़क सुधर गई, गांवों तक सड़क पहुंच गई । (व्यवधान) यह स्थिति है । (व्यवधान) मैंने किसी से बात की थी एक वह जमाना था, हरिमोहनजी, आप थे क्या पिछली बार, अशोकजी के समय थे क्या आप? मैं नहीं था इसलिए कह रहा हूं । राजस्थान में इतना परिवर्तन कैसे आया, इतनी क्रांति कैसे आई, इतना इन्वैस्टमेंट कैसे आने वाला हो गया? उन्होंने कहा कि लोग वहां जाना चाहते हैं जहां उनको दिख रहा है कि यहां हमारा कुछ फलीभूत होगा । यह राजस्थान है जहां की सडकें ठीक है, यह राजस्थान है जहां बिजली आ रही है, यह राजस्थान है जो शिक्षित हो रहा है। अगर पिछड़ा हुआ राजस्थान, दिवालिया राजस्थान कि मेरे पास तो कुछ भी नहीं, कुछ भी नहीं हो सकता, उसमें कोई पूंजी लगाने के लिये नहीं आता।

सदन की कार्यवाही

विधान सभा की बैठक के निर्धारित समय में वृद्धि

श्री महावीर प्रसाद जैन (मुख्य सचेतक): सभापति महोदय, मैं प्रस्ताव करता हूं कि सदन का समय एक घंटा बढाया जाए।

श्री सभापति: क्या सदन की कार्यवाही एक घंटे बढाने का प्रस्ताव मंजूर है ?

(स्वीकृत)

सदन का समय एक घंटे के लिये बढाया गया ।

आय-व्ययक पर सामान्य वाद-विवाद

श्री टीकम चन्द कान्त (सिवाना): अब मैं जयपुर को भी बधाई देता हूं, मुख्य मंत्रीजी को भी बधाई देता हूं, उनका अभिनन्दन करता हूं। अप्रैल और नवम्बर माह की अवधि में इण्डस्ट्रियल एन्टरप्रिन्योर मेमोरेण्डम के माध्यम से निवेश के प्रस्तावकों में राजस्थान उत्तर भारत में प्रथम स्थान पर रहा। यह बहुत बड़ी बात है। हमारा रिजल्ट आया है। अभी कितना भी कहें, माहिर आजाद जी बोल जाए, कहीं का कुछ बोल जाएं, अगर मंदिर आगे बढ़ाया है तो मेरी दरगाह भी बना दो। (व्यवधान) पुष्कर उनका नहीं है। भैरोसिंहजी ने...

श्री अमराराम चौधरी (राज्य मंत्री, गृह): भैरोसिंह जी ने नागौर में, ख्वाजा दरगाह में करोड़ो रुपये लगाये। (व्यवधान)

श्री टीकम चन्द कान्त (सिवाना): दिये थे। पुष्कर शुरूआत... (व्यवधान) उन्होंने कहा, यह भी दे दें । सूफी संतों की दरगाह है। सूफी संत, उनका हिसाब-किताब अलग होता है। परमात्मा से उनका सीधा संबंध होता है। हां, सूफियों का। सूफियों में ओसामा बिन लादेन नहीं पनपते। सूफियों की बात अलग है। (व्यवधान) इधर दक्षिण एशिया के 15 शहरों की सूची में जयपुर को अनुकूल व्यवसायिक वातावरण की कसोटी पर तीसरा नम्बर दिया गया है और उसके अंदर मुम्बई, चेन्नई दोनों पीछे हैं। कुछ न कुछ तो हुआ है। अन्तररष्ट्रीय स्तर पर हुआ है, देश के स्तर पर हुआ है। आज हम इस प्रकार कहें, पूंजी आएगी, नाथूरामकाजी ने कहा, यह रिसर्जेंट वाली पूंजी हमारे यहां आ जाती है तो हमें किसी चीज की चिंता नहीं है, हम अपने पाँव पर खड़े रह सकते हैं, कर्जा उतार लेंगे और ब्याज का भार बढ़ेगा तो उस ब्याज के भार को भी सहन कर सकते हैं, यह स्थिति होगी।

(श्री टीकम चन्द कांत)

यह बात जरूर है, चुनाव लड़ना, राजनीति में हैं, पार्टी बनी हुई है, कोई राज करने के लिए चुनाव लड़ते हैं कि सिर्फ राज करना है। कोई अपनी नीतिगत चीजों के लिए, सिद्धान्तों के लिए चुनाव लड़ते हैं। कोई एक लक्ष्य बनाकर चुनाव लड़ते हैं कि मैं चुनाव लडूंगा। मेरे अपने एरिया का, मेरे प्रदेश का, मेरे जिले का, मेरे राजस्थान का किस प्रकार से मैं भला करूं, यह उद्देश्य होता है, यह सिद्धान्त होता है। और कोई कोई राज हमको करना है, किसी प्रकार राजनीति में जाना है, एमएलए बन जाएंगे , उसके लिए भी होता है। परिवर्तन यात्रा से मुझे लगा था, एक क्रांति आयेगी और यह दृष्टिगोचर हो रहा है। मुख्य मंत्री ने मुख्य मंत्री बनने के साथ ही, उससे पहले ही दिमाग के अंदर कुछ रचना थी, कुछ न कुछ तय किया हुआ था कि मुझे इस प्रदेश का विकास करना है। इस प्रदेश के अंदर जितनी कमियां हैं, जो यह समाज भोग रहा है, इसको मुझे ठीक करना है। सम्भवतः उनका एक लक्ष्य था। जब ऐसे बजट बनते हैं, यह पांचवां बजट है पिछले चार भी बने, कम से कम धार वही, उसके अंदर से निकलती जितनी बाहर आ रही है, घोषणा आ रही है। लगभग एक ही चीज दिख रही है कि राजस्थान ऊपर होना चाहिए। राजस्थान ऊपर आने के लिए उसकी जो कमजोर जगह है, उसका जो कमजोर पहलू है, उसका जो कमजोर वर्ग है, उसको कहीं न कहीं आगे लाना चाहिये। बढ़िया मशीन है, बढिया घर है, लेकिन एक भी पिलर कमजोर हो जाए तो वह मकान ठीक नहीं हो सकता। अगर किसी मशीन के अंदर एकाध पुर्जा कमजोर हो, बढिया मशीन है, सब कुछ है लेकिन मात्र एक स्क्रू कमजोर हो तो वह मशीन ठीक नहीं हो सकती। इसलिए आवश्यकता यह होती है कि इस प्रदेश को आगे लाने के लिए इस प्रदेश का पूर्ण विकास करने के लिए, इस प्रदेश को समृद्धिशाली बनाने के लिए, प्रदेश को अग्रणी राज्यों में ले जाने के लिए उसकी सारी की सारी जो कमजोर चीजें हैं, उनको ठीक, उनको शक्तिशाली किया जाना चाहिए। उनके सुदृढ़ीकरण करने की जरूरत है और यह किया जा रहा है।

प्राथमिकताओं पर बहुत बात कही लक्ष्य के साथ में प्राथमिकता। ए-वन फिजिकल इन्फ्रास्ट्रक्चर हमारा ठीक होना चाहिए, सोशल इन्फ्रास्ट्रक्चर हमारा ठीक होना चाहिए। इसके लिए आवश्यक है शिक्षा, इसके लिए आवश्यक है सड़क, इसके लिए आवश्यक है बिजली और इसके लिए आवश्यक है पानी, ये सब चीजें होनी चाहिए। हमने इस पर भार ...(व्यवधान) दिया। आज माननीय सदस्य ने बताया था सारा का सारा। किशनपोल से आने वाले साहब

(श्री टीकम चन्द कांत)

ने तो पता नहीं क्या-क्या बता दिया हीरो-जीरो, ऐसा शानदार किया कि इनके पास में जीरो नहीं था और हमारे पास में, उन्होंने जो आंकडे बताये, वे सैकड़ों की संख्या में थे, हजारों की संख्या में है यह स्थिति है। मैं उसको ज्यादा ले जाना नहीं चाहता उन योजनाओं के लिए, मुझे मालूम है समय 77 से लगाकर 80 का, मैं भी एमएलए बनकर आया था। माननीय भैरोसिंहजी शेखावत उस समय मुख्य मंत्रीजी थे। तीन हजार करोड़ की पंचवर्षीय योजना थी, जैसे तैसे करके नये सिरे से बातचीत करके केन्द्र से बातचीत करके उस 3 हजार को वह 11 हजार पर ले गये। तब उन्होंने कहा था इस प्रदेश का अगर विकास करना है, इस प्रदेश के अंदर विकास को गति देनी है तो कम से कम योजना का आकार आपका बड़ा होना चाहिए और वह योजना आकार के आधार पर उस समय राजस्थान के अंदर बनी थी। मैं भी उस समय विधायक था जालौर का। गांव को सड़कों से जोड़ा था हमने, हमने कई जगह भवन बनवाये थे, कई जगह नये कार्यालय खुलवाये थे, योजना का आकार हमारा बड़ा था। यही उद्‌देश्य और यही आधार इन चार साल के शासन के अंदर अब तक बनी पंचवर्षीय योजनाओं के अंदर रहा। यह 52192 करोड की पंचवर्षीय योजना, राजस्थान के अंदर जब उसका उपयोग होगा तो बिलकुल विश्वासपूर्वक कह सकता हूं कि राजस्थान अग्रणी राज्यों के ऊपर पहुंचने लगे, सीढ़ियां चढ़ने लग जाए। और वह पहुंचेगा, जरूर पहुंचेगा। मैं चाहता हूं, मैंने एक बार लोगों से भी कहा था, मैं अपने क्षेत्र में कहता भी हूं, हो सकता है अगली बार टिकट नहीं मिले, हो सकता है मैं नहीं लड़ूं लेकिन यह राजस्थान जिस प्रकार से विकास की गति, जिस लय के अंदर चल रहा है आगे मेहरबानी करके इसकी लय मत तोड़ना। मेहरबानी करके इसके संचालक, इसके ड्राइवर, इसके हाथ में से स्टीयरिंग मत खींचना। नहीं तो यह राजस्थान दिवालियापन देख चुका है। कहीं ऐसा न हो, फिर हमको एक बार दिवाला देखना पड़े। राजस्थान आगे बढ़ाना है तो 2009 के दिसम्बर तक की जो बात करते हैं, 11 तक जो हम चित्र देखना चाहते हैं, वसुंधरा राजे के राज में हो, हम यह चाहते है1 यह राजस्थान का भला है। (व्यवधान)

डा. बुलाकीदास कल्ला (बीकानेर): वन फोर्थ ही नहीं हो। (व्यवधान)

श्री जोगाराम पटेल (संसदीय सचिव): आपके पीछे..(व्यवधान) बाबूसिंहजी बैठे हैं।

डा. बुलाकीदास कल्ला (बीकानेर): दो दिन से मुख्य मंत्री गायब हैं, ऐसा पहला सदन है। पहले तो कोई वित्त राज्य मंत्री होता था, मुख्य मंत्री गायब हैं, कौन सदन को सुन रहा है? (व्यवधान)

श्री जोगाराम पटेल (संसदीय सचिव): यहीं हैं, मुख्य मंत्री यहीं हैं। (व्यवधान)

डा. बुलाकीदास कल्ला (बीकानेर): क्या बात कर रहे हो, ऐसे प्रश्न मत उठाओ, हम जानते हैं सब।

श्री घनश्याम तिवाड़ी (खाद्य एवं नागरकि आपूर्ति मंत्री): कल्ला साहब, आपके लिए तो ये शुभकामनाएं हैं1 सब साफ रहेंगे तो लीडर ऑफ अपोजीशन आप ही बनेगे। (व्यवधान)

(समय : 19.00 बजे)

डा. बुलाकीदास कल्ला (बीकानेर): लीडर आफ अपोजीशन जो हमारे बने हैं उसमें हमारी पूरी आस्था है। अब आपको इधर आना पड़ेगा। (व्यवधान) आपने प्रश्न काल में तो रिहर्सल की है न, वह आपको यहां लेकर बैठाएगी।

श्री कालूलाल गुर्जर (ग्रामीण विकास एवं पंचायती राज मंत्री): कल्ला साहब, आप ऊपरी मन से कह रहे हैं, ऊपरी मन से, आन्तरिक मन से नहीं।

डा. बुलाकीदास कल्ला (बीकानेर): मैं आन्तरिक मन से कह रहा हूं। मैं घनश्यामजी के बारे में जो भी बात करुंगा, आन्तरिक मन से करुंगा।

श्री बंशीलाल खटीक (राजसमन्द): दिल को बहलाने को गालिब खयाल अच्छा है।

डा. बुलाकीदास कल्ला (बीकानेर): आपका तो पता नहीं, आएंगे कि नहीं आएंगे।

श्री बंशीलाल खटीक (राजसमन्द): आप चार जरुर आएंगे। मैं रहूं या न रहूं, परन्तु आप 4 जरुर रहेंगे, यह मेरी भविष्यवाणी है। (व्यवधान)

डा. बुलाकीदास कल्ला (बीकानेर): जीतने का वरदान दे दिया आपने। (व्यवधान)

श्री टीकम चन्द कान्त (सिवाना): बिजली की खपत ज्यादा है, बिजली की आपूर्ति हमने ज्यादा की है, यह आंकड़े बता रहे हैं। कितने घण्टे बिजली मिल रही है, वह एक अलग बात है। लेकिन बिजली की आपूर्ति और बिजली

(श्री टीकम चन्द कांत)

की खपत जो हो रही है, उसका मेरे पास के अन्दर है, जो इन्होंने बताया था, कि बिजली की सप्लाई जहां 2003 में औसतन 700 लाख यूनिट प्रति दिन थी, वह आज 1100 लाख यूनिट तक पहुंच गयी है। यह पिछली बार का आंकड़ा है। यानी खपत हमारी बढ़ी है। इसका मतलब बिजली का उपयोग हो रहा है। बिजली का उपयोग हो रहा है, कुछ न कुछ निर्माण हो रहा है, कुछ न कुछ उत्पादन हो रहा है। यहां लोग सुख से, आनन्द से पंखे के नीचे बैठे हैं। उनके टी.वी. चल रहे हैं, उनके ए.सी. चल रहे हैं, कुएं चल रहे हैं। अगर बिजली के कारण खेती समाप्त हुई होती तो हमारा आंकड़ा उत्पादन का नहीं बढ़ता, उत्पादन बढ़ा है।

सभापति महोदय, एक मैंने और देखा, अनुसूचित जाति के कुओं का ऊर्जीकरण, गत सरकार की 5 वर्ष की उपलब्धियां, दिसम्बर, 1998 से नवम्बर, 2003 तक के अन्दर 13464 । उसको जल्दी देना है, प्राथमिकता के आधार पर देना है। अब उस सरकार के 13464 और इसके 3 वर्ष की उपलब्धियां, सभापति महोदय, 3 वर्ष की उपलब्धियां 29486 है, दुगने से भी ज्यादा। वह बात जो अभी कही गई थी कि 10 रुपये और 12 रुपये यूनिट खरीद करके हमने किसानों को बिजली दी है 90 पैसे में, हमने एक पैसा बिजली का किसान पर भार नहीं डाला। इन कम्पनियों को पैसा हमें भरपाई करना पडा, उनका पैसा हमने भर दिया। इस राजस्थान का किसान आगे आना चाहिए, उसका उत्पादन बढ़ना चाहिए। यह किसान मूल रूप में राजस्थान का मानव संसाधन है उसकी बहबूदी इस राजस्थान की बहबूदी बनेगी। मंहगी बिजली खरीद करके भी किसान को दी है। और यह साहस है। कल्पना कीजिये, साहस। वह साहस यह है कि 2009 हमारे हाथ में रहेगा, 2009 आएगा और हम इसी कारण से 2008 तक कुछ कर लेंगे, इतना अच्छा कर लेंगे कि 2009 का हम विश्वास दिलवाते हैं, 2009 के अन्दर जब मांगो तब हम बिजली देने के लिये तैयार रहेंगे। यह साहस है। किसी भी योजना में आए या न आए, किसी का सहयोग मिले या न मिले। कहीं से अनुदान मिले या न मिले, राजस्थान की ढाणी और गांव और गरीब के घर के अन्दर प्रकाश होना चाहिए। बहुत अच्छी घोषणा है, बहुत अच्छी बात है। हो सकता है, कुछ बाकी रह जाए इनमें। लेकिन भावना तो हमारी है। हम इसके लिये साहस तो कर रहे हैं। हम इसके लिये प्रयास कर रहे हैं। हम इसके लिये योजना बना रहे हैं। बहुत अच्छा बजट है, बहुत अच्छी घोषणा है, बहुत अच्छा विश्वास है। मुंगेरीलाल के सपने

(श्री टीकम चन्द कांत)

शायद ये देखते हैं। जनता ने तय कर लिया, मतदाता ने तय कर लिया, राजस्थान जिस गति से विकास कर रहा है, उसके विकास को हम नहीं रोकेंगे, उसके विकास की गाड़ी को हम और आगे बढ़ाते चले जाएंगे ताकि राजस्थान विकास के अन्दर और ऊंचाइयां छू ले। आपने क्या किया, क्या नहीं किया। एक बार भाषण हो रहा था, जाने किसने कहा था, 163 ऐसी जगहें थीं जल के मामले में, सिंचाई के मामले में, जल संसाधन के मामले में राजस्थान के अन्दर, एक सरकार आई, पत्थर डाल दिया, शिलान्यास हो गया, यह योजना बनेगी। दूसरी सरकार आई, उसने भी शिलान्यास कर दिया, यह दूसरी बनेगी। तीसरी आई, एक-एक जगह पर 2-2, 3-3 पत्थर लगे हुए थे। इस तरह से 163 योजनाएं लम्बित थीं जल संसाधन की। घोषणा हो गई, शिलान्यास हो गया, कह दिया। मैं धन्यवाद देता हूं इस सरकार को, मैं धन्यवाद देता हूं मुख्य मंत्रीजी को कि वे 163 योजनाएं, सभी लगभग पूर्ण हो गई हैं। यह है। बिजली के मामले में धौलपुर वाला मामला कितने साल से पडा हुआ था, बरसिंहसर कितने साल से पडा हुआ था? 26 साल से था धौलपुर, दसियों वर्षों से बरसिंहसर था। छोड़कर चले गये। रोज योजनाएं चलाएं, रोज बातें करते रहे। राजस्थान को आवश्यकता थी। 8 हजार मेगावाट से ऊपर हम इस दिसम्बर तक इसका प्रोडक्शन ले जाएंगे। 8 हजार मेगावाट से ऊपर जाएंगे न।

श्री महावीर प्रसाद जैन (मुख्य सचेतक): हां।

श्री टीकम चन्द कान्त (सिवाना): 4 हजार से आरम्भ था हमारा, 2003 में 4 हजार से कुछ ऊपर थे कुछ। अब 6 हजार और 8 हजार तक पहुंच जाएंगे। होगा। आत्मनिर्भर होने की बात, बहुत धुरंधर आ गये यहां पर। बहुतों ने राज कर लिया। राजस्थान को इस बिजली के अन्दर, विद्युत के अन्दर धुरंधरता की बात, मतलब आत्मनिर्भर करने की बात, कुछ नहीं कर सके। हमको 12 रुपये बिजली यूनिट खरीदनी पड़ रही है, हमको 10 रुपये यूनिट बिजली खरीदनी पड़ रही है। यह सोच होती। वर्षों राज किया है। इनकी योजना होती, दिमाग के अन्दर लक्ष्य होता तो शायद आज राजस्थान की स्थिति दूसरी होती। नहीं कर पाये ये।

सभापति महोदय, यह गरीब की सोच, घरौंदा योजना, एक सपना होता है गरीब का, मर जाता है, फुटपाथ के ऊपर ही। किसी और की छत का कोई

(श्री टीकम चन्द कांत)

छज्जा बाहर निकला हुआ हो, उसके नीचे मर जाता है। कभी रेलवे प्लेटफार्म पर अपना जीवन त्याग देता है। घर का सपना, एक दिन मेरा घर होगा, वह घर का सपना, सपना ही रह जाता है। आज यह है, इसके अन्दर हमने घोषणा की है कि 10 रुपये दे सकता है, 74 रुपये से 100 कर दिये हैं हमने मजदूरी के, उस में से 10 रुपये दे सकता है तो अपना घर हो जाएगा। इस प्रकार की सोच, अभी कहीं जाकर लगता है...

श्री सभापति: आप कनक्लूड करें।

श्री टीकम चन्द कान्त (सिवाना): मैं करता हूं, साहब। बस थोड़ा-सा। बहुत-बहुत लिया उन्होंने तो। कोई घण्टों ले लिये थे।

मैं एक बात जरुर कहूंगा, देवस्थान-हमारी संस्कृति, हमारी धरोहर, हमारा आधार। हमने राज सम्भाला, वीर तेजा, अब वह कथा है, कैसे भी है। वीर तेजा गायों को वापस लाने के लिये जा रहे थे।

बीच में नागराज ने कहा, काटने की बात आयी। उसने कहा तू मुझे अब मत काट। मेरी गायें गयी हुई हैं। वे गायें जो लोगों की हैं, मैं वापस लेकर आता हूं और आकर मुझे काट लेना। जब मैं आऊं तब मुझे काट लेना। वापस गायें लेकर वीर तेजा आये तो, माननीय सभापति महोदय, नागराज ने कहा कि मैं कहां काटूं, तेरे शरीर पर तो घाव ही घाव हैं। तो वीर तेजा ने कहा कि मेरी जीभ ले और इस जीभ पर काट। यह कथा है वीर तेजा की। गायों के प्रति प्रतिज्ञा भाव रहा। जो वचन दिया था मौत के सामने, उस तरह का भाव रहा। ऐसी कहां है कहानियां? हमारी किताबों में से निकाल दी हैं सारी। अब यह कहानी हमारी किताबों में नहीं आती। हमारे बच्चे पढ़ नहीं पाते। इसलिए किसी न किसी प्रकार से हम करें। मीरा को याद किया गया। मीरा के लिए जीवनी प्रस्तुतिकरण की व्यवस्था की गयी। यह जरूर कह रहे थे देव-स्थानों की, मंदिरों की बड़े उनकी, मतलब जीर्णोद्धार हो रहा है, वगैरह हो रहा है। पर सबसे बड़ी बात आज मैंने पढ़ी कि कुछ पुजारी थे, कुछ महंत थे, उन्होंने कहा कि अब हमारे मंदिर जगमगाएंगे। अब हमारे मंदिर जगमगाएंगे। अब हम दीये कुछ ज्यादा कर पाएंगे। मंदिर तो इस देश के जगमगाने चाहिए। मंदिर इस समाज के जगमगाने चाहिए। वह हमारी आस्था है। याद किया गोगाजी, पाबूजी, अड़गूजी। इसमें है कि नहीं, वह मालूम नहीं। बाबा रामदेव, 'जिओ-जिओ खमा-खमा रे म्हारा रोजगार धनी रे। सभापति महोदय, सोचने की बात

(श्री टीकम चन्द कांत)

है, आज से 600 वर्ष पूर्व क्या हालत रही होगी इस अनुसूचित जाति की जिसको दलित कहते हैं। हम जिसको अछूत कहते हैं, क्या हालत रही होगी? आजादी के बाद से भी बड़े धीरे-धीरे, धीरे-धीरे करके हमने पास में बुलाया, किसी एस.सी. को घरों में आज भी जगह नहीं है, साथ की भोजन की थाली में आज भी जगह नहीं है। लेकिन वाह रे बाबा रामदेव। वाह रे अवतार। उसने तो उस समय उन घरों में जाकर जब लोगबाग उसकी छाया भी नहीं पड़ने देते थे, यह क्या समाज सुधार होता है, समाज के प्रति प्यार क्या होता है, समाज की किस प्रकार से समरसता दी जा सकती है, जिनको कोढ़ था, जो विकलांग थे, जो अंधे थे, जिनके पुत्र और संतान नहीं थी, जिनका लोग मुंह देखना नहीं चाहते थे, बाबा रामदेव ने उनको अपनाया था। बहुत अच्छा, उन देवताओं की तरफ हमारा ध्यान गया। कह दिया हमको साम्प्रदायिक। यह किया तो फट दूसरी आवाज दूसरे रूप में निकल गयी लेकिन साम्प्रदायिक जरूर कहा इस प्रकार से। आप एक ही प्रकार करते हो। यह देश की संस्कृति है। यह हमारी धरोहर है और हमको करनी चाहिए थी और हमने किया है। महाराजा सूरजमल इतिहास, दिल्ली के बादशाह, याद कर मुझे वह इतिहास। अब इनको लगा कि जाटों को शामिल कर दिया तुम लोगों ने, जाटों को एकत्रित कर दिया और डर लगने लग गया। जाटों को एकत्रित किया सूरजमलजी के नाम से। अच्छा इतिहास कभी भी याद किया जा सकता है। इतिहास के महापुरुषों का कभी भी स्मरण किया जा सकता है। तन सिंहजी के उस कार्यक्रम में, बाड़मेर मैं भी गया था, माननीय सभापति महोदय, आप करेंगे, 36 कौम वहां आयी थीं। उसमें से एक बात जो निकल कर आयी वह यह थी कि क्षत्रिय धर्म है, क्षत्रिय कोई जाति नहीं है। अगर आप सिंह लगाते हैं, नरपत सिंहजी साहब सिंह लगाते हैं, राजेन्द्र सिंहजी भी सिंह लगाते हैं, तो सिंह लगाने से क्षत्रिय नहीं। उनके चिन्तन में से जो चीज बाहर आयी थी, जो व्यक्ति दूसरे के प्राणों की रक्षा करके खुद मरे, वह क्षत्रिय होता है। बहुत सुन्दर बात कही उन्होंने। बहुत सुन्दर बात कही। इस समाज को क्षत्रिय धर्म वाले लोगों की आवश्यकता है। इस समाज के लिए बलिदान देने वालों की आवश्यकता है। और कोई सिंह हो या नहीं हो लेकिन ये क्षत्रिय धर्म के लोग जरूर हो। चाहिए, सुरक्षा चाहिए। कमजोर को सुरक्षा चाहिए। आज हालत खराब है। हालात खराब हैं। हमारी बेटियां, हमारी बहुएं, हमारी बच्चियां, कोई सुरक्षित नहीं। कोई समय ही नहीं

(श्री टीकम चन्द कांत)

देता। आज भी गुस्सा आता है तो सामने वाले आदमी को खतम करने पर कोई समय ही नहीं करता, विचार ही नहीं करता। किसी जमाने के अन्दर, गांवों के अन्दर बात थी और यह 32 ... (व्यवधान) यह मारने वाला व्यक्ति, उसका मुंह नहीं देखते थे। और आज जो ज्यादा हत्याएं कर सकता है, वह ज्यादा व्यक्ति बड़ा बनता है, समाज में ज्यादा पूछा जाता है।

(समय-समाप्ति-सूचक घंटी)

माननीय सभापति महोदय, बिलकुल ठीक है, आपने कहा है, मैं तो पूर्ण करूंगा ही। बहुत-सी बातें कहनी थीं लेकिन मैं माहिर आजादजी जैसा जिद्दी नहीं हूं, मैं अब कनक्लूड कर लूंगा। इसमें कोई दो मत नहीं। एक बार गुरु गोविन्द सिंहजी, वाह गुरु वाह! इस देश की, धर्म की रक्षा, इस देश के समाज की रक्षा, सत् श्री अकाल ... (व्यवधान)

एक माननीय सदस्य: कहे सो निहाल।

श्री टीकम चन्द कान्त (सिवाना): 'चिड़िया से मैं बाज लडाऊं, तरी नाव गुरु गोविन्द सिंह कहलाऊ।' याद किया है अब हमने। हमने उन स्मारकों को, उन स्थानों को, उन यादों के सहारे खड़े करने की कोशिश की ताकि हमारे यहां बता दें गुरु गोविन्द सिंहजी को। उनके दो बच्चे, 'जोरावर जोर से बोला, फतेह सिंह शोर से बोला, लगा ईंट भरो गारा, चुनो दीवार हत्यारा।'' जिनके बच्चे दीवारों के अन्दर इस देश के लिए, इस धर्म के लिए बलिदान हो गये, चुन लिये गये लेकिन वे झुके नहीं। बड़ा भाई पहले दीवार के नीचे दब जाएगा। रोना आ गया। छोटा भाई पहले दीवार के नीचे दब जाएगा, बड़े भाई को रोना आ गया। तू छोटा है, दीवार पहले तेरे ऊपर आएगी, तू, मौत को पहले पेटेगा और मेरे बाद में बारी आएगी क्योंकि मैं बड़ा हूं। खैर! कुल मिलाकर हमारी संस्कृति को, हमारे लोगों को, हमारे गुरुओं को, हमारे देवताओं को, हमारे मंदिरों को, इस धरोहर को आपने इसके अन्दर याद किया है, सम्भाला है, मैं धन्यवाद देता हूं।

अब कुछ चीजें ऐसी हैं, मुझे किसी ने कहा था, दो-एक पंक्तियां किसी ने दी थीं इसलिए कि महंगाई बढ़ गयी। उन्होंने बताया था कि दाल क्या भाव है, तेल क्या भाव है, आटा क्या भाव हो गया, फलां क्या भाव हो गया, सब्जी क्या भाव हो गयी। वह बताया था मुख्य मंत्रीजी ने, उसके तहत किसी ने यह

(श्री टीकम चंद कांत)

बात कही है। एक बात तो हम हमारे लिए कहेंगे। बहुत कुछ कहा है हमारे लिए, उनके लिए हम कह रहे हैं वह। ''हम जो भी हैं, जैसे भी हैं, खरे-खरे हैं,'' माननीय सभापति महोदय, ध्यान चाहूंगा। ''हम जो भी हैं, जैसे भी हैं, खरे-खरे हैं। समरसता से हृदय हमारे शौर्य भरे हैं।'' एक और- 'यत्नशील हम लक्ष्योन्मुख अभी रहेंगे। हमें राजस्थान को विकास की गति में ले जाना है, विकास में अग्रणी राज्यों में ले जाना है तो यत्नशील हम, लक्ष्योन्मुख अभी रहेंगे और पराजय या हार न अपनी कभी मानेंगे, नहीं सहेंगे।' एक बात। अब एक दूसरी बात है, वह उनके लिए है। माहिर आजादजी, सुनें तो वह हिन्दी में है। वैसे मुझे मालूम है, मैं उर्दू नहीं जानता। महंगाई की बात थी। 'फुटपाथ पर से गरीबी यह कहती है चीखकर, 'फुटपाथ पर से गरीबी यह कहती है चीखकर, क्यों भूख और प्यास का मुझ पर ही राज है?' और उसके आगे कहते हैं- 'क्या जाने हो देश का अंजाम दोस्तों, क्या जाने हो देश का अंजाम दोस्तों, इंसानियत के खून से महंगा अनाज है।' धन्यवाद।

मोहम्मद माहिर आजाद (नगर): माननीय सभापति महोदय, ऐसे नहीं है यह। यह है- 'फुटपाथ के करीब भी बसती है जिन्दगी, महलों के अपने रेशमी पर्दे उठा कर देख महारानी।'

श्री सभापतिः श्रीमती लक्ष्मी बारूपाल।

मोहम्मद माहिर आजाद (नगर): माननीय सभापति महोदय, I am on personal explanation. मेरे अजीज दोस्त सिवाना से आने वाले माननीय सदस्य ने अपने सम्बोधन में अभी यह कहा था कि माहिर आजाद ने यह कहा कि मुख्य मंत्रीजी ने मंदिर तो बनवा दिये, मेरा मजार भी बनवा दो। तो मजार तो बहुत बुज़ुर्गों का और जिनका स्वर्गवास या बफात हो जाती है, उनका बन जाता है। मैं तो अभी आपके सामने छाती पर जीता-जागता खड़ा हूं, इसलिए मेरा मजार मत बनवाओ। इसको कार्यवाही से निकलवाओ, आप समझो इसको।

श्री जोगाराम पटेल (संसदीय सचिव): जिन्दा दिल नहीं हो न। जिन्दा दिल नहीं हो। (व्यवधान)

मोहम्मद माहिर आजाद (नगर): वह तो आप मुझे देखोगे तब पता पड़ेगा।

श्री जोगाराम पटेल (संसदीय सचिव): मैंने देखा हुआ है।

मोहम्मद माहिर आजाद (नगर): जब नजदीक आओगे तो समझ जाओगे। फासले तो गलतफहमियां ही पैदा करते हैं। कभी नजदीक आओगे तब पता पड़ेगा।

श्री सभापति: श्रीमती लक्ष्मी बारूपाल।

श्रीमती लक्ष्मी बारूपाल (देसूरी): माननीय सभापति महोदय, मैं राजस्थान की यशस्वी मुख्य मंत्री सम्माननीय वसुन्धराजी राजे द्वारा प्रस्तुत बजट 2008-09 के पक्ष में बोलने के लिए उपस्थित हुई हूं। सम्माननीय सभापति महोदय, माननीय वसुन्धराजी ने जो बजट पेश किया, महिलाओं को, गांव में रहने वाली महिलाओं को फख्र महसूस हुआ कि इस राजस्थान की मुख्य मंत्री ने हमारे लिये सोचा, गांव की गरीब महिलाओं के लिए सोचा, गरीब विधवाओं के लिये सोचा, स्कूलों में पढ़ने वाली लड़कियों के लिये सोचा। सभापति महोदय, आज की नारी अब अबला नहीं रही, सबला हो गयी। आज की सबला नारी अबला नहीं रही। आज नारी सम्माननीय प्रतिभा पाटिलजी के रूप में, सम्माननीय वसुन्धराजी के रूप में, सानिया मिर्जा के रूप में, बछेन्द्री पालजी के रूप में, सुमित्रा सिंहजी के रूप में, किरणजी बेदी के रूप में, कल्पना चावला के रूप में, सुनीता विलियम्स के रूप में अपने-अपने पदों पर शोभायमान हो रही है, पद को शोभायमान कर रही है। वह दिन लद गये जब नारी के लिए यह कहा जाता था- 'हाय अबला तेरी यही कहानी, आंचल में है दूध और आंखों में पानी' नारी अपने करम पर विश्वास करते हुए सफलता के सोपान चढ़ रही है और आज यह महसूस करवा रही है कि 'तू जिन्दा है तो जिन्दगी की जीत पर यकीन कर, अगर कहीं स्वर्ग है तो उतार ले जमीन पर।'

(समय : 19.22 बजे)

(श्री शांतिलाल चपलोत, सभापति, पदासीन)

माननीय सभापति महोदय, राजस्थान सरकार के नेतृत्व में उदीयमान राजस्थान उजालों के इन्द्रधनुष बनाते हुए सफलता की कई कहानियां गढ़ रहा है। चाहे भीलवाड़ा की विधवा हरकू के घर की बात हो, जिसकी तीन बेटियां नवीन पालनहार योजना के तहत सामाजिक न्याय और अधिकारिता विभाग द्वारा लाभान्वित होकर चहक रही हैं। चाहे बाड़मेर की गरीब विधवा हरिया माली की बेटी के ब्याह की चिन्ता को मिनटों में सुलटा दिया हो, चाहे चूरू की श्रीमती आशिया पत्नी स्व. मूसे खां की बात हो जिसके पति की मृत्यु के 42

(श्रीमती लक्ष्मी बारूपाल)

साल बाद उसे विधवा पेंशन स्वीकृत हुई हो। चाहे राजसमन्द जिले की गरीब गर्भवती अरूबाई हो, जिसने स्वास्थ्य जांच शिविर जाकर अपनी मुफ्त स्वास्थ्य जांच करवाकर अपने जीवन के महत्व को समझा हो। चाहे कोटा जिले की नन्दूबाई हो जिसने स्वयं सहायता समूह की मदद से ऋण लेकर बेटे की शादी की और आठ हजार का जो ऋण लिया, बड़े स्वाभिमान के साथ उसे लौटाकर बेहद संतोष से यह महसूस किया कि भला हो इस योजना का जिसकी वजह से उसे सेठ-साहूकार के आगे हाथ नहीं फैलाने पड़े। नन्दूबाई और उनके साथ की स्वयं सहायता समूह से जुडी हुई और महिलाएं-दल्लू बाई, मंदोदरी बाई और भी बाइयां, उन्होंने खुल जा सिमसिम करके अपने गरीबी के दैत्य को मुट्ठी में बंद कर दिया और यह एहसास करा दिया कि राजस्थान की औरतें भी इस प्रकार कर सकेंगी। ऐसे कई उदाहरण लोगों को न्याय देने के रूप में, उनको अधिकार देने के रूप में, उन्हें रोजगार देने के रूप में आज राजस्थान में हैं। राजस्थान की सरकार ने गरीब के घर का सपना पूरा किया है, विधवा को न्याय दिया है। गरीब के बच्चों को विवाह का रास्ता आसान किया है। नि:शुल्क स्वास्थ्य जांच शिविर में जाकर उन्होंने फायदा लिया है। ग्रामीण महिलाओं को स्वयं सहायता समूह के माध्यम से स्वरोजगार स्थापित करने का मौका दिया है। मैं साधुवाद देती हूं हमारी मुख्य मंत्री साहिबा को, कि परिवर्तन यात्रा के दौरान उन्होंने जो महसूस किया, उसी के अनुरूप योजनाओं का क्रियान्वयन करके पिछले चार साल से गरीबों को फायदा दिलाने का महती कार्य उनके द्वारा किया जा रहा है।

माननीय सभापति महोदय, पूर्ववर्ती सरकार का महिलाओं को रोजगार दिलाने के प्रति जो दृष्टिकोण रहा है और हमारी सरकार का, वर्तमान सरकार का महिलाओं को स्वरोजगार दिलाने का जो दृष्टिकोण रहा, उसके कुछ आंकड़े मैं पेश करना चाहती हूं। विधवाओं की पुत्रियों के विवाह के संबंध में भी मैं कुछ कहना चाहती हूं। विधवा पुत्रियों के विवाह हेतु गत सरकार द्वारा पांच साल के कार्यकाल के दौरान 3,683 बालिकाओं की शादी पर मात्र 2 करोड़ 3 लाख की आर्थिक सहायता उपलब्ध करवाई गई, जबकि वर्तमान सरकार द्वारा 4 वर्षों में 6,549 बालिकाओं की शादी हेतु 7 करोड़ 40 लाख रुपये की सहायता प्रदान की गयी। वर्तमान सरकार द्वारा महिलाओं के सशक्तिकरण हेतु जागरूकता सामाजिक चेतना हेतु प्रत्येक ग्राम स्तर पर साथिनों का चयन किया गया और वर्तमान में 80,059 साथिनों का चयन किया जा चुका है।

(श्रीमती लक्ष्मी बारूपाल)

माननीय सभापति महोदय, महिलाओं को विभिन्न विधाओं के प्रशिक्षण दिलाकर तथा बैंकों के माध्यम से ऋण उपलब्ध करवाकर उन्हें रोजगार से वर्तमान में जोड़ा जा रहा है और इस वर्ष 23 हजार महिलाओं को रोजगार के अवसर प्रदान किये गये। स्वयं सहायता समूह की योजना को स्थायित्व और गति प्रदान करने हेतु राज्य स्तर पर स्वयं सहायता समूह प्रशिक्षण संस्थान की स्थापना की गयी और साथ ही सात सम्भागीय मुख्यालयों पर भी स्वयं सहायता समूह संदर्भ केन्द्र स्थापित किये गये।

महिला आयोग का पुनर्गठन कर नये अध्यक्ष की नियुक्ति की गयी और साथ ही तीन रिक्त पदों पर महिला सदस्यों का मनोनयन कर आयोग को सशक्त बनाया गया। किशोरी बालिकाओं के सर्वांगीण विकास के लिये किशोरी शक्ति योजना को लागू किया गया। जबकि भारत सरकार ने जो स्वावलम्बन योजना चल रही थी उसको भी बंद कर दिया। हमारी सरकार ने उसे राज्य स्तर पर चलाये जाने का निर्णय किया।

वृद्धावस्था, विधवा और विकलांग पेंशन योजना के तहत वर्तमान सरकार द्वारा चालू वित्तीय वर्ष में दिसम्बर, 2007 तक 8,72,804 व्यक्तियों को 240 करोड़ रुपये की राशि पेंशन के रूप में उपलब्ध करवाई गई, जबकि गत सरकार द्वारा अपने कार्यकाल के अन्तिम वर्ष में 5 लाख 29 हजार 896 व्यक्तियों को मात्र 113 करोड़ रुपये की राशि पेंशन के रूप में उपलब्ध करवायी गयी थी। कहां 240 करोड़ रुपये और कहां 113 करोड़ रुपये, इतना अन्तर है, देखिये।

इसके अलावा जननी सुरक्षा योजना, मुख्य मंत्री बालिका सम्बल योजना, हाडी रानी बटालियन, महिला दुग्ध सहकारी समितियों का गठन, ऐसी कई योजनाएं हैं जिससे महिला मजबूत होकर उभर रही है। निश्चिित ही ये योजनाएं महिला के सम्बल व गौरव को बढ़ाने वाली हैं और राज्य सरकार का प्रयास है कि राज्य की आधी आबादी मजबूत और प्रखर हो और हमारा राज्य प्रगति करे।

सभापति महोदय, वर्तमान में जो 2008-09 का बजट माननीय वसुन्धराजी राजे के द्वारा प्रस्तुत किया गया है उसमें भी महिलाओं के लिए नाना प्रकार की घोषणाएं की गयी हैं मैं इसकी भी एक बानगी आपको यहां पर पेश करना चाहती हूं।

(श्रीमती लक्ष्मी बारूपाल)

डीडवाना में निजी सहभागिता से महिला कालेज, किसी भी इलाके में स्वयं की भूमि पर महिला अभियांत्रिकी कालेज स्थापित करने पर भवन हेतु अनुदान, गार्गी पुरस्कार की राशि एक हजार से डेढ़ हजार बारहवीं कक्षा में 75 परसेंट से ज्यादा अंक लाने वाली छात्राओं के लिए तीन हजार रुपये का पुरस्कार, महिला बास्केटबाल अकादमी की सफलता के बाद महिला हॉकी अकादमी की स्थापना और दूध का मूल्य 280 रुपये प्रति किलो किया जाना- मैं समझती हूं 3146 महिला दुग्ध सहकारी समितियां हैं, उनसे जुडी हुई एक लाख 72 हजार 986 जो महिलाएं हैं उनको आर्थिक सम्बल प्रदान हुआ है। दूध का जो मूल्य बढ़ाया गया है उससे महिलाएं कहीं न कहीं लाभान्वित होंगी क्योंकि इस दुग्ध व्यवसाय में ज्यादा से ज्यादा महिलाएं जुडी हुई हैं। इससे भी महिलाओं को आर्थिक सम्बल मिलेगा।

आंगनबाड़ी कार्यकर्ताओं का मानदेय बढ़ा कर एक हजार से 1600 रुपये, साथिन का मानदेय बढ़ा कर 500 से एक हजार रुपये, सहायिका का मानदेय बढ़ा कर 500 से 800 रुपये और बी.पी.एल. परिवार की महिला और अनुसूचित जाति, जनजाति महिला के नाम से स्मार्ट कार्ड से बैंक खाता खुलवाने पर 1500 रुपये का प्रोत्साहन उपहार। गर्भवती महिलाओं के इलाज हेतु धन्वन्तरि एम्बुलेंस सेवा योजना, कृषि शिक्षा पूर्ण करने वाली महिलाओं को कृषि पर्यवेक्षक के रिक्त पदों पर नियुक्ति, कृषि मण्डियों में 10 परसेंट दुकानों व भूखण्डों का आबंटन महिलाओं के नाम से, रोजगार गारण्टी योजना में सौ दिन कार्य करने पर महिला को अमृता देवी विश्नोई योजना के नाम से साड़ी और घाघरा, ओढ़नी।

पंचायती राज में महिलाओं को मजबूती देने के लिए आरक्षण 33 प्रतिशत बढ़ा कर 50 प्रतिशत किया जाना, विधवा पेंशन में वृद्धि किया जाना, जयपुर के साथ में 6 मेडिकल कालेजों में महिला विंग हेतु 50-50 लाख की घोषणा और पुलिस विभाग में तीन हजार कांस्टेबल की भर्ती में 30 प्रतिशत पद महिलाओं के लिए आरक्षित। ये सभी बातें महिला की स्थिति में क्रांतिकारी परिवर्तन लाने वाली साबित होंगी।

अब तक केवल बातें ही बातें होती रहीं। महिलाओं के सशक्तीकरण के लिए हमारी वसुसन्धराजी राजे ने, राजस्थान की यशस्वी मुख्य मंत्री साहिबा ने महिलाओं के लिए जो घोषित किया है उसके परिणाम वास्तव में चौंकाने वाले

(श्रीमती लक्ष्मी बारूपाल)

आएंगे। मैं विपक्ष में बैठे माननीय सदस्यों से निवेदन करती हूं, जो बातें कर रहे हैं उनसे भी निवेदन कर रही हूं कि इस बजट में महिलाओं को पंचायती राज में 33 प्रतिशत आरक्षण को बढ़ा कर 50 प्रतिशत जो किया गया है, मैं समझती हूं महिला के कुशल नेतृत्व को इसमें सराहा जाएगा।

आप उठा कर देख लीजिए, आज सुबह विपक्ष के माननीय रामचन्द्र सराधना श्री कालूलालजी गुर्जर के पास आये और कहा कि, भाई साहब, सरपंच कितने-कितने, एक लिस्ट बताइये कितने हैं? क्या कहा, भाई साहब?

श्री सभापति: बोलें आप, बोलें अपने। (व्यवधान)

श्रीमती लक्ष्मी बारूपाल (देसूरी): कितने सस्पैण्ड हुए? मैं भी पास बैठी थी। मैंने कहा, इसमें महिलाओं की कितनी लिस्ट है और जेंट्स की कितनी लिस्ट है? तो वो बोले कि वो तो तीसरी सन्तान की वजह से। तो जननी तो जनेगी तभी तो होगा और जननी का यह अधिकार भी आप छीन लोगे उससे? दूसरा उनसे पूछा कि महिलाएं कितनी? तो कहा, महिलाओं की संख्या बिलकुल नहीं है। यह चीज दिखाती है कि महिलाओं को नेतृत्व करने का सलीका है। जहां पर महिला नेतृत्व है उसको सलीके से शासन चलाना आता है, भ्रष्टाचार वहां कम से कम हुआ है, मैं दावे के साथ कह सकती हूं इसके लिए।

श्री श्रवण कुमार (पिलानी): माननीय सदस्या, शेर ही करेगा शिकार तो, गीदड़ शिकार नहीं करते हैं कभी। शेर तो शिकार ही करेगा, गीदड़ थोड़े ही करेगा। तो माल तो मर्द ही खाएंगे, नहीं तो औरतें खाएंगी क्या? (व्यवधान)

श्री सभापति: विराजें, विराजें।

श्री जोगाराम पटेल (संसदीय सचिव): यह तो अपमान है महिलाओं के लिए, श्रवणजी।

श्रीमती लक्ष्मी बारूपाल (देसूरी): इन शेरों ने शिकार-शिकार कर-कर के इस देश का भट्ठा बैठा दिया, अब महिलाओं की बारी आने दो, सारी व्यवस्था ठीक करेंगी महिलाएं।

मैं विपक्ष में बैठे अपने माननीय सदस्यों से पुन: एक बार निवेदन करना चाहती हूं कि आप भी अपनी नेता सोनियाजी से कहें कि देश की विधायिकाओं में भी महिला आरक्षण को लागू करें। मैं दावे के साथ कह सकती हूं कि महिलाएं जहां-जहां नेतृत्व करेंगी, अपनी कुशलता का परिचय देंगी।

श्री सभापतिः माननीय सदस्या श्रीमती लक्ष्मी बारूपाल, अब कनक्लूड करें आप।

श्रीमती लक्ष्मी बारूपाल (देसूरी): साहब, अभी तो मैंने बोलना ही शुरू किया है।

श्री घनश्याम तिवाड़ी (खाद्य एवं नागरिक आपूर्ति मंत्री): अभी तो वहीं हैं, सभापति के पद पर आ गयीं तब देखना फिर आप। (व्यवधान)

श्रीमती लक्ष्मी बारूपाल (देसूरी): अभी तो शुरू हुआ है, साहब। आज राज्य वसुन्धराजी के नेतृत्व में निखर रहा है।

श्री हेमाराम चौधरी (नेता प्रतिपक्ष): सीट जनरल हो गयी।

श्रीमती लक्ष्मी बारूपाल (देसूरी): काम बोलेगा हमारा। सीट जनरल होती है या एस.सी. की होती है, अगर अच्छा काम किया होगा तो निश्चित रूप से राजस्थान की जनता पुनः एक बार राजस्थान के इस सर्वोच्च पद पर भारतीय जनता पार्टी को बैठाएगी, साहब, आप इन्तजार करिये।

आज राज्य वसुन्धराजी के नेतृत्व में प्रगति कर रहा है, निखर रहा है। राष्ट्रपतिजी जो महिला हैं, प्रतिभाजी पाटिल, उनके शालीन नेतृत्व को भी देश ने सराहा है, हम भी सराहते हैं। इसलिए आप भी मन को मजबूत कर लीजिए, भाई साहब, और सोनियाजी से कहिये कि विधायिकाओं में भी 33 प्रतिशत आरक्षण का क्रांतिकारी कदम उठवा ही दीजिए।

श्री अमराराम चौधरी (राज्य मंत्री, गृह): प्रतिपक्ष के नेताजी की श्रीमती भी सरपंच हैं, यह महिलाओं के खिलाफ नहीं हैं।

श्री श्रवण कुमार (पिलानी): यह मजबूत दिल करने के लिए मेरा नाम लिया है क्या? मेरा नाम लिया है क्या? (व्यवधान)

श्री जोगाराम पटेल (संसदीय सचिव): तगारामजी को पूछ लो, तगारामजी बता देंगे।

श्री श्रवण कुमार (पिलानी): परिस्थितियां अपने आप को बदल देती हैं, हमने तो 50 प्रतिशत घोषित करते ही पत्थर रख लिया था कि हो गया।

श्री जोगाराम पटेल (संसदीय सचिव): हां, तगारामजी बता देंगे, किसकी चलती है घर में।

श्रीमती लक्ष्मी बारूपाल (देसूरी): आपकी बात में एक शेर, एक-दो पंक्तियां। शेर तो मैं लिखना जानती नहीं हूं, शेर तो आप हो जो शेर लिख-लिख कर बोलते हो, मैं तो दो पंक्तियां कहना चाहती हूं- हमको 50 प्रतिशत आरक्षण

(श्रीमती लक्ष्मी बारूपाल)

क्या पंचायतों में दे दिया, आपका दिल अन्दर से धुक-धुक होने लगा। भाई साहब, महिलाओं के बारे में कह रही हूं, यह कठोर कृपा संचित है हमारे पूरे जीवन में। भाई साहब, इस देश पर ज्यादा से ज्यादा आप लोगों ने राज किया है, अब तो महिलाओं के राज करने की धीरे-धीरे बारी आ रही है। एक अच्छा, अभूतपूर्व क्रांतिकारी निर्णय वसुन्धराजी ने लिया है, देखिये आप आगे क्या होता है। निश्चित रूप से जो क्रांतिकारी कदम अभी तक उठाये गये हैं, जिस किसी भी महापुरुष ने या किसी भी नेतृत्व ने उठाये होंगे, उनकी आलोचना आप जैसे लोगों ने की होगी, मगर इसका परिणाम आने के बाद में आप लोगों ने इसको जरूर सराहा होगा, आप भी एक दिन सराहेंगे इस चीज को, यह मेरा विश्वास है।

श्री श्रवण कुमार (पिलानी): माननीय सदस्या, 'मंजिल को पीछे छोड़ने वाले हैं नहीं हम, मुड़ कर पीछे देखने वाले है नहीं हम। कह दो जमाने को और भला, अपने जमीर को बेचने वाले हैं नहीं हम।'

श्रीमती लक्ष्मी बारूपाल (देसूरी): आज बड़ी अच्छी और सार्थक चर्चा आप करवा रहे हो, कल तो आपने महिला को बोलने भी नहीं दिया। आज शायद आपको अन्दर से थोड़ा-सा महसूस हुआ होगा कि हमें जनम देने वाली भी तो एक महिला ही है इसलिए आपने यह निर्णय किया, आपको धन्यवाद।

अच्छा होता आप अपनी केन्द्र सरकार से, सत्ता में आप भी हैं, सत्ता में हम भी हैं, हम हमारा फर्ज निभा रहे हैं, अच्छा होता आप भी अपना फर्ज निभाते, चाहे किसानों के नाम पर आप हो-हल्ला कर रहे हों। वसुन्धराजी ने 126 करोड़ रुपये का पैकेज देकर, शीतलहर और पाले से जो किसान पीड़ित हुए हैं उनको पैकेज देकर बहुत ही अभूतपूर्व और अच्छा काम किया है। आपको कहीं न कहीं इसमें मेरे को लगता है, दर्द महसूस हुआ है क्योंकि आपको धरना प्रदर्शन करने का मौका मिला नहीं, आपको जस लेने का मौका मिला नहीं और वसुन्धराजी ने हाथोंहाथ दे दिया, इससे आप टांग कहां रखोगे। नहीं तो किसान के ऊपर कल टांग रखते कि हमने धरना प्रदर्शन किया इसलिए आपको मुआवजा दिया गया। मगर वसुन्धराजी राजे जिन्होंने गरीब के दर्द को नजदीक से देखा हो, आदिवासियों की झोंपडियों में जिन्होंने रोटी खाई हो, जिन्होंने किसानों को हजारों की संख्या में कृषि कनेक्शन चार वर्ष में दिये हों, गांवों में चौबीस घंटे सिंगल फेस की बिजली जिन्होंने उपलब्ध करवाई हो,

(श्रीमती लक्ष्मी बारूपाल)

राजस्थान के प्रत्येक गांव को सड़कों से जोड़ा हो, हजारों युवाओं को नौकरियां दी हों, ऐसी मां की बेटी जिन्होंने पार्टी के लिए अपना सर्वस्व बलिदान दिया हो, ऐसे भाई की बहिन जिन्होंने अपनी पार्टी में रहकर सेवा की मिसाल कायम की हों क्या किसानों के दर्द को भी वह समझेंगी नहीं? उन्होंने समझा और बिना मांगे ही 126 करोड़ का पैकेज दे दिया, तो आपको क्यों किरकिरी होने लगी।

आप तो अपनी केन्द्र सरकार से कहकर जो सी आर एफ के नार्म्स हैं, उसमें परिवर्तन करवाते तो मैं समझती कि आप अच्छा काम कर रहे हो। आपको गतिरोध पैदा करना आता है। आपसे तो अच्छे आपके परसरामजी मदेरणा साहब हैं, उन्होंने एक चिट्ठी तो लिखी। मगर आप तो वह भी न कर सके। पंजाब का जब मामला आया जल वितरण का, तब भी आपने यहां संकल्प पारित किया और ...

श्री जोगाराम पटेल (संसदीय सचिव): लक्ष्मीजी, उनसे भी ज्यादा उनकी बहू तेज है ...(व्यवधान) जोधपुर के सारे अख़बार मंगाकर देख लो, इतना बड़ा-बड़ा फर्स्ट पेज पर ...

श्रीमती लक्ष्मी बारूपाल (देसूरी): और आज उनकी बहू लीलाजी ने कह दिया कि आपकी कितनी सीटें आएंगी, पच्चीस सीटें उन्होंने कह दिया।

श्री जोगाराम पटेल (संसदीय सचिव): लीलाजी मदेरणा का नाम लो, वह भी महिला हैं।

श्रीमती लक्ष्मी बारूपाल (देसूरी): मैं सम्मान करती हूं, आपकी जितनी महिला नेत्रियां हैं, उनका सम्मान करती हूं।

श्री सभापति: बोलने दो । टोका-टोकी नहीं करें।

श्रीमती लक्ष्मी बारूपाल (देसूरी): वसुन्धराजी ने जो लोगों के लिए किया है, जो सेवा कर्म किया है पूरे राजस्थान की जनता के लिए, माननीय सभापति महोदय, मेरा विश्वास है, उसके रिजल्ट अच्छे आएंगे। उसके परिणाम अच्छे आएंगे आप देखना। आपके सम्माननीय नेताजी....

श्री हरिमोहन शर्मा (हिण्डौली): आपकी सीट सुरक्षित रह जाए, उसका इन्तजाम कर लेना।

श्री सभापति: अब आप कनक्लूड करें।

श्रीमती लक्ष्मी बारूपाल (देसूरी): हमारी सीटों में तो बढ़ोतरी हुई है, वह भी बढ़ोतरी हुई है। भाईसाहब, जब अटल बिहारी वाजपेयी केन्द्र में प्रधान

(श्रीमती लक्ष्मी बारूपाल)

मंत्री थे तब उन्होंने संविधान संशोधन किये तीन-तीन और आज लोक सभा की और विधान सभाओं की सीटो में एस सी, एस टी की सीटों में बढ़ोतरी हुई है। परिसीमन में उन्होंने किया, आपने तो कुछ नहीं किया। आपने हमारे वोट लिये।

श्री हरिमोहन शर्मा (हिण्डौली): एस सी, एस टी की बात नहीं करनी, मुझे तो केवल आपकी चिन्ता है ...(व्यवधान)

श्री सभापतिः माननीय सदस्य, माननीय सदस्य।

श्री महावीर प्रसाद जैन (मुख्य सचेतक): आपने ममताजी की चिन्ता की या नहीं, वह भी एक हैं?

श्री हरिमोहन शर्मा (हिण्डौली): मैं पड़ोसी धर्म निबाह रहा हूं। आपकी तरह मैं इतना गलत आदमी नहीं हूं, पड़ोसी धर्म निबाह रहा हूं।

श्री महावीर प्रसाद जैन (मुख्य सचेतक): दो-दो एम एल ए मिलकर जो हैं ...(व्यवधान)

श्री हरिमोहन शर्मा (हिण्डौली): मेरी इच्छा भी है, मेरी कल्पना है कि यह दुबारा आएं, लेकिन सीट का ख्याल रखना भाषण देने के बाद। (व्यवधान)

श्रीमती लक्ष्मी बारूपाल (देसूरी): सीट वीट सब छोड़ो जी, सीट का ध्यान तो जनता रखेगी ...(व्यवधान) जिसने अच्छा काम किया है मेरा दावा है, उसका ध्यान जनता ही रखेगी। इस राज का ध्यान भी जनता ही रखेगी, सम्माननीय वसुन्धराजी का ध्यान भी जनता ही रखेगी और आपका ध्यान भी जनता ही रखेगी। ध्यान रखा है आपकी सम्माननीय नेता सोनियाजी ....

श्री सभापतिः अब आप कनक्लूड करें। एक मिनट में जो भी बात कहनी हो, कहें।

श्रीमती लक्ष्मी बारूपाल (देसूरी): दो मिनट दे दीजिए। आपकी सम्माननीय नेता सोनियाजी का कद जरूर बढ़ रहा है मगर पार्टी का ग्राफ गिर रहा है ...(व्यवधान) जब वह राष्ट्रीय अध्यक्ष बनीं थीं तब कितने स्टेट्स में आपकी सरकार थी, आज आप चार स्टेट में सिमट कर रह गये हो और आज दस स्टेट्स में हमारी सरकार है ...(व्यवधान)

श्री हरिमोहन शर्मा (हिण्डौली): आपकी केन्द्र सरकार चली गयी, ऐसे ही होता है।

श्रीमती लक्ष्मी बारूपाल (देसूरी): वह वापस आएगी, वह वापस आएगी ...(व्यवधान)

श्री सभापति: बोलने दें, माननीय सदस्य।

श्रीमती लक्ष्मी बारूपाल (देसूरी): आप तो अपना कद बढ़ाओ।

श्री महावीर प्रसाद जैन (मुख्य सचेतक): वह चेता रही हैं आपको। समय पर चेत जाओ, सोनियाजी के चक्कर में मत पड़ो।

श्रीमती लक्ष्मी बारूपाल (देसूरी): अपनी नेता का कद बढ़ाओ, पार्टी का भट्टा बैठाओ, आपको शुभकामनाएं।

माननीय सभापति महोदय, आज राजस्थान की सरकार सर्व जन हिताय की सोच लेकर जनता की जिस प्रकार से सेवा कर रही हैं, चार साल में उन्होंने जिस प्रकार से सेवा की है, हमारे क्षेत्र में जिस प्रकार का सभी लोगों के क्षेत्र में काम हुआ है, उससे मेरा पूर्ण विश्वास है कि नया उजाला अवश्य आएगा। इस सेवा कर्म से का निश्चित ही खुशहाली का पैगाम आने वाला है, ऐसा मेरा विश्वास है। आपने मुझे बोलने का मौका दिया इसके लिए बहुत-बहुत धन्यवाद। जय हिन्द, जय भारत।

श्री सभापति: श्री श्रवण कुमारजी।

श्री श्रवण कुमार (पिलानी): माननीय सभापति महोदय, ...(व्यवधान) क्या हो गया? घनश्यामजी, हमें तो अपनों ने मारा गैरों में कहां दम था। मेरी नांव तो वहां डूबी जहां पानी कम था। हमें कौन मारने वाला था, हम लोग तो अपने आप से ही मरे, नहीं कौन आता, कहां ख्याल होता।

डा. दिगम्बर सिंह (उद्योग मंत्री): यह कह रहे हैं कि इनके बाद आपका बोलना ठीक नहीं, हरिमोहनजी बोलते। क्योंकि अब जिस स्टेज में हरिमोहन जी हैं, इनका तो अब कहीं कोई फर्क है नहीं।

श्री जोगाराम पटेल (संसदीय सचिव): सही बात यही है।

श्री घनश्याम तिवाड़ी (खाद्य एवं नागरिक आपूर्ति मंत्री): मैं यह कह रहा था कि आपकी दोनों की स्थिति एक ही है, उनकी सीट जनरल हो गयी और आपकी रिजर्व हो गयी।

श्री श्रवण कुमार (पिलानी): दोनों जीतकर आएंगे, चिंता करने की जरुरत नहीं है।

श्री घनश्याम तिवाड़ी (खाद्य एवं नागरिक आपूर्ति मंत्री): हां, फिर यही ठीक है।

श्री श्रवण कुमार (पिलानी): घनश्यामजी, कभी शेर को टीका निकाल कर जंगल में नहीं भेजा जाता है। जंगल में शेर जहां जाएगा, जंगल का राजा होगा। यह जरूरी नहीं है, सीट क्या होती है।

श्री घनश्याम तिवाड़ी (खाद्य एवं नागरिक आपूर्ति मंत्री): वह तो मैं आपको जानता ही हूं।

श्री श्रवण कुमार (पिलानी): आप जानते हो ना ...(व्यवधान)

श्रीमती लक्ष्मी बारूपाल (देसूरी): शेर को भी शेरनी ने ही जन्म दिया है। आप बार-बार अपने लिए शेर शब्द का इस्तेमाल न करें।

श्री श्रवण कुमार (पिलानी): वह भी कह दो, शेरी एक पुत्र लेके निर्भय सोती, गधरी दस पुत्र जन्म देके ...सिंहणी ऐसे भी होता है, एक ही पुत्र को जन्म देती है और गधी दस पुत्रों को जन्म देकर भी ...(व्यवधान)

श्री जुबेर खान (रामगढ़): घनश्यामजी, ये पढ़े लिखे जाट हैं, आप लोग इनसे जीत नहीं पाएंगे, इनको बोलने दो ...(व्यवधान)

श्री कालूलाल गुर्जर (ग्रामीण विकास एवं पंचायती राज मंत्री): पढ़ा-लिखा जाट खुदा बराबर।

श्री महावीर प्रसाद जैन (मुख्य सचेतक): यह कह रहे हैं कि पढ़ा-लिखा जाट क्या होता है।

श्री कालूलाल गुर्जर (ग्रामीण विकास एवं पंचायती राज मंत्री): अनपढ़ जाट पढ़े बराबर, पढ्यो जाट खुदा बराबर।

श्री श्रवण कुमार (पिलानी): पहले तो राजपूतों की सेवा करते थे, अब आप लोगों की कर रहे हैं। हमारा तो सेवा करने का काम है। यह हमारा काम है।

माननीय सभापति महोदय, आज बजट 2008-09 के ऊपर बोलने का आपने मुझे समय दिया। महिलाओं ने बजट पेश किया और यह सारा बजट मूल रूप से महिलाओं पर है, अब सारा सिस्टम महिलाओं का ही है इसलिए हम तो इनको कुछ बोलना नहीं चाहते। महिलाओं पर बहुत कुछ बोल दिया। अब अबला को सबला बना दिया तो जो सबला थे वे अबला हो गये, तो उलटा तो होता ही है। इसलिए इस बात पर ज्यादा बोलने की जरुरत नहीं है।

(श्री श्रवण कुमार)

मेरा एक ही सब्मिशन है, पूरे बजट को मैंने पढ़ा तो पूरे बजट में तीन चीजें नजर आयीं- पानी बोतलों में सिमट गया, दूध थैली में सिमट गया, शिक्षा कम्प्यूटर में सिमट गयी और बजट के भाषण केवल कागजों में सिमट गये। आज यह देखने को मिल रहा है कि कोई व्यक्ति इस बात के लिए पीड़ित नहीं है कि आज कौन व्यक्ति पीड़ित है और किसके दर्द के ऊपर हमें देखना है। आज मैंने देखा है, पाले की बातें करते हैं, सर्दी की बातें करते हैं। जो किसान सर्दी में जीरो टैम्प्रेचर में अनाज को सींचता है और पचास डिग्री सेल्शियस, टैम्प्रेचर में उसको निकालता है, वह गरीब व्यक्ति का बेटा अपनी मां से बोलता है, मां मुझे रोटी दे। मां अपने बेटे को रोटी नहीं दे पाती है क्योंकि उसका अनाज तो बनिया ले गया आकर खेत से। पहले राजेन्द्रजी होला राजपूत ले जाया करता घोड़ा चढ़के और अब बनिया आ जाता है, बनिया ले जाता है। वह अपनी मां से बोलता है मां मुझे रोटी दे, मां शर्म और दर्द के साथ अपने बेटे को थप्पड़ मारकर सुला देती है। बेटा रोकर सो जाता है और सुबह उठकर बोलता है, मां मुझे रात को क्यों पीटा। मां बोलती है बेटा रात को मेरे पीपे में आटा नहीं था इसलिए मुझे तुझे थप्पड़ मारकर सुलाना पड़ा। लानत है। हिन्दुस्तान की आजादी के 60 साल बाद एक गरीब जो जीरो टैम्प्रेचर में अन्न पैदा करता है, उसका बेटा थप्पड़ की रोटी खाता है और राजेन्द्र सिंहजी राठौड़ और प्रताप सिंहजी सिंघवी के कुत्ते केक और बिस्कुट खाते हैं। इससे बड़ा देश का दुर्भाग्य हो नहीं सकता। लानत है। हिन्दुस्तान की आजादी के 60 साल बाद जिन लोगों का सपना था मेरा भारत देश आजाद होगा ... (व्यवधान)

श्री राजेन्द्र राठौड़ (सार्वजनिक निर्माण मंत्री): श्रवणजी, जरा सही-सही बता देना, मेरे कुत्ते को तो आपने कब केक खाते देखा और आपके कुत्ते क्या खाते हैं ? यह जरूर बता दो आप।

श्री श्रवण कुमार (पिलानी): मेरे कुत्ता है ही नहीं, मैं बता दूं? 'कुत्ता सो कुत्ता, कुत्ता पाले वह कुत्ता, बहन के घर भाई कुत्ता, सासरे में जंवाई कुत्ता, वह कुत्तों का सरदार जो रोटी खाये बेटी के द्वार'। मैं कुत्ता पालता भी नहीं हूं। मैं कभी कुत्ता नहीं पालता हूं। मेरा धंधा नहीं कुत्ते पालना। (व्यवधान)

श्री जुबेर खान (रामगढ़): छेड़ो मत आज।

श्री श्रवण कुमार (पिलानी): आज मैं पूरे राजस्थान की नहीं, पूरे भारत की राजनीति पर मैं चर्चा करना चाहता हूं। आज इस बात का मुझे दुःख है, हमारे भारत की आजादी का पैगाम जिन लोगों ने दिया था- सुभाष चन्द्र बोस, लाल लाजपत राय, भगत सिंह, गांधीजी जैसे लोगों ने, उनका सपना यह नहीं था कि नहीं मेरा ... (व्यवधान) हमारे देश का सपना, जिन लोगों ने देश की आजादी का पैगाम तैयार किया था ... (व्यवधान)

सदन की कार्यवाही

विधान सभा की बैठक के निर्धारित समय में वृद्धि

श्री महावीर प्रसाद जैन (मुख्य सचेतक): माननीय सभापति महोदय, मैं प्रस्ताव करता हूं, बहुत अच्छा भाषण कर रहे हैं, सदन का समय एक घण्टा बढ़ाया जाए।

श्री सभापतिः सदन का समय एक घण्टा बढ़ाया जाता है।

श्री हरिमोहन शर्मा (हिण्डौली): आधा घण्टे ? श्रवण, आधा घण्टे ही बोल लेना।

श्री श्रवण कुमार (पिलानी): एक घण्टा ही बोल दूंगा।

श्री जुबेर खान (रामगढ़): आप टाइम जितना बढ़ाओगे उतना ही श्रवण जी बोलेंगे इसलिए आधा घण्टे में ही काम चला लो।

आय-व्ययक पर सामान्य वाद-विवाद

श्री श्रवण कुमार (पिलानी): हमारे भारत देश का सपना जिन लोगों ने तैयार किया था सुभाष चन्द्र बोस जो बंगाल के रहने वाले थे, भगत सिंह जो पंजाब के रहने वाले थे और गांधीजी जो गुजरात के रहने वाले थे, उनका सपना यह नहीं था कि मेरा गुजरात आजाद हो, उनका सपना यह नहीं था कि मेरा बंगाल आजाद हो, उनका सपना यह नहीं था कि मेरा पंजाब आजाद हो। उनका सपना था कि मेरा भारत देश आजाद हो। उस भारत देश के अन्दर आज महाराष्ट्र में क्या हो रहा है ? बाल ठाकरे की पूजा करते हैं और बोलते हैं गुजरात के आदमी नहीं रह सकते, बिहार के आदमी नहीं रह सकते। उनका सपना कौन देखता है ? बी जे पी उनको समर्थन करती है, इससे बड़ी बेशर्मी की बात भी कोई हो नहीं सकती। (व्यवधान)

श्री धर्मपाल चौधरी (संसदीय सचिव): राज भी तो है ... (व्यवधान)

श्री श्रवण कुमार (पिलानी): राज वहां किसका है ? राज करने वाले भी तो पंगु बनकर बैठे हैं। वह कह रहे थे, मैं उनकी बड़ाई नहीं करता हूं। धर्मपाल जी, आगे तो सुनो ... (व्यवधान)

श्री सभापति: बैठें। बैठें आप।

डा. दिगम्बर सिंह (उद्योग मंत्री): आपके मुंह पर यह बात आयी थी कि राज करने वाले भी तो ... (व्यवधान) समझ नहीं रहा ... (व्यवधान) आप बात को बदल गये।

श्री श्रवण कुमार (पिलानी): बोलने दो न। आप तो बोलने नहीं दे रहे हो। सपना तो देखो क्या हो रहा है? (व्यवधान)

श्री सभापति: बोलने दें। कृपया बोलने दें।

श्री श्रवण कुमार (पिलानी): मैंने टी वी पर देखा था मुख्य मंत्री क्या कह रहे थे? सभी व्यक्तियों की सुरक्षा करना हमारा परम कर्तव्य बनता है। केवल कर्तव्य बनता है। इम्प्लीमेंट करना कर्तव्य नहीं बनता है? कर्तव्य बनने तक तो सारे बाल ठाकरे के चेले उनको बिहार भेज देंगे, तब करोगे? कोई भी काम करने के पहले, प्लान बनाने से पहले इस तरह की कोई भी व्यवस्था होती, उसको तत्काल अंजाम देना चाहिये, अमलीजामा पहनाना चाहिये, चार दिन के बाद तो लोगों को होश आया कि महाराष्ट्र में लोगों के साथ अन्याय हो रहा है। तो मेरा सपना यह है, चाहे राजस्थान में राज किसी का भी हो, न्याय और अन्याय के प्रति जिन लोगों की सूझबूझ ठीक नहीं है वे राज में बैठने का हक नहीं रखते हैं। हमारे कटारिया साहब जब यहां बैठते थे, मैं पीछे बैठता था उस कोने में, उनकी ऐसी भावना था कि राजस्थान के राज में जो बेहूदापन हो रहा है, यह अन्याय हो रहा है उसको दूर करना परम कर्तव्य बनता है।

मैं आज भी कहता हूं कि पानी के ऊपर जो काई आती है वह किसी की दोस्त नहीं होती है। आज राजस्थान में नेताओं पर इस बात का भरोसा करते हैं कि, घनश्यामजी, मेरा अफसर लगा दो, मेरा बाबू लगा दो, वह केवल इस बात का सपना देख सकते हैं। अपराधी हो, ये किसी के दोस्त नहीं हो सकते। ये केवल सरकार को क्षति पहुंचाने के लिए, थोड़े समय स्वयं का फायदा उठाने के लिए आपके दोस्त हो सकते हैं अफसरों को आप कहते हो, मेरा एस डी एम लगा दो, मेरा तहसीलदार लगा दो, इससे राजस्थान का भला नहीं हो सकता। यह कोई नहीं कहता है कि मेरे वह अफसर लगाओ जो इस समाज को गति दे सकता है, इस समाज को अच्छा न्याय दे सकता है। आज

(श्री श्रवण कुमार)

मैं देखता हूं जो सबसे बड़ा भ्रष्ट अधिकारी होता है उसे हमारे नेता लोग चुनकर ले जाएं, साहब, मुझे यह दे दो। क्या करोगे, भाई? बोले साहब कि यह भी कुछ कमा लेगा और मैं भी कुछ कमा लूंगा। यही सपना है क्या? यही भारत देश है क्या? यही राजस्थान है क्या? मैं इस सदन में कहता हूं, नेतागिरी में आने के बाद जो भ्रष्टाचार करता है उससे बड़ा हिन्दुस्तान में दुराचारी व्यक्ति कोई भी नहीं हो सकता। अगर वह ईमानदार, निष्ठावान, देश का सच्चा सिपाही है तो उसको राजनीति में आने के बाद भी ईमानदारी से काम करना चाहिए।

शिक्षा के ऊपर आपने बजट दिया, सांवरलालजी के पी एच डी मंत्री बनने के बाद मैं उनको धन्यवाद देना चाहता हूं, भागीरथ बनकर पानी का जो काम किया है। खाकर भूल जाता है और सोकर बिस्तर को समेटता नहीं है, उससे बड़ा कोई अन्यायी हो नहीं सकता। इन्होंने जो काम किया है, चाहे कांग्रेस का हो, चाहे बी जे पी का हो, चाहे बहुजन समाज पार्टी का हो, इन्होंने काम के मामले में किसी की जाति नहीं देखी, मैं आपको ईमानदारी से कहता हूं। पर, राजेन्द्रजी, आपने तो केवल हां भरकर छोड़ दिया, आपने कुछ किया भी नहीं। आपका कसूर भी नहीं है। आप लोगों की जो हैरिडिटी है वह यही है कि करेंगे वही जो हमारे जंचेगी, इसलिए आपका मैं बुरा भी नहीं मानता हूं। यह जो जाट है न, यह तो भावुक होता है। जहां भी जाओगे, हिन्दुस्तान की सीमा पर कौन लड़ रहा है, यही तो लड़ रहा है? यह इसलिए लड़ रहा है कि इसको मालूम नहीं है कब मरता है आदमी, कब बचता है। इसलिए मैं आपको यह निवेदन करता हूं कि आप मेरे जो एक-दो काम बचे हुए हैं, वो तो कम से कम कर दो।

श्री जुबेर खान (रामगढ़): घनश्यामजी ने करे कि नहीं करे? करवा लिये? घनश्यामजी ने करे नहीं क्या?

श्री श्रवण कुमार (पिलानी): घनश्यामजी के तो काम हो ही गये। मेरे जो थे वे कर दिये। आप फूड दें, फूड में वैसे ही गड़बड़ हो रही है। घनश्याम जी का ससुराल है हमारे, तो करनी पड़ेगी, जब क्या करोगे। अब आपने महिलाओं को शिक्षा में बराबर कर दिया। चिंता श्री शोषणम्, मातृ श्री पोषणम्, विद्याश्री आभूषणम्। चिंता से बड़ा कोई शोषण करने वाला नहीं, विद्या से बड़ा कोई आभूषण नहीं और मां से बड़ा कोई पोषण करने वाला नहीं। उस पर

(श्री श्रवण कुमार)

आपने बजट पेश किया है इसके लिए मैं आपको धन्यवाद दूंगा। सरस्वती मां की बातें कर रहे थे, आपने सारा बजट जो पेश किया है वह महिलाओं पर किया है। सरस्वती कौन है, महिला है। लक्ष्मी कौन है महिला है। सरस्वती से किसी ने कहा, मां तेरी उपमा चाँद से करूं। कहा, नहीं मां, चांद में दाग है, तू पवित्र है। कहा, तेरी उपमा सूरज से करूं। नहीं, सूरज गरम है, तू मां, ठंडी है, कहा मां तेरी उपमा समुन्द्र से करूं। नहीं, समुन्द्र का पानी खारा है, तू मां मीठी है। यह सरस्वती मां है, इससे बड़ा कोई उपकार हो नहीं सकता। इस मां की जिसने इज्जत की है वह कभी दुनिया में डिफीट नहीं हुआ है। सरस्वती के भंडार की बड़ी अपूर्व बात ज्यूं ज्यूं खर्चे त्यूं त्यूं बढ़े और बिन खर्चे ... (व्यवधान)

डा. दिगम्बर सिंह (उद्योग मंत्री): एक निवेदन है कि एक क्लास इन सबकी ले लेना भाई, इनको समझा देना, यह जबर्दस्ती का टाइम खराब करते हैं ... (व्यवधान)

श्री जोगाराम पटेल (संसदीय सचिव): हरिमोहनजी, एक बार तो ताली बजा दो। एक बार बजा दो। (व्यवधान)

श्री जुबेर खान (रामगढ़): घनश्यामजी ने तो पहले ही बात मान ली आपकी। (व्यवधान)

श्री हरिमोहन शर्मा (हिण्डौली): यह आपको याद है कि हमारी तरफ से ही बोल रहे हैं और जिम्मेदारी के साथ बोल रहे हैं जो यह बोल रहे हैं, क्या आपको बुरा लग रहा है?

श्री जोगाराम पटेल (संसदीय सचिव): नहीं, अच्छा लग रहा है।

श्री हरिमोहन शर्मा (हिण्डौली): यह ईमानदारी आपकी साइड में किसी में भी नहीं है।

श्री जोगाराम पटेल (संसदीय सचिव): है।

श्री हरिमोहन शर्मा (हिण्डौली): आप केन्द्र सरकार की तारीफ कर सको कि आपने नरेगा जो लागू किया है इसके लिए धन्यवाद तो दें। (व्यवधान)

श्री जोगाराम पटेल (संसदीय सचिव): इनकी तो तारीफ कर दो।

श्री हरिमोहन शर्मा (हिण्डौली): प्रस्ताव लाओ। आपको प्रस्ताव लाना चाहिए केन्द्र सरकार के प्रति कि आपने हमारे राजस्थान में सब जिलों ... (व्यवधान)

श्री जोगाराम पटेल (संसदीय सचिव): कि हमारे साथ अन्याय किया है। (व्यवधान)

श्री हरिमोहन शर्मा (हिण्डौली): आप कंजूस हैं, आप राजनैतिक दृष्टिकोण से ईमानदार नहीं हैं। ... (व्यवधान)

श्री जोगाराम पटेल (संसदीय सचिव): ईमानदार नहीं, श्रवणजी के लिए एक भी ताली नहीं बजायी आपने। ... (व्यवधान)

श्री धर्मपाल चौधरी (संसदीय सचिव): ऐसा है नरेगा को ... (व्यवधान)

श्री महावीर प्रसाद जैन (मुख्य सचेतक): कह दो अपने आकाओं से ... (व्यवधान)

श्री हरिमोहन शर्मा (हिण्डौली): क्या? (व्यवधान)

श्री महावीर प्रसाद जैन (मुख्य सचेतक): अपने आकाओं से कह दो कि नरेगा को वापस ले लो। (व्यवधान)

श्री हरिमोहन शर्मा (हिण्डौली): वापस ले लें? आप प्रस्ताव पारित कर दो। आप प्रस्ताव पारित कराइये कि नरेगा राजस्थान में लागू नहीं होना चाहिए। आपको याद होना चाहिए कि माननीय मुख्य मंत्रीजी ने अपने गत बजट भाषण में विपक्ष से यह अनुरोध किया था कि राजस्थान में केवल बाँध खुला है ... (व्यवधान) आप सुनिये पहले ... (व्यवधान)

श्री महावीर प्रसाद जैन (मुख्य सचेतक): हिन्दुस्तान में ... (व्यवधान) और यह हिन्दुस्तान की मजबूरी है। सारे हिन्दुस्तान में नरेगा लागू होगा।

श्री हरिमोहन शर्मा (हिण्डौली): एक मिनट, ठहरिये आप।

श्री सभापतिः इनको बोलने तो दो। (व्यवधान)

श्री हरिमोहन शर्मा (हिण्डौली): आप सुनिये कि राजस्थान में ... (व्यवधान)

श्री राजेन्द्र राठौड़ (सार्वजनिक निर्माण मंत्री): सभापति महोदय, हम श्रवणजी के मौलिक विचार सुनना चाहते हैं। (व्यवधान)

श्री हरिमोहन शर्मा (हिण्डौली): क्यों, बुरा लगा? न्याय की बात करने वालों को बुरा लगा?

श्री राजेन्द्र राठौड़ (सार्वजनिक निर्माण मंत्री): ऐसा अवसर सदन में श्रवणजी के विचारों ... (व्यवधान)

श्री सभापतिः आप विराजें।

(समय : 20.00 बजे)

श्री हरिमोहन शर्मा (हिण्डौली): राजनीतिक दृष्टिकोण से आप बेइमान हो ...(व्यवधान) राजनीतिक दृष्टिकोण से आप संपूर्ण बेइमान हो ...(व्यवधान)

श्री सभापतिः माननीय सदस्य, विराजें आप। बहुत अच्छा बोल रहे हैं। (व्यवधान)

श्री हरिमोहन शर्मा (हिण्डौली): आप पूर्णतया बेइमान हो। (व्यवधान)

श्री सभापति: श्रवणजी, बहुत अच्छा बोल रहे हैं, उन्हें बोलने दें। (व्यवधान) विराजें माननीय सदस्य। (व्यवधान)

श्री हरिमोहन शर्मा (हिण्डौली): आप में हिम्मत है तो प्रस्ताव रखो। आपकी मुख्य मंत्रीजी ने अभी बजट भाषण में यह अनुरोध किया था कि हे विपक्षी लोगों, 12 जिलों में लागू किया है ...(व्यवधान) आपसे मैं अनुरोध करती हूं कि इसे सम्पूर्ण राज्य में लागू किया जाना चाहिए। (व्यवधान) शर्म आनी चाहिए आपको ...(व्यवधान)

एक माननीय सदस्यः श्रवणजी बोलें, इधर आ जाएं। (व्यवधान)

श्री महावीर प्रसाद जैन (मुख्य सचेतक): आपके कई बांध बनवा रहे हैं ...(व्यवधान)

श्री हरिमोहन शर्मा (हिण्डौली): आप रखें न प्रस्ताव ...(व्यवधान)

श्री महावीर प्रसाद जैन (मुख्य सचेतक): कई बांध बनवा रहे हैं ... (व्यवधान)

श्री हरिमोहन शर्मा (हिण्डौली): आपको यह कहते हुए शर्म नहीं आयी कि यह नरेगा का वापस ले लो ...(व्यवधान)

श्री सभापतिः श्रवणजी को बोलने दें। अंकित नहीं हो। (व्यवधान)

श्री हरिमोहन शर्मा (हिण्डौली): ×××

श्री कालूलाल गुर्जर (ग्रामीण विकास एवं पंचायती राज मंत्री): ×××

श्री सभापतिः कोई भी माननीय सदस्य जो बोल रहा है वह अंकित नहीं हो रहा है, विराजें आप। श्रवणजी बहुत अच्छा बोल रहे हैं, इन्हें बोलने दें। (व्यवधान) श्रवणजी।

श्री नरपत सिंह राजवी (चिकित्सा मंत्री): ×××

श्री हरिमोहन शर्मा (हिण्डौली): ×××

श्री सभापतिः विराजें ना आप। श्रवणजी। (व्यवधान)

श्री हरिमोहन शर्मा (हिण्डौली): ×××

श्री नरपत सिंह राजवी (चिकित्सा मंत्री): ×××

श्री हरिमोहन शर्मा (हिण्डौली): ×××

श्री सभापति: श्रवणजी अच्छा बोल रहे हैं, बोलने दें प्लीज। (व्यवधान)

श्री राजेन्द्र राठौड़ (सार्वजनिक निर्माण मंत्री): ×××

श्री हरिमोहन शर्मा (हिण्डौली): ×××

श्री राजेन्द्र राठौड़ (सार्वजनिक निर्माण मंत्री): ×××

श्री सभापतिः बिराजें, विराजें माननीय सदस्य। (व्यवधान)

श्री कालूलाल गुर्जर (ग्रामीण विकास एवं पंचायती राज मंत्री): ×××

श्री वासुदेव देवनानी (राज्य मंत्री, शिक्षा): ×××

श्री हरिमोहन शर्मा (हिण्डौली): ×××

श्री सभापतिः अंकित नहीं करें। ...(व्यवधान) आप विराज जाएं ... (व्यवधान) श्रवणजी को अपनी बात कहने दें। (व्यवधान)

श्री कालूलाल गुर्जर (ग्रामीण विकास एवं पंचायती राज मंत्री): ×××

श्री सभापतिः मंत्रीजी, विराजें आप ...(व्यवधान) माननीय मंत्रीजी, विराजें आप, हो गयी बात। (व्यवधान) आप अपनी बात कह चुके। (व्यवधान)

श्री हरिमोहन शर्मा (हिण्डौली): ×××

श्री सभापतिः श्रवणजी को बोलने दें ...(व्यवधान)

श्री हरिमोहन शर्मा (हिण्डौली): ×××

श्री संयम लोढ़ा (सिरोही): ×××

श्री सभापतिः विराजें आप, श्रवणजी को बोलने दें। (व्यवधान) कोई अंकित नहीं होगा। (व्यवधान) कोई बात अंकित नहीं होगी, कोई बात अंकित नहीं होगी ...(व्यवधान) विराज जाएं। कोई अंकित नहीं होगा ...(व्यवधान)

श्री संयम लोढ़ा (सिरोही): ×××

श्री हरिमोहन शर्मा (हिण्डौली): ×××

श्री सभापतिः कोई अंकित नहीं हो रहा है चाहे कुछ भी बोले जाएं। (व्यवधान) क्यों हाउस को रोक रहे हैं आप सब लोग। आप बोलने दें उन्हें। (व्यवधान) कोई माननीय सदस्य अपनी बात रख रहे हैं, बहुत शालीनता से अपनी बात रख रहे हैं, रखने दें आप। (व्यवधान) कोई अंकित नहीं हो ... (व्यवधान)

श्री महावीर प्रसाद जैन (मुख्य सचेतक): ×××

श्री संयम लोढ़ा (सिरोही): ×××

श्री सभापतिः कोई अंकित नहीं हो। (व्यवधान) कोई अंकित नहीं हो रहा है।

श्री संयम लोढ़ा (सिरोही): ×××

श्री महावीर प्रसाद जैन (मुख्य सचेतक): ×××

श्री सभापतिः कोई अंकित नहीं हो। (व्यवधान) वक्ता नहीं बोले तब तक अंकित मत करें आप। (व्यवधान)

श्री गोविन्द राम मेघवाल (संसदीय सचिव): ×××

श्री सभापतिः विराजें आप, मैं आप सबसे अनुरोध कर रहा हूं कि माननीय श्रवणजी बहुत अच्छा बोल रहे हैं, आप कृपया शांतिपूर्वक उन्हें सुनें। (व्यवधान) माननीय श्रवणजी ...(व्यवधान)

श्री श्रवण कुमार (पिलानी): घनश्यामजी, सुनना एक बात। (व्यवधान) अब एक स्कूल ऐसा भी चलाया जाए जिसमें कुछ और नहीं प्यार सिखाया जाए। किसी मंदिर में दिया ऐसा जलाया जाए जिसके उजाले में कुरान पढ़ाया जाए। रावणों की यहां वैसे भी कमी नहीं है, कहो लोगों से कि अब दशहरे पर तो रावण जलाने की जरूरत नहीं है, जो यह कहते हैं कि यह देश कुछ लोगों का है ऐसे लोगों को इतिहास पढ़ाया जाए। एक स्कूल तो चलाएं ऐसा, जहां लोगों को प्यार तो सिखाया जाए। केवल एक ही बात करते हैं क्या?

श्री राजेन्द्र राठौड़ (सार्वजनिक निर्माण मंत्री): सभापति महोदय, उसका प्राचार्य श्रवण कुमारजी को बनाया जाए।

श्री श्रवण कुमार (पिलानी): मेरे को प्राचार्य की जरूरत नहीं है, मेरे को पीछे वाली लाइन में बिठाया जाए पर आप लोगों के प्यार को देखकर मुझे सिखाया जाए, यह जरूर पक्का है। आखिर, कुछ भी हो, विधान सभाओं की गरिमा होती थी, वे सारी गरिमाएं बढ़ाकर वहां पहुंचा दीं, जहां लोग आते हैं तो

(श्री श्रवण कुमार)

उनको शर्म आने लगे। किसी ने राम तेरी गंगा मैली पिक्चर देखी है क्या? जिसमें एक बूढ़ा व्यक्ति चश्मा लगाकर लड़कियों को गलत रास्ता दिखाता है तो लड़कियां कहती हैं कि बाबा, तुम जैसे बूढ़े आदमी इस तरह से करने लग जाएंगे तो लोग अंधों पर विश्वास करना बंद कर देंगे। अगर आप लोगों ने यही हालत रखी तो विधान सभाओं और लोक सभा पर से लोगों का विश्वास उठ जाएगा। दिल से कह रहा हूं, ईमानदारी से कह रहा हूं। मैं जो कहता हूं वह ईमानदारी से कहता हूं। मेरे दिल में दो बातें नहीं होती हैं। मैं तो सभी को कहता हूं आप तो डांस कर रहे हैं।

सभापति महोदय, अब यह चिकित्सा की बातें कर रहे हैं। चिकित्सा में आपने देखा होगा कि पांच साल में नये अस्पताल खोलने की बात नहीं। कहां खोले हैं? बात तो सुनो, माथे पर हाथ बाद में मार लेना। पूरी बात सुनने के बाद जवाब दें। आपने 32-33 जिलों में सब जगह हास्पिटलों में बैडों की संख्या बढ़ा दी, लेकिन झुंझुनूं जिले का नाम भी नहीं है। मुझे दुःख होता है इस बात का। हिन्दुस्तान की आजादी को कायम करने वाले कौन हैं? झुंझुनूं जिले में राजस्थान के 33 प्रतिशत शहीदों की संख्या है। जिस जिले में 33 प्रतिशत शहीद होते हैं, जिसकी विधवाएं, जिसकी बेटियां इस बात की प्रतीक्षा करती हों कि हमारे जिले पर राजस्थान के किसी मंत्री की या मुख्य मंत्री की आंख भी खुलेगी। जब मैं पढ़ रहा था तो केवल एक जगह झुंझुनूं जिले का नाम आया, सूरजगढ़ का कस्तूरबा स्कूल खोलने का। वह भी गलत छप गया, वह भी सुजानगढ़ था। इस बात से बड़ा कोई अन्याय तो हो नहीं सकता। जिस जिले में राजस्थान के शहीदों की 33 प्रतिशत संख्या आती हो वह झुंझुनूं जिले है। जिसकी बेटी बाड़मेर में जहां सूर्य का प्रकाश नहीं जाता है, वहां अपने हाथ से छोटे बच्चे को हाथ से कलम पकड़ कर पढ़ाती हुई नजर आ जाएगी। जिस धूप में कोई आदमी जा नहीं सकता है वहां हमारी बेटी, बहिन, बहुएं सुइयां लगाती हुई नजर आएंगी। उस झुंझुनूं जिले का नाम कोई लेने वाला नहीं मिला। सभापति महोदय बैठे हैं, मंत्री बैठे हैं, झुंझुनूं जिले का नाम केवल उस जगह आता है कि शहीदों की संख्या कितनी हुई, झुंझुनूं जिले में 33 प्रतिशत। मेडिकल कालेज कहां खुलेंगे, कोटा में। मेडिकल कालेज कहां खुलेंगे, अजमेर में। और जालौर, भीलवाड़ा, सिरोही, पाली और प्रतापगढ़ में। झुंझुनूं जिला जो कि छोर का जिला है, हरियाणा से लगता हुआ, जहां हरियाणा के लोगों की इस बात पर नजर रहती है कि झुंझुनूं जिले में कुछ कर रहे हैं क्या? हमें जब

(श्री श्रवण कुमार)

पूछते हैं कि झुंझुनूं जिले में क्या करते हैं तो शहीदों की अर्थियों को कंधा लगाकर हम जलाते हैं, उनको विदाई देते हैं। हम बारह दिन रोते हैं और कुछ नहीं करते हैं। आप लोगों को इस बात का गर्व होना चाहिए। देश की आजादी के खिलाफ करने वाले लोगों का आप सब करते हो और जो रक्षा करते हैं उनके पक्ष में आपने कुछ नहीं किया। इस बात की मैं भर्त्सना करता हूं। सभापति महोदय, आपने पूरा बजट पढ़ा, अगर झुंझुनूं जिले का कहीं नाम भी आ जाए तो, राजेन्द्रजी आप बता देना, जिसके प्रभारी मंत्री हैं राजेन्द्र सिंह राठौड़।

श्री जुबेर खान (रामगढ़): जो सरकार चला रहे हैं।

श्री श्रवण कुमार (पिलानी): जो सरकार चला रहे हैं, वह सरकार का तय करते हैं कि कौन से पाले में बैठना है और कहां जाना है। हास्पिटलों की बात है, तो चादरें फटी हुई हैं। मेडिकल एड के लिए लोग धरना देते हैं। गरीब का बेटा रो रहा है।

गरीब का बच्चा दवाई के लिए रो रहा है, उसकी मां बोलती है कि राज कांग्रेस का नहीं है, नहीं तो दवाई तेरे घर पहुंच जाती। (व्यवधान) अब आपको दु:ख हुआ क्या, तकलीफ हुई क्या? तकलीफ हुई क्या आपको?

श्री युनूस खान (यातायात मंत्री): जुबेर भाई ने कान में यही बात कही थी कि कांग्रेस को याद करो, अभी यही बात कही थी।

श्री श्रवण कुमार (पिलानी): नहीं, नहीं कही।

श्री जुबेर खान (रामगढ़): श्रवण तो दिल से, आत्मा से बोलता है।

डा. दिगम्बर सिंह (उद्योग मंत्री): माननीय सभापति महोदय, मुझे अब तक तो लग रहा था कि श्रवणजी सही-सही बोलते हैं पर यह इतना +++ भी बोलते हैं, यह अंदाजा नहीं था।

श्री श्रवण कुमार (पिलानी): आगे तो बोलने दो न, दिगम्बर सिंहजी।

डा. दिगम्बर सिंह (उद्योग मंत्री): जिस सरकार के जमाने में मरीज को पट्टी बांधने के लिए कपड़े का इतना-सा टुकड़ा तक नहीं मिलता था, उस सरकार की आप तारीफ कर रहे हैं कि घर पर दवाई पहुंचाते थे।

श्री सभापतिः +++ शब्द कार्यवाही से एक्सपंज कर दिया जाए।

श्री श्रवण कुमार (पिलानी): भरतपुर के जाटों को तो हम जाट ही नहीं मानते, पहली बात।

श्री जोगाराम पटेल (संसदीय सचिव): क्या मानते हो?

श्री श्रवण कुमार (पिलानी): बाद में बताऊंगा, सारी बातें आज ही बताना जरूरी थोड़े ही है।

श्री राजेन्द्र राठौड़ (सार्वजनिक निर्माण मंत्री): क्यों नहीं मानते आप?

श्री श्रवण कुमार (पिलानी): इसलिए नहीं मानते हैं क्योंकि इनके डोले लिए हुए हैं। आप लोगों की तरह जो डोले लेते हैं उनको यह नहीं होता कि कौन मेरा है, कौन किसका है।

डा. दिगम्बर सिंह (उद्योग मंत्री): देखो, भरतपुर के बारे में आप इतिहास की जानकारी करो।

श्री श्रवण कुमार (पिलानी): कर ली।

डा. दिगम्बर सिंह (उद्योग मंत्री): भरतपुर ही वह स्टेट था जिसने डोला न देने के ऊपर मुगलों से पूरा लोहा लिया था, आपको ध्यान है?

श्री श्रवण कुमार (पिलानी): हां, ध्यान है, सही है। (व्यवधान) आज झुन्झुनूं जिले में मैंने शिक्षा का देखा है, सारी शिक्षा सेठों की शिक्षा है। मैंने घनश्यामजी को पिछली बार भी कहा था, घनश्यामजी, आपके लगते जिले में हम बसते हैं और आपकी ससुराल भी वहीं है, जिसकी गृहिणी जहां की होती है उसका फिफ्टी परसेंट अभी बोल रहे थे कि साथ होता है। घनश्यामजी को मैंने कहा कि कोई मेडिकल कालेज नहीं, कोई इंजीनियरिंग कालेज नहीं, एक कालेज भी अब की बार खोला है। जिस जिले के अंदर शिक्षा का इतना अभाव सरकार की तरफ से हो। यह तो हमारे शेखावाटी के सेठ थे, वर्ना वहां का बेटा तो आज भी बकरी और गाय चराता। पर इस बात की आप लोगों के दिमाग में एक प्रतिशत भी भावना नहीं आती कि जिस जिले के लोग खेलों के मामले में अग्रणी रहे हैं, शिक्षा के मामले में अग्रणी रहे हैं, देश की आजादी को कायम करने के मामले में अग्रणी रहे हैं, उस जिले का नाम पूरे बजट में कहीं भी नहीं। कोई बता दे, झुंझुनूं जिले का नाम भी हो तो मैं आपको धन्यवाद दूंगा। (व्यवधान) देख लिया, गोता मार कर देख लिया।

श्री घनश्याम तिवाड़ी (खाद्य एवं नागरिक आपूर्ति मंत्री): झुन्झुनूं जिले के अध्यक्ष हैं।

श्री राजेन्द्र राठौड़ (सार्वजनिक निर्माण मंत्री): विधान सभा कौन चला रहा है?

श्री श्रवण कुमार (पिलानी): चला ही रहे हैं, मगर कर कुछ नहीं रहे हैं। (व्यवधान)

जंगल में पक्षी अनेक होते हैं पर ठिकाना सबका एक होता है,
जंगल में शिकारी अनेक होते हैं पर निशाना सबका एक होता है,
भाषाएं अनेक होती है पर तराना सबका एक होता है,
दिल में हो प्यार तो जमाना एक होता है।
यहां प्यार नहीं है। प्यार नहीं है।

श्री घनश्याम तिवाड़ी (खाद्य एवं नागरिक आपूर्ति मंत्री): झुन्झुनूं जिले का इतना नाम है, विधान सभा के अध्यक्ष झुन्झुनूं जिले के, हमारे पहले रामनारायणजी चौधरी विराजते थे वह झुन्झुनूं के, हमारे शीशरामजी ओला विराजते हैं वह झुन्झुनूं के और सबसे ऊपर फिर श्री श्रवण कुमारजी वहीं रहते हैं वह झुन्झुनूं के।

श्री जुबेर खान (रामगढ़): सुन्दरलालजी झुन्झुनूं के।

श्री श्रवण कुमार (पिलानी): तो हम क्या कर सकते हैं? हम कर भी क्या सकते हैं? हमारे पास बोलने के सिवा और क्या है? शिक्षा के बारे में आज तीन हजार स्कूलें खोली गयी हैं केन्द्र की एस एस स्कीम में, पहले आपने घोषणा कर दी, आपको मालूम था कि प्लानिंग बोर्ड में यह तय हो गया था कि प्रत्येक पंचायत में एक स्कूल देंगे। (व्यवधान) मैं मेरी जुबान से बोल रहा हूं, अब आगे और बताऊंगा, उसमें आप एड कर देना। अगर आपको स्कूल खोलने हैं तो सीनियर सैकण्डरी स्कूल भी तीन हजार खोलें, मान जाएंगे। अगर सैकण्डरी में कोई बच्चा पढ़ेगा तो वह कहां जाएगा? सीनियर सैकण्डरी में ही तो जाएगा। या सीधे कालेज में जाएगा या फिर वापस घर आएगा। अगर आप कुछ करते ही हैं तो सब इण्टरलिंक होता है- प्राथमिक विद्यालय, उच्च प्राथमिक विद्यालय, सैकण्डरी, फिर सीनियर सैकण्डरी। तो सीनियर सैकण्डरी तो खोलेंगे नहीं, और प्राइमरी भी नहीं खोलेंगे। अगला सीधा ड्रॉप आपका क्या होता है, सैकण्डरी और उच्च प्राथमिक विद्यालय पर आ गये जो एस एस स्कीम के पैसे भारत सरकार से आए हैं।

श्री महावीर प्रसाद जैन (मुख्य सचेतक): सीनियर हायर सैकण्डरी पहले ही खोल दिये।

श्री श्रवण कुमार (पिलानी): कहां खोल दिये? कितने खोल दिये?

श्री महावीर प्रसाद जैन (मुख्य सचेतक): छह सौ, साढ़े छह सौ।

श्री जोगाराम पटेल (संसदीय सचिव): छह सौ खोल दिये हैं।

श्री श्रवण कुमार (पिलानी): मुझे तो एक नजर नहीं आया, कहां खोल दिये? (व्यवधान)

श्री घनश्याम तिवाड़ी (खाद्य एवं नागरिक आपूर्ति मंत्री): आपके विधान सभा क्षेत्र में भी तीन खोल दिये।

श्री श्रवण कुमार (पिलानी): कौन से?

श्री घनश्याम तिवाड़ी (खाद्य एवं नागरिक आपूर्ति मंत्री): अपन श्रीराम का जोहड़ा गांव में साथ-साथ चल कर आये थे। ऐसे क्या करते हो, श्रवणजी, भूल गये?

श्री जोगाराम पटेल (संसदीय सचिव): आप तो असत्य ही नहीं बोलते हैं।

श्री श्रवण कुमार (पिलानी): वह तो 2007-2008 के हैं, 2008-2009 में क्या करेंगे?

श्री जोगाराम पटेल (संसदीय सचिव): तो और क्या है? 2008-2009 में और खोलेंगे।

श्री श्रवण कुमार (पिलानी): भोजन करेंगे अमेरिका में, नाश्ता करेंगे लन्दन में, सोएंगे चाइना में और वोट लेंगे राजस्थान में, यह बर्दाश्त नहीं करेंगे। मां, तेरा बेटा आ गया है वोट लेने के लिए, यह कहोगे क्या? मैं कहूंगा कि यह बेटा नहीं आया है, यह केवल सपना आया है। किस बात का? अगर सैकण्डरी खोलनी है तो सीनियर सैकण्डरी के लिए भी घोषणा करो न पन्द्रह सौ की।

डा. दिगम्बर सिंह (उद्योग मंत्री): जब तक सूरज चांद रहेगा...

श्री श्रवण कुमार (पिलानी): अब शिक्षा की बातें तो इतनी गहरी हैं सरस्वती के भण्डार की बातें हैं, जितनी कहोगे उतनी ही चलती जाएगी।

अब मैं बिजली की बात करता हूं। अभी थोड़ी देर पहले मसूदा से आने वाले माननीय सदस्य कह रहे थे कि बिजली इतनी बना दी कि बिजली की कोई कमी नहीं है। मैं कह रहा हूं कि 1752 मेगावाट तो अशोकजी गहलोत के समय में बनी। अब आप लोगों की कितनी बनी, वह तो बताओ। एक हजार और कितनी बनाई होगी...(व्यवधान) चौदह सौ। मैं यह कहना चाहता हूं कि

(श्री श्रवण कुमार)

यह बिजली का युग है, इस पर कोई कंजूसी नहीं करनी चाहिए। आपने जो 63 हजार कनेक्शन देने की घोषणा की है, कनेक्शन तो आप दे देंगे, पर मैं कहना चाहता हूं कि कनेक्शन देने का फायदा क्या है जब बिजली ही अपने पास न हो।

अब की बार देखा था कि रात को एक बूढा व्यक्ति खड़ा होकर पेशाब करने के लिए जा रहा था, अंधेरे में टकरा कर गिर गया, वह रो रहा था कि लानत है इस हिन्दुस्तान की 60 साल की आजादी के बाद भी,

चिमनी मेरी खो गई, लाइट मेरी रो गई,

मैं खाट के पास पडा-पडा सो गया और उठ नहीं पाया।

इस बात से बड़ी पीड़ा और क्या हो सकती है कि 60 साल के बाद बूढा व्यक्ति रात को खड़ा होता है और उसकी चिमनी खो गई है, अंधेरे में उसको दिखता नहीं है। (व्यवधान)

श्री जोगाराम पटेल (संसदीय सचिव): थोड़ा जमा नहीं, वापस कहो।

डा. दिगम्बर सिंह (उद्योग मंत्री): श्री श्रवण कुमारजी, यह तुक नहीं बैठी।

श्री श्रवण कुमार (पिलानी): तुक बैठ गई न। रात को 60 वर्ष का बूढा व्यक्ति पेशाब करने के लिए उठता है, अंधेरी रात में गिर जाता है, लाइट होती नहीं है और रो-रो कर कहता है।

श्री हेमाराम चौधरी (नेता, प्रतिपक्ष): यह तो यूं हुआ, एक जाट था, उसने कोई कविता कही, सामने वाले ने कहा कि यह जुड़ी नहीं, बैठी नहीं। कहा, जाट रे जाट तेरे माथे खाट। तो कहा, जुड़ी नहीं। तो जाट के तो भई यूं है, ऐसे ही जुड़ती है कविता।

श्री युनूस खान (यातायात मंत्री): इसके आगे यह है, जाट रे जाट, तेरे गले में खाट। उसने कहा कि बनिया रे बनिया, तेरे सिर पर पंसेरी। उसने कहा, जमी नहीं तो उसने कहा कि जमे चाहे न जमे, वज़न तो तेरे को ही लग रहा है न।

श्री घनश्याम तिवाड़ी (खाद्य एवं नागरिक आपूर्ति मंत्री): श्रवणजी, बाड़मेर वालों को तो आप अपने में ही मान रहे हैं न?

श्री श्रवण कुमार (पिलानी): हां, मान रहा हूं।

(श्री श्रवण कुमार)

बिजली की हालत यह है कि इस बार चार घण्टे शाम को छह से दस करने का सरकार का संकल्प था, सुबह चार से छह तक देने का संकल्प था। अब की बार बिजली नहीं आई। सच्चाई को छिपाना नहीं है, आठ बजे आती थी, नौ बजे चली जाती थी, इस कड़ाके की सर्दी में पूरी रात बिजली किसी ने देखी नहीं होगी।

श्री गजेन्द्र सिंह (राज्य मंत्री, ऊर्जा): माननीय सदस्य, आपके पांच साल के अंदर बिजली की सप्लाई खाली सात प्रतिशत बढ़ाई थी और हमने बत्तीस प्रतिशत चार साल में बढ़ाई है। बिजली कहां गई?

श्री श्रवण कुमार (पिलानी): इधर बैठे हैं न। इधर बैठे हैं न, हमने नहीं दी इसलिए।

श्री गजेन्द्र सिंह (राज्य मंत्री, ऊर्जा): सात प्रतिशत आपने बढ़ाई थी पांच साल के अंदर और हमने बत्तीस प्रतिशत बढ़ाई है चार साल में, तो बिजली का उपयोग तो हो ही रहा है न।

श्री श्रवण कुमार (पिलानी): बिजली नहीं दी उसका खामियाजा भुगत रहे हैं, आप भी भुगतना चाहते हैं क्या?

श्री ज्ञानचन्द पारख (पाली): आपने बिजली का बिल भरा नहीं होगा इसलिए आपको बिजली नहीं मिली है। बाकी बिजली लोगों को खूब मिल रही है, आप थोड़ा ऊपर तो देखो।

श्री हेमाराम चौधरी (नेता, प्रतिपक्ष): अब आपको श्रवणजी का भाषण यूं थोड़ा ठीक नहीं लग रहा, शुरू में तो लग रहा था।

श्री श्रवण कुमार (पिलानी): बाड़मेर का व्यक्ति आपकी मीटिंग में आया था, उसने कहा कि अरे भैया, देखो तो, बाड़मेर में तो पीने का पानी नहीं, लाइट देखने को नहीं, जयपुर में तो सारे चमचमा रहे हैं। तो वह क्या बोला, अपन तो सूखे ही रगड़े जा रहे हैं, मजे तो जयपुर वाले ही ले रहे हैं। आपको मालूम है कि आपकी योजना कहां से शुरू होती है- कोटा, जोधपुर, उदयपुर, भीलवाड़ा, अजमेर। आप सरकते हैं कभी बाड़मेर की तरफ, आपने देखा है उनको? गांवों का सपना आना चाहिए आपको। देश की आजादी का सपना जो तय किया गया था, अस्सी प्रतिशत भारत के लोग गांवों में रहते हैं, खेत और खलिहान से खुशी गुजारने का वादा किया था। आप भूल गये खेत और खलिहान की खुशी को। केवल जयपुर में आकर एस्टैब्लिश हो गये, भूल गए

(श्री श्रवण कुमार)

गांवों के लोगों को जो रात को अंधेरे में सोते हैं, पीने का पानी नहीं मिलता है। लाइट की जगह लाइट नहीं मिलती। कह रहे हो कि जयपुर में तो लाइट आ रही है, आपको सपना नहीं आएगा लेकिन गांव वाले अब समझने लग गये हैं कि जो हमारी बात को स्वीकार नहीं करेगा वह जयपुर भी नहीं जाएगा।

श्री सभापतिः माननीय सदस्य, आप कनक्लूड करें दो मिनट में।

श्री श्रवण कुमार (पिलानी): कनक्लूड ही कर रहा हूं, साहब, एक मिनट में कर दूंगा, दो मिनट क्यों लेऊंगा?

श्री सभापतिः विराजें आप। हर मामले में टोकना जरूरी नहीं है। कभी-कभी हल्के-फुल्के क्षण आते हैं।

श्री श्रवण कुमार (पिलानी): अब मैं पंचायती राज की बात करना चाहता हूं। पंचायती राज को मैंने गहराई से देखा है, जो सबसे बड़ा चोर सरपंच होता है वह सबसे खास आदमी भी होता है नेताओं का। मैंने बहुत मुश्किल से एक सरपंच की ईमानदारी से चोरी पकड़ायी। 23 महीने के बाद उस सरपंच को सस्पैंड किया कालूलालजी गुर्जर ने बहुत हिम्मत के साथ, राजेन्द्रजी के थपेड़ों से निकलकर भी सस्पेंड कर दिया। केवल एक महीने सस्पैंड रख पाये, इनकी आत्मा तड़फड़ाने लगी। मुझे कहा कि मारेंगे, छोड़ेंगे नहीं, मैं क्या करूं। मैंने कहा कि मैं आपकी आत्मा को पीड़ा नहीं देना चाहता हूं, चाहे भले ही मेरी आत्मा मूर्छित रह जाए, आप इनका कहना मानकर इसको बहाल कर दो। कर दिया। इससे बुरा और क्या होगा? चोरों की सनद नहीं, साहूकार की पहचान नहीं और अपने को होश में लाने के लिए इनको कोई होश नहीं, इससे बुरा और क्या होगा? चोर चाहे कोई भी हो, चोर चाहे मैं भी हूं, चाहे मेरा बेटा भी है, चाहे कोई भी है, उसकी कोई सिफारिश नहीं होनी चाहिए। इधर कांग्रेस वाले करते थे तो मैं उनको भी कहता था, कितने दिन करोगे, आज आपके साथ हैं, कल उनके पास जाएंगे। आज आपके साथ चोर बैठे हैं, कल इधर आ जाएंगे, इनका तो सीधा रास्ता बना हुआ है। इसलिए मैं कहना चाहता हूं, जिसने चोरी की है, चाहे प्रधान हो, सरपंच हो, कोई भी हो उसको पनिशमेंट मिलना ही चाहिए। कालूलालजी सामने बैठे हैं, मैं इनकी बुराई की बात नहीं कर रहा हूं, इनके मुंह पर कह रहा हूं कि बहुत मुश्किल से 23 महीने के बाद उसकी जांच करायी और उसको बहाल कर दिया। कर दिया तो कर दिया, क्या कर सकते हैं।

श्री कालूलाल गुर्जर (ग्रामीण विकास एवं पंचायती राज मंत्री): दुबारा तो डी.ई. हुई है, डी.ई. में उसके खिलाफ आरोप साबित नहीं हुए।

श्री श्रवण कुमार (पिलानी): डी.ई. करने के लिए अमरीका से नहीं आता, डी.ई. कालूलालजी ने की है।

श्री कालूलाल गुर्जर (ग्रामीण विकास एवं पंचायती राज मंत्री): प्रिलिमिनरी इंक्वायरी में दोषी माना था और जब दुबारा इंक्वायरी हुई तो सारा का सारा उसका हिसाब साफ था। पहले कोई एडजैस्टमेंट बिल, वाउचर का नहीं हुआ था इस कारण से दोषी माना। लेकिन वह बाद में बरी हुआ तो हो गया, आप इसमें क्यों परेशान हो रहे हो?

श्री श्रवण कुमार (पिलानी): Powers are not delegated but need to be exercised. आपके पास पावर थे. What can I do?

श्री सभापतिः माननीय सदस्य, कनक्लूड करें प्लीज।

श्री श्रवण कुमार (पिलानी): मैं यह कहना चाह रहा हूं कि जो व्यक्ति चोरी करता है और सिर ऊपर उठाकर गांव में जाकर यह कहता है कि चोरी भी की और वापस बहाल हो गया, इससे मेरा कुछ नहीं बिगडने वाला है, इससे आपके पंचायती राज की छवि धूमिल हुई है। कोई व्यक्ति चोरी करता है और पुनः उसी पद पर आकर विराजमान होता है इससे गिरावट आती है।

श्री कालूलाल गुर्जर (ग्रामीण विकास एवं पंचायती राज मंत्री): श्रवणजी, ऐसा नहीं है, हमारे यहां जांच होती है, दोषी होता है तो उसको सजा देते हैं। दोषी नहीं है तो जबदस्ती सजा कैसे दे सकते हैं उसको? आपने खुद मेरे पास आकर फाइल देखी, मेरे से समझकर गये हैं, अब क्यों बोल रहे हो?

श्री श्रवण कुमार (पिलानी): मैं नहीं बोलूंगा तो क्या करूंगा? मैं क्या कर सकता हूं? मैंने यही तो कहा, मैं बोल रहा हूं। हमारा काम केवल बोलने का है, पावर आपके पास है। मैं, कालूलालजी, आपको ईमानदारी से कह रहा हूं, 45 हजार रुपये में अगर एक रुपया उसने लगाया हो तो मैं इस्तीफा दे दूं। पर करूं क्या, आपने मुझे सारी बातें बतायीं। मेरी पुत्रवधू प्रधान है, मैं आज भी कहता हूं, एक रुपया पंचायत समिति में कोई गड़बड़ हो तो आप बड़ी से बड़ी सीआईडी भेजकर देख लो, अगर एक रुपया चोरी का साबित कर देंगे तो मैं विधान सभा से इस्तीफा दे दूंगा। एक रुपया कोई सिद्ध कर देगा, मैं आज दावे के साथ इस भरे सदन के अंदर इस्तीफा दे दूंगा और राजनीति नहीं करूंगा, पहाड़ों पर जाकर बैठ जाऊंगा। मैं आज भी कहता हूं, मेरी 55 साल की लाइफ

(श्री श्रवण कुमार)

में कोई आदमी खड़ा होकर कह देगा, मेरे क्षेत्र में घूमकर आ जाओ, विरोधी भी कह देगा, श्रवण कुमार को पांच पैसा दिया हो तो राजनीति नहीं करूंगा। उसकी शिकायत करें तो आपको डाउट हो गया। जो चोरी करता है वह किसी का दामन थामकर बैठ सकता है, पर किसी का साथी नहीं हो सकता।

श्री सभापतिः विराजें, हो गई।

श्री श्रवण कुमार (पिलानी): एक मिनट प्लीज।

श्री सभापतिः कनक्लूड इट। अब 45 मिनट होने को आ रहे हैं।

श्री श्रवण कुमार (पिलानी): अब मैं नगरपालिका की बात कहना चाहता हूं, जो सबसे बड़ा भ्रष्ट डिपार्टमेंट है जिसको कोई अमलीजामा नहीं पहना सकता। आज प्रतापसिंहजी सिंघवी नहीं हैं, मुझे इस बात का बड़ा दुख हो रहा है, उनको सुनाना चाहता था। मैं आपको ईमानदारी से कह रहा हूं, जयपुर के अंदर सड़क बनती है, 15 दिन पहले सड़क बनती है उसके ऊपर से उसको तोड़ देते हैं और तोड़ने के बाद उसका मुआवजा दिया जाता है और 20 दिन बाद वापस वैसे ही हो जाता है। क्या आपके प्लान में पहले लाइन डालने का नहीं था? क्या आपके प्लान में नीचे से बिजली बोर्ड का काम करने का नहीं था? अगर आपको इतना ही मालूम नहीं था कि 15 दिन बाद में लाइन डालनी है, 20 दिन बाद में बिजली की लाइन डालनी है तो फिर आप क्या काम करते हो? कौन है आपका प्लानर, कौन है आपका अफसर, कौन है 27 हजार-30 हजार की तनख्वाह लेने वाला व्यक्ति जो कोई काम नहीं कर सकता? यह प्रबंधन क्या है? मैं आपको बताना चाहता हूं, ये तो जमीनों के भाव बढ़ गये वर्ना आज नगरपालिकाओं में वह हालत होती जो 1947 में अंग्रेजों की हुई थी। उनको जाना पड़ा था, इन नगरपालिकाओं को भी जाना पड़ता। पर जमीनों के भाव बढ़ना हुआ और प्रतापसिंहजी सिंघवी जैसे मंत्रियों का विराजमान होना हुआ और जेडीए की वाहवाही होना हुआ और भ्रष्टाचार का फैलना हुआ। मैं, घनश्यामजी, आपको ईमानदारी से कह सकता हूं, पिलानी और चिड़ावा नगरपालिका में मैंने रंगे हाथों पकड़ाया, नोट करने वाले कोई मंत्री बैठे हैं तो नोट करें, मैंने कहा, आप एक कागज 20 साल का रिकार्ड का नगरपालिका में दिखा देंगे तो आपको इनाम दूंगा। उसकी जांच करायी, 150 पन्नों की जांच हुई और वह जांच आज भी अधरझूल में झूल रही है, उसका कोई फैसला नहीं हुआ। 150 पन्नों की जांच है। मैं आपको बताना चाहता हूं, नगरपालिका में

(श्री श्रवण कुमार)

नार्म्स में आज, राजेन्द्रजी, बताना, 30 फुट के रास्ते के नार्म्स हैं, 30 फुट रास्ता छोड़कर कालोनी काटने के नार्म्स हैं (व्यवधान) है या नही, पता नहीं, यों ही बोल रहे हैं। 30 फुट का रास्ता छोड़कर कालोनियां काटना नार्म्स में नहीं है क्या? इनको क्या पूछेंगे, ये तो मेरे जैसे ही हैं। मगर 30 फुट रास्ता केवल कागजों में दिखाकर 20 फुट के ऊपर कालोनियां बसी हुई हैं।

डा. दिगम्बर सिंह (उद्योग मंत्री): आप इतना बढ़िया बोल रहे थे, ये दोनों जो आपके बगल में बैठे हुए हैं, मैं इसलिए कह रहा हूं कि इन्होंने सारा आपका सुर डाइवर्ट करने में लगा दिया।

श्री श्रवण कुमार (पिलानी): मैं उस सिद्धान्त का आदमी हूं-

''जब तू बुरा नहीं तो तुझे डर किस बात का है,
तेरी बुराई जो कर रहा है वो खुद ही तो बुरा है,
अगर तू बुरा है तो वह सत्य जो कहता है उसे रोकता क्यों है।''

हम इस सिद्धान्त के आदमी हैं, हमें क्या परवाह है, कौन क्या बोलता है? परन्तु मैं एक बात कहना चाहता हूं, 30 फुट का आज नगरपालिका में जो नार्म्स का दे रखा है कि 30 फुट की सड़क होगी, एफिडेविट दिये जाते हैं 30 फुट के, 90 बी की कार्यवाही की जाती है और उसके बाद वही कालोनियां 20 फुट में एस्टेब्लिश हैं। इससे बुरा क्या होगा? सरकार के सामने एफिडेविट देते हैं, 90 बी एसडीएम कर रहा है और उसके बाद वही कालोनियां 20 फुट पर बसी हुई हैं और उसको बड़े आराम से... (व्यवधान)

श्री सभापतिः विराजें।

श्री श्रवण कुमार (पिलानी): आज इसको मत देखें, कल आपको भी तकलीफ होगी, कल हमें भी तकलीफ होगी। आने वाली पीढ़ी को तकलीफ होगी। उसकी जांच करवानी चाहिए और जिन लोगों ने अपराध किया है, जिन लोगों ने बुरा किया है उसके खिलाफ एक्शन होना चाहिए।

श्री सभापतिः प्लीज, प्लीज।

श्री श्रवण कुमार (पिलानी): मैं यह निवेदन करना चाहता हूं कि आप लोग जिस व्यक्ति ने गलती की है उसकी जांच करवाएं। राजेन्द्रजी, सड़कें बनती हैं, सड़कें बनने के तीन दिन बाद टूट जाती हैं और टूटने के बाद हमने उसकी शिकायत की, दुबारा अमलीजामा पहना दिया, लीपापोती कर दी।

श्री राजेन्द्र राठौड़ (सार्वजनिक निर्माण मंत्री): मैं झुंझुनू में हर महीने जाता हूं और आप मीटिंग में मुझे मिलते हैं, कितनी जिला स्तरीय मीटिंगें हुईं, एक बार भी आपने कोई मझे पत्र लिखा हो, एक बार भी आपने मुझे कोई शिकायत की हो। और अब भी आपके पास कोई सूची हो। मैंने सारे विधायकों को पत्र लिखे हैं कि डिफैक्ट लाइबिलिटी की सड़कों की कृपया जाकर जांच करें, सारे अधिकारियों ने कितनी बार आपसे सम्पर्क किया, आपने एक बार भी एस.ई और एक्स.ई.एन. को समय नहीं दिया। खुद के पास समय नहीं है, भाषण टेक रहे हो।

श्री श्रवण कुमार (पिलानी): आपके एसई से टेलीफोन पर बात करके पूछें, मैंने एसई को यह कहा कि जो सड़क गढबरसर से बुहाना तक बनी है, वह तीन दिन पहले बनी थी और टूट गई।

श्री सभापति: विराजें आप।

श्री श्रवण कुमार (पिलानी): दुबारा जाकर देखकर उसने कहा, वास्तव में आप ठीक कह रहे हैं, टूट गई है। मैं एक बात और कहना चाहता हूं, मैं आथेंटिक बात करता हूं, अनर्गल बात नहीं कर रहा हूं, अगर आप सड़कों को जाकर देख लें, अगर वे सड़कें बनीं ...(व्यवधान)

श्री सभापति: विराजें आप। माननीय हीरालालजी।

श्री श्रवण कुमार (पिलानी): यह मुझे मत कहो, मैं इस बात का बुरा नहीं मानता हूं।

श्री सभापति: माननीय श्रवणजी, विराजें आप।

श्री श्रवण कुमार (पिलानी): मैं यह कहना चाहता हूं कि आप लोग जो काम करते हो उसको कारगर करना चाहिए। यह समाज के लिए है, यह देश, प्रदेश के लिए है, यह प्रत्येक गरीब की झोंपड़ी के लिए है। आपका सपना था, आपका एजेंडा था कि गरीब के घर में दीपक जलाएंगे और गरीब की बात को सुनकर अमलीजामा पहनाएंगे। अगर आप नहीं करते हो तो सरकार ने जो वादा किया था वह फर्जी था, निराधार था, निरर्थक था और केवल समाज को धोखा देने का था। इसलिए मैं आपको पुनः अवगत कराना चाहता हूं कि यह सरकार है, नवम्बर के बाद कौन आएगा, कौन नहीं आएगा, लेकिन 6-7 महीने आपके सामने हैं, आप इस समाज में सुधार करिए, काम करिए, गलत व्यक्ति को मुंह मत लगाइए। अगर गलत आदमियों को मुंह लगाएंगे तो नाव में पानी भर जाता है तो साथ लेकर डूब जाता है, आप भी डूबोगे। ''हम तो डूबे सनम, तुम्हें भी ले डूबेंगे'', यह कहावत चरितार्थ करेंगे, इस बात को आप समझें।

श्री सभापतिः विराजिए आप। हीरालालजी।

श्री हीरालाल (निवाई): माननीय सभापति महोदय, आय-व्ययक वर्ष 2007-2008, संशोधित अनुमान 2008-2009 में अपने आपको शामिल करते हुए मैं इस शानदार और जानदार बजट के लिए माननीय मुख्य मंत्री महोदय को धन्यवाद देना चाहता हूं। जो बजट सर्वजन हिताय, सर्वजन सुखाय की दिशा में प्रस्तुत किया है, उसकी जितनी प्रशंसा की जाए उतना ही कम है। बेमिसाल वित्त प्रबंधन का लोहा मनवाने के बाद माननीय मुख्य मंत्री महोदया ने पांचवें बजट में राजस्थान के अपने सपने को सच करने की दिशा में एक कदम और बढ़ाते हुए 15,248 करोड़ का बजट प्रावधान रखा है। लोक लुभावन, लोक कल्याणकारी योजनाओं के साथ मुख्य मंत्रीजी ने राजस्थान को विकास के नये आयाम दिलाने वाले कार्यक्रमों को अपने बजट में शामिल किया है। पुलिस विभाग, चिकित्सा विभाग, शिक्षा विभाग, पेयजल, ऊर्जा, ग्रामीण विकास, पीडब्ल्यूडी, सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता में नये कीर्तिमान स्थापित करने के साथ आने वाले वित्त वर्ष में इन क्षेत्रों में योजनाओं को विस्तार देने की ढेर सारी घोषणाएं की हैं। शिक्षा में विकास और विस्तार के लिए इन्होंने कई कार्यक्रम प्रारम्भ करके कम्प्यूटर शिक्षा के जरिए शिक्षा स्तर बढ़ाने का संकल्प दोहराया। वर्ष 2008-09 में 3108 मिडिल स्कूलों को सैकण्डरी स्कूलों में क्रमोन्नत किया जाएगा। 2008-09 में एक से आठ तक के स्कूली बच्चों को स्कूली ड्रेस सहित नि:शुल्क पाठ्यपुस्तकें उपलब्ध करायी जाएंगी व कई जिलों में कस्तूरबा गांधी विद्यालय खोले जाएंगे। महिलाओं को 33 प्रतिशत से 50 प्रतिशत आरक्षण पंचायती राज संस्थाओं में दिया गया, जो एक ऐतिहासिक कदम है। सदियों से राजस्थान वीर भूमि के रूप में प्रसिद्ध रहा है, आज भी लाखों सैनिक देश की सुरक्षा हेतु जाते हैं, ऐसे में 30 से 40 वर्ष की आयु में रिटायर होकर अपने घर आ जाते हैं। इन्हें फुल टाइम रोजगार नहीं मिलता है। अतः लोकप्रिय सरकार की हमारी माननीय मुख्य मंत्रीजी ने निर्णय किया स्केल नम्बर एक से छह तक के पदों पर फ़ौजियों की भर्ती की जावेगी। फ़ौजियों को ठहराने के लिए विश्राम गृह के लिए 40 लाख रुपये का प्रावधान भी बजट प्रावधान में रखा गया है। कृषि के क्षेत्र में शिक्षा में छात्राओं को अतिरिक्त छात्रवृति देने का भी प्रावधान है। कृषि शिक्षा पूर्ण हो जाने पर छात्राओं की ग्राम सेवक के पदों पर नियुक्ति की जाएगी। दरिद्रता से मुक्ति दिलाने में और अशक्त को सम्बल प्रदान करने का संकल्प भी इस बजट में लिया गया है। राज्य के शेष रहे 17 जिलों में मूक, बधिर, नेत्रहीन बालकों के

(श्री हीरालाल)

लिए स्वयंसेवी संस्थाओं के माध्यम से शिक्षण संस्थाओं की स्थापना की जावेगी।

(समय : 20.32 बजे)

(श्री रामनारायण विश्नोई, उपाध्यक्ष, पदासीन)

दो या दो से अधिक विकलांग सदस्य वाले परिवारों को बी.पी.एल. की सुविधा दी जावेगी। स्वावलम्बन योजना के तहत अनुसूचित जाति, जनजाति के व्यक्तियों को बैंक से दिये गये ऋण पर 5 प्रतिशत ब्याज की रियायत दी जाएगी। अनुसूचित जाति और जनजाति के छात्राओं के लिए 75 राजकीय एवं 25 अनुदानित छात्रावासों की स्थापना की जाएगी। किराये के भवनों में संचालित 95 छात्रावासों हेतु भवनों का निर्माण कराया जाएगा। छात्रावासों में निवास कर रहे विद्यार्थियों के भत्ते को बढ़ा कर 725 रुपये, शिशु गृहों के भत्ते को बढ़ा कर 850 प्रति माह किया गया है जो सराहनीय है। पेंशन की पात्रता रखने वाली विधवा महिलाओं के पुनर्विवाह पर 15 हजार रुपये का उपहार दिया जाएगा। बी.पी.एल. परिवार के लिए पन्नाधाय जीवन बीमा योजना प्रारम्भ की जिसके तहत अब तक 7690 परिवारों को 23 करोड़ 81 लाख रुपये की बीमा राशि का भुगतान किया जा चुका है और 1 लाख 11 हजार बच्चों को 900 रुपये साल के हिसाब से लगभग 10 करोड़ रुपये की छात्रवृति दी गई है।

इस राज्य सरकार में अनुसूचित जाति, जनजाति की छात्राओं को जो 75 प्रतिशत नम्बर पढ़ाई में लाएगी, उनको स्कूटी देने का भी प्रावधान है। उसमें संशोधन कर अब अनुसूचित जनजाति उपयोजना क्षेत्र के विद्यालयों में पढ़ने वाली बच्चियों के लिए अंक आवश्यकता को 65 प्रतिशत किया गया है। अभी इस बजट के लिए मेरे विद्वान साथी बहुत कह रहे थे कि राजस्थान की सरकार को बने चार साल हो गये, चार साल में एक भी बिजली का आंदोलन नहीं हुआ, मैं जो मेरे विद्वान साथी हैं उनको बतलाना चाहता हूं कि मोलासर में माननीय पूर्व मुख्य मंत्रीजी अपने जूते चप्पल छोड़ कर आगे भागे और जनता पीछे। इस राजस्थान में चार साल में ऐसा कोई अवसर नहीं आया। आज मेरे विद्वान साथी माहिर आजादजी ने कहा कि नलों में निकलते हैं जानवर। जानवर कहां से आएंगे? आपके टाइम में सांप, बिच्छू आये हैं। जानवर कहां से आएंगे एक इंच के नल में? इस तरह की बेबुनियाद बातें करके सरकार का विरोध करना चाहते हैं। हमारी माननीय लोकप्रिय मुख्य मंत्री ने ऐसा बजट

(श्री हीरालाल)

बनाया है कि आप औंधे मुंह गिर गये हो, आपके पास कोई बोलने को शब्द नहीं है। आलोचना करने के अलावा आप कुछ भी नहीं कर सकते। मैं ज्यादा नहीं कहूंगा। (व्यवधान)

श्री उपाध्यक्ष: बोलो, बोलो।

श्री हीरालाल (निवाई): आज जितनी भी योजनाएं हैं, इस सरकार ने अपने बजट प्रावधान के तहत बनाईं और उन्हें बखूबी से संचालित किया जा रहा है। कांग्रेस वाले मेरे साथी बात करते हैं कि स्कूलों में जगह नहीं है। आपने एक लाख आदमी रिटायर कर दिये, हमारी लोकप्रिय सरकार ने एक लाख भर्ती कर दिये। आपने रिटायर कर दिये और कह रहे थे कि हम रोजगार देंगे। रोजगार नहीं दिया। एक लाख भर्ती करने में आपके खाते में ही डाल दिये तो कहां से आएंगे ? फिर भी सरकार ने ढाई लाख के करीब बेरोजगारों को रोजगार दिया और उनको इस स्थिति में रोजगार दिया जो 1999 में ओवर-एज हो गये थे, क्या आप बता सकते हैं कि आपने एक सिंगल आदमी को भी रोजगार दिया? खाली आलोचना करने से नहीं होता है कि सरकार की आलोचना की जाए। मैं फिर भी आपको निवेदन करना चाहूंगा कि रचनात्मक दिशा में जो सरकार ने अच्छा काम किया है उसकी आपको तारीफ करनी चाहिए फानूस की तरह।

फानूस बनकर जिसकी हिफाजत खुदा करे,
वह शमां क्या मिटेगी, जिसको रोशन खुदा करे।

मैं माननीय मुख्य मंत्रीजी की शान में यह शब्द कहते हुए कहूंगा, पुनः आपने मुझे बहुत लास्ट में टाइम दिया, मेरी सारी ताकत खतम हो गई। लास्ट में टाइम दिया, अगर जल्दी टाइम देते तो मैं और ज्यादा बोलता। आपको पुनः धन्यवाद। जय हिन्द, जय भारत, वंदे मातरम्।

श्री उपाध्यक्ष: सदन की बैठक गुरूवार, दिनांक 28 फरवरी, 2008 के प्रातः 11 बजे तक के लिए स्थगित की जाती है।

(तदनन्तर सदन की बैठक 20.37 बजे गुरूवार दिनांक 28 फरवरी, 2008 के प्रातः 11 बजे तक के लिए स्थगित हुई)

परिशिष्ट

नियम 295 के तहत विशेष उल्लेख की सूचनाएं जो पढ़ी हुई मानी गयीं

बस्सी में महिला महाविद्यालय की स्थापना

माननीय अध्यक्ष महोदय,

आपके माध्यम से माननीय मुख्य मंत्री महोदया व शिक्षा मंत्री से निवेदन करना चाहता हूं कि विधान सभा क्षेत्र बस्सी के कस्बा बस्सी में महिला महाविद्यालय नहीं होने की वजह से क्षैत्र में अध्ययनरत हजारों बालिकाऐं कक्षा 12 तक अध्ययन करने के बाद जयपुर में मुश्किल से 0;5 प्रतिशत बालिकाऐं ही जा पाती हैं, जिनके माता-पिता कॉलेज तक छोड़ने व लाने कि व्यवस्था करने में सक्षम हैं उन्हीं की बालिकाऐं जा रही हैं। शेष बालिकाओं को परिवार वाले आजकल गन्दे वातावरण के कारण अपनी बच्चियों को नहीं भेज सकतें हैं जबकि बालिकाऐं व परिवार वाले अपनी इच्छा को मारकर रह जाते हैं। सरकार बालिकाओं को हर क्षैत्र में बढाने के हर तरह के प्रयास कर रही हैं।

अतः मेरा व मेरे क्षेत्र बस्सी की जनता आपसे निवेदन करना चाहती है कि कस्बा बस्सी में एक महिला महाविद्यालय खोलने की कृपा करें।

धन्यवाद।

कन्हैया लाल मीणा

(बस्सी)

नावां की लम्बित पेयजल योजनाओं की स्वीकृत

महोदय,

नावां विधान सभा क्षेत्र में नावां शहर की 331 लाख की ग्राम गोगोर संवर्धन योजना, ग्राम मारोठ की 36 लाख की ओवर हैड टैंक स्कीम, ग्राम सौलाया, जीवणवार, कांटिया, डारों का बास की 65 लाख की रीजनल स्कीन योजना तैयार की जाकर मुख्यालय जयपुर में पी.पी.सी. की मिटिंग में स्वीकृत कराने हेतु लम्बे समय से पेडिंग पड़ीः है। गर्मी की मौसम आ रही है। इन स्कीमों का कार्य यथाशीघ्र चालू किया जाना आवश्यक है।

इसी प्रकार कुचामन सिटी की पुनर्गठित पाइप योजना को तैयार किया जाना है। जिसका सर्वे हो चुका है। यह स्कीम यथा तैयार कर स्वीकृत किया जाना है। ग्राम जीजोठ पंचायत हैड क्वार्टर है वहां की जी.एल.आर. जीण क्षीण हो चुकी है। यहां भी ऑवर हैड टैंक बनाया जाना आवश्यक है। उसी के द्वारा सभी बस्तियों में पानी पहुंचाया जा सकता है।

बीसलपुर का पानी सांभर एवं नांवा सीमावर्ती गांवों तक यथाशीघ्र पहुंचाने का कार्य चालू है। नावां विधान सभा क्षैत्र के लवण क्षेत्र के गांवों की धरती में पीने का पानी उपलब्ध नहीं है तथा अत्यन्त खारा पानी है। द्वितीय चरण में यहां के सीमावर्ती 72 गांवों में भी बीसलपुर का पानी लाना योजना में सम्मिलित है। परन्तु इस कार्य की काफी धीमी गति है। इन ग्रामीण क्षेत्र में भंयकर समस्या है। इसलिए इसके लिए बजट आबंटित कराया जाकर इस कार्य को भी यथाशीघ्र चालू कराया जावे। इसी प्रकार नावां विधान सभा क्षेत्र के ग्राम राजलिया के कुए को गहरा करवाया गया परन्तु आडी बल्ली नहीं लगवाई गई जिससे उसका लाभ नहीं मिला। इस पंचायत में चिरनी नाड़ी अथवा रिडमलिया नाडा में टयूबवैल बनवाया जाकर पीने के पानी की मूल स्कीम तैयार करवाये। तथा स्थाई व्यवस्था करवाई जावे। ग्राम सांवतगढ़ में गोमारामजी मेघवाल बस्ती में जी.एल.आर. बनी हुई है। पाइप लाइन डाली हुई है फिर भी जी.एल.आर. में पानी नहीं पहुंचाता। रास्ते में मुख्य लाइन से अवैध कनेक्शन के कारण से ऐसा है। समुचित कार्यवाही करवाई जाकर मेघवाल बस्ती में पीने का पानी उपलब्ध करवाया जावे।

अतः पीने के पानी की ससमस्याओं के सामाधान हेतु मैं इस विशेष उल्लेखित प्रस्ताव के माध्यम से राज्य सरकार का ध्यान आकर्षित कर अनुरोध कर रहा हूं कि वांछित स्वीकृतियां शीघ्र जारी कराई जावें।

हरीश चन्द्र कुमावत
(नावां)

जोधपुर शहर के सार्वजनिक पार्को का विकास

माननीयाजी,

मैं आपके माध्यम से माननीय शहरी विकास मंत्री का ध्यान जोधपुर शहर के सार्वजनिक पार्को के विकास की ओर आकृष्ट करना चाहती हूं।

जोधपुर शहर के पार्को में मण्डोर उद्यान, कायलाना उद्यान, नेहरू पार्क उम्मेद सार्वजनिक उद्यान, शास्त्री सर्किल उद्यान व जयनारायण व्यास उद्यान

मुख्य हैं। मण्डोर उद्यान तो पर्यटक स्थल के रूप में काफी प्रसिद्ध हो रहा है। पिछले कुछ समय से उक्त उद्यानों की देखभाल उस प्रकार से नहीं हो रहीं है जैसी होनी चाहिये। इस कारण इन उद्यानों की स्थिति बदतर हुई है।

पश्चिमी राजस्थान पिछले कुछ वर्षो में विश्व पर्यटन मानचित्र पर तेजी से उभरा है। जैसलमेर जाने वाला पर्यटक जोधपुर में अवश्य ही रुकता है। अतः आवश्यकता इस बात की है कि जोधपुर में पर्यटक स्थलों का विकास किया जाये। उपरोक्त सभी उद्यान पर्यटक स्थल के रुप में विकसित किये जा सकने वाले उद्यान हैं। हमारी सरकार ने हाल ही में शास्त्री सर्किल उद्यान एवं गुलाब सागर का विकास कर इन्हें पर्यटक स्थल के रूप में विकसित किया है। आवश्यकता इस बात की है कि बाकी उद्यानों का भी इसी प्रकार विकास किया जाय।

मेरी मांग है कि मण्डोर उद्यान के विकास हेतु एक करोड़ की राशि स्वीकृत की जाय। इसी प्रकार कायलाना व व्यास उद्यान, फुल्लेराव के विकास हेतु संगीतमय फव्वारें लगा कर सौन्दर्यकरण किया जाय। साथ ही इनकी उचित देखभाल हेतु पर्याप्त मात्रा में धनराशि व स्टाफ का प्रबन्ध किया जाये।

मुझे विश्वास है कि माननीय मंत्री महोदय जोधपुर शहर में पर्यटन व्यवसाय को बढ़ाने हेतु मेरे उपरोक्त सुझावों से सहमत होते हुए तुरन्त आवश्यक व्यवस्था करवायेंगे।

सादर!

सूर्यकान्ता व्यास

(जोधपुर)

निवाई में महिला महाविद्यालय की स्थापना

माननीय अध्यक्ष महोदय,

माननीय उपाध्यक्ष महोदय मैं आपके माध्यम से मांग करता हूं कि मेरे विधान सभा उपखंड मुख्यालय निवाई पर महाविद्यालय नहीं है जिससे छात्र/छात्राएं सीनियर सैकण्डरी परीक्षा पास करने के बाद अग्रिम अध्ययन में गतिरोध पैदा हो जाता है। निवाई कस्बे की जनसंख्या 60 हजार के बीच है। निवाई उपखंड मुख्यालय के आस-पास मूंडिया, खरेड़ा, राहोली, दतवास, बोट्न, झिलाय, जामड़ोली, सिरोही, डांगर थल एवं बनस्थली में रा. उ. माध्यामिक स्थित है। परन्तु, निवाई कस्बे में महाविद्यालय नहीं होने से छात्र/छात्राओं को अग्रिम अध्ययन को गतिरोध पैदा हो जाता है।

उपाध्यक्ष महोदय, मै आपके माध्यम से सरकार से मांग करता हूं कि निवाई में तुरन्त महाविद्यालय खोलने की कार्यवाही करावें।

धन्यवाद।

हीरालाल

(निवाई)

विधवा पेंशन के मानदण्ड

महोदय,

मैं राजस्थान विधान सभा की प्रक्रिया एवं कार्य संचालन सम्बन्धी नियमावली के नियम 295 के तहत विशेष उल्लेख के जरिये विधवा महिलाओं को रोजगार के अधिकतम अवसर प्रदान करने एवं विधवा महिलाओं को विधवा पेंशन, 18 वर्ष का पुत्र होने पर भी चालू रखने के संबंध में निवेदन करना चाहूंगी।

यह विधवा महिलाओं का बड़ा सौभाग्य है कि वर्तमान सरकार ने न केवल काफी मात्रा में महिलाओं को शिक्षा के क्षेत्र में तथा आशा, आंगनबाड़ी कार्यकर्ता, मिड डे मिल पकाने के क्षेत्र में रोजगार के अवसर प्रदान किये हैं अपितु काफी संख्या विधवाओं को शिक्षिका के रूप में नौकरी प्राथमिकता से उनके लिए कोटा तय करते हुए उपलब्ध करवाई हैं। विधवा महिलाएं हैं जो अनपढ़ है या बहुत कम शिक्षित है, उन महिलाओं को पर्याप्त मात्रा में सहायता एवं रोजगार की आवश्यकता है। आज भी ग्रामों में विधवा महिलाएं समाज की संकुचित मानसिकता के कारण घर से बाहर भी नहीं निकलती हैं, उन महिलाओं के लिए भी राज्य सरकार द्वारा हर हालत में सहायता पहुंचाने की जरूरत है।

गांवों या शहरों में जहां तक विधवा महिलाओं के लिए पेंशन स्वीकृति का मामला है उसकी संतान यदि 18 वर्ष की हो जाती है तो उसकी पेंशन बंद हो जाती है। ऐसे में विधवा महिलाओं को पूर्णतया पुत्र पर आश्रित होना पड़ता है ऐसे में विधवा महिलाओं को काफी मानसिक परेशानियों का सामना करना पड़ता है जबकि पुत्र स्वयं अपना खर्च वहन करने में सक्षम नहीं होता है ऐसे में वह अपने माता-पिता को क्या आर्थिक सहायता दे सकता है। ऐसे समय में खास कर विधवा महिलाओं की स्थिति बड़ी दयनीय होती है, एक तो खाने पीने की चिन्ता रहती है साथ ही बुढापे में अनेक बीमारियां भी घेर लेती हैं। बच्चे समय पर सहायता न कर पाने से दिन प्रतिदिन गम्भीर बीमारियों का सामना

करना पड़ता है। ऐसे में यदि विधवा महिलाओं की पेंशन आजीवन हो जावे तो उनकी स्थिति में सुधार भी होगा तथा वे जीवन पर्यन्त किसी पर आश्रित नहीं होगी।

अंत में, मैं पुरजोर शब्दों में माननीय अध्यक्ष महोदया से निवेदन करना चाहूंगी कि हर विधवा महिलाओं को आजीवन पेंशन मिले चाहे उसका पुत्र 18 वर्ष या उससे अधिक उम्र का क्यों ना हो। ताकि यह विधवा महिलायें भी अपने आत्म सम्मान से रह सकें।

धन्यवाद। जय भारत।

राजकुमारी शर्मा

(सीकर)

जयपुर की हिंगोनिया गौशाला में गायों की मृत्यु

महोदय,

नगर निगम की हिंगोनिया गौशाला में प्रतिदिन लगभग दो दर्जन गायें उचित देखभाल के अभाव में दम तोड़ रही हैं, इस संबंध में मैं स्वायत्त शासन मंत्रीजी का ध्यान आकर्षित करना चाहता हूं।

गौवंश के मरने का यह सिलसिला गौशाला की स्थापना से अब तक अनवरत रूप से जारी है। विधान सभा में गत दो वर्षों से स्वायत्त शासन मंत्री जी का ध्यान आकर्षित करने के बावजूद निगम द्वारा लगातार गुमराह कर तथ्यों के विपरीत जानकारी दी जाती रही है। मृतकों में बूढ़ी व बीमार गायें ही बताई जाती हैं जबकि तथ्य यह है कि मृतकों में शिशु गौवंश अधिक होते हैं जिनमें अधिकांश गौशाला में ही जन्मे दुधमुंहे शिशु होते हैं। गौशाला में गौवंश का उम्रवार विवरण रखा ही नहीं जाता तो सत्य की पुष्टि कैसे हो?

4 वर्षों में 4000 गौवंश की उम्रवार छंटनी का कार्य तक सम्पन्न नहीं किया जा सका है। गौवंश की गणना भी प्रथम बार नवम्बर, 2006 में की गई थी। उससे पूर्व मात्र 4000 गौवंश होने पर भी 7000 गायों के चारे की खरीद के बिल पास किये जाते रहे हैं। मुझे जानकारी हुई है कि पूर्व में चारे की अनियमितता के लिए जांच समिति बनाई गई है। जांच समिति को इन बिन्दुओं पर ध्यान केन्द्रित करना होगा कि गौशाला में अक्टूबर, 2006 तक गौवंश की गणना किये बगैर किस आधार पर 7000 गायों के लिए चारे के बिल पास किये जाते थे?

गौवंश के लिए 5 किलो सूखा चारा प्रतिदिन प्रति जीव को दिया जाना बताया जाता है जबकि प्रत्यक्ष रूप में सूखा चारा तक पर्याप्त मात्रा में प्रदान नहीं किया जाता। इसका कारण यह है कि चारे की खेलियां नियमित रूप से पूरी नहीं भरी जाती जिसके चलते गौवंश भूख से दम तोड़ देता है। गौवंश को हरा चारा एवं पौष्टिक आहार बिलकुल नहीं दिया जा रहा जिससे गौवंश कुपोषण की समस्या से जूझ रहा है। कृपया बजट में इसके लिए समुचित प्रावधान किया जाये।

गौशाला में 100 से अधिक व्यक्ति कार्यरत होने के बावजूद गौवंश अकाल मृत्यु का ग्रास बन जाता है। उच्चस्थ अधिकारियों का कोई प्रभावी नियंत्रण एवं अनुशासन नहीं है। अकर्मण्य स्टाफ की अनुशासनहीनता एवं गौ सेवा में उनके द्वारा की जा रही लापरवाही पर नियंत्रण के लिए गौशाला परिसर में क्लोज सर्किट कैमरा लगवाये जायें तथा इनके परिचालन के लिये 24 घण्टे बिजली की व्यवस्था सुनिश्चित की जाये।

घायल बीमार जीवों को पृथक से रखने के लिए रोगी पशु कक्ष बनवाये जाने के बावजूद भी गौवंश काफी समय तक बाड़ों में पड़े कौओं से जिन्दा नुचते रहते हैं। फिसलकर या टकराकर गिर पड़े गौवंश को तुरन्त उठाने की व्यवस्था 24 घण्टे कराई जाये। बाड़ा नं. 4 में गिरकर घायल हुए गौवंश को बिलकुल नहीं उठाया जाता, वहां रोगी पशु कक्ष भी नहीं है।

बाड़ा नं. 4 में भी रोगी पशु कक्ष बनवाया जाये। नये बाड़ों में लेवलिंग कराकर दरवाजे शीघ्र लगवाये जायें ताकि कुत्तों से सुरक्षा रहे। गौशाला में जगह-जगह दरवाजे, दीवारें, जालियां, रैम्प सभी टूटे पड़े हैं जिनके कारण व्यवधान रहता है, इन्हें ठीक कराया जाये।

माननीय स्वायत्त शासन मंत्रीजी मैं आपसे अपेक्षा करता हूं कि कृपया आप उपरोक्त सुझावों की शीघ्र क्रियान्विति करवाकर गौवंश की रक्षा करेंगे।

बृजकिशोर शर्मा
(जयपुर ग्रामीण)

परीसीमन के तहत भादरा में शामिल की गयी पंचायतों के राजस्व प्राधिकार

महोदय,

माननीय अध्यक्ष महोदय मैं प्रक्रिया के नियम 295 के तहत सदन का ध्यान आकर्षित करना चाहता हूं कि हाल ही में राजस्थान प्रान्त में नया

परीसीमन आदेश लागू होने के कारण एक विधान सभा क्षेत्र की कुछ पंचायतें एवं गांव दूसरे विधान सभा क्षेत्र में शामिल किये गये हैं जिसके फलस्वरूप इन पंचायतों के निवासियों की प्रमुख समस्या यह है कि एक तरफ तो अब उनका क्षेत्र अब नई विधान सभा क्षेत्र में शामिल कर लिया गया जबकि दूसरी ओर उनके उपखण्ड, तहसील, थाना, पंचायत समिति एवं राजस्व मामलों से सम्बन्धित प्रकरण/मामले उनकी पुरानी विधान सभा उपखण्ड मुख्यालय क्षेत्र में ही लम्बित/विचाराधीन रहने के कारण उन्हें काफी कठिनाईयों का सामना करना पड़ेगा।

इस सम्बन्ध में मैं सदन का ध्यान आकर्षित कर निवेदन करना चाहूंगा कि विधान सभा क्षेत्र नोहर की सात पंचायतें जो भादरा विधान सभा क्षेत्र में शामिल की गई हैं, के निवासियों के प्रकरण जो नोहर परिक्षेत्र में लम्बित/विचाराधीन है का समस्त सुनवाई एवं अपीलीय क्षेत्राधिकार नोहर के स्थान पर भादरा तहसील उपखण्ड मुख्यालय पर स्थित सरकारी कार्यालयों में रखा जावे ताकि भविष्य में किसी प्रकार की परेशानी नहीं होवे।

इस क्रम में मैं सदन का ध्यान आकर्षित कर यह भी निवेदन करना चाहूंगा कि नये परीसीमन के लागू हो जाने के फलस्वरूप जिस विधान सभा क्षेत्र में गांव जोड़े गये हैं उनके विकास कार्य कराने हेतु विधायक कोष की राशि अलग से स्वीकृत कराई जावें तथा नई विधान सभा क्षेत्र के विधान सभा सदस्यों को इन नई जुड़ी पंचायतों में विधायक निधि से कार्य की अभिशंसा करने के लिये अधिकृत किया जावे ताकि इन गांवों के विकास कार्यो में किसी प्रकार की बाधा ना आ सके।

अत: मैं माननीय अध्यक्ष का सदन के माध्यम से ध्यान आकर्षित कराना चाहूंगा कि तहसील भादरा के अन्तर्गत जो 7 ग्राम पंचायतें जोड़ी गई हैं, के उपखण्ड कार्यालय पंचायत समिति, तहसील, पुलिस थाना, राजस्व, आदि से सम्बन्धि समस्त मामलों की अपीलीय एवं सुनवाई का अधिकार तहसील मुख्यालय भादरा स्थानान्तरित किया जावे साथ ही विधायक कोष की राशि भी बढ़ाई जाकर नई विधान सभा क्षेत्र के विधान सभा सदस्यों को इन नई जुड़ी पंचायतों में विधायक निधि से कार्य की अभिशंसा करने के लिये अधिकृत किया जावें ताकि इन नई जोड़ी गई पंचायतों के गांवों के विकास कार्यो में तेजी लाई जाकर आम नागरिकों को राहत दिलाई जा सके।

डा. सुरेश चौधरी

(भादरा)

गिट्टी क्रेशर व्यवसायियों व मजदूरों की आर्थिक विपत्ति

महोदयजी,

उपरोक्त विषयान्तर्गत राजस्थान विधान सभा के प्रक्रिया एवं कार्य संचालन के नियम 295 के अन्तर्गत निवेदन करना चाहता हूं कि राजस्थान बिक्री कर अधिनियम 1994 के अन्तर्गत वर्ष 2001-2002 से वर्ष 2005-2006 तक की अवधि पर गिट्टी के उपर वजन आधारित कर आरोपित करने से उत्पन्न स्थिति से इस व्यवसाय से जुड़े गिट्टी क्रेशर व्यवसायी एवं मजदूर वर्ग गम्भीर आर्थिक विपत्ति से परेशान हो रहे हैं। वजन आधारित कर की दर अत्यधिक है जो कि मूल्य के आधार पर लगभग 40% प्रतिशत से भी अधिक हो जाती है। अलग-अलग साईजों की गिट्टी की बिक्री दर अलग-अलग होने से कम मूल्य की गिट्टी पर कर की दर 160% तक हो जाती है। जबकि धारा 4 (1) प्रावधानों के अनुसार कर की दर 50% प्रतिशत से अधिक नहीं हो सकती है।

यह कि विभिन्न जगहों के पत्थर का घनत्व अलग-अलग होने से उतनी ही मात्रा की गिट्टी पर कर कहीं कम लगता है और कहीं ज्यादा लगता है क्योकि गिट्टी वजन में नहीं बिकती है बल्कि आयतन (घनफुट) के दर से बेची जाती है। चित्तौड़गढ़ जिले में निम्बाहेड़ा की गिट्टी का घनत्व 1 टन प्रति 25 फीट होता है जबकि भीण्डर, राजसमन्द, प्रतापगढ़, गंगरार की गिट्टी का घनत्व 1 टन प्रति 20 फीट होता है।

यह कि वजन आधारित कर की दर लागू करने हेतु सर्वप्रथम राजस्थान विक्रय कर अधिनियम की धारा 9(1) के अन्तर्गत नोटिफिकेशन दिनांक 27-09-2002 को जारी किया गया और 27-09-2002 के नोटिफिकेशन के स्थान पर दिनांक 15-01-2003 को नया नोटिफिकेशन जारी किया गया किन्तु वस्तुस्थिति यह है कि प्रत्येक के ज्यादातर गिट्टी, क्रेशर व्यापारी, कर सलाहकार एवं कर निर्धारण अधिकारियों को इन नोटिफिकेशन के बारे में पूरी जानकारी नहीं होने से राजस्थान के ज्यादातर पंजीकृत व्यापारी गिट्टी मूल्य 125% प्रतिशत की दर से ही कर वसूल करते रहे और कर निर्धारण अधिकारी भी इसी दर से अपने कर का निर्धारण आदेश में कर आरोपित कर रहे हैं और यह प्रेक्टिस 2001-02 से 31-03-2006 तक निरन्तर जारी थी। अब चित्तौड़गढ़ जिले में कुछ कर निर्धारण अधिकारियों द्वारा इन कर निर्धारणों को पुनः खोलकर अतिरिक्त मांग कायम करने हेतु नोटिस जारी किये गये हैं। यदि इन

सभी कर निर्धारण आदेशों को पुनः खोलकर अतिरिक्त मांग कायम की गई तो गिट्टी क्रेशर व्यवसायियों की आर्थिक स्थिति पर अत्यधिक विपरीत प्रभाव पड़ेगा। गिट्टी क्रेशर व्यवसाय में कई छोटे व्यापारी हैं जो इस आर्थिक परेशानी को झेल पाने में सक्षम नहीं हैं। क्योंकि इन व्यापारियों को उस कर का ब्याज सहित भुगतान करना पड़ेगा । जो उनसे वसूल नहीं किया है ओर जिसके बारे में कर निर्धारण अधिकारियों को पूरी जानकारी नहीं थी। अगर उपरोक्तानुसार पुनः कर निर्धारण करके मांग कायम की गयी तो प्रत्येक क्रेशर व्यवसायी के 5 वर्षों के पुनः कर निर्धारण होने से लाखों रुपये की मांग कायम हो जायेंगी जिसका भुगतान क्रेशर व्यवसायी अपना क्रेशर बेचने के बाद भी नहीं कर पायेंगे और पूरा क्रेशर व्यवसाय ठप्प हो जाने के हालात बन जायेंगे। पूरे राजस्थान में लगभग 2000 से 2500 क्रेशर कार्यरत हैं और प्रत्येक क्रेशर के साथ कम से कम 20 मजदूरों की रोजी रोटी जुड़ी होने से लगभग 50,000 मजदूरों की रोजी रोटी प्रभावित हो जायेगी।

अतः सरकार से निवेदन है कि राजस्थान विक्रय कर अधिनियम की धारा 9(1) के अन्तर्गत वजन आधारित कर की दर के नोटिफिकेशन दिनांक 27.03.2002 और नोटिफिकेशन दिनांक 15-01-2003 को भूतलक्षी प्रभाव से निरस्त करवाने की कृपा करावें जिससे गिटटी क्रेशर व्यवसायियों और इससे जुड़े मजदूरों को आर्थिक विपत्ति से मुक्ति मिल सके।

अशोक नवलखा

(निम्बाहेड़ा)

पाले से क्षतिग्रस्त फसलों को फसल बीमा का लाभ

मान्यवर,

हाल ही में प्रदेश में पाले से व्यापक स्तर पर फसलें नष्ट हुई हैं। किसानों को व्यापक आर्थिक नुकसान हुआ है। फसलों के नष्ट होने पर किसानों को आर्थिक नुकसान से बचाने हेतु 'फसल बीमा योजना' प्रदेश में कुछ वर्षो से लागू है। योजना के अनुसार किसी भी तहसील क्षेत्र में 50 प्रतिशत से अधिक फसल खराब होने की राजस्व विभाग की घोषणा उपरान्त ही किसानों को फसल बीमा योजना का लाभ प्रदान किया जाता है। किसी एक किसान व एक या अनैक गांवों में फसल नष्ट हो भी जावे तो भी किसानों को कोई मुआवजा नहीं दिया जाता हैं।

सरकार, सहकारी विभाग व बैंक, फसल बीमा योजना की विसंगतियों

से भलीभांति परिचित है। इसके पश्चात भी किसानों को ऋण देते समय सहकारी समितियां तथा बैंक बीमा राशि की कटोती करने के उपरान्त ही ऋण प्रदान करती है। किसान न भी चाहे तब भी इन संस्थाओं से ऋण लेने पर उसके खाते से बीमा राशि की कटौती अनिवार्य रूप से कर ली जाती है। फसल के नुकसान होने पर मुआवजा भुगतान करने के स्थान पर नियमों का उल्लेख करके किसानों के घावों पर नमक छिडकने का काम किया जाता है। आवश्यकता है कि ऋण पर फसल बीमे की कटौती किसान की इच्छा पर ही की जावे। अनिवार्य रूप से फसल बीमा की कटौती करना न्यायसंगत नहीं है। किसानों के साथ यह स्पष्ट रूप में छल है। वर्तमान फसल बीमा का स्वरुप किसानों को संरक्षण प्रदान करने के स्थान पर शोषण कर रहा है। आवश्यकता है कि फसल बीमा योजना में आ रही विसंगतियों को सरकार दूर करे। जीवन बीमा योजना की तरह ही किसान फसल बीमा योजना लागू हो व यदि यह सम्भव नही है तो इस योजना को समाप्त कर दिया जावे। राज्य सरकार अपने स्तर पर फसलों के नष्ट होने पर जिला स्तर पर किसान आपदा कोष गठित करें व मण्डी स्तर पर एक निर्धारित शुल्क किसानों से वसूल करके आपदा के समय जिला प्रशासन के माध्यम से किसानों को राहत प्रदान करे।

भरत सिंह

(दीगोद)

सिरोही की चिकित्सा व्यवस्था

महोदय जी,

निवेदन है कि सिरोही जिले में चिकित्सा व्यवस्था दम तोड़ रही है। मंत्री व प्रशासन का अनेक बार कांग्रेस पार्टी व आम जनता द्वारा घेराव व प्रदर्शन करने के बाद भी राज्य सरकार की ओर से ध्यान नहीं दिया जा रहा है। चिकित्सकों की कमी के कारण भारी कठिनाई हो रहीं है। सिरोही के जिला अस्पताल में चिकित्सकों के आधे पद खाली पड़े हैं। निश्चेतक का पद भी रिक्त होने से आपरेशन कैसे होते होंगे, समझा जा सकता है। वरिष्ठ विशेषज्ञों के आधे से अधिक पद रिक्त पड़े हैं सोनोग्राफी की मशीन खराब पड़ी है।

पूरे जिले में एक ही शिशु रोग विशेषज्ञ है राज्य सरकार ने हर वर्ग के लोगों की चिकित्सा को राम भरोसे छोड़ दिया हैं। गत तीन वर्षों में पालड़ी (एम) जावाल, कैलाशनगर व अनेक स्थानों पर चिकित्सकों का एक-एक पद समाप्त कर दिया।

जिले में जननी सहायता योजना में भारी भ्रष्टाचार हो रहा हैं आदिवासी क्षेत्रों में महिलाओं का पैसा हडपा जा रहा है इस सम्बन्ध में अनेक शिकायतें भी हुई, लेकिन भाजपा के लोग चिकित्सा अधिकारियों से मिलकर गरीब का पैसा लूट रहे हैं अतः लीपापोती कर दी जाती हैं इसके अलावा जिले के लोग गुजरात के डीसा व पालनपुर में इलाज कराने को विवश हैं इसको अलावा जिले में निजी अस्पताल चांदी काट रहे हैं। गरीब रो रहा है। मैं आपके माध्यम से माननीय चिकित्सा मंत्री से निवेदन करता हूं कि तुरन्त रिक्त पद भरे। जिले के सभी तहसील मुख्यालयों पर निश्चेतन विशेषज्ञ एवं वरिष्ठ विशेषज्ञ सर्जरी एवं अस्थि रोग के कनिष्ठ विशेषज्ञ के पद सृजित करें।

संयम लोढ़ा

(सिरोही)

सांचोर की देवड़ा से निम्बाऊ सड़क का नवीनीकरण

किसानों को कृषि उपज का उचित दाम दिलवाने के उद्देश्य से राजस्थान की भाजपा सरकार कृषि उपज मंडी समिति के माध्यम से ग्रामीण सड़कों का निर्माण एवं पुरानी सड़कों का नवीनीकरण करवा रही है।

सांचोर विधान सभा क्षेत्र में गांव देवड़ा से निम्बाऊ तक 9 किमी. सड़क भी इसी उद्देश्य को ध्यान में रखते हुए निर्मित की गयी थी।

इस सड़क के निर्माण से देवड़ा, वापा, निम्बाऊ, बागली, मूली, सैली गांव एवं इस क्षेत्र में स्थित ढाणियों के किसानों को अपनी उपज को एक तरफ नरसाणा बागोड़ा होते हुए जालोर तो दूसरी तरफ झुंझाणी सेवडी होते हुए भीनमाल मंडी तक ले जाने की सुविधा प्राप्त हुई थी।

लेकिन इस सड़क का निर्माण कांग्रेस सरकार के समय वर्ष 2000-2001 में किया गया था और सड़क निर्मित होने के उपरान्त ही कुछ ही दिनों में यह क्षतिग्रस्त होनी प्रारम्भ हो गयी और मौजूदा इस मार्ग पर वाहनों का चलना अति कष्टप्रद हो गया है।

अतः माननीय उपाध्यक्ष महोदय मैं आपके मार्फत मंत्री महोदय श्रीमान प्रभूलालजी सैनी से निवेदन करता हूं कि गांव देवड़ा से निम्बाऊ तक 9 किमी. सड़क का नवीनीकरण करवाये जाने का कार्यवाही करावें।

धन्यवाद।

जीवाराम चौधरी

(सांचोर)

सूरसागर के बनाड़ व प्रतापनगर में सैटेलाइट चिकित्सालय

अध्यक्ष महोदया,

मैं आपके मार्फत माननीया मुख्यमंत्री महोदया एवं चिकित्सा मंत्रीजी का धन्यवाद ज्ञापित करना चाहता हूं कि इन्होंने गत 4 वर्षों में राज्य के विभिन्न क्षेत्रों में चिकित्सा सुविधाओं के विस्तार हेतु जो कार्य किये उसका कोई सानी नहीं है। इस बजट में भी माननीया मुख्य मंत्रीजी ने प्रदेश में चिकित्सा सुविधाओं के विस्तार हेतु बहुत से प्रावधान किए हैं जो चहुं और सराहनीय है। इसके लिए पूरा प्रदेश भूरि-भूरि प्रशंसा कर रहा है। विकास की इसी कड़ी में मैं माननीया मुख्य मंत्रीजी एवं चिकित्सा मंत्रीजी को निवेदन करना चाहता हूं कि सूरसागर विधान सभा क्षेत्र भौगोलिक दृष्टि से काफी लम्बा चौडा है इसमें जोधपुर शहर के 22 वार्ड एवं जोधपुर तहसील का लगभग सम्पूर्ण ग्रामीण एरिया पड़ता है जो लगभग 35 से 40 किलोमीटर की परिधि में फैला हुआ है। इस क्षेत्र में जोधपुर का सम्पूर्ण खनिज व औद्योगिक क्षेत्र, लगभग 80 प्रतिशत कच्ची बस्तियों के अतिरिक्त शहर का मुख्य आबादी क्षेत्र नव आबाद बस्तियां स्थित है। इस लम्बे चौड़े क्षेत्रफल व जनसंख्या वाले विधान सभा क्षेत्र में एक भी सैटेलाइट चिकित्सालय नहीं है। इस क्षेत्र के समस्त निवासियों को अपनी छोटी व बड़ी बीमारियों के उपचार हेतु जोधपुर जिला मुख्यालय पर स्थित राजकीय महात्मा गांधी चिकित्सालय, राजकीय मथुरादास माथुर चिकित्सालय एवं उम्मेद महिला चिकित्सालय पर आना पड़ता है। जिससे इन अस्पतालों पर लगातार रोगियों का दबाव बढ़ता जा रहा है। वर्तमान में सूरसागर विधान सभा क्षेत्र के ग्राम नारवा व बनाड, सूरसागर, फीदूसर चौपड, प्रतापनगर, चांदपोल, चौपासनी हाउसिंग बोर्ड, रेजीडेंसी, तथा बासनी क्षेत्र में राजकीय डिस्पेंसरियां संचालित हो रही है। यदि इन डिस्पेसरियों में से ग्राम नारवा, बनाड तथा शहरी क्षेत्र की प्रतापनगर, चौपासनी हाउसिंग बोर्ड एवं बासनी में संचालित हो रही डिस्पेंसरियों को सैटेलाइट अस्पताल के रूप में क्रमोन्नत कर दिया जाता है तो पूरे सूरसागर क्षेत्र की लगभग 8 से 10 लाख की आबादी को सीधा लाभ मिलेगा। ग्राम नारवा व बनाड में प्रस्तावित सैटेलाइट चिकित्सालय से लगभग 70 प्रतिशत ग्रामीण जनता, प्रतापनगर के अस्पताल से एक लाख की शहरी गरीब व अनुसूचित जाति व जनजाति की आबादी, चौपासनी हाउसिंग बोर्ड अस्पताल से 2.00 लाख की मध्यम व गरीब तबके की आबादी को एवं बासनी अस्पताल से औद्योगिक क्षेत्र में कार्यरत

हजारों मजदूरों व यहां निवास कर रहे हजारों परिवारों को सीधी चिकित्सा सुविधा का फायदा होगा। मेरा आपसे यह भी अनुरोध है कि राजकीय चिकित्सालय, बनाड व प्रतापनगर में सैटेलाइट चिकित्सालय के अनुरुप निर्मित भवन उपलब्ध है। जिसमें आपरेशन थियेटर, लैब, चिकित्सक रूम, वार्ड रूम इत्यादि के लिए भवन निर्मित हो चुके हैं।

आशा करता हूं कि हमारी यशस्वी मुख्य मंत्री महोदया एवं चिकित्सा मंत्रीजी आम जनता को सुलभ एवं उच्च स्तरीय चिकित्सा सुविधा उपलब्ध कराने की दिशा में कदम बढाते हुए वर्ष की शुरुआत उक्त सेटेलाइट चिकित्सालय खोलकर ही करेंगे।

मोहन मेघवाल

(सूरसागर)